सिंदूर लगाने से ही पति नहीं होता • पेट में पलता जानवर

मासिक प्रकाशन • अप्रैल' ९५

कादम्बिनी

भारतीय भाषाओं की विशिष्ट पत्रिका



११ रुपए

स्तान टाइम्स प्रकाशन


दादाजी को है पसंद, दादीमाँ को भी
पापा भी चोरी से खाते, मम्मी तो
हमसब भी जिसके मतवाले, हैं वही
MORTON
SWEETS
उस दिन क्या ही आनन्ददायक
मेरे परिवार की तो सदा से ही
उत्कृष्ट शुद्धता और स्वादिष्ट तथा
ग्लूकोज़ और चीनी की पौष्टिकता
चॉकलेट एवं कोकोनट कुकीज़
लेक्टोबोनबोन्स, मैंगोकिंग एवं
आहहा ! क्या लाज़वाब स्वाद !
स्क्रेबल खेल हो रहा था और उसे जमाने
पहली पसंद रही है—मॉर्टन।
साथ ही
से भरपूर।
रोज एक्लेयर्स,
अन्य अनेकों
अनेकानेक
सुप्रीम
मनलुभावन
का श्रेय था मॉर्टन को।
जायकों में उपलब्ध—क्रीमयुक्त
चॉकलेट तथा कोकोनट टाफियाँ,
स्वादों में उपलब्ध।
जीवन का अनुपम माधुर्य
मॉर्टन कन्फैक्शनरी एण्ड
मिल्क प्रॉडक्ट्स फैक्ट्री
पो० ओ० मढ़ौरा-८४१४१८, सारन, बिहार
किसी भी प्रकार से व्यापारचिह्न अधिकारों का उल्लंघन

शब्द सामर्थ्य बढ़ाइए

● ज्ञानेन्दु

नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं और उसके बाद उनके उत्तर भी । उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही उत्तर हो, उन पर निशान लगाइए और फिर यहां दिये गये उत्तरों से मिलाइए । इस प्रक्रिया से आपका शब्द-ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा ।

१. **दिवंगत**—क. व्यतीत, ख. अतीत, ग. स्वर्गगत, घ. पूर्व ।

२. **दिवास्वप्न**—क. दिन में तारे दीखना, ख. हवाई किला, ग. खामख्याली, घ. अर्थहीन बात ।

३. **सखाभाव**—क. साथ चलना, ख. सद्भाव, ग. दानशीलता, घ. मैत्री ।

४. **योगक्षेम**—क. जोड़, ख. परिणाम, ग. कल्याण, घ. शुभ वार्ता ।

५. **मनुहार**—क. विनती, ख. सिफारिश, ग. कोमल वार्ता, घ. मन की हार ।

६. **मनोग्राही**—क. मन के अनुकूल, ख. मन द्वारा ग्रहण किया हुआ, ग. आकर्षक, घ. इच्छित ।

७. **मनोमालिन्य**—क. कलह, ख. संघर्ष, ग. मन की अपवित्रता, घ. मनमोटाव ।

८. **वाग्युद्ध**—क. फर्जी झगड़ा, ख. शब्दों का झगड़ा, ग. अभियान में कहे गये शब्द, घ. कड़वा बोल ।

९. **वाङ्मय**—क. वचन-संबंधी, ख. साहित्य, ग. वाणी, घ. कथन ।

१०. **लावण्य**—क. कोमलता, ख. भोलापन, ग. सुंदरता, घ. सुशीलता ।

११. **लिप्सा**—क. कामना, ख. पाने की इच्छा, ग. बदनीयती, घ. लालच ।

१२. **संलाप**—क. बातचीत, ख. संगीत का स्वर, ग. भाषण, घ. झगड़ा निबटाने की बातचीत ।

१३. **वाग्मिता**—क. पांडित्य, ख. भाषण-पटुता, ग. चतुराई की बातचीत, घ. निर्णायक बातचीत ।

उत्तर

१. ग. स्वर्गगत । जनता ने **दिवंगत** नेता के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की ।

दिवम् =स्वर्ग । (व्युत्. -दिव्)

२. ख. हवाई किला, मनोराज्य । वह **दिवास्वप्न** देखने का आदी है ।

(दिवा +स्वप्न)

३. घ. मैत्री, घनिष्ठता । सहपाठियों में **सखाभाव** होना चाहिए ।

(सखा +भाव)

४. ग. कुशल, मंगल । अतिथियों से पहले **योगक्षेम** पूछना चाहिए ।

(योग +क्षेम)

. क. विनती, खुशामद । ट्रेन में बैठने के लिए ात्रियों की मनुहार करनी पड़ी ।

. ग. आकर्षक, सुंदर । यह चित्र मनोग्राही ।

(मनः+ग्राही)

. घ. मनमोटाव । मित्रों के बीच किसी बात र मनोमालिन्य पैदा हो गया ।

(मनः+मालिन्य)

. घ. शब्दों का झगड़ा, कहा-सुनी । दोनों में हसा वाग्युद्ध शुरू हो गया ।

(वाक्+युद्ध)

. क. वचन-संबंधी । ख. साहित्य । हिंदी ाङ्मय का विश्व में महत्त्वपूर्ण स्थान है ।

(वाक्+मय)

०. ग. सुंदरता । घ. सुशीलता । लावण्य ही ी का आभूषण है ।

(व्युत्. –लवण)

१. ख. पाने की इच्छा । धन की लिप्सा किसे हीं होती ।

२. क. बातचीत, वार्ता, गपशप । वह संलाप संलग्न है ।

(व्युत्. –सम्–लप्)

३. क. पांडित्य । ख. भाषण-पटुता । वह ाग्मिता में सर्वोपरि है ।

पारिभाषिक शब्द

Protection =संरक्षण

Abridgement =संक्षेप/संक्षेपण

Afforestation =वन-रोपण

Deforestion =वनक्षय

Presentation =प्रस्तुतीकरण

Demonstration =प्रदर्शन/निदर्शन

ज्ञान-गंगा

एवमेव नाई जीयते खलात्तत्र का
नृपतिवल्लभे कथा ।
पूर्वमेव हि सुदुःसहाऽनलः किं पुनः
प्रबलवायुनेरितः ॥

(सुभाषितावलिः ४२८)

खल से मनुष्य यों ही नहीं जीत सकता फिर वह यदि राजवल्लभ अर्थात राजा का प्रिय पात्र बना हुआ हो तो क्या कहा जा सकता है । अग्नि स्वाभाविक रूप से असह्य होता है फिर यदि वह प्रचंड वायु से प्रेरित हो तो क्या कहना है ।

यस्य कृत्यं न विघ्नन्ति शीतमुष्णं भयं
रतिः ।
समृद्धिरसमृद्धिर्वा स वै पण्डित उच्यते ॥

(महाभारत, उद्योगपर्व ३३/१९)

सरदी और गरमी, भय और अनुराग, संपत्ति और दरिद्रता जिसके प्रारब्ध कार्य में विघ्न नहीं डालते, वही व्यक्ति पंडित कहलाता है ।

यावच्च कुर्यादन्योऽस्य कुर्यादभ्यधिकं
ततः ।

(महाभारत, आदिपर्व ५६/१४)

दूसरा मनुष्य जितना उपकार करे, उससे अधिक ही उसका उपकार करना चाहिए ।

भद्रं मनः कृणुष्व वृत्रतूर्ये ।

(युजर्वेद १९/३९)

पाप को विनाश करने के लिए अपने मन को भद्र-भावनाओं से युक्त बनाओ ।

(प्रस्तुति : महर्षि कुमार पाण्डेय)

आस्था के आयाम

हाथों में ही निहित है रोग क्षय की शक्ति

योगियों का कथन है कि प्रत्येक मनुष्य के भीतर एक गोपनीय अलौकिक एवं अनुपम शक्ति का भंडार है। यह सुषुप्तावस्था में विद्यमान है। साधारण व्यक्ति इसका समुचित उपयोग कर पाने में पूर्णतः असमर्थ रहता है। फलस्वरूप इससे प्राप्त होने वाली महत्त्वपूर्ण चमत्कारिक उपलब्धियों से सर्वथा वंचित रहता है।

परंतु यदि उन शक्तियों का सूक्ष्म निरीक्षण किया जाए एवं उन्हें जागृत किया जाए तो पायेंगे कि हम एक अनूठी ज्योति के स्रोत हैं। हमारा अंग-प्रत्यंग दिव्य शक्तियों से ओत-प्रोत है। हमारे अंतःकरण में शक्ति का महान सागर लहरा रहा है। केवल इसे पहचानने की आवश्यकता है। इस असीम शक्ति के बल पर संसार में असंभव कार्य भी संपन्न किये जा सकते हैं। इसके लिए इच्छा शक्ति के साथ-साथ आत्मचिंतन की भी आवश्यकता है।

जब हमारी काया को कोई सूक्ष्म रोग सताता है तो हम तत्काल किसी चिकित्सक की शरण में जाते हैं। नाना प्रकार की औषधियों का सेवन करना प्रारंभ करते हैं। ये औषधियां तत्काल राहत तो प्रदान करती हैं, परंतु इनके दूरगामी प्रभाव होते हैं। कुछ समय पश्चात दबा हुआ रोग पुनः किसी अन्य जटिल रोग के रूप में सिर उठाता है जो शरीर को अत्यधिक कष्ट देता है। यदि हम अपने पंचतत्त्व से निर्मित शरीर की संरचना को भली-भांति समझ लें तो प्राकृतिक एवं यौगिक आध्यात्मिक क्रियाओं से उसे सदैव स्वस्थ रख सकते हैं और यदा-कदा रोगी होने पर अपनी चिकित्सा स्वयं कर सकते हैं। केवल इच्छा शक्ति व प्रभु की प्रार्थना की आवश्यकता है। शरीर में निहित असीम अलौकिक शक्तियों को अपनी हथेलियों में प्रविष्ट करानेभर की आवश्यकता है।

अपनी दोनों भुजाओं को दोनों ओर फैलाकर हथेलियां आकाश की ओर ले जाएं। जैसे प्रभु से कुछ मांग रहे हों। मंत्र बोलकर हथेलियों को अपने सिर पर उलट दें। प्रभु से मांगी हुई जीवन शक्ति स्वयं हमारे शरीर में प्रविष्ट हो जाएगी। हम एक नवीन निर्मल दिव्य-स्फूर्ति से भरपूर हो जाएंगे। चेहरा अनुपम-आभा से जगमगा जाएगा।

मंत्र निम्नलिखित हैं :

तेजो असि तेजो मयि धेहि

हे प्रभु ! तू तेजोमय है। मुझे तेज से भर दे।

वीर्य असि वीर्य मयि धेहि

हे प्रभु ! तू वीर्यमय है। मुझे वीर्य से भर दे।

बलं असि बलं मयि धेहि

हे प्रभु ! तू बलवान है। मुझे बल से भर दे।

ओजो असि ओजो मयि धेहि

हे प्रभु ! तू ओजमय है। मुझे ओज से भर दे।

मन्युं असि मन्युं मयि धेहि

सहो असि सहो मयि धेहि

हे प्रभु ! तू उत्साहमय है । मुझे उत्साह से भर दे ।

हे प्रभु ! तू सहनशक्ति युक्त है । मुझे सहनशीलता दे ।

उपरोक्त मंत्रों का पाठ करते हुए हम यदि अपने शरीर के रोगी अंगों का स्पर्श करेंगे तो वह क्रमंशः निरोग होकर आकर्षक व सुष्ठ होना प्रारंभ कर देगा ।

अंय मे हस्तो भगवानयं में भगवत्तर ।
अयं में विश्व भेषजोहयं शिर्षाभिभर्शन ।

(ऋग्वेद १०.६०.१२ अथर्ववेद ४.१३.६)

(अर्थात मेरा यह हाथ भगवान है । मेरा यह हाथ अतिशय भगवान है । मेरा यह हाथ सर्वऔषधि है । मेरा यह हाथ सर्वत्र शिव स्पर्शवाला है ।)

इस मंत्र से हमारे हाथ इतनी अधिक शक्ति प्राप्त कर सकते हैं कि हाथ को जहां-जहां स्पर्श करेंगे, वहां निरोगता स्वास्थ्य एवं सौंदर्य का बढ़ना शुरू हो जाएगा । मंत्र बोलते हुए हथेलियों को परस्पर रगड़कर गरम कर लेना चाहिए । सिर से लेकर पैरों तक स्पर्श करते हुए प्रभु से संपूर्ण शरीर हेतु स्वास्थ्य, बल व सौंदर्य मांगना चाहिए ।

मनुष्य की दोनों हथेलियों में रोग निवारक औषधियां निहित हैं । रगड़ कर गरम करने से औषधियों का प्रभाव हथेलियों की त्वचा में आ जाता है । सिर को स्पर्श करते हुए यह अनुभव करना चाहिए कि हमारी मेधा, बुद्धि व स्मरण शक्ति किस प्रकार सुविकसित हो रही है । पेशानी का स्पर्श करते हुए यह अनुभव करें कि पेशानी किस तरह ज्योतिमय एवं तेजोमय हो रही है । आंखों का स्पर्श करेंगे तो लगेगा कि आंखें किस प्रकार सुंदर एवं आकर्षक होती जा रही हैं । इसी प्रकार शरीर के प्रत्येक अंग को स्वस्थ, निरोगी व आकर्षक और कांतिमय बनाया जा सकता है । शरीर के जिस अंग में कोई कष्ट व पीड़ा हो, मंत्र पाठ करके, हथेलियों को परस्पर रगड़कर उन्हें गरम कर लेना चाहिए और रोगी अंग को कम से कम पांच मिनट तक सेंक देना चाहिए । इससे देखेंगे कि रोग शीघ्रता से दूर होगा ।

समस्त उपरोक्त क्रियाओं में मानसिक पवित्रता, श्रद्धा, प्रभु के प्राप्त समर्पण व चित्त की एकाग्रता का होना आवश्यक है । आत्मचिंतन, सत्संग व सरल सात्विक जीवन शैली से ही मनुष्य पवित्र रह सकता है । पवित्रता के बोध से शोध व शोध से सौंदर्य एवं स्वास्थ्य प्राप्त होता है ।

—अनिता कथूरिया

पांच लाख वर्ष पुराना जीवाश्म

ब्रिटेन के वेस्ट ससेक्स क्षेत्र में वैज्ञानिकों ने लाखों वर्ष पुरानी पिंडली की हड्डी का जीवाश्म ढूंढ़ निकाला है । वैज्ञानिक इसे लगभग ५ लाख वर्ष पुराना मान रहे हैं । वैज्ञानिकों का अनुमान है कि यह जीवाश्म दो मीटर लंबे और ८२ किलोग्राम वजनवाले पुरुष का है ।

— लक्ष्मी सोनी

प्रतिक्रियाएं



पुरस्कृत-पत्र

हमारे देश में आजकल बेकार की बातों में ज्यादा बहस की जा रही है।

धर्मनिरपेक्षता बनाम सेक्युलरिज्म या राजनीति से धर्म को पृथक्करण से संबंधित बहसों को इस श्रेणी में तो नहीं रखा जा सकता। पर यह जरूर है कि ये महज बहसें ही हैं। व्यावहारिक तौर पर इनसे कोई फायदा हो रहा हो या होगा— कम से कम यह तो नजर नहीं आता।

भाषाई बनावट के झगड़े को त्याग देना चाहिए। धर्मनिरपेक्षता का वास्तविक अर्थ क्या है? यह प्रयत्न करना चाहिए कि धर्म के नाम पर जो कुत्सित राजनीति की जा रही है वह बंद हो— उस पर बंदिश लगायी जाए।

अन्य लोगों के मतों के अनुरूप मेरा भी मत यही है कि 'सेक्युलर' शब्द का उचित हिंदी स्थानापत्र 'सर्वधर्म-सम-भाव' होना चाहिए। पर मैं इस बात का कतई पक्ष नहीं लेता कि हम 'धर्मनिरपेक्षता' बनाम 'सर्वधर्म समभाव' की बहस में ही खो जाएं। यह राक्षस की पूंछ हो सकती है, खुद राक्षस नहीं। हमें उस राक्षस का नाश करना है, जो देश को खाये जा रहा है— उसकी पूंछ को नहीं।

सरकार द्वारा राजनीति से धर्म के पृथक्करण के प्रयास की जहां तक बात है तो जरूरत राजनीति को 'धर्म से नहीं' अपितु संकीर्ण सांप्रदायिकता से अलग करने की है। राजनीति में तो धर्म की मात्रा बढ़ाने की जरूरत है, ताकि अधर्म की शक्ति का नाश हो।

संकीर्णताएं लोगों का भावनात्मक शोषण करती हैं। वास्तविक जरूरत तो इस बात की है कि हम हर ऐसी संकीर्णता को राजनीति से हटायें जो लोगों के भावनात्मक शोषण की माध्यम हैं। हमें अपनी बहस को इसी मुकाम तक लाने की आवश्यकता है। हमारा राक्षस तभी मरेगा— धर्मनिरपेक्षता या सर्वधर्म-सम-भाव की बहस से नहीं। कानून बनाने से ही अन्य समस्याओं की तरह इस 'भावनात्मक शोषण' को रोकना संभव नहीं होगा। इसे रोकने का उपाय है कि हरेक उस व्यक्ति को — जो मत देने का अधिकार रखता है—बौद्धिक रूप से इतना सबल बना देना कि वह इन का मूल्यांकन कर सके और भावनाओं की रौ में न बहे। उसे इतना सबल बुद्धिजीवी ही बना सकते हैं।

—अरविंद कुमार

द्वारा श्री एस. पी. चौधरी, ह. लाहौरी, पो. एम. आई. टी.; मुजफ्फरपुर (बिहार) पिन-८४२००३

प्रत्येक अंक पठनीय

कादम्बिनी का कई वर्षों से नियमित पाठक । कादम्बिनी के स्थायी स्तंभ हों या निबंध एवं ख, हास्य-व्यंग्य एवं कहानियां हों या विताएं, प्रत्येक का मैं भरपूर आनंद लेता हूं ।

'कादम्बिनी' का प्रत्येक अंक अपने आप में क विशिष्टता लिए रहता है । प्रत्येक अंक चाहे ह विशेषांक हो या सामान्य अंक अपने-अपने ान पर वह खरा उतरता है । पत्रिका का येक अंक पठनीय व संग्रहणीय होता है । हित्य जगत में 'कादम्बिनी' ने एक विशेष चान बनायी है ।

—चरण सिंह बघरी
खाती, कपकोट अल्मोड़ा (उ.प्र.)

प्यारा दोस्त

कादम्बिनी पत्रिका हमारे घर की पुरानी दोस्त । यह सभी को पसंद है । इस अंक फरवरी) की कहानियां, काफी रोचक थीं । तु यात्रा संस्मरण 'हाजो' असम का नगर जो प्रदायिक एकता की मिसाल है, काफी रोचक ा ।

कविताएं भी अच्छी थीं । कादम्बिनी इतनी स्थ और उत्कृष्ट पत्रिका है जिसका इंतजार मैं ह के पहले दिन से ही करती हूं ।

—निवेदिता मिश्र 'हेना'
वन परिसर सिमडेगा, जि. गुमला, बिहार

हर अंक संग्रहणीय

'कादम्बिनी' इतनी सशक्त, ज्ञानवर्द्धक व उपयोगी पत्रिका है कि इसका हर अंक संग्रहणीय है । प्रत्येक लेख पठनीय होता है ।

—श्रीमती शशी मालू
वैशाली नगर, अजमेर (राज.)

बालाकि त पूरा समाज

फरवरी '९५ का अंक पढ़लीं । बहुत नीमन लागल ।

इहौ बुझाइल जे आपन पुरान रूप मा 'कादम्बिनी' लौटत बिया । इहै संतोष के बात बा !! राऊर, हमहनि के 'धनबाद' राखीं । ए अंक मा आजकाल के नेतवन पर अऊर उनकरा धतकरम से गंदा होत शासन प्रशासन पर बीचार पढ़े के आईल !!

फिलमवां मा जौन नंगा भड़ैती दिखावल जात बाऽऽ ओकरा से तनिको कम भंड़ैती इ नेता लोग नइसे करत !! आपन देसवा के गांधी बाबा भा अउरो लोग जौना रास्ता ले जाए चाहत रहे । का उहै रस्तवा पर हमहनीं के चलत बानी ?

हमार बाप दादा त हमहनीं के सपना देखवा -देखवा बना दिहलै ऊ का-स्वप्न दृष्टा !! अइसन भारत ओइसन भारत !! मिलल का ? आपो तऽ बाप-दादा के उमर के भइलीं— आपो गांधी-विनोबा के जमाना देखले बानीं ! हम नौजवानन के कौना भारत के दर्शन करवावत बानीं ! आपन नेता लोग विधान सभा भा संसद के चंड़ूखाना बूझत बारे !!

बेजान काया बन गईल बा समाज के— कौनो परान चिन्हानि देखात बा?? कौना देस में आज अजातशत्रु बाड़े जिनकरा से बलाकी जइसन लोगन के दरप दूर हो सकत बाऽऽ ! बालाकी त पूरा समाज भइल बा, लेकिन अजातशत्रु कहावै के कूबत के करा में बाऽऽ । आप हमनीं के बताइब ??

—आशुतोष पाण्डेय
सा.२/३९८ डी, पाण्डेयपुर, वाराणसी-२

सांस्कृतिक धरोहरों की उपेक्षा

फरवरी अंक में 'नष्ट हो रही है बिहार की...' शीर्षक से अशोक सुमन के तथ्यपरक लेख में यह तो स्पष्ट कर ही दिया गया है कि बिहार में पुरातात्त्विक और सांस्कृतिक धरोहरों की उपेक्षा चरम सीमा पर है।

लेखक ने शत-प्रतिशत सही कहा है कि सांस्कृतिक धरोहरों को संजोये रखना और उन्हें तस्करों से बचाना राष्ट्रीय अस्मिता की रक्षा करना है।

—मोहन कुमार सरकार
भागलपुर

नष्ट हो रही बिहार की पहचान

लेख 'नष्ट हो रही बिहार की ऐतिहासिक पहचान' (फरवरी अंक) पढ़ा। यह सत्य है कि बिहार के चप्पे-चप्पे में पुरातात्त्विक अवशेष बिखरे पड़े हैं। किंतु केवल उत्सुकतावश पुरातात्त्विक धरोहरों/मूर्तियों को धरती के गर्भ से बाहर निकालने से क्या फायदा है ? जब हम उनका उचित रख-रखाव और उनकी सुरक्षा का प्रबंध नहीं कर सकते।

—वनिता सिन्हा
विंध्यनगर, सीधी (म. प्र.)

इस लेख पर हमें ढेरों पत्र प्राप्त हुए हैं इनमें है—राजनंदन, सुलतानपुरी, नयी दिल्ली; हरिनारायणाचारी मिश्र. वाराणसी।

वास्तविकताओं से सीधा साक्षात्कार

वैसे तो हर अंक ही संग्रहणीय होता है। 'कालचिंतन' यदि व्यक्ति पढ़े तद्नुसार सोचे, और आचरण करे तो वस्तुतः जीवन की कला और वास्तविकताओं से सीधा साक्षात्कार होगा।

मानवीय संवेदनाओं का कोई धर्म नहीं होता। मानवीय संवेदनाएं वर्ग औ वर्ण में विभाजित नहीं होतीं। मानवीय संवेदनाएं देश काल और स्थान की पहचान नहीं करतीं...."

कालचिंतन के इन सूत्रों पर यदि जरा भी व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाया जाए तो कदाचित आज के माहौल की गंदगी में 'सुपर प़र्फ' की सफाई आ जाए। सुसंपादन एवं स्पष्टवादिता के लिए साधुवाद।

—लालसालाल तरंग, जटेपुर, गोरखपु

फरवरी ९५ अंक हाथों में है। काल-चिंतन पढ़ते-पढ़ते अचानक रुक जाना पड़ा। विचारें का अवतरण, अवधारणा और अनंत अनवरत अध्याय। उसके बाद लिखा मिला (अगले अंक में) तो अब मुझे और मुझ जैसे अनेक पाठकों को कादम्बिनी प्रणेता की प्रतीक्षा करनी होगी। **—सतीश गुप्ता, भटनी, देवरि**

कादम्बिनी क्लब के संयोजकों

आपको ज्ञात ही है कि कादम्बिनी का मूल्य बढ़ाकर ११/- रुपए कर दिया गया है। इन परिस्थितियों में हमें कादम्बिनी क्लब के वार्षिक शुल्क में भी कुछ वृद्धि करनी पड़ रही है।

कादम्बिनी क्लब का शुल्क बढ़ाकर हमने ९०/- रुपये प्रति सदस्य एक वर्ष के लिए कर दिया है। कादम्बिनी का सामान्य वार्षिक ग्राहक शुल्क ११५/- रुपए प्रति सदस्य है। इस प्रकार अब भी पहले की तरह पच्चीस रुपए प्रति सदस्य की विशेष छूट 'कादम्बिनी क्लब' के सदस्यों को दी जा रही है। आशा है आपका सहयोग पूर्ववत् मिलता रहेगा।

— संपादक

'राजनीति में भ्रष्टाचार रोकता है धर्म' में मौलाना वहीदुद्दीन खान का कथन धर्म और राजनीति दोनों एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं, यथार्थ से बहुत दूर है। धर्म और राजनीति का मिलाप असंभव है, क्योंकि धर्म सत्य की खोज करता है तो राजनीति का सत्य से दूर का भी वास्ता नहीं।

इतिहास गवाह है कि राजनीतिज्ञों ने हमेशा सत्ता प्राप्ति के लिए हर तरह का नैतिक और अनैतिक विधान ग्रहण किया है। राजनीति मूलतः विकृत नहीं लेकिन इसे समय-समय पर राजनीतिज्ञों ने विकृत किया है और अब वर्तमान राजनीति तो शालीनता, मानवता और कर्तव्यपरायणता की सीमाओं से कहीं आगे जा चुकी है।

वर्तमान राजनीतिज्ञों की ख्वाहिश का इजहार शायर बशीर बद्र का निम्न शेर बखूबी व्यक्त करता है—

"तमाम मुल्क अंधेरों में डूब जाए तो क्या, वह चाहते हैं कि सूरज बस उन्हीं के घर में रहे"

—नवल भारतीय, अलीगढ़ (उ. प्र.)

इस लेख पर हमें ढेरों प्रतिक्रियाएं मिली हैं। इनमें प्रमुख हैं :—सुश्री शीला वैद्य, ऋषिनगर, उज्जैन, डॉ. शकुन्तचंद गुप्त आर्य लालगंज, रायबरेली (उ. प्र.), दिलीप 'राष्ट्रवादी', श्रीमाधोपुर (राज.), सूर्यकांत चतुर्वेदी सुदामानगर, इंदौर, इंद्रप्रकाश, नयी दिल्ली, रामप्रसाद वैशुब्राक्ष, नयी दिल्ली, शशिकांत झा गोड्डा (बिहार), बिजेंद्र चौरसिया मंडला (म. प्र.)।

कादम्बिनी
भारतीय भाषाओं की विशिष्ट पत्रिका
विशेषांक की तरह पठनीय एवं संग्रहणीय

वर्ष ३५, अंक६,
अप्रैल १९९५

आकल्पं कवि नूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

निबंध एवं लेख

कार्यकारी अध्यक्ष
नरेश मोहन

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी

सार संक्षेप

कहानियां

कविताएं

संपादकीय परिवार

सह-संपादक : **दुर्गाप्रसाद शुक्ल,**
मुख्य उप-संपादक : **भगवती प्रसाद डोभाल,**
वरिष्ठ उप-संपादक : **प्रभा भारद्वाज,**
उप-संपादक : **डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, सुरेश नीरव, धनंजय सिंह,**
प्रूफ-रीडर : **प्रदीप कुमार,**
कला विभाग-प्रमुख : **सुकुमार चटर्जी।**

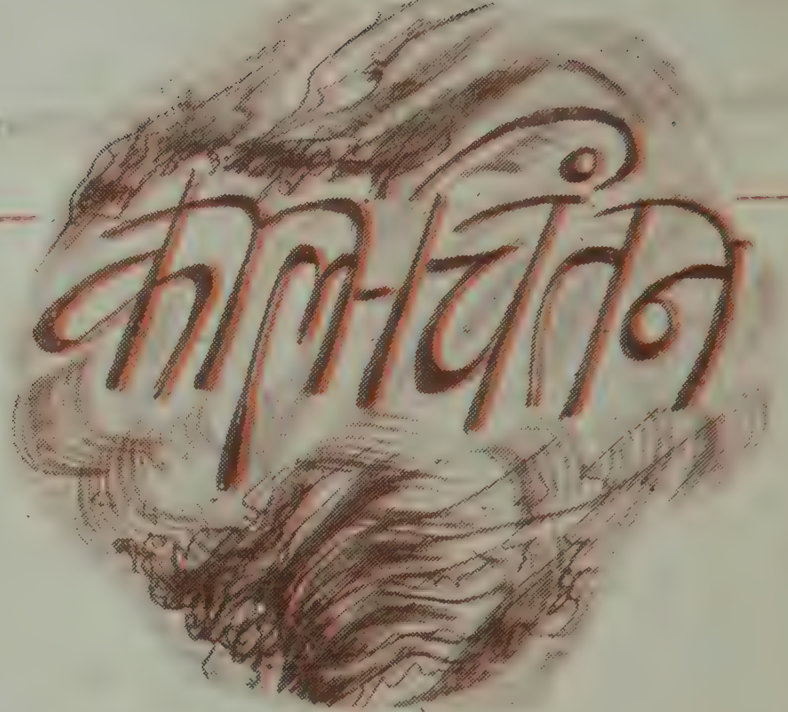
....

संपादकीय पता : **'कादम्बिनी' हिंदुस्तान टाइम्स लि., १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१।**
फोन : ३३१८२०१/२८६, टेलेक्स : ३१-६६३२७, फैक्स : ०११-३३२११८९

'कादम्बिनी' : चंदे की दरें

मूल्य : **अर्द्धवार्षिक ६० रुपये; वार्षिक : ११५ रुपये, द्विवार्षिक : २२५ रुपये;** विदेशों में : **पाकिस्तान, नेपाल एवं भूटान; अर्द्धवार्षिक : १८५ रु. (अमरीकी डॉलर-७, पौंड ४), वार्षिक : ३६५ रु. (अमरीकी डॉलर १३.५०, पौंड ७.५०)**
अन्य सभी देशों के लिए : **अर्द्धवार्षिक २७५ रुपये (१०.५० डॉलर, पौंड ६); वार्षिक : ५३५ रुपये (२०.५० डॉलर, पौंड ११.५०)।**

शुल्क भेजने का पता :
प्रसार व्यवस्थापक, 'कादम्बिनी'
हिंदुस्तान टाइम्स लि., १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१।



— *प्रश्न एक पाठक का : मन क्या है ?*

□

— *प्रश्न सहज नहीं है; मन की व्याख्या अनेक प्रकार से की गयी है । अनेक में से एक की खोज चेतना के द्वार खोजती है । खोजने का मार्ग सहज नहीं है ।*

— *मान लीजिए आप चंबल के वनों-घाटियों में फंस गये हैं ।*

— *मान लीजिए आप महासागर के बीच हैं, जहां से पृथ्वी के सभी छोर मीलों दूर हैं । अथाह जल, जल में चलता जहाज, जहाज के सर्वोच्च शिखर के बीच घिरा हुआ आपका शरीर और शून्य क्षितिज के नाम नितांत शांत बहते पानी से उभरते चीखते-चिल्लाते स्वर और फिर कहीं आंखें रुक सकें तो मात्र उछलती हुई छोटी मछलियां जो विद्युत की तरह श्वेत रोशनी बार-बार छोड़ती हैं ।*

— *मछलियां मात्र श्वेत हैं, वे जुगनू नहीं हैं ।*

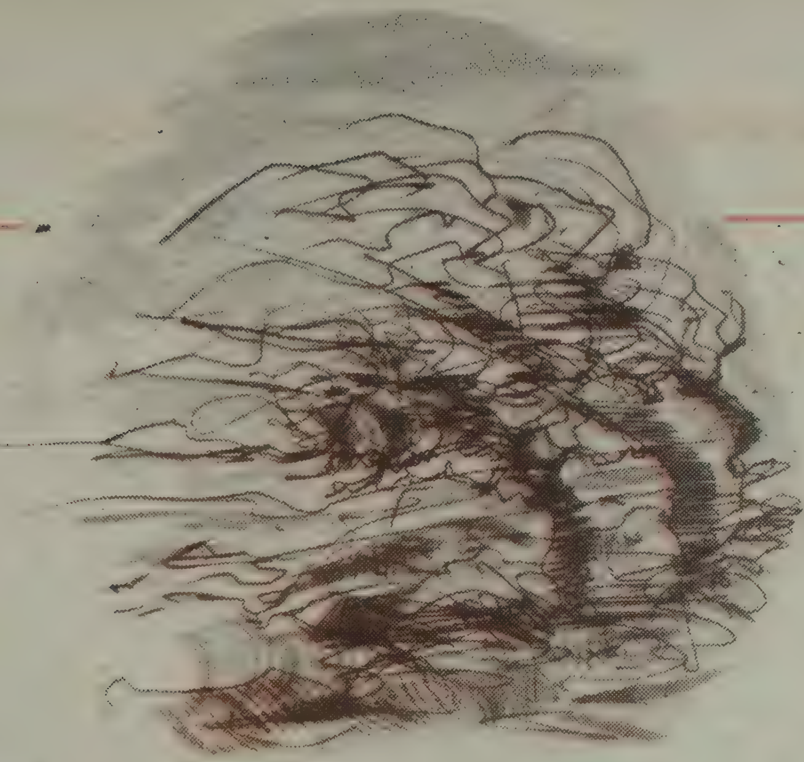
— *आकाश निरभिमानी, पराजित धराशायी और तारों के चंदेवों से टंका सीधा पसरा है ।*

— *पानी और आकाश में अटूट मैत्री है ।*

— *महासागर का चलगामी व्यक्ति दोनों के बीच स्थित है, पिसता नहीं है लेकिन वह दोनों के बीच अपनी सजग चेतना का अस्तित्व बनाये हुए है ।*

— *पानी में ईमानदारी नहीं है । वह बरबस आंखों को पकड़ता है और मूक भाषा में मौन निमंत्रण देता है । चेतना छलनी हुई नहीं कि आप छलांग लगा देंगे ।*

— *आपका विश्वासी मन भी हथेलियों से झरते पसीने की तरह फिसल*



जाएगा ।

— *यात्राओं के बीहड़ मार्ग ऐसे ही छल-प्रपंचों से सावधान करते हैं और सोचने की प्रक्रिया को संपूर्णता का आयाम देते हैं ।*

□

— *बीहड़ वनों की गाथा कोरे कागजों में लिखी परिभाषाएं हैं । कलम नहीं हैं, उपक्रम लिखने का है ! विवेक-शून्यता का ऐसा दिवालियापन !*

— *कोरे कागज पर अंगुलियों के हस्ताक्षर । महासागर के अतल जल में परिभाषाओं की ऋचाएं ! महाशून्य क्षितिज को अंतिम सीमा स्वीकारना ! आकाश गंगा के सौंदर्य को देखकर सोचना कि यह सीधे दुपट्टे-सा मलमल की तरह हमारी सुकोमल हथेलियों में आकर आवृत्त हो जाएगा ।*

□

— *यह सब सोच नहीं है ।*

— *सोच नहीं है, तो वह कुछ भी हो सकता है कम से कम मन नहीं है ।*

— *(प्रश्नकर्त्ता ने परिभाषा की थी कि मन का अर्थ है सोचना)*

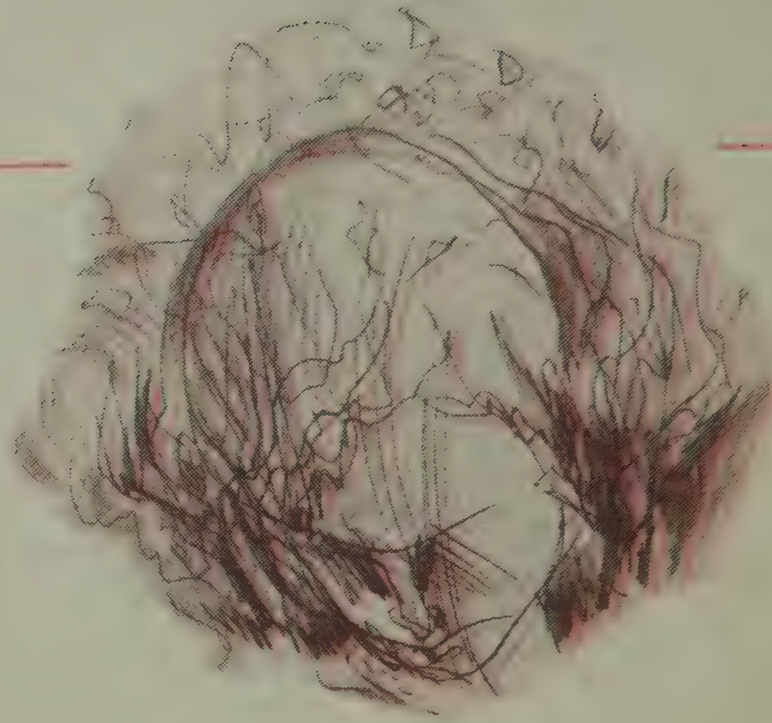
— *जीवन स्वयं गलत परिभाषाओं में आबद्ध है ।*

— *जीवन का तत्व और सत्व क्या है, कोई नहीं जान पाया ।*

— *नहीं कह सका कोई कि जीवन का धर्म क्या है ? जीवन कर्म क्या है ? जीवन का मर्म क्या है ?*

— *जीवन जगत है अथवा जगत जीवन है या दोनों के अस्तित्व-बोध किसी तीसरे चिंतन से जुड़े हैं ।*

— *यह तीसरा चिंतन जीवन और जगत के बीच एक लक्ष्मण-रेखा खींचता*



है ।

— अलक्ष्मण रेखा विभाजन है । संयत करने का आदेश है और सावधान करना है कि विश्वास की सीमा होती है और विश्वास को विश्वास की सीमा में रखना आवश्यक है ।

— विश्वास का आरोग्य-धाम मानव-मस्तिष्क है ।

— मस्तिष्क पर्वतों, सागरों, महासागरों, धरती और धरती के कण-कणों से अधिक प्रभावी है ।

— मस्तिष्क ही चेतना का महाद्वार है ।

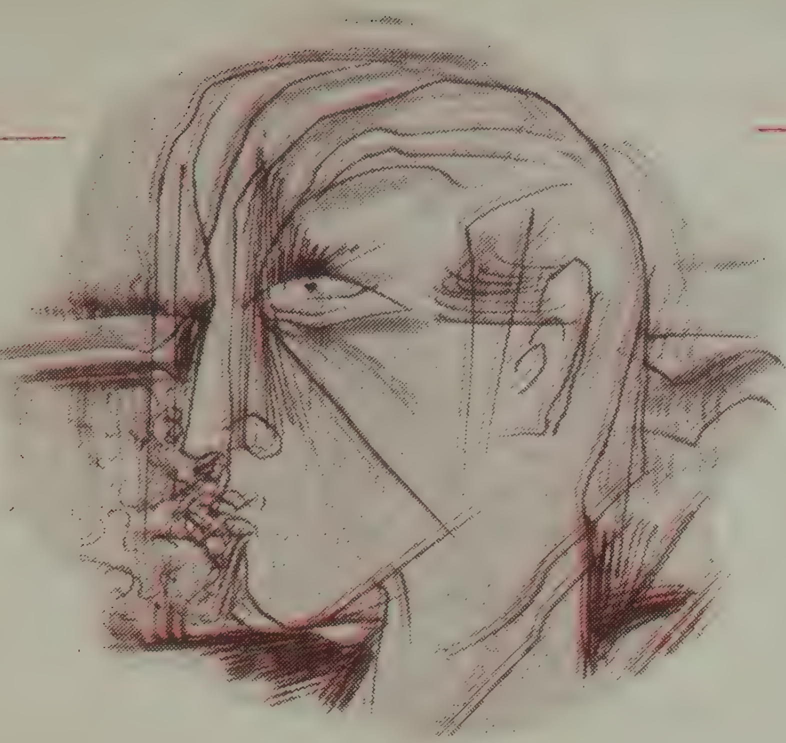
— महाशून्य मस्तिष्क से ही उभरता है और महाज्ञान भी मस्तिष्क की कोशिकाओं से बूंद-बूंद इस तरह टपकता है जैसे हिमसागर का एक छुत्र बिंदु अयाचित पड़े हुए पत्थर के किसी कोने से—अनजाने-अचानक नीचे आ गिरता है ।

— सोचना, समझना, पहचानना और परखना—ये सब विश्वास के अंग-रक्षक हैं ।

□

— इस लंबी पृष्ठभूमि में मनुष्य का अस्तित्व टिका है, ठीक उसी तरह जैसे विशाल महुए के वृक्ष में अनंत फल लगते हैं, लेकिन वर्षारंभ में वे सूर्योदय के पहले अपने आप श्वेत वस्त्रों में धरती पर टपकते हैं ।

— सूर्योदय के बाद महुए का श्वेत सौंदर्य रक्त कमल में बदलने लगता है । उसकी सुरभि समाप्त होने लगती है और मन की चेतन और अवचेतन



धारणा विवश कर देती है—ग्रहण करें तो किसे ? श्वेत पुष्प स्वादिष्ट है । परिवर्तित रक्त कमल मदिरा की आधारशिला है ।

— जीवन को स्वाद भी चाहिए और मदिरा भी ।
— प्रवंचनकारी मस्तिष्क दोनों का भक्षण चाहता है ।
— सोच लें, यहां आकर कि मस्तिष्क ही मन है तो ?
— मस्तिष्क की विशाल चेतना मात्र सोचने तक सीमित नहीं है ।
— वही मस्तिष्क कभी सोच के सभी द्वार अवरोधित कर हमें वाधित कर देता है ।
— वही मस्तिष्क सारे अवरोधों को पसीने की तरह बहा देता है और उभरा हुआ ज्वार पवित्र चेतना-खंड में बदल जाता है ।
— मस्तिष्क चेतन है ।
— मस्तिष्क अवचेतन है
— मस्तिष्क पराभूत क्षुद्र लौहपुंज है
— मस्तिष्क शक्ति है
— मस्तिष्क पराजय और पराभव है
— मस्तिष्क विकास है तो मस्तिष्क अवरोध भी है
— मस्तिष्क की अवधारणा परिभाषाओं की मोहताज नहीं है इसलिए कि संजीवनी है तो सुरा भी है, कृति है तो विकृति भी है, जीवन है तो निष्प्राण भी है ।
— शरीर की समग्रता में मस्तिष्क विविध आयामी है ।



— विविध आयामी व्यक्ति या वस्तु या अवयव का कोई धर्म नहीं होता ।
— धर्म से परे हमारी जीवन-यात्रा का कोई भी क्षण या कण हो या न हो मस्तिष्क धर्म से परे है ।
— धर्म नहीं होगा तो सांस्कृतिक उपादान नहीं होंगे, मनुष्य का चरित्र नहीं होगा, मनुष्य का बहु आयामी व्यक्तित्व नहीं होगा; लेकिन मनुष्य धर्म के लिए ये सभी उपादान न तो जीवन दर्शन हैं और न जीवन-रक्षक हैं ।
— धर्म, जीवन और शरीर (यानी उपस्थिति) को भली-भांति समझकर यह मान लें कि इनका संचालक मस्तिष्क है तो अनेक भ्रम टूट जाएंगे ।
— मन को मस्तिष्क के साथ नहीं जोड़ा जा सकता ।
— मस्तिष्क व्यापक और अपार धनागार है ।
— मन मस्तिष्क के भीतर पलता हुआ वह कीड़ा है जो सीपियों में पलता है ।
— सीपियों से मोती निकलते हैं ।
— मन मोती हो सकता है, चिंतन का समग्र केंद्र नहीं, क्योंकि मन भ्रम भटकाव है । त्रासदी है और मनुष्य शरीर की विभीषिका है ।
— वही मन मनुष्यता की शालीनता है, वही मन मनुष्य को मनुष्येत्तर बनाता है और वह मन लौकिक और अलौकिक द्वार की कुंजियों को खोलता है ।
— यह सब तो है, लेकिन यही सब नहीं है । समंदर में सीप, सीप में पानी, पानी में पलता सचल जीवन और वही जीवन बदलता मोती; कहते हैं जिसके सीप में है मोती ।
— चेतना न सीप में है, न मोती में है, न समंदर में है, चेतना कहीं है तो उस



धरती में जिसके ऊपर तैर रहा है जहाज की तरह समंदर ।

— *तब सत्य धरती हुई ।*

— *धरती का काम धारण है ।*

— *धरती सोच से परे है ।*

— *सोच कहीं मस्तिष्क से जुड़ा है, इसलिए सोच का संबंध कुछांश मस्तिष्क से है ।*

— *मस्तिष्क अंतिम सोच नहीं है ।*

— *अपने आप में जो अंतिम न हो वह अनश्वरता का दीप किसके लिए और कैसे जला सकता है ।*

□

— *मेरे दोस्त, मन सोचना नहीं है, सोचना मन की एक प्रक्रिया हो सकती है ।*

— *सोच भटकाव है और सोच निर्माण का दीप भी । उसे मन से मत जोड़िए ।*

— *मन तो भ्रम, विभ्रम, वेग, आवेग, आरोहण, अवरोहण, श्रम, विश्रम, शांत, अशांत और जीवन की नियति का स्थायी भाव अथवा संचारी-भाव सभी कुछ हो सकता है; हो सकता है वह कुछ भी न हो ।*

— *मन रेगिस्तान और मधु-मरीचिका के बीच पालने में झूलता हुआ जीवन-सुरभि है । मन को सोच के साथ जोड़कर अपने दिवालियापन का परिचय देना उचित नहीं है ।*

राजेन्द्र अवस्थी



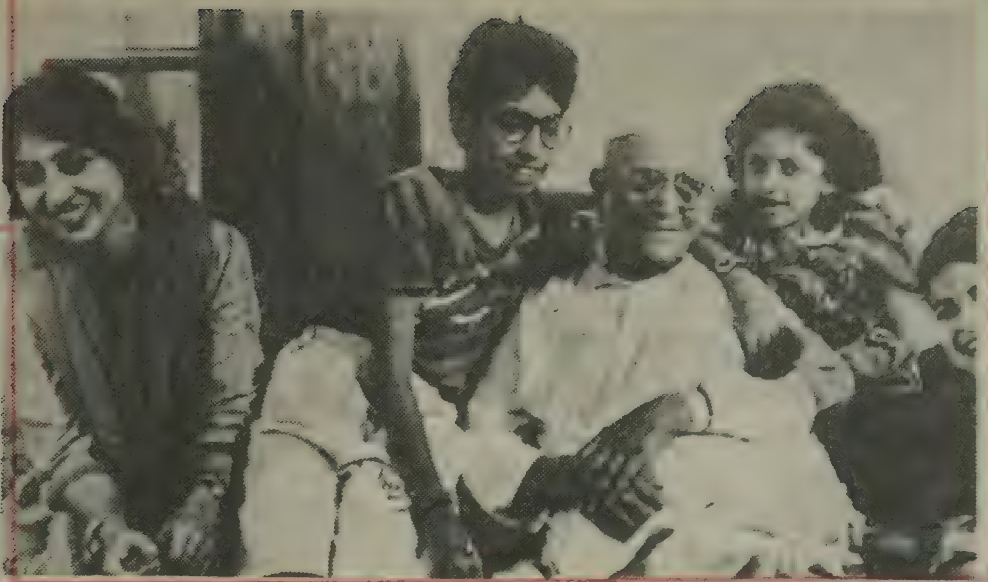
हमारे मनीषियों के मन में सदियों पहले जीवन के प्रति आस्था और विश्वास के मूल्य रहे हैं, तभी तो उन्होंने कहा था,

देखें शत शारदों की शोभा
जिएं सुखी सौ वर्ष
देखें नव कलरव में
सौ वसंत के हर्ष !

सौभाग्य से वसंत के महीने में ही मोरारजी भाई ने सौवें वर्ष में प्रवेश कर यह दिखा दिया कि आदमी अपने आचरण और दिनचर्या से व्यतीत के सपने को सच कर सकता है, मोरारजी भाई को मैं शुभकामना नहीं अपना प्रणाम निवेदित करता हूं ।

मोरारजी भाई को बहुत पास से वर्षों देखने-जानने-पहचानने का मुझे सौभाग्य मिला था । वे जितने विनम्र हैं, उतने ही अक्खड़ भी । कभी किसी के सामने वे झुके नहीं । मुझे याद है, उपप्रधानमंत्री के रूप में वे ५, राजेन्द्र प्रसाद रोड में रहा करते थे । माह में एक बार उनके यहां दिल्ली के साहित्यकार मिला करते थे । इसका आयोजन लगातार मैंने ही किया इसलिए हर घटना का दिव्य दृष्टा हूं । मोरारजी भाई अकसर पी के लान में सबके साथ बराबरी से बैठते थे और साहित्य, समाज तथा राजनीति से संबंधित अनेक विषयों पर चर्चाएं होती थीं । सबको खुले रूप से चर्चा करने का अधिकार था । मोरारजी भाई में विशेषता यह थी कि वे घड़ी के कांटे को देखकर ठीक पांच बजे लान में आकर बैठ जाते थे । हमारे साहित्यकार बंधु अपनी आदत के अनुस कभी समय पर नहीं आये, लेकिन यदि दो-तीन लेखक भी आ गये हैं तो चर्चा शुरू ह जाती थी । एक बार एक अजीब घटना हो गयी । मोरारजी भाई ने गांधीजी के साथ ब क्षणों के संस्मरण सुनाने शुरू कर दिये । हमारे साहित्यकार धीरे-धीरे आते गये । लगभग आधा घंटे में पचास-साठ लेखक पहुंच गये थे । मोरारजी भाई ने जो संस्मरण बताने शुरू किये तो बस, बोलते ही चले गये ।

मुझे याद आता है, देर से आये मोहन राकेश ने मोरारजी भाई को रोककर कहा "हम आपके यहां गांधीवाद का घोंटा सुनने नहीं आते हैं ।" वास्तव में यह मोहन राके की ज्यादती थी, क्योंकि देर से वे ही आये थे । मोरारजी तो अपनी बात बहुत पहले से



कह रहे थे । मोरारजी भाई आपा खो बैठे और जोर से बोले, ''यदि आप समय के पाबंद नहीं तो आपको अधिकार नहीं है कि आप मुझे बाध्य करें कि कुछ मैं कह रहा हूं, उसे अधूरा छोड़ दूं ।'' इस पर मोहन राकेश ने फिर कुछ कहा । यहां तक कह गये कि आप यह मत समझ लीजिए कि आप उपप्रधानमंत्री हैं, इसलिए हम आपकी चाटुकारिता करने आते हैं । बात जरूरत से ज्यादा बढ़ गयी थी । मोरारजी भाई ने मुझसे उसी समय पूछा, ''ये कम्युनिस्ट तो नहीं हैं ?'' मैंने कोशिश की कि इसका जवाब न देकर माहौल शांत करूं । मैंने विनम्रता से कहा, ''मोरारजी भाई, अब सभी लेखक आ चुके हैं । हम आज के निर्धारित विषय पर बातचीत शुरू करें ।'' मोरारजी भाई अपनी बात पर अड़े रहे । फल यह हुआ कि वह लेखकों की अंतिम मीटिंग सिद्ध हुई । न मोरारजी भाई झुकने को तैयार थे, न लेखक बंधु ! मोहन राकेश का साथ देनेवाली वहां कई आवाजें उभरने लगीं । अंत में यही हुआ कि मोरारजी भाई के साथ मैं भीतर चला गया । फिर उन्हें वहीं छोड़कर मैंने सभी मित्रों को चाय-नाश्ता कराया । मोरारजी भाई के इस अक्खड़पन को मैं कभी नहीं भूल सकता । मैंने मोरारजी भाई से इतना जरूर कहा कि ये सब लेखक आपके मेहमान हैं और आपके बुलाने पर आये हैं तो आपको धैर्य रखना चाहिए । उनका टका-सा जवाब था, ''मैंने उन्हें नहीं बुलवाया । पत्र तो आपने अपने हस्ताक्षर से भेजे ।''

मेरा खयाल है, पाठक आगे का पूरा प्रकरण समझ गये होंगे । उसे विस्तार से लिखना एक लेख का विषय है ।

एक दूसरी घटना रघुवीर सहाय को लेकर । रघुवीर सहाय को फोर्ड फाउंडेशन का निमंत्रण मिला था लेकिन वित्त मंत्रालय ने, जो मोरारजी भाई के पास था, उन्हें जाने की इजाजत नहीं दी । रघुवीर सहाय ने मुझसे आग्रह किया कि मोरारजी भाई से मैं उन्हें मिलवा दूं । मेरा सौभाग्य रहा है कि मोरारजी भाई से हमेशा बिना 'एप्वाईंटमेंट' लिए मिला हूं । यहां तक कि जब वे प्रधानमंत्री थे, तब भी मैं धड़ल्ले से उनके कार्यालय में पहुंच जाता था । अपनी आदत के अनुसार मैं रघुवीर सहाय को लेकर मोरारजी भाई के घर पहुंच गया । उन्होंने बहुत संयम से पूरी बात सुनी और फिर रघुवीर सहाय से कहा

कि फोर्ड फाउंडेशन के डॉयरेक्टर से कहिए कि वे मुझसे मिल लें । फोर्ड फाउंडेशन के डॉयरेक्टर का मिलना विनाशकारी सिद्ध हुआ । उन्होंने डायरेक्टर से कहा, ''यू पैक अप इमीजिएटली एंड लीव दिस कंट्री विदिन थ्री डेज ।'' बहुत-कुछ कहने के बावजूद फोर्ड फाउंडेशन के डॉयरेक्टर को भारत छोड़ना पड़ा और रघुवीर सहाय विदेश-यात्रा नहीं कर सके । मुझे लगता है, फोर्ड फाउंडेशन की गतिविधियों के बारे में मोरारजी भाई को पूरी जानकारी थी । अन्यथा वे इतना सख्त कदम कभी नहीं उठाते ।

मेरी यादों के दराज में बहुत कुछ है । अंत में एक छोटा-सा प्रसंग देकर अपनी बात खत्म करूंगा ।

मोरारजी भाई लगातार दस वर्षों तक 'नंदन' (बाल पत्रिका) में बच्चों के प्रश्नों के उत्तर देते रहे । 'ज्ञान वार्ता' शीर्षक स्तंभ में वे ये उत्तर लिखते । मोरारजी भाई प्रत्येक प्रश्न का उत्तर अपने हाथ से लिखते थे । मैं उन दिनों 'नंदन' का संपादक था । बातचीत के दौरान हमारे संस्थान के अध्यक्ष श्री कृष्णकुमारजी बिरला ने मुझसे पूछा कि तुम मोरारजी भाई को पारिश्रमिक देते हो ? मैंने कहा, 'नहीं' न उन्होंने कभी पारिश्रमिक मांगा । इतने बड़े आदमी को पारिश्रमिक देना ठीक नहीं समझा । वैसे भी मोरारजी भाई जो कुछ पैसा लेते थे, वह गुजरात विद्यापीठ को चला जाता था । श्री बिरलाजी ने मुझसे कहा कि उन्हें पारिश्रमिक देना चाहिए । पारिश्रमिक की एक राशि भी हमने तय कर ली । मैंने मोरारजी भाई को यह सूचना दी और कहा कि हम इस अंक से आपको पारिश्रमिक भी देंगे । उन्होंने तपाक से उत्तर दिया, ''मैंने पारिश्रमिक नहीं मांगा । न मैं चाहता हूं । लेकिन यदि देना ही है तो जिस अंक से मैं लिख रहा हूं, उस अंक से पारिश्रमिक देना पड़ेगा ।'' मैं सन्नाटे में आ गया लेकिन मैं जानता था कि उनके कहने में पूरी ईमानदारी है । दूसरे दिन ही कई वर्षों का पारिश्रमिक जोड़कर एक चेक हमने तैयार किया और मैंने स्वयं जाकर मोरारजी भाई को वह चेक दे दिया । यह बात इसलिए भी मुझे याद रहेगी कि उन दिनों हमारे संस्थान में हड़ताल चल रही थी और इसलिए चेक मुझे बनाना पड़ा और हस्ताक्षर उस समय के जनरल मैनेजर श्री जी.एन. साही से लेने पड़े । यह भी एक मिसाल है मोरारजी भाई के चरित्र की !

कुछ समय पहले बंबई के नये घर में जिसका नाम सारंग है, मैं उनसे मिला था । इस भेंट के बारे में मैं पहले भी लिख चुका हूं । इस समय इतना लिखना काफी है कि शरीर से अत्यंत क्षीण होने के बाद भी मोरारजी भाई में गजब की जीवनी शक्ति है । यदि वे एक दशक और पूरा कर लें तो मुझे आश्चर्य नहीं । ईश्वर उन्हें दीर्घायु करे और वे इच्छा मृत्यु के धनी भीष्म पितामह बनें ।

—राजेन्द्र अवस्थी

सोनिया का भर्राया हुआ गला

मत प्रधानमंत्री बनो राजीव !

डॉ. पी. सी. अलेक्जेंडर भारत सरकार के अनेक महत्त्वपूर्ण पदों पर रहे हैं । ब्रिटेन में भारत के पूर्व उच्चायुक्त व तमिलनाडु के पूर्व राज्यपाल भी रहे । इस समय डॉ. अलेक्जेंडर महाराष्ट्र के राज्यपाल हैं । १९८१ से लेकर १९८५ तक उन्होंने इंदिरा गांधी तथा राजीव गांधी, इन दोनों प्रधानमंत्रियों की प्रमुख सचिव के रूप में सेवा की । वह गांधी परिवार के सबसे निकट रहे । इंदिरा गांधी की हत्या से लेकर बाद तक के घटनाक्रमों का उन्होंने अपनी पुस्तक 'द पेरिल्स ऑव डेमोक्रेसी' में वर्णन किया है । पाठकों के लिए प्रस्तुत है उसी के महत्त्वपूर्ण अंश :—

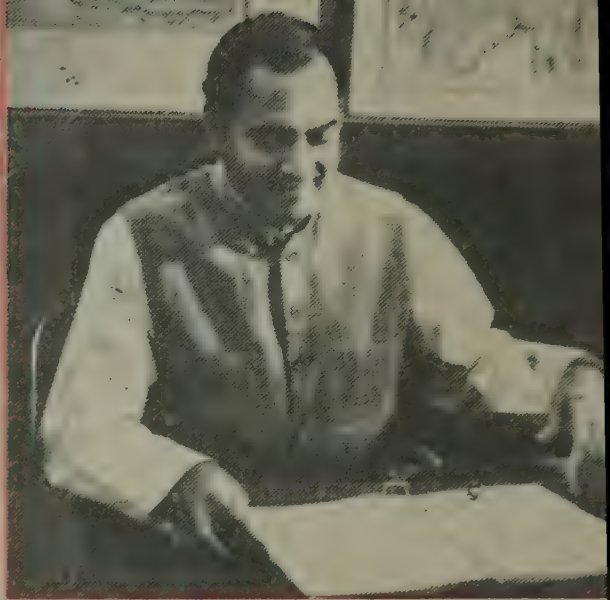
२९ अक्तूबर का दिन । इंदिरा गांधी दिल्ली से उड़ीसा के लिए रवाना हुईं । ३० को वह रात ८.४५ पर दिल्ली लौटीं । मैंने उनसे रात ९.१० पर एक सफदरजंग रोड पर मुलाकात की । यही मुलाकात मेरी उनसे आखिरी मुलाकात के रूप में भी तब्दील हो गयी । उस दिन भी वह वही संतरे के रंगवाली साड़ी में थीं । यही साड़ी उन्होंने उस दिन भी पहन रखी थी जिस दिन उड़ीसा में एक जनसभा में उन्होंने ऐलान किया था कि मेरे रक्त की प्रत्येक बूंद देश के लिए होगी । इन पंक्तियों ने और उनके ओजस्वी भाषण ने लाखों लोगों के दिलों को झकझोर दिया था, और यही पंक्तियां जनमानस के दिलो-दिमाग में छा गयीं, जिन्होंने उस दिन दूरदर्शन के परदे पर उनका भाषण सुना ।

उस रात वह कुछ थकी लग रही थीं । उन्हें यह कतई पसंद नहीं था कि कोई उनसे कहे कि आप आज कुछ थकी लग रही हैं । वह कभी अपनी थकावट का इजहार भी नहीं करती थीं । किंतु उस रात उन्होंने मुझसे कहा कि गरम मौसम में कई स्थानों पर कार और हेलीकॉप्टर की लगातार यात्रा से वह कुछ थकावट महसूस कर रही हैं ।

मैंने भी उन्हें कुछ थोड़ा चिंतित पाया । उस दिन सुबह एक कार जिसमें प्रियंका और राहुल बैठे थे, वह दिल्ली में ही किसी अन्य कार से भिड़ गयी थी । मुझे लगा कि शायद इस घटना से वह कुछ विचलित हैं ।

मैंने उन्हें बताया कि मैं परमाणु ऊर्जा आयोग

की बैठक में भाग लेने के लिए अगले दिन सुबह बंबई के लिए रवाना हो जाऊंगा । उन्होंने आर. के. धवन को बुलाया और कहा कि वह कल साउथ ब्लाक कार्यालय नहीं जा पाएंगी । अचानक उन्होंने निर्णय किया कि ३१ को वह आराम करेंगी ।



सर ! बुरी खबर है

आयोग के अध्यक्ष राजा रामन्ना ने बैठक में हमारा स्वागत करते हुए मजाकिया लहजे में टिप्पणी की कि मुझे कैबिनेट सचिव तथा प्रमुख सचिव दोनों का स्वागत करते हुए बेहद खुशी है । पर इसी के साथ वे दिल्ली में अनुपस्थित रहेंगे और इसका मतलब यह है कि अब देश की स्थिति शांतिपूर्ण हो गयी है । किंतु रामन्ना ने बहुत शीघ्र यह टिप्पणी की थी । कार्यक्रम के आयोजन में लगा एक व्यक्ति महत्त्वपूर्ण संदेश लेकर मेरे पास आया और बोला कि दिल्ली से आपके लिए एक बेहद जरूरी फोन है । दिल्ली से मेरा व्यक्तिगत सहायक फोन पर था । उसने बड़े दर्द भरे स्वर में कहा, सर मेरे पास बड़ी बुरी खबर है । प्रधानमंत्री को कुछ मिनट पहले ही गोली मार दी गयी है और उन्हें मेडिकल संस्थान ले जाया गया है । उनकी हालत अत्यंत गंभीर है ।

कुछ ही मिनटों के भीतर रामन्ना के कार्यालय ने हमारे लिए एक हेलीकॉप्टर की व्यवस्था की, ताकि हम एयरपोर्ट तक पहुंच सकें । मैं यह सोचकर बड़ा विचलित हो रह[ा] था कि राष्ट्रपति, गृहमंत्री, वित्तमंत्री और यहां तक कि राजीव गांधी भी दिल्ली से बाहर हैं अपना नियम ही पालन न कर पाने के अपराधबोध से मेरा मन स्वयं बैठा जा रहा थ[ा]। एयरपोर्ट पर पहुंचने पर भी हम इंदिरा गांधी [की] हालत की ताजा जानकारी प्राप्त कर पाने में विफल रहे । वास्तव में प्रधानमंत्री के चिकि[त्सा] दल के डॉक्टरों के अलावा उनकी हालत के बारे में जानकारी किसी बाहरी डॉक्टर को न[हीं] थी । उड़ान के आधे मार्ग पर कैप्टन हमारे प[ास] आया और बोला कि दिल्ली से यह संदेश है कि चिकित्सा कार्य प्रगति पर है ।' इसका तात्पर्य यह था कि सर्जरी का काम चल रहा था । हमने सोचा कि अब उनके जीवन का खतरा नहीं होगा और उससे वह बाहर निक[ल] आयी होंगी । पर आधे घंटे के बाद कैप्टन [फि]र आया और बड़े धीमे स्वर में भर्राये गले से बोला, 'सर ! दिल्ली से यह संदेश है कि स[ब] कुछ हाथ से निकल गया है ।' इसका अर्थ [यह] था कि वह अब हमारे बीच नहीं रहीं । दिल्[ली] में उतरने के पहले कैप्टन ने हमें यह भी बता[या] कि प्रधानमंत्री पर उनके सुरक्षाकर्मियों ने ही गोलियां चलायीं ।



अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के
र हजारों लोग एकत्र थे । उनकी आंखों में
ू थे । उन्हें तब तक यह नहीं पता था कि
सब कैसे हुआ । इंदिरा गांधी की मृत्यु की
र की तब तक घोषणा नहीं की गयी थी ।
तक कि पार्टी के वरिष्ठ नेता और अन्य
कारी जो संस्थान के भवन के भीतर प्रवेश



ाये थे, उन्हें भी तब तक चिकित्सा दल के
त्र ने कुछ नहीं बताया था ।

उपराष्ट्रपति वेंकटरामन अपराह्न २.३० पर
। वह सुबह भी संस्थान आ चुके थे तथा
पता था कि इंदिरा गांधी की मृत्यु हो चुकी
जी. पार्थसारथी भी, जो पहले भी संस्थान
चुके थे, पहुंच गये

सत्ता में शून्यता

म सत्ता में एक शून्यता का सामना कर रहे
राष्ट्रपति देश से बाहर थे । प्रधानमंत्री की
के साथ ही उनके मंत्रिमंडल की भी अपनी
निकता खत्म हो गयी थी । राजनीतिक
तों की मंत्रिमंडलीय समिति के कुछ वरिष्ठ
ों में गृहमंत्री पी. वी. नरसिंह राव, वित्त
प्रणव मुखर्जी-जैसे पार्टी के वरिष्ठ सदस्य
ल्ली से बाहर थे । यदि वे दिल्ली में होते
धानमंत्री की मृत्यु के बाद मंत्रियों के रूप में
वे स्थिति पर नियंत्रण कर सकते थे । कांग्रेस शासित राज्यों के अधिकांश मुख्यमंत्री दिल्ली पहुंच चुके थे और आपस में वे विचार-विमर्श कर रहे थे । केंद्रीय मंत्रियों में शंकरानंद तथा शिवशंकर ऑपरेशन कक्ष के बाहर बरामदे में हमारे साथ शामिल हो गये ।

अंतरिम प्रधानमंत्री

उपस्थित लोगों में आपस में ही यह फुसफुसाहट शुरू हो गयी थी कि क्या कोई अंतरिम प्रधानमंत्री बनेगा ।

पहले की बात है जब दो पूर्व प्रधानमंत्रियों की प्रधानमंत्री पद पर रहते हुए मृत्यु हुई तब अंतरिम प्रधानमंत्री के रूप में गुलजारी लाल नंदा को शपथ दिलायी गयी थी क्योंकि वह केंद्रीय मंत्रियों में उस समय सबसे वरिष्ठ थे । इंदिरा गांधी के मंत्रिमंडल में हालांकि स्पष्ट वरिष्ठताक्रम का कोई विभाजन नहीं किया गया था । पर प्रणव मुखर्जी को केंद्रीय मंत्रिमंडल की बैठकों के अनुमोदन के लिए तथा शिष्टाचार के अन्य कार्यों में सबसे वरिष्ठ माना जाता था । इसलिए यदि किसी को अंतरिम प्रधानमंत्री बनाया जाना है तो उन्हें शपथ दिलायी जा सकती थी । फिर भी, जो लोग उपस्थित थे, उनमें कुछ का दृढ़ विचार था कि अंतरिम प्रधानमंत्री नहीं बनाया जाना चाहिए तथा राजीव गांधी को ही, वह जैसे ही दिल्ली पहुंचे, तत्काल प्रधानमंत्री के रूप में शपथ दिलायी जानी चाहिए । उपस्थित दो केंद्रीय मंत्रियों का विचार था कि अंतरिम व्यवस्था टाली जानी चाहिए । वे इस वजह से एक सप्ताह के लिए भी प्रणव

मुखर्जी को अंतरिम प्रधानमंत्री बनाये जाने के विचार के विरोध में थे। प्रणव ने भी अंतरिम व्यवस्था के संबंध में कुछ नहीं कहा।

सोनिया मना रही थीं

जब सभी इस बात में राजी थे कि राजीव का निर्णय इस संबंध में बहुत महत्त्वपूर्ण है तो मैंने कहा कि मैं राजीव से बात करूंगा। मैं कमरे के भीतर गया। मैंने भीतर जाकर जो दृश्य देखा वह अत्यंत दुखद था। राजीव शोक में डूबे थे। राजीव उस कमरे के कोने में सोनिया को दोनों हाथों से पकड़े हुए थे।

राजीव ने मुझे तत्काल देखा कि मैं उनके पीछे खड़ा हूं और यह सोचा कि मैं उनसे बातचीत का उत्सुक हूं। मैंने निर्णय किया कि मैं सोनिया से उन्हें अलग करने की कोशिश करूं। पर वह सोनिया से अलग हुए। उनकी आंखों में इस आशय के भाव थे कि वह मान गयीं हैं।

गांधी परिवार के निकट रही कुछ महिलाएं भी उस कमरे में आयीं। उन सबके बीच मुझसे बातचीत मुश्किल होते देख राजीव मुझे छोटे बाथरूम की ओर ले गये। राजीव तत्काल मेरी बात से सहमत हो गये कि राष्ट्रपति के आने तक सही और उचित प्रक्रिया की प्रतीक्षा की जाए और उनकी संस्तुति के साथ ही शपथ ग्रहण की जाए।

इस्तीफे की पेशकश

व्यक्तिगत रूप से जहां तक मेरी बात है तो ३१ अक्तूबर १९८४ की सुबह मेरे जीवन का एक महत्त्वपूर्ण अध्याय अचानक खत्म हो गया था। मैंने शपथ ग्रहण के एक दिन बाद नये प्रधानमंत्री से कहा कि इंदिरा गांधी द्वारा प्रमुख सचिव के रूप में की गयी मेरी नियुक्ति उनकी व्यक्तिगत नियुक्ति थी और मैं अपना इस्तीफा उन्हें सौंप रहा हूं ताकि वह खुद अपना सचिव चुन सकें। बाद में मैंने लिखित इस्तीफा उन्हें सौंप दिया। किंतु प्रधानमंत्री ने मुझसे बड़ी आत्मीयता से कहा कि 'मैं चाहता हूं कि आप प्रमुख सचिव के रूप में कार्य करते रहें। राजीव के साथ काम करते हुए भी मुझे कोई खास परिवर्तन नहीं लगा क्योंकि मैं उन्हें तब से भली-भांति जानता था जब से मैंने उनकी मां के सचिवालय में काम करना शुरू किया था।

प्रधानमंत्री और शिष्टाचार

३ नवंबर की बात है। उस दिन काफी रात हो चुकी थी। प्रधानमंत्री ने कुछ जरूरी कार्य के लिए मुझे फोन किया। एक सवाल के उत्तर में मैंने कहा, 'यस, सर !' इन बीते दिनों में मैं उन्हें 'राजीव' के नाम से ही संबोधित करता था। उस रात पहली बार मैंने उन्हें 'सर' कहा। दूसरी तरफ कुछ क्षण की चुप्पी रही और फिर राजीव ने मुझसे बड़ी कोमल एवं मधुर आवाज में कहा, 'डियर अलेक्जेंडर ! आप मुझे 'सर' क्यों कह रहे हैं ? आपको ऐसा नहीं करना चाहिए।'

मैंने कहा, '३१ की शाम से आप प्रधानमंत्री हैं और मैं आपका सचिव हूं। मुझे अब या तो मि. प्राइम-मिनिस्टर कहना चाहिए या 'सर'। मेरे लिए मि. प्राइम-मिनिस्टर शब्द बेहद औपचारिक था। इसलिए मैं 'सर' कहना ज्यादा पसंद करूंगा। फिर कुछ क्षणों की चुप्पी रही और इसके बाद उन्होंने मुझसे बातचीत शुरू की। शायद राजीव ने यह तथ्य स्वीकार कर लिया कि शिष्टाचार का भी प्रधानमंत्री के जीवन में एक अपना अलग स्थान है। ●

वैदिक संस्कृति की जीवन यात्रा-१

अभी तक पाठकों ने उपनिषद् की कथाएं पढ़ी हैं । संस्कृति के प्रारंभिक सोपान को चित्रित करनेवाली कथा वेद, ब्राह्मण ग्रंथों एवं पुराणों के स्त्रोतों पर आधारित है । समस्त वैदिक ग्रंथों में नीरस दर्शन और विज्ञान के जटिल सूत्रों का संगुफन है । पाठकों के लिए कथा रूप में प्रस्तुत करने एवं सरसता बनाये रखने के लिए कहीं-कहीं काल्पनिकता का प्रश्रय लेना अनिवार्य प्रतीत हुआ है । प्रस्तुत है वेद पुराण में वर्णित मानव संस्कृति के विकास के पूर्व की 'कथा' और देवों-असुरों की जीवन यात्रा :

सहजन्या की मुक्ति

• डॉ. सुधा पां

ऋतुपर्व का चिरप्रतीक्षित दिन समीप आ गया था । असुरों की राजधानी चतुर्दिक नव वधू की भांति सुसज्जित की जा चुकी थी । हरी भरी चादर ओढ़े लहलहाती कृषि नवयौवना-सी इठला रही थी । कुछ खेतों से फसल कट चुकी थी । दानों को भूनकर बांटने की तैयारी हो रही थी ।

केलिविलास का प्रमुख उत्सव ऋतुपर्व का वह दिन ! मार्गों पर विपुल कौलाहल बढ़ चला । संपूर्ण जनसमूह गढ़ के उसी ओर एकत्रित होने लगा था, जहां खेल का मैदान बनाया गया था । लंबे-चौड़े मैदान के चारों ओर मिट्टी का ढाल था, जहां से दर्शक अंदर की क्रीड़ाओं का आनंद ले रहे थे । एक तरफ पाषाण शिला के कक्ष में व्याघ्रचर्म पर असुरों के राजा वृत्रासुर बैठे थे और क्रीड़ा करनेवाले असुरों को प्रोत्साहन दे रहे थे तो दूसरी तरफ आसपास दूसरे कुलों के अधिपति भी विराजमान थे !

महिष पर आरूढ़ एक युवक राजधानी की ओर बढ़ा जा रहा था । श्यामल कांति, विशाल नेत्र, सुडौल नासिका और अपूर्व लावण्यमय वह युवक हठात् दूसरों को अपनी ओर आकृष्ट कर रहा था । पथ पर सभी लोग आश्चर्य से उसी युवक की ओर देख रहे थे ।

"पता नहीं यह किस कुल का पुरुष है ? शत्रु है या मित्र है ?" एक असुर ने दूसरे के कान में फुसफुसाते हुए कहा ।



"असुराधिपति वृत्र से शत्रुता करने का किसे
हस है ? हमारे महाराज का यश, वैभव और
ाप सर्वत्र फैला है । उसी को देखने लोग
-दूर से आते हैं"—दूसरे असुर ने उत्तर
या ।

लेकिन इसका लावण्य भी तो कम नहीं ।
ो हमारी असुर स्त्रियां उसकी ओर कैसी
धदृष्टि से निहार रही हैं । देखना हमारी
णियां अवश्य उसे नृत्य में साथी बनाने को
ंठित रहेंगी । एक असुर व्यंग्य कर रहा
। देखो उसने कैसी मणियां धारण की हैं,
ी तो हमारे यहां नहीं होतीं !

युवक इन सब बातों से अनभिज्ञ, मार्ग में
ी बैलगाड़ियों की रेखा को पार कर गढ़ के
तक पहुंच गया था । उसे देख एक असुर ने
कर द्वारपाल से कुछ कहा और कुछ पल
वही असुर द्वारपाल के साथ अंदर चला
।

"सेनापति की जय हो ।" युवक असुर ने
"वरुण राज तुम पर कृपा करें" सुसज्जित
में विराजमान सेनापति कालिकेय का स्वर
था । "मैं असुर राज की सेवा में उपस्थित होने
जा रहा हूं, कोई विशेष बात हो तो कहो चर ।"

सेनापति, गढ़ में इस समय एक नाग ने
प्रवेश किया है ।

सेनापति चिंतित हो उठे । क्षणभर मौन
रहकर बोले—"नाग ! वह किस कुल का है ।
तुमने उसे वहीं रोक क्यों नहीं दिया ।"

"आज ऋतुपर्व का दिन है । असुराधिपति
के आदेश से आज सब स्वतंत्र हैं । किसी पर
कोई प्रतिबंध नहीं है । यहां तक कि आज असुर
स्त्रियां भी आमोद-प्रमोद मनाने को स्वतंत्र हैं ।
असुरराज ने यह उत्सव और ये नियम इसीलिए
बनाये थे कि इस धरती पर रहनेवाले सभी प्राणी
मिल-जुलकर रहें और असुर सभ्यता का प्रताप
देखें । शत्रु विचलित हों और मित्र समृद्ध हों ।
अधिक से अधिक संख्या में नाग, गंधर्व, यक्ष,
किरात, पिशाच असुरधर्म को स्वीकारें, वरुण के
उपासक बनें । युवक ने सेनापति से कहा ।

"ठीक है चर, तुम उसे देर तक बाहर रोक
रखो । उसे इस बात का पता न चले कि हम
वृत्रासुर से इस बात पर विचार करने जा रहे हैं",

यह कहते हुए सेनापति लंबे-लंबे पग बढ़ाते हुए असुरराज के कक्ष की ओर चल पड़े ।

इस समय कक्ष के सामने दो असुरों में मल्लयुद्ध हो रहा था । बलशाली योद्धा दो विशाल पर्वतों की भांति आपस में भिड़े हुए थे । प्रखर सूर्य के ताप से उनका सारा शरीर पसीने से नहा गया था । सुदृढ़ मांसपेशियां मानो संपूर्ण शक्ति के साथ बाहर आने को व्यग्र थीं । 'असुराधिपति की जय हो' कहते हुए सेनापति ने कक्ष में प्रवेश किया ।

"अरे सेनापति ! आज तुमने बड़ी देर कर दी । ठीक है आलस्य दूर करने के लिए इन दोनों में जो विजयी हो, उसके साथ तुम्हारा युद्ध होना चाहिए ।"

"असुराधिपति की जो आज्ञा" कहकर अन्यमनस्क भाव से सेनापति ने पुनः विनम्र भाव से निवेदन किया—"असुरराज गढ़ में एक नाग आया है ।"

"अवश्य अहिराज का चर होगा । उन्होंने हमारे लिए भेंट भेजी होगी । अहिराज व नागों ने हमारी अधीनता स्वीकार कर ली" असुराधिपति बोले ।

अचानक क्रीड़ागार में भीषण कोलाहल होने लगा । विजयी असुर पराजित हिरण्यनाभ की छाती पर पैर रखकर हर्षध्वनि कर रहा था । दर्शक आनंदित होकर उसका अभिनंदन करने को आतुर हो उठे ।

वृत्र ने संकेत कर विजयी असुर को अपने समीप बुलाया । पास रखे भांड से चषक में वारुणी भरकर पुरस्कार स्वरूप उसे प्रदान किया । विजयी असुर गदगद हो उठा ।

क्रीड़ागार में पुनः आनंद की लहर दौड़ने अब मल्लखंभ क्रीड़ा शुरू हो चुकी थी नारियां भी उत्साह से इस क्रीड़ा में सम्मि हुई ! सहसा एक चर ने कक्ष में प्रवेश कि "असुरराज की जय हो ! एक नाग महार दर्शनों के लिए द्वार पर प्रतीक्षा कर रहा है

"उसे उपस्थित किया जाए" वृत्र ने क्री का आनंद लेते हुए कहा ।

महान तेजस्वी, पुष्ट देह और प्रबल आत्मविश्वास से भरे व्यक्तित्ववाले वृत्र के पहुंचकर, वह आगंतुक पलभर को स्तब्ध ठिठक गया । किंतु दूसरे ही क्षण अपने क संयत कर उसने प्रणाम करते हुए कहा—"असुरराज की जय हो । मुझे अ ने भेजा है ।"

"महान वरुण तुम पर कृपा करें । अहि कुशल से तो हैं ।" वृत्र ने पूछा ।

"आपकी अनुकंपा है, महाराज ।" यह कहते हुए उसने उत्तरीय से बहुमूल्य मणि निकाली और कहा—"असुरराज के लिए में यह बहुमूल्य मणि भेजी है ।" मणि पर की किरणें पड़ रही थीं । द्विगुणित किरणों वह चमचमाती मणि सभी के नेत्रों को चक करने लगी ।

"पर यह मणि अहिराज को कहां से मिली ?"

"इसे एक पणि से क्रय किया था असुरराज ! दक्षिण पूर्व के घने वनों में ये मणियां भूमि पर मिलती हैं । उस ओर के कुलों में ये मणियां बहुत हैं ।"युवक ने उ से कहा ।

"असुरराज ! अहिराज ने एक विशेष संदेश लिए भेजा है मुझे ।"

"निसंकोच कहो ।"

"अहिराज ने कहा है कि 'उत्तर में जिन देवों आपने आश्रय दिया है, उनमें विद्रोह के क्षण पनपने लगे हैं । अतः असुरराज उन्हें के भगा दें ।'

वृत्र उत्तेजना से भर गया । मेघ गर्जना की कर अट्टहास करते हुए बोला—"अहिराज देवों से घबड़ा गये, जो असुर वर्ग का ही कुल हैं जो गायें और अश्व पालते हैं । कुछ षि करना भी सीख ली है । फिर भी वे कृषि लिए तो हम पर ही निर्भर हैं । वे भी शिकार ते हैं । हमारे ही समान वरुण और अग्निपूजा ते हैं । बिलकुल असभ्य ! केवल एक बात कुशल हैं वे, रमण में ।" असुरराज ने गर्व से नी दृष्टि चर पर जमा दी । असुरराज अधिक रापान के कारण अहंकार से अनर्गल प्रलाप ते जा रहे थे ।

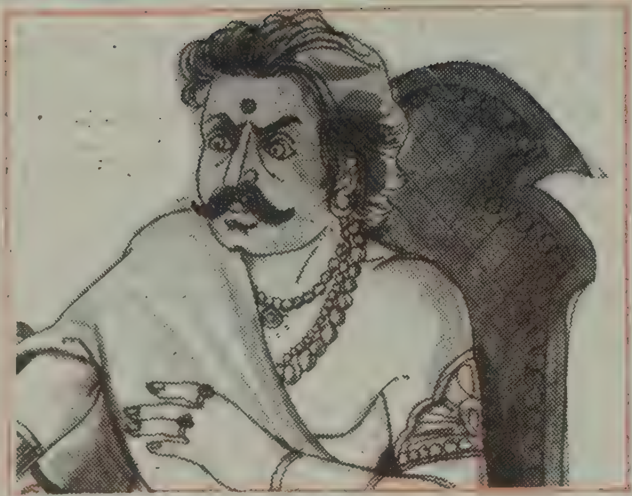
"चर ! अहिराज से कहना देवों की ओर से बिलकुल चिंता न करें...असुरों के रहते ताओं का आधिपत्य संभव नहीं ।"

'सर्वनाग ! सुना है नाग भी वर्ष में कई सव मनाते हैं...' असुरराज अब प्रसंग बदल रु थे ।

"हां ! महाराज ! कुछ उत्सव धार्मिक होते कुछ क्रीड़ोत्सव, युवकों के साथ युवतियां भी म्मलित होती हैं ।"

"अगले वर्ष ऋतुपर्व में तुम्हारे यहां की ड़ाओं को भी स्थान दिया जाएगा ।" वृत्र ने नाओं में रुचि लेते हुए कहा ।

सर्वनाग गर्व से भर उठा । उत्साह में वह



कहता गया—"सबसे रोमांचक क्रीड़ा मत्त महिष के साथ क्रीड़ा होती है । यह हमारी प्रमुख क्रीड़ा है । मेरी पत्नी स्वयं प्रसिद्ध महिषमर्दिनी है । क्रीड़ागार में मत्त महिष के सामने कटि में छोटा वस्त्र धारण कर वह उतर पड़ती हैं और नाना मुद्राओं से क्रीड़ा नृत्य करते हुए महिष को खिझाती है । देहसुषमा और चपलता से वह सारे नगर को विस्मित कर देती है । काफी देर तक महिष से क्रीड़ा करने के बाद उसे बांधकर मातृदेवी के सामने बलि देती है । सारा नगर इस क्रीड़ा को देखने उमड़ पड़ता है ।

कक्ष में उपस्थित सभी सर्वनाग के इस विस्मयकारी खेल के बारे में सुनकर स्तब्ध थे । तभी 'असुरराज की जय हो' कहते हुए एक तरुणी ने प्रवेश किया, उसके साथ दो अन्य युवक भी थे ।

अनावृत्त यौवन, विद्युतप्रभामयी काया, नीलमणी रक्ताभ नेत्र, मदिरारंजित अधर, गहन केश राशि और क्षीण कटि पर शोभायमान मेष चर्म...उस तरुणी की छवि को वृत्र अपलक देखते रह गये ।

यह सहजन्या अप्सरा है, असुरराज ! हम गंधर्व हैं । सोम बेचकर लौट रहे थे । मार्ग में

उत्सव देखकर रुक गये हैं । उनके हाथ में एक काष्ठ यंत्र था ।

"मैं सहजन्या अप्सरा नृत्य दिखाने की अनुमति चाहती हूं..." उन्नत यौवन तरंगित हो उठा था ।

वृत्र मुग्ध हो चुका था, नेत्रों के संकेत से उसने नृत्य करने की अनुमति दी ! गंधर्व काष्ठ यंत्र बजाने लगे ।

सूचीभेध नीरवता व्याप्त हो गयी । कुछ क्षणों तक अप्सरा नृत्यमग्न थी । लंबे केश बिखरकर मुख मंडल के सौंदर्य को और अधिक सुंदर बना रहे थे । अनावृत्त देहवल्लरी, उन्मुक्त केशराशि में बिजली के समान थिरकने लगी । अद्‌भुत सुर बंध गया था । तन्मय होकर नृत्य करती अप्सरा के वस्त्र कब शिथिल हुए उसे ज्ञात नहीं हुआ । नृत्य सम पर आया... । सहजन्या ने भूमि पर पड़ा कटि वस्त्र उठाया । मुक्त कुंतल राशि संवारी और मुग्ध भाव से असुरराज को नमन किया ।

"अति सुंदर ! असुरराज करतल ध्वनि कर उठे और सर्वनाग की ओर मुड़े...'सर्वनाग ! आज हम प्रसन्न हैं तुमने हमें नयी सूचनाएं दी हैं, और इस अप्सरा ने सुंदर नृत्य दिखाया है । हम इस सहजन्या को तुम्हें प्रदान करते हैं ।"

"असुरराज ! बिना मुझसे पूछे आप मुझे किसे प्रदान कर रहे हैं ?" सहजन्या कातर हो उठी ।

वृत्र की भृकुटियां तन गयीं । क्रोध से नथुने फड़कने लगे । उपस्थित जनसमूह कांप उठा । तभी सेनापति ने बात आगे न बढ़े, इस आशा से कहा—"सहजन्या तुम्हारे नृत्य से प्रसन्न होकर असुरराज ने तुम्हें सर्वनाग-जैसा सुंदर पति दिया है ।"

"अप्सरा पति का वरण नहीं करती असुरराज । यदि आपकी इच्छा है तो मैं इस भोग्या बनकर इसे संतुष्ट कर सकती हूं ।"सहजन्या ने कुछ सहज होते हुए कहा

"वृत्र की आज्ञा की अवहेलना का साह किसी में नहीं है ।" अपने आदेश पर आघ होते देख वृत्र और अधिक क्रोधित हो उठे

एक गंधर्व हाथ जोड़कर याचना करने लगा—"असुरराज ! अप्सरा क्रीड़ा नारी ह है । अपनी इच्छा की स्वामिनी । गंधर्वों में विवाह की अलग प्रथा है ।"

दुःसाहसी ! व्यर्थ संवाद मत कर । अ विवाह में स्त्री के बदले धन देकर विवाह हो है...वृत्र गरजे ।

"लेकिन असुरराज...इस प्रकार छल क यह विवाह । गंधर्वराज अपनी बात पूरी भी कर पाये थे कि सेनापति झपटे और एकबार ही उसका सिर धड़ से अलग कर दिया । वलय, शुंभ आदि अनेक असुर दौड़े आये दूसरे गंधर्व की ओर मुड़ते इससे पहले वृत्र उन्हें रोक दिया । "क्या तुम्हें भी उसी गंधर्व पास जाना है ।" वृत्र ने दूसरे गंधर्व से पूछा निरुपाय पराजित गंधर्व उनके पैरों में गिर प

"उठो ! हम तुम्हें अभयदान देते हैं । उ अपने राजा से कहो कि वह भी अपने राज्य असुर विवाह की पद्धति प्रारंभ करे । इस न के मूल्य में यह स्वर्ण खंड उसे दे देना ।" व अधिकार गर्व से भर उठा...अप्सरा थर-थर कांप रही थी, क्षणभर में गंधर्व उठा और दौड़कर वहां एकत्रित भीड़ में लुप्त हो गया

वृत्र ने सर्वनाग की ओर उन्मुख होकर कहा—"सर्वनाग ! जाओ इस अप्सरा प

साथ अपने घर लौट जाओ । वरुण तुम्हारी रक्षा करें । अहिराज से कहना इन देव चरवाहों से न डरें, व्यर्थ की चिंता छोड़ें ।"

उत्सव का उन्माद उतार पर था...अप्सरा के नृत्य के आनंद और गंधर्व की हत्या के विषाद से उत्पन्न अंतर्द्वंद्व के भार से बोझिल पग भरता सर्वनाग, शांत शिथिल सहजन्या को लेकर अपनी वासस्थली की ओर चल पड़ा ।

घने वनों में गहरा अंधकार था । निःशब्द वायु, रह-रहकर गूंजनेवाली वन्य पशुओं की आवाजें, उस परिवेश को और अधिक भयावह बना रही थीं ।

"सहजन्या ! तू बोलती क्यों नहीं ? इस अंधकार में यदि बातें करते चलें तो हिंस्र पशु आ भी गया, तो प्राणियों की ध्वनि सुनकर मार्ग छोड़ देगा" सर्वनाग ने कहा ।

"मुझे बहुत डर लग रहा है ।" कहकर सहजन्या फिर चुप हो गयी ।

"अरे तेरी जिद और व्यर्थ लड़ाई-झगड़े के कारण ही तो इतना विलंब हो गया, नहीं तो अब तक नगर के पास पहुंच गये होते । सर्वनाग क्षुब्ध हो रहा था । सहजन्या फिर मौन रही...भावनाओं का ज्वार अंतर्तम को उद्वेलित किये था ।"

"क्या मैं तुझे प्रिय नहीं लगता सहजन्या ।" सर्वनाग उसे अपने समीप ला आलिंगनबद्ध करते हुए बोला ।

"तू अत्याचारियों का साथी है, तू भी अत्याचारी है ।" अपने को सर्वनाग से अलग करते हुए कठोर स्वर में सहजन्या ने उसे दुत्कारा । उसका मुंह क्रोध से आरक्त हो उठा ।

सर्वनाग पुनः सहजभाव से बोला—"वीरों का धर्म है कि वे दी हुई वस्तु नहीं लौटाते । उसके मुख की कांति मलिन पड़ने लगी थी... ।"

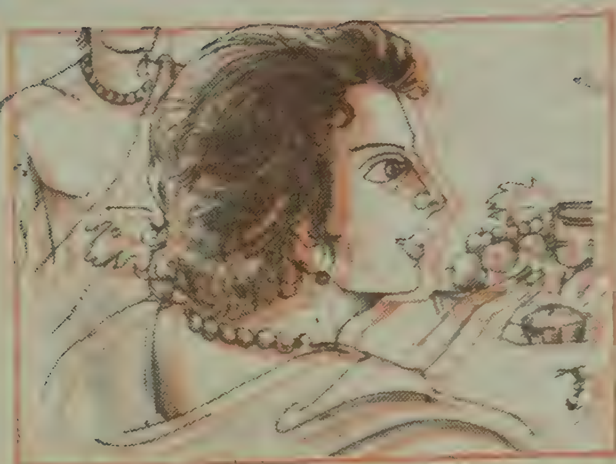
"और मैं अपना अप्सरा धर्म नहीं छोड़ूंगी ।"

सर्वनाग क्रूर हंसी हंसा...अंधकार और बढ़ चुका था...वे आगे बढ़ते जा रहे थे । एक वन्य व्याघ्र उनका कब से अनुसरण कर रहा था, बातों के क्रम में उन्हें ज्ञात न हो सका । आकस्मात व्याघ्र गरजा और छलांग मारी । सहजन्या भूमि पर गिर गयी...सर्वनाग ने बचने का प्रयास किया । पर पूरा नहीं बच पाया । उसे प्रतीत हुआ कि उसके एक हाथ पर किसी ने खड्ग का प्रहार किया । वह रक्त से लथपथ हो उठा ।

व्याघ्र ने झपटकर उस पर वार किया । उसके धक्के से सर्वनाग नीचे गिर पड़ा । शिकार पूरी तरह न पकड़ पाने के कारण व्याघ्र पागल-सा हो उठा । दिल दहलानेवाली दहाड़ के साथ वह फिर शत्रु की ओर पलटा... । कराहते सर्वनाग ने लेटे-लेटे परशु उठाया और किसी तरह घायल हाथ के सहारे उठने का प्रयास किया । सर्वनाग ने निश्चय किया । बस कुछ पलों की देर है अबकी बार वह पशु उसकी जीवनलीला समाप्त कर देगा...नेत्र बंद कर सर्वनाग ने इष्ट देवता का स्मरण किया ।

यह क्या ? विलक्षण आश्चर्य हुआ सर्वनाग को, व्याघ्र अपने स्थान से हिल भी न पाया कि उसी स्थान पर आहत पड़ा वह निष्प्राण हो चला था । दो सुंदर युवक, जो उजले वस्त्र धारण किये थे, सहजन्या को उठाने में व्यस्त थे ।

"तुम लोग कौन हो ?" लड़खड़ाते हुए



उठने की कोशिश करते हुए सहजन्या ने पूछा । उसकी सांस धौंकनी की तरह चल रही थी...विस्मय का भाव चेहरे पर छाया था ।

"हम मरुत् हैं..." युवकों में से एक ने उत्तर दिया ।

"मरुत् ! कौन मरुत्... ?"

"हम देवकुल के हैं । हमारा एक साथी ब्रह्म की शरण में गया था । इंद्र ने हमें इस नाग को मारने व तुझे छुड़ाकर गंधर्वराज के पास भेजने का आदेश दिया है !"

घायल सर्वनाग इस वार्तालाप को सुन रहा था । उसने किसी प्रकार उठने की पुनः चेष्टा की । पर विफल रहा । उसे हिलते देख एक मरुत् का ध्यान उसकी ओर गया... । लपककर मरुत् ने सर्वनाग को मारने के लिए खड्ग उठाया । तभी—"घायल शत्रु को मारने से क्या लाभ ?" दूसरे मरुत् ने उसे रोकते हुए कहा । फिर क्षणभर रुककर "हम सहजन्या को लिये जा रहे हैं, यदि तू बाधा डालना चाहता है तो पहले हममें से एक से युद्ध कर ले ।"...मरुत् आवेग से आगे बढ़ा ।

"ले मेरा कहा पूरा हो गया ।" किंचित मुसकराते हुए सहजन्या ने कटाक्ष किया सर्वनाग पर । वह इतनी देर में खड़ी हो चुकी थी । मन और देह आनंद तरंगित हो रहे थे । अपूर्व विजय का भाव उसके मुख पर था ।

"मैं बुरी तरह घायल हो चुका हूं, अन्यथ वीरों के धर्म का पालन अवश्य करता ।" क्षीण-भाव से गहरी सांस लेते हुए सर्वनाग ने कहा ।

"अरे मूर्ख धर्म का पालन न करने के का वरुण ने तुझे यह दंड दिया है । वरुण महान हैं ।" एक मरुत् ने कहा ।

"वरुण ? वह तो असुरों का देवता है ।"...सर्वनाग आश्चर्य से बोला ।

"असुरों का ही नहीं देवों का भी । असुर संस्कृति से च्युत होते जा रहे हैं । देव अभी भ वरुण के वास्तविक उपासक हैं ।" यह मरुत् का स्वर था ।

"देव ? वे देव जो अभी भी पूर्वाग्रही हैं असुरों के ही कुल के व्यक्ति । असुरों को कृ कर्म करते देख ईर्ष्या से भर उठे और शस्त्र के सामने देखते ही भाग गये ।" कहते सर्वनाग देवों का उपहास करने लगा ।

मरुत् ने फिर प्रहार किया—"कृषि हम भ करते हैं...नाग तू झूठ बोलता है ।"

"मैं झूठ नहीं बोलता...तुम असुरों के जी में समानता करने लगे । तुम्हारे बंधु-बांधव असुरों ने सैकड़ों वर्ष पूर्व हमारे कुल से सीख था, उसे आज तुम अपना कह रहे हो और उ अपनी संस्कृति कहते हो ? सर्वनाग शिथिल पड़ने लगा, उसकी आवाज कांप रही थी । वाक्य समाप्त करते-करते वह शांत हो गया...पूर्ण निश्चेष्ट ।

—प्राच

एम. के. पी. पोस्ट ग्रेजुएट कॉले
देहरादून (उ. प्र

गुजराती कहानी

मुझे और कुछ नहीं चाहिए...

• गुलाबदास ब्रोकर

तब जीवराम भाई वैद्यक नहीं करते थे। वैद्यक तो उन्होंने जीवन के आखिर में अपनायी। तब वह काठियावाड़ के एक छोटे-से राज्य के पुलिस विभाग में नौकरी करते थे और मामूली पद से तरक्की करते-करते उस समय वह फौजदार के पद पर पहुंच चुके थे।

गांव छोटा था। राज्य भी छोटा था। अधिकारी थोड़े थे और जीवराम भाई अपनी नौकरी में सुखी थे। गांव के लोगों में उनके प्रति आदर था। राज्य के स्वामी की उनके ऊपर कृपा-दृष्टि थी। उस जमाने में सत्तर-पचहत्तर रुपये की छोटी-सी नौकरी में भी उनके दिन



आनंद से गुजर रहे थे । वह खुद को सुखी मानते थे ।

पर वह अकेले ही खुद को सुखी नहीं मानते थे । दूसरे लोग भी उन्हें कुछ ज्यादा ही सुखी मानते थे । और यह ही एक बड़े दुःख की बात थी, क्योंकि दूसरों का ऐसा मानना उनके प्रति ईर्ष्या उपजाता था और ईर्ष्या का परिणाम बुरा होता है, यह कौन नहीं जानता ।

ईर्ष्या करनेवालों में खासतौर से तो उनके ही विभाग में काम करनेवाला एक काठियावाड़ी भाई था । उसका नाम था राजसूर भाई । फौजदार के गौरवमय पद की तनख्वाह थी पचहत्तर रुपये । राजसूर भाई सोचते थे कि यह निपुण थे । पद छोड़ने के लिए उन्हें कौन कह सकता था । फिर ऐसी बात कोई मानता भी क्यों ? एक ही तरीका था उनसे पद छुड़वाने का कि जीवराम भाई राजा की नजर में गिर जाएं !

राजसूर भाई भी जवान थे, महत्त्वाकांक्षी और मेहनती भी थे । जीवराम भाई को राजा की नजर से गिराने के लिए हर संभव उपाय उन्होंने कर देखे । और उन्हें ऐसा करते-करते एक वर्ष का समय निकल गया । फिर भी सफलता नहीं मिली । बल्कि खुद को ही नीचा देखना पड़ा । जीवराम भाई का आसन तो जहां-का-तहां ही रहा । शायद थोड़ा ऊंचा ही उठ गया था ।

लेकिन राजसूर भाई उनमें से नहीं थे, जो

काली अंधेरी रात थी । रास्ता सुनसान था । किसी अपराध की जांच करने गये हुए जीवराम भाई का घोड़ा उन्हें लिये हुए अपने इसी परिचित रास्ते से लौट रहा था ।

गांव की सीमा अभी दूर थी । तभी किसी ने घोड़े को रोका । ऊंघते-ऊंघते जीवराम भाई अचानक आयी इस रुकावट से सावधान हो गये ।

पद उन्हें मिल जाए तो ? तो आकाश की अप्सराओं को भी नचाया जा सकता है । और यदि मालिक की कृपा-दृष्टि भी इसमें शामिल हो जाए, तो फिर क्या कुछ नहीं किया जा सकता !

पर यह उन्हें मिले कैसे ? राजसूर भाई सोचते रहते ।

जीवराम भाई यह पद छोड़ें, तभी यह संभव था । पर जीवराम भाई उसे किसलिए छोड़ते ? वह अभी जवान थे । हट्टे-कट्टे थे । राजा और प्रजा दोनों के चहेते थे और अपने काम में हार मानकर बैठ जाते हैं । आखिर उनको एक मार्ग मिल गया ।

गीगा उसी गांव का एक जवान था— बड़ा ही शातिर बदमाश । ताजा-ताजा ही जेल से छूटकर आया था । अपराध कबूल करवाने के लिए उसे जेल में बड़ी यातनाएं दी गयी थीं । लाठियों की उस पर वर्षा करवानेवाले गांव के फौजदार जीवराम भाई ही थे, ऐसी अफवाह फैली हुई थी । राजसूर भाई इसी गीगा से मिले । उन्होंने समझा-बुझाकर उसे बहलाया,

फुसलाया और लालच देकर वैर-भाव को जागृत किया और आखिर में जीवराम भाई से बदला लेने को वह राजी हो गया । उन्होंने गीगा को वचन दिया कि इस काम के बदले में वह उसे पच्चीस रुपये नकद देंगे और यदि उसे कुछ हो गया या वह जेल चला गया, तो उसके आश्रितों का ध्यान रखेंगे । पांच रुपये पेशगी देकर आखिर उन्होंने संतोष की सांस ली ।

गीगा हथियार तेज करने लगा और राजसूर भाई उसका उत्साह बढ़ाने लगे । आखिर उनके मन की मुराद पूरी होने की रात आ पहुंची ।

राजसूर भाई ने गीगा को अंतिम हिदायतें दीं, हिम्मत भी बढ़ायी, "देखना, आखिरी वक्त पर डर मत जाना ।"

गीगा बोला, "आप खुद निर्भय रहें राजसूर भाई ! इस गीगा को कुछ बताने की जरूरत नहीं है ।"

और रात घनी हो जाने पर वह अपने काम पर निकल पड़ा ।

काली अंधेरी रात थी । रास्ता सुनसान था । किसी अपराध की जांच करने गये हुए जीवराम भाई का घोड़ा उन्हें लिये हुए अपने इसी परिचित रास्ते से लौट रहा था ।

गांव की सीमा अभी दूर थी । तभी किसी ने घोड़े को रोका । ऊंघते-ऊंघते जीवराम भाई अचानक आयी इस रुकावट से सावधान हो गये ।

"होशियार रहो, फौजदार साहब !" यह चेतावनी भी उन्होंने सुनी । और फिर पलभर में ऐसा बानक बना कि जिसकी कल्पना न राजसूर भाई ने की थी, न जीवराम भाई ने ।

गीगा ने उठाया हुआ हथियार जीवराम भाई के हाथ में सौंप दिया ।

"भाई साहब, आपका एहसान भूलूं तो मेरे रोम-रोम से रक्त-पित्त फूट निकले । मुझसे यह नीच कर्म कैसे हो सकता है ! पर मैं अभागा 'ना' करता, तो फिर यह काम किसी दूसरे को सौंप दिया जाता और जरूर कुछ अघट घट जाता । इसलिए मैंने उसे अपने जिम्मे ले लिया । लो अब, संभल जाएं, मैं भागता हूं ।" इतना कहकर संक्षिप्त में राजसूर भाई का पूरा किस्सा सुनाकर गीगा अंधेरे में गायब हो गया । सिर्फ जीवराम भाई भगवान की असीम कृपा को याद करके आश्चर्यचकित और आनंद से गदगद ढंग से खड़े रह गये ।

'कैसे छोटे-से काम का कितना बड़ा बदला भगवान देता है ।'— जीवराम भाई ने सोचा । गीगा पर किये गये उपकार में तो कहने लायक कुछ था ही नहीं ।

गीगा जब सरकारी जेल में सड़ रहा था, तब उस पर गंभीर आरोप और आक्षेप थे । वह उन्हें स्वीकार नहीं कर रहा था । ऊपर से सरकारी आज्ञा थी कि उससे चाहे जैसे हो, अपने अपराध कबूल करवाने हैं । वह छटा हुआ बदमाश है । सीधी तरह कबूल न करे, तो डंडे का जोर दिखाओ । लेकिन बहुत समझाने-बुझाने के बाद जीवराम भाई को लगा कि शायद गीगा गुनाहगार नहीं है । तो फिर मार-पीट से क्या होगा ? लेकिन सरकारी हुक्म की अवमानना भी नहीं की जा सकती थी । क्योंकि गीगा अव्वल दरजे का प्रख्यात बदमाश था । वह जो न कर गुजरे, वह थोड़ा था ।

'कैसे छोटे-से काम का कितना बड़ा बदला भगवान देता है ।'— जीवराम भाई ने सोचा । गीगा पर किये गये उपकार में तो कहने लायक कुछ था ही नहीं ।

बहुत सोचने पर भी कुछ नहीं सूझ रहा था । ऐसे जवान मनुष्य को मार-मारकर भुरता बना दिया जाए, जीवराम भाई का मन इसे स्वीकार नहीं कर पा रहा था । अचानक ही उन्हें उपाय सूझ गया । जीवराम भाई ने गीगा से कहा कि 'सरकारी हुक्म के अनुसार बिना मारे छुटकारा नहीं है । लेकिन तू ईश्वर की साक्षी मानकर वचन दे कि भविष्य में अपराध नहीं करेगा, तो मैं तुझे बचा लूंगा ।'

यह बचाने का अद्भुत उपाय गीगा को पसंद आया । उसने फौरन ही उसे मान लिया । बस, फिर क्या था । अंधेरा होने के बाद उसकी कोठरी में डंडों की बौछार शुरू हो गयी । गाली-गलौज की बौछारें पड़ने लगीं और गीगा की करुण चीखों से वातावरण भर उठा । केवल गीगा को छोड़कर गांव के और जेल के हर व्यक्ति को लगने लगा कि गीगा पर भारी मार पड़ रही है । मन-ही-मन हंसते फौजदार साहब और चीख-पुकार मचाता गीगा ही जानते थे कि मार पड़ रही थी जरूर, पर, गीगा के शरीर पर नहीं ।

इस छोटे-से काम का बदला भगवान ने इस तरह जिंदगी बचाकर जीवराम भाई को दिया था । वह सोच रहे थे कि गीता में कहा गया है कि किसी भी भले काम को करनेवाले की दुर्गति नहीं होती और बुरा काम करनेवाले को उसका फल जरूर भुगतना पड़ता है ।

'राजसूर भाई बेचारा कितनी छोटी-सी बात के लिए कितना बड़ा पाप करने के लिए तैयार हो गया था । पर वह अपने पाप का फल खुद भोगेगा, मुझे क्या ?' ऐसा सोचते-सोचते और किसी के सामने इस घटना का जिक्र न करने का निश्चय करके जीवराम भाई घर पहुंचकर आराम से सो गये ।

और फिर जब तक उस राज्य में नौकरी की तब-तक उन्होंने राजसूर भाई या किसी अन्य को इस बात की गंध तक नहीं लगने दी । जीवराम भाई को इस घटना का पता है या नहीं, यह जानने का राजसूर भाई ने प्रयत्न जरूर किया । लेकिन पहले की अपेक्षा अपने प्रति उनके व्यवहार में और मिठास आ गयी है इसके सिवा और कुछ पता नहीं लगा ।

दो-तीन साल बाद राज्य के साथ सिद्धांतों को लेकर मतभेद हो जाने पर जब जीवराम भाई ने नौकरी छोड़ी, तो जितनी मधुरता से उन्होंने अपनी मित्र-मंडली और सारे गांव से विदा ली, उतनी ही मधुरता से राजसूर भाई से भी उन्होंने विदा ली और उसे आशीर्वाद दिया ।

राज्य की नौकरी छोड़ने के बाद जीवराम भाई अपने वतन राजकोट आकर रहने लगे । आर्थिक तंगी तो होनी ही थी । क्योंकि कमाई का और कोई साधन नहीं जुट पाया था । ऐसे में एक दिन उन राजसूर भाई का राजकोट आना हुआ । वह जीवराम भाई के यहां भी आये ।



जीवराम भाई ने बड़े आनंद से उनका स्वागत-सत्कार किया और किचन में जाकर पत्नी से बोले, "आज हलुवा बनाना !'

पत्नी ने धीमी आवाज में कहा, 'तुम तो हुक्म दे रहे हो, पर घर में घी नहीं है । कौन आया है ऐसा ?'

"राजसूर भाई आये हैं ।"

"मुआ वह ?" पत्नी ने दबी आवाज में कड़ुवाहट से कहा, "खानी होगी तो रोटी खा लेगा । उसने ऐसा क्या किया है जो ..."

"पागल हो गयी हो ?" जीवराम भाई हंसे, "इतने वर्षों तक मेरे साथ रहीं, तो भी न समझीं ? अरे, भलाई करनेवाले को तो सभी खिलाते हैं पर बुराई करनेवाले को जो और प्रेम से खिलाता है वही सच्चा मनुष्य है । घी नहीं है, तो कोई बात नहीं ? पड़ोस से उधार मांग लाओ, लेकिन आज बनाना हलुआ ही ।"

जीवराम भाई जब इस तरह बात करते थे, तो तर्क की गुंजाइश नहीं रहती थी । पत्नी ने मौन भाव से पति की आज्ञा का पालन किया ।

घी से तरबतर हलुआ और गरम-गरम पकौड़ियां जीवराम भाई ने आग्रह कर-करके राजसूर भाई को खिलायीं । फिर आनंदपूर्वक गप-शप करके जब राजसूर भाई चले गये, तो जीवराम भाई हर्ष से बोल उठे, "मेरे हाथों किसी का भी बुरा न हो । मेरी यह बात रखना भगवन ! मुझे और कुछ नहीं चाहिए ।"

— ३९७, स्वामी विवेकानंद रोड,
विले पार्ले (वेस्ट),
बंबई-४०००५६

(अनुवाद : गोपालदास नागर)

नैनीताल : दृश्य-परिदृश्य

दृष्टि विशेष

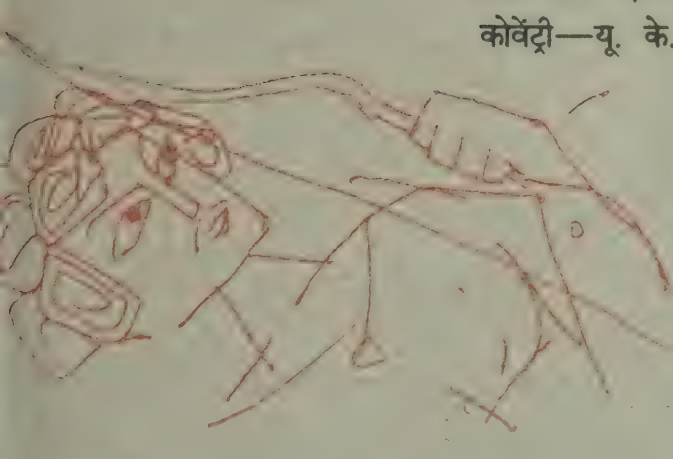
हवा
गुनगुनाती यहां
प्रणय के छंद
अभिसार रत
प्रकृति है
आदमी
तो सिर्फ आदमी है
धरती को यहां
आकाश को
छूने के लिए
किसी अंजान क्षितिज
की प्रतीक्षा
की पीड़ा
नहीं झेलनी पड़ती
वर्जनाओं के
तमाम पहाड़ों को
पीछे छोड़ता
स्वयं
उतर आता है
आकाश
और धरती की
झील-सी आंखों पर
अपने नरम-गरम
बादलों-से ओंठ
धर देता है
आकाश की
अंगुलियां तैरती
बादलों के
साथ-साथ आकर
ठिठक कर
रह गयी हैं
धरती के
उभारों तक
आकाश को
अपनी बांहों के
वर्तुल में
भर लेने की
धरती की
उच्चाकांक्षाओं से
पर्वत पर फैले
अभिलाषाओं के
जंगल
ही जंगल
घुमाव रास्तों के
कई
खतरनाक मोड़
लिये
जैसे जिंदगी
कहीं
हादसा न हो जाए
कोई
नेह की
मेह की
बारिश धुआंधार
भरेगा वन प्रांतर
का ओर-छोर
नापते पग
ऊंचाइयां
साथ-साथ
पैरों की विछलन
कब कैसे
देखो मन तक
आ पहुंची
भोर हुई
डाली-डाली ने
ली अंगड़ाई
आकाश ने
झील के
आईने पर
बिछी रात की चादर
समेट ली
खिलखिलाई
टहनी-टहनी
शरमाई
पत्ती-पत्ती

—डॉ. गायत्री माहेश्वरी
के-७/२१, लाला सूर की गली
वाराणसी-२२१००१

मायूस है हर आदमी !

इक सुई की ही तरह है लापता सबकी खुशी
किसको लिखवायें रपट मायूस है हर आदमी
त्रस्त है, लाचार है, बेजार है, बेचैन है
जिंदगी पहले कभी इतनी नहीं गमगीन थी
कौन झंझट में पड़ें औ' कौन संकट मोल ले
खून होता देखकर छिप जाते हैं घर में सभी
इक समय था जब इसकी चर्चा सुनते थे बहुत
ढूंढ़ने पर भी नहीं मिल पाती है अब सादगी
बात दिल की क्या सुनायी जानकर अपना उसे
बात जैसे पर लगाकर हर तरफ उड़ने लगी
लाख या दो लाख में आबाद है जनता यहां
विरला ही मिलता है, लेकिन इस नगर में आदमी
बाग में माली कोई अब रोकने वाला नहीं
किसके हाथों से लुटेगी क्या पता सुंदर कली
पालता है आदमी रहने की इच्छा चांद पर
कोई बतलाये हमें इस धरती पर है क्या कभी
गीत गूंजेंगे कभी दिन-रात बच्चों के यहां
क्या हुआ जो आजकल सूनी पड़ी है हर गली
दर्द के स्वर में सुना दो इक अछूती सी गजल
ताकि कह उठें सभी क्या बात तुमने है कही
रोज तेरे ही लिए सपने हजार बुनती है
देखले कितनी फिदा है 'प्राण' तुझ पर जिंदगी

—प्राण शर्मा
३, क्रेकस्टन क्लोज
स्टोक हिल एस्टेट
कोवेंट्री—यू. के.





पावन प्रीतिभरी नव भोर

अंतर्हित होता व्यतीत अब, उद्भासित होता है नूतन
कुछ अनुभूति सुखद-सी होती, भाव लोक में तिरता-सा मन

पल-सम दिवस, कभी क्षण युग-सम
धूप-छांह-सा बीता साल
कभी होड़-सी लगी दौड़ में
कभी चला कछुए की चाल

कभी हिलोरें उठीं राग की, कभी रहा वैराग्य मगन
भूल-भाल कर पिछली बातें
करें नये संकल्प विचार
ज्योति जलाकर अंधकार में
खोलें नये क्षितिज के द्वार
भेद-भाव की तोड़ श्रृंखला करें समन्वय-भाव सृजन
नहीं निराशा रहे कहीं भी
बढ़ें नयी आशा की ओर
आओ देखो झलक रही है
पावन प्रीतिभरी नव भोर
नव प्रतीक नव प्रतिभा मंडित नये वर्ष का अभिनंदन

—डॉ. वीरेन्द्र शर्मा
राजदूत भारतीय दूतावास
आशगाबात (तुर्कमेनिस्तान)
द्वारा : विदेश मंत्रालय
नयी दिल्ली-११००११

भारतेंदु के पत्र-प्रकाशकों के नाम

● डॉ. लक्ष्मीशंकर व्यास

भारतेंदु हरिश्चंद्र ने हिंदी भाषा के उन्नयन तथा श्रेष्ठ साहित्य के प्रकाशन में लाखों रुपये लुटा दिये । हिंदी के कवियों तथा साहित्यकारों का भी वे मुक्तहस्त से सम्मान करते थे । अपनी प्रमुख कृतियों का तो आपने स्वयं प्रकाशन किया, किंतु दूसरे संस्करण के मुद्रण के लिए उन्हें प्रकाशक से अनुरोध करना पड़ा । जनता में भारतेंदुजी की-कृतियों की अच्छी मांग थी अपनी रचनाओं के प्रथम संस्करण के समाप्त हो जाने पर पुस्तकों की मांग के कारण उन्हें शीघ्र प्रकाशित करने का अनुरोध किया था । भारतेंदु हरिश्चन्द्र के तथाकथित मित्रों ने उनकी अनेक पुस्तकों के प्रकाशन का आर्थिक लाभ उठाया । किंतु कोई अंश भारतेंदुजी को नहीं दिया । भारतेंदु हरिश्चन्द्र को आर्थिक कष्ट के दिनों में इसका हार्दिक खेद था । यह बात उन्होंने कलकत्ता स्थित अपने एक मित्र को लिखी थी, तथा उन्हें यह भी सूचित किया था कि उन्होंने अपनी समस्त रचनाओं के प्रकाशन का अधिकार पटना स्थित खड्ग विलास प्रेस के स्वत्वाधिकारी तथा 'क्षत्रिय मित्र' संपादक महाराज कुमार श्री रामदीन सिंह को दे दिया । जिन दिनों भारतेंदुजी आर्थिक कष्ट और ऋण से ग्रस्त थे, उस संकट के समय बाबू रामदीन सिंह ने उन्हें चार हजार रुपये देकर ऋण मुक्त किया था ।

भारतेंदु ने संपादकों तथा प्रकाशकों को जो पत्र लिखे थे, उसमें एक में सार्वजनिक रूप से गो-हत्या के संबंध में भारत व्यापी आंदोलन करने की मार्मिक अपील की थी । दूसरे पत्र में उन्होंने बाबू रामदीन सिंह को सिद्ध प्रश्नावली छापने का अनुरोध किया है तथा यह भी कहा कि कालांतर में इसकी लाखों प्रतियों की मांग होगी । आपने मुहम्मद साहब, फातिमा बीबी तथा हसन हुसैन की जीवनी शीघ्र प्रकाशित करने पर बल दिया था, तीसरे पत्र में भारतेंदु ने अपने ग्रंथों के दूसरे संस्करण मुद्रित करने का अनुरोध कर अपनी रचनाओं के प्रकाशन के संबंध में व्यापक चर्चा की है । इससे उनकी पुस्तकों के संबंध में अनेक नवीन तथ्यों का पता चलता है । यथा 'अंधेर नगरी, चौपट राजा' को उन्होंने 'अंधेर नगरी चौपट्ट राजा' लिखा है । डुमराव के राजा के यहां इस नाटक के मंचन की भी इससे सूचना मिलती है । इससे यह भी विदित होता है कि 'भारत-दुर्दशा' सर्वप्रथम उनकी पत्रिका 'कवि-वचन सुधा' में प्रकाशित



हुई थी। चौथे पत्र में बूंदी की राज-वंशावली, टाड साहब के राजस्थान तथा 'भक्तमाल' की प्रतियों को भेजने की चर्चा है। चौथा पत्र अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, जिसमें भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने अपनी समस्त कृतियों के प्रकाशन का सर्वाधिकार बाबू रामदीन सिंह को दे दिया था, तथा उनको प्रभूत आर्थिक सहायता की थी। सन १८९३ ई. में इस संदर्भ में 'भारत मित्र' में प्रकाशित 'हिंदी भाषा' शीर्षक लेख विशेष प्रासंगिक है।

गोहत्या-विरोधी आंदोलन

"प्रियवरेषु— महाराज कुमार श्री बाबू रामदीन सिंहजी, अबकी बकरीद में भारतवर्ष के प्रायः अनेक नगरों में मुसलमानों ने प्रकाश रूप से जो गोवध किया है, उसमें हिंदुओं की सब प्रकार से जो मानहानि हुई है, वह अकथनीय है। पालिसी— पर-तंत्र गवर्नमेंट पर हिंदुओं की अकिंचितकरता और मुसलमानों की उग्रता भलीभांति विदित है, यही कारण है कि जानबूझकर भी वह कुछ नहीं बोलती! किंतु हम लोगों को जो भारतवर्ष में हिंदुओं के ही वीर्य से उत्पन्न हैं, ऐसे अवसर पर गवर्नमेंट के कान खोलने का उपाय अवश्य करणीय है। इस हेतु आपसे इस पत्र द्वारा निवेदन है कि जहां तक हो सके इस विषय में प्रयत्न कीजिए। भागलपुर, मिरजापुर, काशी इत्यादि कई स्थानों में प्रकाश्य रूप से केवल हमारा जी दुखाने की हांकाठोकी यह अत्याचार हुआ है, जो किसी-किसी समाचार-पत्र में प्रकाशित भी हुआ है। आप भी अपने पत्र में इस विषय का भली-भांति आंदोलन कीजिए। सब पत्र एक साथ कोलाहल करेंगे तब काम चलेगा। हिंदी, उर्दू, बंगाली, मराठी, अंगरेजी सब भाषा के पत्रों में जिनके संपादक हिंदू हों, एक बेर बड़े धूम से इसका आंदोलन होना आवश्यक है, आशा है कि अपने शक्य पर आप इस विषय में कोई बात उठा न रखेंगे।

भवदीय— हरिश्चन्द्र।'

मुहम्मद साहब की जीवनी

"बाबू रामदीन सिंहजी,

प्रियवरेषु, कल पुस्तकें ठीक समय पर ही मिल गयीं। उनमें कई ऐसी हैं, जो मेरे यहां हैं। सिद्ध-प्रश्नावली बहुत बिकने की वस्तु है, अर्थात हजारों नहीं काल पाकर लाखों ही बिकेगी। एक तो इसको छाप लीजिए और एक मुहम्मद अली, बीबी फातिमा और हसन हुसैन का जीवनचरित्र को मुसलमान मात्र लेंगे! मुझको बड़ी लज्जा है कि ऐसी कोई वस्तु आपने नहीं छापी जो बहुत बिके। पत्रों का संग्रह भी आप छापने को थे? और जो इच्छा हो। मैं आपके अनुग्रहों का ऋणी हूं।— हरिश्चन्द्र।"

पुस्तकों के नवीन संस्करण का अनुरोध

"प्रियवर :

आपका पत्र पाया । पुस्तकें भी पहुंचीं । दीपनारायण सिंह ने अपने ताश के खेल में मेरा नाम नहीं दिया है, यह अनुचित किया है, जबकि उन्होंने स्वयं एक वस्तु को उलट-पुलटकर छापा है, तो फिर रजिस्टरी कराके दूसरों को क्यों निषेध करते हैं । आप जानते हैं कि मेरी पुस्तकें लाभ के लिए नहीं, छपतीं । मुझे इसमें कुछ खयाल नहीं है परंतु कृतज्ञता मनुष्य के शरीर का रत्न है । भला और कुछ नहीं तो कृतज्ञता को स्वीकार करना था ।

उदैपुर (उदयपुर) की वंशावली मेरे पास बिलकुल नहीं लिखी है । टाड का राजस्थान अंगरेजी में और उर्दू में छप गया है और थोड़ा-सा बंगला में भी छपा है । वह बहुत अच्छा है । उसमें और भी कई जगह में उससे मिलान करके लिखा है । कुछ कागजात उदैपुर के मेरे पास हैं और एक उदैपुर की तवारीख खास दर्बार में की लिखी हुई है, कुछ मेरी लिखी हुई है । यदि आप उन सबों को इकट्ठा करके आप लिखना चाहें, तो मैं भेज दूं । आपको 'राजस्थान' (टाड का) लेना होगा, क्योंकि यह मेरे पास नहीं है । इस विषय में आपकी क्या सम्मति है ?

पुरानी पुस्तकों के विषय में जो आपने लिखा है पहिले यह लिखिये कि किस शास्त्र की पुस्तकें आपके पास पहिले भेजी जायं ? आपको जो कुछ पूछना हो लिखिये उत्तर बराबर जायगा ।

'अंधेर नगरी चौपट्ट राजा' जाता है, इसे शीघ्र ही छाप दीजिये, इसकी आवश्यकता है । 'भक्तमाल' आप अवश्य छाप दीजिये परंतु आपके पास जो भक्तमाल है, वह भी मुझे देखने को भेज दीजिये । हिंदी प्रदीप का लैक्चर आप अवश्य छाप सकते हैं । 'अंधेर नगरी' यदि आप मेरे तरफ से छापना चाहिये तो ३०० कापी मैं लूंगा परंतु मैं छपाई इत्यादि अवश्य दूंगा । यदि आप स्वयं छापना चाहें तो मैं १० कापी लूंगा बाकी आप बेच लें ।

कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि यह वही विक्रम हो । यह बंगला के जयदेवजी के जीवनचरित्र में लिखा है कि 'हरिदास हीराचंद बंबईवाले ने लिखा है कि 'ये विक्रम के दर्बार में थे' मेरी भी यही सम्मति है कि यह वही विक्रम हैं, क्योंकि यह वह विक्रम नहीं हो सकते जिनका संवत् चलता है । जयदेवजी उनके कई सौ वर्ष बाद हुए हैं ।

महाराज कुमार लालबहादुर मल्ल की विद्योत्साहिता, शील देखकर मैं बड़ा प्रसन्न हूं । उनका एक पत्र और नाटक मेरे पास भी आया है हमारी उनको मिलने की बड़ी इच्छा है । ईश्वर करे वे शीघ्र ही आवें । बूंदी की वंशावली जाती है ।

इस समय निम्नलिखित पुस्तकों के छपने की बहुत आवश्यकता है । लोग बहुत ढूंढ़ते हैं—

(१) सत्य हरिश्चन्द्र— (एकबेर मुद्रित) इसकी बहुत मांग आती है ।
(२) विद्यासुंदर— (एकबेर मुद्रित) इसकी ५० कापी गवर्नमेंट लेगी ।
(३) कर्पूरमंजरी— (एकबेर मुद्रित)
(४) प्रेम फुलवारी— (एकबेर मुद्रित) इसकी बहुत ही मांग आती है ।
(५) भारत दुर्दशा— (कवि वचन सुधा में

भारतेंदु ने संपादकों तथा प्रकाशकों को जो पत्र लिखे थे,उनमें से एक में सार्वजनिक रूप से गो-हत्या के संबंध में भारत-व्यापी आंदोलन करने की मार्मिक अपील की थी । दूसरे पत्र में उन्होंने बाबू रामदीन सिंह को सिद्ध प्रश्नावली छापने का अनुरोध किया है तथा यह भी कहा कि कालांतर में इसकी लाखों प्रतियों की मांग होगी । आपने मुहम्मद साहब, फातिमा बीबी तथा हसन—हुसैन की जीवनी शीघ्र प्रकाशित करने पर बल दिया था । तीसरे पत्र में भारतेंदु ने अपने ग्रंथों के दूसरे संस्करण मुद्रित करने का अनुरोध कर अपनी रचनाओं के प्रकाशन के संबंध में व्यापक चर्चा की है ।

मुद्रित)

भवदीय— हरिश्चन्द्र"

अंधेर नगरी का मंचन

"श्री बाबू साहिबप्रसाद सिंह ।

प्रियवर— आपका कृपा पत्र आया था, परंतु मेरी माता का देहांत हो गया, इससे पत्रोत्तर में विलंब हुआ, क्षमा कीजियेगा । बूंदी की राज— वंशावली का 'नोट' और दोहे भेजे जाते हैं । यह इतनी ही है । इसमें एक गलती है उसे बना लीजियेगा । वह यह है कि "टाड साहब के मत से हर्षि राय)" इसके आगे जो सन लिखा है उसको ७५५ बना दीजिये ।

'अंधेर नगरी' का एक दृश्य यहीं रह गया था वह जाता है । इसे शीघ्रता से मुद्रित कीजिये क्योंकि ७ फर्वरी को एक नाटक महाराज डुमरांव के यहां खेला जायगा । उस अवसर पर बांटने के लिए इसकी अत्यावश्यकता है । अतएव इसका प्रूफ बहुत ही शीघ्र भेजिये । परिश्रम देना क्षमा कीजियेगा । और भक्तमाल भी भेजियेगा । 'भारतमित्र' के संपादक श्री टाड साहिब का राजस्तान छापना चाहते हैं दोनों जगह छपना अच्छा न होगा । आप उनको पत्र लिखकर तै कर लें ।

— हरिश्चन्द्र"

संपूर्ण साहित्य के प्रकाशन का अधिकार

प्रियवर— इतने दिनों के अनंतर मुझे एक हिंदी के सच्चे प्रेमी मिले हैं, जो अपने वचन के सच्चे और कार्य में पक्के हैं । इन्होंने मेरी पुस्तकों को छापने का प्रण लिया है और मेरी अर्थ सहायता भी यथेष्ट कर रहे हैं, जिसमें मैं निश्चिंत होकर कुछ लिखने में प्रवृत्त हूं । परंतु खेद है कि उक्त मित्र कुछ काल पूर्व न मिले, नहीं तो मैं बहुत कुछ कर सकता, क्योंकि मेरा शरीर स्वस्थ रहता था । जब मेरा स्वास्थ्य भंग हो गया है इससे मैं यथायोग्य श्रम नहीं कर सकता । यों तो मेरे

मित्र बहुत हैं, परंतु प्रायः सर्व सम्पत के साथी ही निकले, अधिकांश स्वार्थी निकले। किसी से कुछ आशा नहीं। हां, इनमें अधिकांश मित्र हैं, जो मेरे ग्रंथों को छापकर नित्य उदरपूर्ण करके ही मित्रता का निदर्शन समझते हैं। परंतु ईश्वर का धन्यवाद है कि उसने इतने दिनों बाद एक सच्चा प्रेमी मिला दिया जो कि, हिंदी के लिए बड़े व्यग्र हैं और हिंदी की उन्नति के लिए ठीक मेरी तरह तन-मन-धन श्रीकृष्णार्पण करने को कटिबद्ध हैं, आप इस समाचार से प्रसन्न होंगे कि ये बीच-बीच में मेरी अर्थ सहायता तो करते ही जाते हैं। परंतु संप्रति इन्होंने एक साथ ४००० रुपये देकर मुझे ऋण से मुक्त किया है। क्या आप ऐसे महात्मा का नाम भी सुनना चाहते हैं ? लीजिये सुनिये— इनका नाम महाराजकुमार श्री रामदीन सिंह 'क्षत्रीय पत्रिका' संपादक हैं। मैं अब किसी को पुस्तकें छापने न दूंगा, प्रकाशित-अप्रकाशित समस्त पुस्तकों का सत्व ही इन्हीं को दिये देता हूं आज अपनी सम्मति लिखियेगा :

विशेष दूसरे पत्र में।— हरिश्चन्द्र भारतेंदु ने लाख का घर खाक किया !

— भारतमित्र, सन १८८३"

— पराड़कर संग्रहालय
के३२/५१ कालभैरव
वाराणसी-२२१००१

हंसिकाएं

काम

उसने उच्चाधिकारी से कहा
मैं शर्मिंदा हूं, 'काम' ठीक से न कर सका
अधिकारी बेजोड़ थे
बोले, 'आप स्वयं अपमानित न हों,
यह 'काम' आप मुझ पर छोड़ दें !

चलन

प्रत्येक वस्तु गति पकड़ने लगी
उनींदा, शहर उठा...सड़कें चलने लगी

[illegible]

गुणों की दोष में परिणति यों हुई
राई भर की छोकरी दिल खट्टा कर गई

अन्योन्याश्रित

चोर सिपाही का खेल क्या होता है
समझाइए ?
पहले सिपाही चोर...
फिर गायब, क्योंकि उसे
वर्दी बदलने के लिए वक्त चाहिए

प्रचलन

उसका कथन गढ़ रहा है
कह रही है वह...
"संबंधों का जीर्ण चोला उतार कर फेंक गये
पैबंद लगे कपड़ों का
चलन बढ़ रहा है"

अन्योन्य

शायर ने कहा, शेर, सबने दाद दी, देर तक सोचा
शेर ने कहा 'शायर, और धर दबोचा

—डॉ. सरोजनी प्रीतम

■ बापू की १२५वीं वर्षगांठ पर

इंगलैंड में १२५ मील की पदयात्रा

डॉ. रामजी सिंह

इस पदयात्रा की समाप्ति पर, चाहे वह सनराइज रेडियो हो या बी. बी. सी. या अन्य समाचार-पत्र, सब का मुझसे एक ही प्रश्न होता था कि 'आप इस पदयात्रा में भाग लेने के लिए इतनी दूर भारत से क्यों आये ?' मेरा संक्षिप्त उत्तर था कि—

'वस्तुतः भारत में विचार-प्रचार एवं जन-चेतना जागृत करने की यह पुरानी परंपरा है जो आज तक चली आ रही है । भगवान महावीर, भगवान बुद्ध, आद्य शंकराचार्य से लेकर गांधी एवं विनोबा तक पदयात्रा करते रहे हैं । शायद जन-चेतना जगाने का यह सशक्त माध्यम माना गया है । यों पहले तो तीर्थ-यात्रा में पदयात्रा स्वाभाविक रूप से हो जाती थी, किंतु इंगलैंड-जैसे अत्याधुनिक एवं प्रौद्योगिकी में उन्नत देश में १२५ मील की पदयात्रा और वह भी बापू के नाम पर सचमुच अपने आप में एक अत्यंत आकर्षण का विषय था ।'

यात्रा उपभोक्तावाद के विरोध का प्रतीक

इंगलैंड में पदयात्रा की कल्पना ही आकर्षक एवं अनोखी है, वहां के लोगों को भी मैंने आश्चर्यचकित होते देखा । इस जेट युग म पदयात्रा की कल्पना शायद इक्कीसवीं सदी की आहट हो ।

सन २०६०-७० ई. तक कोयला एवं तेल के प्राकृतिक भंडार समाप्त हो जाएंगे, फिर या तो ऊर्जा के वैकल्पिक साधन ढूंढ़ने होंगे अथवा फिर अतीत की ओर लौटने को बाध्य होना पड़ेगा । शूमाखर ने 'लघुता में सौंदर्य' देखा, शायद कोई अन्य समाज वैज्ञानिक हमें 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' की याद कराएगा । इटली में रैडिकल पार्टी ने पर्यावरण में प्रदूषण के महानाश से बचने के लिए 'साइकिल' की सवारी को लोकप्रिय करने का वर्षों से अभियान छेड़ रखा है । हमारे सामने केवल दो ही विकल्प हैं कि आधुनिकता के व्यामोह एवं भोग की असीमित तृप्ति के लिए अपने रक्षा कवच ओजोन की छतरी को ही क्षत-विक्षत कर महाप्रलय को निमंत्रित करें या आत्मसंयम करें । जो भी हो, यह पदयात्रा उपभोक्तावाद एवं प्रकृति के साथ बढ़ते हुए व्यभिचार के विरुद्ध प्रतिवाद का एक प्रतीक है ।

पूरा जीवन जीना चाहते थे

दूसरा प्रश्न जो पूछा जाता था कि '१२५ मीलों की पदयात्रा क्यों ?' इसी बहाने बापू के जीवन-दर्शन के साथ भारतीय संस्कृति की प्रवृत्ति-साधना को समझाना पड़ता था । पहले तो कहता था कि 'चूंकि यह बापू की १२५वीं वर्षगांठ है, इसलिए १२५ मील की पदयात्रा का अनुषंग बैठता है ।' फिर कहता था कि 'बापू

२५ वर्ष तक जीना चाहते थे ।' यों शास्त्रों के
ुसार 'जिजीविशेत शतं समाः' या 'जीवेम
दः शतम्, अदीना शरदः शतम्' के आर्ष
क्यों के अनुसार १०० वर्ष जीने का सामान्य
ृत है । इसीलिए एक बार बापू के जन्मदिन
पं. मदनमोहन मालवीयजी ने उन्हें १०० वर्ष
 जीने की बधाई दी । लेकिन बापू हास्य से
 चूकनेवाले थे ? उन्होंने बधाई स्वीकार
ते हुए उपालंभ दिया, ''आपने इसमें २५ वर्ष
ं कम कर दिये ? मैं तो १२५ वर्ष जीना
हता हूं ।''

एवं कस्बों में सड़कों पर भले ही लोग चलें, किंतु राष्ट्रीय राजपथों पर शायद ही लोग चलते हों । वहां ग्रुप में चलने के लिए सरकार की अनुमति की भी व्यवस्था होती एवं रास्ते में वाहनों को छोड़ किसी पथ-यात्री से भेंट नहीं होती । इसीलिए व्यवस्था यह की गयी कि इस नहर के किनारे-किनारे चलते जाएं एवं जहां समाप्त करना हो, उसके बगल के किसी कस्बे या शहर में रात बिताएं । इस मुख्य नहर में जिस पर अनेक नहर मिल जाते हैं, उसी प्रकार इस पदयात्रा में भी अनेक देशों के लोग

इंगलैंड में पदयात्रा की कल्पना ही आकर्षक एवं अनोखी है, वहां के लोगों को भी मैंने आश्चर्यचकित होते देखा । इस जेट युग में पदयात्रा की कल्पना शायद इक्कीसवीं सदी की आहट हो ।

इसका अर्थ था कि बापू इस जीवन को
ूर्णता में जीना चाहते थे ।
द पलायन उनकी वृत्ति होती, तो हिमालय की
ाओं में चले जाते । उनका जीवन कर्ममय
, वह कर्मयोगी थे—'' कुर्व्वन्नेवेह
र्माणि'' । उनका जीवन समाज-विमुख कभी
ीं रहा । इसीलिए लोक-संग्रह के लिए/ही पूरा
ीवन जीना चाहते थे ।

विश्व एक नीड

यात्रा-पथ भी विलक्षण ही चुना गया, वह
 लगभग २०० वर्ष पूर्व निर्मित ब्रिटेन का
ड यूनियन कनाल' महासंघ नहर । यह उस
 की याद दिलाता है, जब न तो हवाई जहाज
 न पथ-परिवहन का ऐसा विकास था ।
मान ढोने के लिए नहर का रास्ता ही सबसे
गम माना जाता था । फिर इंगलैंड के बाजारों

मिलकर एक वैश्विक भाव से चल रहे थे—*'अत्र भवति विश्व एक नीडम्'* ।

बकरी प्रार्थना में शामिल हुई

यात्रा की शुरुआत २२ सितम्बर, ९४ को बरमिंघम से वुडब्रोक कॉलेज स्थित क्वेकर स्टडी सेंटर से हुई, जहां सन १९३१ में आकर ठहरे थे, बापू । महादेव देसाई, प्यारेलाल एवं मीरा बहन के मूल हस्ताक्षर मौजूद भी थे । यही नहीं बापू के संस्मरण संबंधी कुछ आलेख भी संजोये थे । लोगों ने बताया कि यहां गुरुदेव रवीन्द्रनाथ भी ठहरे थे । छोटी जगह किंतु शांत एवं पवित्र । यहीं से वहां के प्रिंसिपल, प्रोफेसरों ने शुभेच्छाएं दीं । भारत के बरमिंघम स्थित उप-उच्चायुक्त भी आये । पदयात्रा देर से शुरू हुई । पहले दिन रास्ता खोजने में कठिनाई हुई क्योंकि कई नहर आकर मिलते थे, पता नहीं

चल पाता था कि किस पर चलना है । पहले दिन हमें किंग्सवुड जाना था । पूर्व तैयारी के अभाव में यात्रियों के लिए ठहरने की व्यवस्था उस दिन तक ग्रामीण लॉज-लैपवर्थ में हुई । लगा कि उनके हम सभी व्यक्तिगत मेहमान हैं । सारी थकान एवं पूर्व तैयारी का अभाव भूल गये । एक युवा दंपत्ति एवं उनका एक छोटा शिशु कितनी सफाई एवं कितनी सुंदरता से देखभाल कर रहे थे । दूसरे दिन चलने के समय जब प्रार्थना करने लगे, तो उस आवास का देखभाल करनेवाली दंपत्ति ने सहर्ष उसमें भाग लिया, उसे मैंने संत असीसी की प्रार्थना पढ़ने को दी, जिसका उसने हर्षित होकर पाठ किया । उस समय एक बकरी भी प्रार्थना में आकर शामिल हो गयी । शायद यह बताने के लिए कि बापू की प्राण रक्षा बकरी के दूध से हुई थी, क्योंकि उन्होंने गाय का दूध लेना छोड़ दिया था । उस लॉज की दीवार पर मां के विषय में एक आकर्षक कविता थी, जिसे मैंने लिख लिया कि 'मां तो दूसरी होती नहीं, उसका कोई विकल्प नहीं होता ।' यह वेनेस विलियम्स की रचना थी ।

गांधी का रास्ता भूल गये हैं

फिर हम लोग लगभग १५ मील चलकर लगभग ढाई बजे दिन अपने दूसरे पड़ाव लैमिंगटन स्पा पहुंचे, जहां सनातन हिंदू मंदिर में ठहरने की जगह थी । यहां यह भव्य मंदिर मात्र ४० भारतीय परिवारों द्वारा बनाया गया है । संध्या समय गांधीजी के रामराज्य की कल्पना पर चर्चा हुई एवं प्रार्थना में सबने भाग लिया । लोगों ने आतिथ्य में अकृत्रिम स्नेह दिखाया । भारतीय मूल के लोगों की यह जिज्ञासा थी कि 'भारत इतना महान होते हुए भी आज इतनी विपदाओं से क्यों आक्रांत है । अभी तक इतनी गरीबी, अशिक्षा और भ्रष्टाचार क्यों व्याप्त है ।' सीधा-सा उत्तर दिया गया कि 'चूंकि गांधी के रास्ते को भूल गये ।' लेमिंगटन में एक भारतीय मूल की बच्ची ने सती प्रथा पर एक लघु शोध-प्रबंध लिखा था, जिसकी एक कापी मुझे दी गयी ।

लेमिंगटन से हम लोगों की यात्रा ब्राउंस्टन की थी, जहां हम लोगों को लगभग २० मील चलना पड़ा । रास्ते में कीचड़ और कंटीली झाड़ियां और दूसरी तरफ नहर में पानी । ब्राउंस्टन में हम लोग २४ तारीख की रात में एक सामुदायिक भवन में ठहरे, जहां हम लोग भूदान यात्रा की तरह फर्श पर कंबल बिछाकर सोये और ठंडक में कंबल ओढ़कर रात बितायी । लेकिन इसमें से किन्हीं को भी कोई शिकायत नहीं थी ।

दूसरे दिन २५ सितम्बर को वहां एक चर्च में प्रार्थना की । चर्च में एक वृक्ष भी लगाया । चर्च के पादरी ने अपने प्रवचन में बहुत भक्ति-भाव से गांधी की चर्चा की । २५ की रात में हम लोग बिल्शवर्थ पहुंचे । संपूर्ण यात्रा में एक भी व्यक्ति नहीं मिला, जिसे गांधी के प्रति असीम श्रद्धा न हो । साथ में एक अंगरेज यात्री अलीस्टर ने भगवान कृष्ण के गो प्रेम पर एक गीत सुनाया । शाम को गांधीजी की आखिरी वसीयत पर चर्चा हुई ।

गीता पर कान्फरेंस

२६ सितम्बर को बिल्शवर्थ से चलकर हम लोग मिल्टनकेंस पहुंचे । वहां सनातन हिंदू

एक बार बापू के जन्मदिन पर पं. मदन मोहन मालवीयजी ने उन्हें १०० वर्ष तक जीने की बधाई दी । लेकिन बापू हास्य से कब चूकनेवाले थे ? उन्होंने बधाई स्वीकार करते हुए उपालंभ दिया, "आपने इसमें २५ वर्ष क्यों कम कर दिये ? मैं तो १२५ वर्ष जीना चाहता हूं ।"

ंदिर में ठहरने का अच्छा प्रबंध था । आज की त्रा भी लगभग साढ़े सत्रह मील की थी । किन ८१ साल के श्री रामजी भाई पटेल और वर्धन भाई पटेल कहीं थकते नहीं थे । आज गों ने गांधीजी के स्वाध्याय की अवधारणा पर र्चा की । मिल्टनकेंस में हम लोग गीता के क्त विनोद भाई के यहां गीता निवास में ठहरे । होंने पद-यात्रियों के लिए सारा घर खाली कर या और स्वयं सपरिवार जमीन पर सोये । नोदजी ने लंदन में गीता पर एक अंतरराष्ट्रीय न्फरेंस भी आयोजित किया था ।

२७ को मिल्टनकेंस से चलकर हम लोग सटेबुल पहुंचे और वहां से दूसरे दिन चलकर स्टीड पहुंचे, जहां विकलांगों की एक संस्था रात में ठहरे । हैंपस्टीड में एक सहयात्री मि. डरिक का घर था । फिर लायंस क्लब के ध्यक्ष भी कार्य छोड़कर हमारे स्वागत में ाये । रोडरिक महोदय ने अपनी ओर से हम बको जलपान के लिए एक होटल में निमंत्रित या, किंतु एक साथी अलीस्टर नहीं आया । छे उसने बताया कि भले ही हम लोगों को ामिष आहार परोसा गया हो, किंतु चूंकि वहां स भी बनता है, अतः वह नहीं जा सकेंगे । कलांग केंद्र, जहां हम ठहरते थे उसकी देख-भाल करनेवाली बहन अपने कार्य करने के समय भी बातें करने के लिए ठहरी रही । दूसरे दिन एटनबरो के गांधी फिल्म का वीडियो ले आयी और कहा मैं जरूर देखूंगी । इस केंद्र में वृद्ध लोग दिन का अपना समय बिताने के लिए इसमें कार्य करने आते हैं, क्योंकि परिवार में तो कोई रहता नहीं । यह है आधुनिकता का दंड । सब लोगों ने प्रार्थना में योगदान दिया । लायंस क्लब के अध्यक्ष इतने प्रभावित हुए कि २ अक्तूबर को यात्रा के समावर्त्तन के समय लंदन आये एवं बापू को श्रद्धांजलि दी ।

गांधी एवं हिंदूधर्म पर चर्चा

हैंपस्टीड से २९ सितम्बर की प्रातः चलकर संध्या में रिकमैंसवर्थ में भरत भाई के घर ठहरे, जहां गांधी एवं हिंदू धर्म पर चर्चा चली । ३० सितम्बर को हम लोग अलपर्टन आये और वहां सनातन धर्म मंदिर में ठहरे । इतना प्रशांत स्थान, व्यापक परिसर, भगवान की जीवंत बोलती प्रतिमाएं, प्रातः-शाम सामूहिक प्रार्थना— लगा कि यहां भारतीय मूल के लोगों में भारतीय धर्म एवं राष्ट्र के प्रति अधिक स्नेह है, शायद यह अपनी अस्मिता एवं अस्तित्व की चिंता के कारण हो । इसी जगह अयोध्या कांड

के बाद मंदिर को जलाया गया था, उसके अवशेष देखे। लेकिन आश्चर्य, भगवान की मूर्तियां सही-सलामत बच गयीं। शाम को मंदिर में स्वागत कार्यक्रम। भारतीयों का इतना बड़ा बाजार है कि लगा मैं भारत में ही हूं।

कारवां बनता गया

१ अक्तूबर से अलपर्टन से जब चले, तो बेन इंडियन एसोसियेशन परिसर में वृक्षारोपण कर ८ से हम १८ हो गये। लंदन शहर ही था। लोग मिलते गये एवं कारवां बनता गया। हम लोग लंदन के पास जहां नहर समाप्त होता है, वहां रुके। इस स्थान का नाम है छोटा मेंनिस। जीवन भाई जो हमारे इस यज्ञ के ऋत्विक् हैं वे किसी का हृदय दुखाना नहीं चाहते। आज कूटनीस बहन से बातें हुईं, जो बी. बी. सी. में हैं। एक प्रकार से आज यात्रा की समाप्ति ही थी।

२ अक्तूबर को तो टैविटस्क्वायर में बापू की विशाल प्रतिमा पर श्रद्धांजलि देनी थी। २ अक्तूबर को हम सभी पदयात्री बापू उद्यान पहुंच गये। भारत के उच्चायुक्त डॉ. लक्ष्मीमल सिंघवी ने हमारा अभिनंदन किया। वहां तो काफी बड़ी भीड़ जुट गयी जिनमें कुछ अंगरेज भी थे। गांधी के नाम पर ३-४ जो संस्थाएं थीं, उन सबके प्रतिनिधि आये। संयोग था कि भारत सरकार के दो मंत्री श्री संतोषमोहन देव एवं श्री माधवसिंह सोलंकी भी आये। फिर हम लोग क्रेकरकेंड आये, जहां हम लोगों का हृदय से स्वागत किया गया, क्योंकि क्रेकर लोगों का गांधीजी से बहुत संपर्क था। वे भी अहिंसा के निष्ठावान कार्यकर्ता हैं। फिर भारतीय मूल की हाउस ऑव लॉर्ड्स की एक सदस्या ने वहां हम लोगों का उत्साह एवं उमंग से स्वागत किया एवं गांधीजी की महत्ता बतायी। गांधी जयंती के अवसर पर कई कार्यक्रम थे, लेकिन मैं बेंट एशोसियेशन की सभा में ही मुख्य अतिथि होकर रहा, जहां हॉल बिलकुल भर गया था। सन राइज रेडियो ने मेरा इंटरव्यू लिया एवं श्री संतोषमोहन देव के भाषण हुए। उस अवसर पर लॉर्ड माउंटबैटन की लड़की आयी एवं बापू के साथ अपने संस्मरण भी सुनाये। मेयर महोदय ने भी श्रद्धांजलि दी। हम लोगों की पदयात्रा ने गांधी जयंती कार्यक्रम में एक आकर्षक आयाम जोड़ दिया, जिसे जानकर लोगों को काफी खुशी हुई।

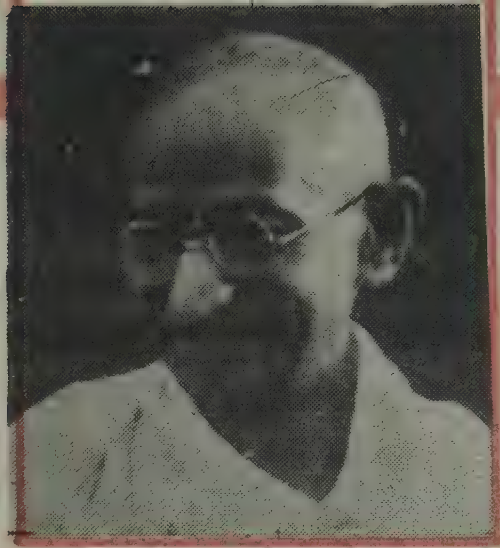
लंदन की गांधीवादी संस्थाएं

लंदन में गांधी के नाम पर कई संस्थाएं हैं— बापू— गांधी स्मारक ट्रस्ट, जिसके अध्यक्ष जीवन भाई हैं, सच्चे गांधीवादी। अपने घर में गांधीजी की मूर्ति एवं सभी धर्मों के धर्मग्रंथ रखकर पूजा करते हैं। उन्होंने ही यह यात्रा आयोजित की। इसके पूर्व उन्होंने गांधीजी पर कई प्रदर्शनियां आयोजित कीं। गांधी साहित्य का वितरण किया, गांधी फिल्म दिखायी। सर्वोदय सम्मेलनों में भी यदा-कदा आते रहते हैं। दूसरी संस्था का नाम 'गांधी फाउंडेशन' है, जिसके अध्यक्ष रिचार्ड एटनबरो हैं। तीसरी संस्था है— 'महात्मा गांधी फाउंडेशन' जिसके अध्यक्ष प्रख्यात गुजराती

या भाई पटेल हैं । गांधी जयंती के
पर इनका आयोजन काफी भव्य होता
। एक इंटरव्यू लिया जिसका अंतिम
था कि 'भारत में गांधी विचार की क्या
है ?' मुझे सब औपचारिकता को छोड़
ना पड़ा कि 'बापू अपने देश में ही
त हैं ।' इसी प्रकार बी. बी. सी. ने भी
। साक्षात्कार लिया और इस प्रश्न को
प में रखा, तो यह कहना पड़ा कि 'हम
। बापू को भूल गये हैं ।'
ारीख को लंदन से लगभग १५० मील
र में भी सनातन धर्म सभा मंदिर हॉल
सेंटर में गांधीजी की जयंती मनायी
हर जगह मैंने यही निवेदन किया कि
नयी पीढ़ी को हम गांधीजी की
था एवं अन्य रचनाओं से परिचित कराएं
के रचनात्मक कार्यक्रम में जो यहां के
हो उन्हें करें । गांधी विचार जानने की
यहां बहुत है ।

धीजी के प्रति अगाध निष्ठा

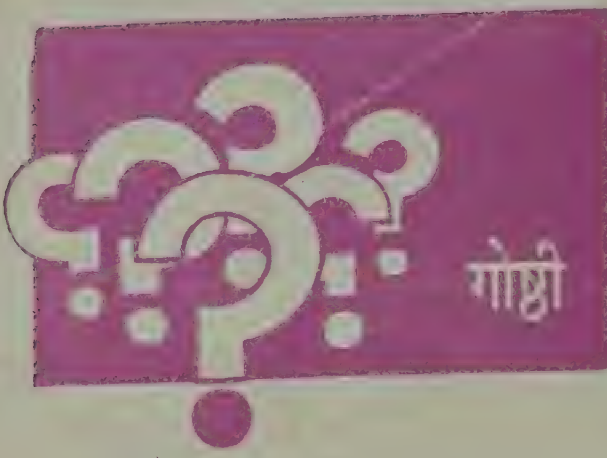
तीय मूल के निवासियों में गांधीजी के
। अगाध निष्ठा है, जिसके आधार पर
धी विचार का प्रचार करने के लिए अत्यंत
भूमिका है । सबसे बड़ी बात तो यह है
न के लोगों का चरित्र इतना उदार एवं
कि वे गांधी एवं गांधी विचार के प्रति
श्रद्धावान हैं । बापू स्वयं लंदन को
सरा घर मानते थे । भारत को चीनी
। के समय पहली और बिना शर्त की
इंगलैंड ने भेजी । अभी भी वहां काफी



भारतीय हैं । मुझे लगता है कि गांधी एक सुरक्षित सेतु हैं जिसके द्वारा हम इंगलैंड एवं भारत की मैत्री को दृढ़ कर पाश्चात्य जगत में सुगमता के साथ प्रवेश कर सकते हैं । इंगलैंडवासी भारत की सभ्यता एवं संस्कृति से भी अधिक अवगत हैं एवं गांधी के प्रति तो उनकी अपूर्व श्रद्धा है । अतः गांधी को हम गुजराती या भारतीय नहीं बनाकर वैश्विक बनाने की दिशा में प्रयत्नशील हों, तो हम गांधी को उदार अंगरेज बुद्धिजीवियों के द्वारा पाश्चात्य जगत में अधिक सरलता से प्रवेश करा सकते हैं ।

सबसे दुःख की बात है कि गांधी के सवा सौ साल में गांधी भारत से ही निर्वासित दीखता है, क्योंकि हम उनके सांप्रदायिक सद्भाव एवं आपसी प्रेम को जलांजलि दे चुके हैं । उनकी आखिरी वसीयत को भूलकर भी हिंसा को बढ़ाकर तानाशाही के निकट आ रहे हैं । यही कारण है कि बापू के भारत में अंतिम व्यक्ति की हालत आज पहले से भी अधिक दयनीय हो रही है । आर्थिक विषमता एवं उच्च स्तरों पर इतना भ्रष्टाचार एवं जन-जीवन में भोगवाद की उद्दाम लालसा ने यह साबित कर दिया है कि वर्तमान भारत गांधी का भारत नहीं है ।

— गांधी विद्या संस्थान
राजघाट, वाराणसी-२२१००१



कृष्णदेव चतुर्वेदी, भोपाल; कृष्णानंद गुप्त, गोरखपुर

□ **'कफन' शब्द का हिंदी पर्याय क्या है ?**

— इसका हिंदी पर्याय 'शवाच्छादन-वस्त्र' या प्रेतवस्त्र है । वैदिक साहित्य में प्रेत (देह से निर्गत) का अर्थ मृत व्यक्ति होता है (शत. ब्रा. १०.५.२.१३) ।

संजयलाल कपरदार, बोकारो

□ **'सूखी बर्फ' क्या होती है ?**

— सामान्य बर्फ पानी से बनती है, किंतु 'सूखी बर्फ' कार्बन डायक्साइड से बनायी जाती है । खुश्क बर्फ को 'सालिड कार्बन डायक्साइड' कहते हैं । सामान्य तौर पर तो कार्बन डायक्साइड एक गैस है, किंतु जब इस पर निम्नतम तापमान पर अत्यधिक दबाव डाला जाता है (सामान्य वातावरण से लगभग पांच गुना अधिक) तब यह ठोस पदार्थ में परिवर्तित हो जाती है । कार्बन डायक्साइड का यह ठोस रूप ही सूखी बर्फ है । यह अत्यधिक ठंडी होती है, लगभग ७८.५ अंश सेंटिग्रेड । इस बर्फ की विचित्रता यह है कि पिघलने पर यह तरल रूप में नहीं आती, बल्कि सीधे गैस बनकर निकल जाती है । यह बहुत भारी होती है ।

धीरज मंडल, डाल्टनगंज; प्रहलाद जसवानी, मंडला

□ **चमगादड़ का अस्तित्व कब से है ? इसके होती है ?**

— जीवाश्मों के अध्ययन से पता चला चमगादड़ों का अस्तित्व ६ करोड़ वर्ष पूर्व पृथ्वी पर था । चमगादड़ के आंखें होती किंतु वह इनका उपयोग नहीं करता । उड़ समय चमगादड़ अपने मुंह से उच्च आवृ (फ्रीक्वेंसी) की ध्वनि तरंगें उत्पन्न करता इनको पराध्वनिक (अलूट्रासॉनिक) तरं कहते हैं । इनकी आवृत्ति लगभग एक ल हट्ज होती है । आवृत्ति की यूनिट को हट् कहते हैं । यदि कोई वस्तु एक सेकेंड में कंपन उत्पन्न करती है तो उसकी आवृत्ति हर्ट्ज बतायी जाती है । इतनी उच्च आवृ तरंगें सीधी रेखाओं में चलती हैं । ये परा तरंगें किसी वस्तु से टकराकर जब चमगा कानों में पहुंचती हैं, तो वह उस वस्तु से ट से बचने के लिए मार्ग बदल देता है ।

मनोज बोहरा, बड़नगर

□ **साबुदाना कैसे बनाया जाता है ?**

— आप 'कादम्बिनी' के नियमित पाठक कृपया विगत अंक देखें ।

विनय पंकज, दरभंगा

□ **भारतीय संविधान में हमारे देश का नाम है ?**

— 'इंडिया' अर्थात 'भारत' ।

सुरेश साह, बछ्वाड़ा

□ **आशुलिपि के आविष्कारक कौन थे ?**

— अधिकतर इतिहासकारों का मत है यूनानी इतिहासकार जेनोफन ने सुकरात के संस्मरण लिखने के लिए किसी पुरानी ग्रीक प्रणाली का उपयोग किया था, जो आशुलि



भवन, अकोला

टिश इतिहास में लॉर्ड नेलसन क्यों प्रसिद्ध

लॉर्ड नेलसन (सन १७५८-१८०५) ा एडमिरल था । युद्ध में उसकी एक आंख जाती रही थी, फिर भी अंगरेजों के लिए केप सेंट विंशेंट की विजय में उसकी भूमिका महत्त्वपूर्ण रही । कुछ समय बाद एक अन्य युद्ध में उसका दाहिना हाथ भी कट गया, परंतु सन १७६८ में उसने भूमध्यसागर में फ्रांस की नौ-सैनिक शक्ति को नष्ट करके दिखा दिया । फ्रांसीसियों पर उसकी सबसे बड़ी विजय ट्रफालगर के युद्ध (सन १८०२) में हुई, जिसने फ्रांस की कमर ही तोड़कर रख दी थी । लंदन में ट्रफालगर स्क्वेयर पर उसकी प्रतिमा के साथ इसी युद्ध का स्मारक बना है ।

ोम के मैरकस दुलियस टिरो ने ईसा पूर्व लैटिन आशुलिपि का आविष्कार किया लेकिन आशुलिपि का सुव्यवस्थित ढंग से न १७वीं शताब्दी में प्रारंभ हुआ । जॉन न को आधुनिक आशुलिपि का जनक जाता है । परंतु सन १७८६ में ब्रिटिश लपिक सैमुअल टेलर ने जो प्रणाली मत की, उसका अनुसरण फ्रांसीसी, ा, पुर्तगाली, इतालवी, स्वेडिश, जरमन, था कई अन्य भाषाओं में किया गया । की प्रणाली के आधार पर सर आइजक ा ने सन १८३७ में जिस प्रणाली का कार किया था, आज उसी का उपयोग जाता है ।

अग्रवाल, बरेली

पति भवन का पूर्ववर्ती नाम क्या है ?

ायसरिगल हाउस— इसमें ब्रिटिश ताज तिनिधि रहता था ।

सुंदर शर्मा, हिसार

भारत के रचयिता वेदव्यास को 'कृष्ण द्वैपायन व्यास' क्यों कहते हैं ?

— व्यास का अर्थ है 'संपादक' । यह उपाधि अनेक पुराने ग्रंथकारों को प्रदान की गयी है, यही नाम 'महाभारत' के संकलनकर्ता, वेदांत दर्शन के स्थापनकर्ता तथा पुराणों के व्यवस्थापक को भी दिया गया है । ये सभी व्यक्ति वेदव्यास कहे गये हैं । विद्वानों में मतभेद है कि ये सभी एक ही व्यक्ति थे या विभिन्न । भारतीय परंपरा इन सभी को एक ही मानती है । महाभारतकार व्यास, ऋषि पराशर एवं सत्यवती के पुत्र थे । ये सांवले रंग के थे और यमुना के बीच स्थित एक द्वीप में उत्पन्न हुए थे । अतएव अपने रंग के कारण 'कृष्ण' और जन्म स्थान के कारण 'द्वैपायन' कहलाये । पुराणों में १८ व्यासों का उल्लेख है, जो ब्रह्मा या विष्णु के अवतार कहलाते हैं तथा पृथ्वी पर विभिन्न युगों में वेदों की व्याख्या और प्रचार के लिए अवतीर्ण होते हैं ।

पंकज आनंद, मुजफ्फरपुर

☐ दूरदर्शन के समाचारवाचकों के सामने क्या



राजेश माथुर, जयपुर
□ ईंटों का प्रयोग कब से शुरू हुआ ?
— ईंट उतनी ही पुरानी हैं जितनी कि हमारी सभ्यता । बेबीलोन और मिस्र के लोग तो ईसा से ३००० वर्ष पूर्व ही ईंटों का इस्तेमाल शुरू कर चुके थे । कुछ खुदाइयों से तो पता च है कि इनका प्रयोग इससे भी पहले हुआ था । पहले ईंट बनाने के लिए मृत्तिका (मि को पैरों से कुचलकर साना जाता था, औ उसमें भूसा मिलाया जाता था, ताकि ईंट न पाये । फिर इसे धूप में सुखाया जाता थ बाद में यह पता चला कि धूप में सुखाने के बजाय आग में पकाने से ईंटें अधिक मजब रहेंगी । अतः पकायी गयी ईंटों में भूसा मि की आवश्यकता नहीं रही । ये ईंटें इतनी टिकाऊ निकलीं कि प्राचीन बेबीलोनिया व अब भी देखी जा सकती हैं ।

कोई स्क्रीन होता है ?
— जी, हां । उन पर मोटे अक्षरों में समाचार आते रहते हैं, जिनको पढ़कर वे बोलते हैं ।

गोवर्द्धन तिवारी, हजारीबाग
□ संगीत निर्देशक युवा शारंगदेव किस महान संगीतकार के पुत्र हैं ?
— पंडित जसराज के ।

अनीसा खातून, जौनपुर
□ पशु भी हमारी तरह क्यों नहीं बोल पाते ?
— वह इसलिए कि पशुओं के मस्तिष्क मानव मस्तिष्कों की तुलना में कम विकसित होते हैं । पशुओं में भी भावनाओं की उत्पत्ति तो होती है, किंतु उनको व्यक्त करने के लिए शब्द नहीं होते । वे अपनी भावनाएं संकेतों या ध्वनियों से व्यक्त करते हैं । जैसे कि कभी-कभी हम भी 'हां' या 'ना' कहने के लिए सिर हिला देते हैं, या किसी को ठहरने का संकेत देने के लिए पंजे खोलकर हाथ दिखा देते हैं । अतः मस्तिष्क के समुचित रूप से विकसित न होने के कारण वे हमारी तरह शब्दों का विकास नहीं कर स हैं । यही कारण है कि वे मनुष्यों की तरह नहीं सकते ।

रेखा अग्रवाल, झांसी
□ पाम्पी कहां है और क्यों प्रसिद्ध है ?
— इटली में नेपल्स के निकट एक प्राची नगर था, जो ज्वालामुखी के विस्फोट की में लगभग दो हजार वर्ष पूर्व (सन ७९) गया था । सन १७४८ में इसकी खुदाई व गयी, जिससे तत्कालीन सभ्यता के अनेक प्रमाण प्राप्त हुए ।

चलते-चलते

शांति निकेतन में रांगेय राघव ने आचार्य प्रसाद द्विवेदी को अपने विवाह की सूचना दे कहा— 'पंडितजी, अब मैं शरीफ हो गया हू मुसकराते हुए द्विवेदीजी का प्रश्न था 'आरि कितने दिन ?'

— सूत्र



शुभकामनाओं पर टिका देश

● हरि जोशी

कई लोग जो दीवारों में चुन दिये जाने योग्य हैं, वे उनको तो मंगलकामनाएं देते ही हैं, जो समाज को और देश को चूना लगा रहे हैं, मंगलकाम्नाओं का सहारा लेकर स्वयं भी यहां-वहां भरपूर चूना लगाने में पीछे नहीं हैं । शुभकामना देते जाइए, चूना भी लगाते जाइए, आपका जीवन तो मंगलमय बना रहेगा । कोई भी आपकी ओर अंगुली उठाने का साहस नहीं करेगा ।

मैं मंगलकामनाएं व्यक्त करने के मामले में बहुत अलाल हूं । सोचता हूं निकट विष्य में कोई बड़ी आफत किसी के सिर पर दि मंडरानेवाली न हो, तो क्यों दी जाएं, लकामनाएं ? दंगलकामनाएं ही दे दी एं ? दंगलकामना इसलिए कि सामनेवाला र्जिश करता रहे, निरंतर तैयारी में निमग्न रहे या भविष्य में आनेवाली हर मुसीबत से जूझने क्षमता अर्जित कर सके ? कम-से-कम लकामना करने से वह स्वस्थ तो होगा ? शुभ-अशुभ, मंगल-अमंगल सभी कुछ थ-साथ यात्रारत हैं, एक ही सिक्के के दो लू । एक परिचित जो बहुत दिनों से मेरी टांग खींच रहा था, आज हाथ मिलाने दौड़ा और टिका गया मंगलकामनाएं । मैं समझ गया शाम तक कुछ और गंभीर, कुछ अधिक खतरनाक घटनेवाला है । सब तो मंगलकामनाएं व्यक्त कर ही रहे थे, वह भी कर गया ।

मेरी समझ में मंगलकामनाएं तीन तरह की होती हैं । धनात्मक शुभकामनाएं, उदासीन शुभेच्छाएं तथा ऋणात्मक मंगलकामनाएं । जब कोई अंतरंग मित्र या संबंधी हृदय खोलकर सच्चे हृदय से शुभकामनाएं देता है, तो मैं धनात्मक शुभकामनाएं कहता हूं । भले ही आत्मिक न हो धन देनेवाली तो हो ? कई लोग टेबिल-कुरसी के काम को नये वर्ष में भी हाथ

नहीं लगाना चाहते, वे उदासीन मंगलकामनाएं व्यक्त करते हैं। वे सोचते हैं, जमानेभर को मंगलकामनाएं देते रहो, ताकि समय नस्तियों और प्रकरणों से युद्ध करने में न बीते बल्कि कुछ मीठी-मीठी बातों में निकल जाए, इसीलिए एक ही शब्द रटंतू तोते की तरह दोहराते रहते हैं। आफिस के प्रत्येक कक्ष में हार्दिक मंगलकामनाएं, हैपी न्यू ईयर, शुभकामनाएं, घड़ी की टिक-टिक की तरह करते रहते हैं।

यह अनुभूतिजन्य सत्य है कि वर्षांत में ३०-३१ दिसम्बर के लिए एक-दो आकस्मिक अवकाश प्रत्येक कर्मचारी, अधिकारी बचाकर रखता है। इन दो दिनों में तो कार्यालयों में बहुधा अघोषित सामूहिक अवकाश ही रहता है। यदि अस्सी-नब्बे प्रतिशत कर्मचारी आकस्मिक रूप से बीमार हो जाएं, तो पूरा कार्यालय ही अस्वस्थ नहीं हो जाएगा ? न कर्मचारी चलते-फिरते दिखते हैं, न नस्तियां। कर्मचारी घरों में बिस्तरों पर पड़े रहते हैं, प्रकरण और नस्तियां कार्यालयों में टेबिलों पर।

एक जनवरी को या दीपावली, होली, रक्षाबंधन, दशहरा, पंद्रह अगस्त आदि पर्वों के ठीक आगामी दिन, सभी कार्यालय मात्र मंगलकामनाओं में ही बीत जाते हैं। बार-बार दी जाती मंगलकामनाएं सचमुच जरूरी भी होती हैं। सभी समझते हैं कि मंगलकामनाएं दी जानी चाहिए। देश को इनकी जरूरत है। सभी को भी।

कुछ देशों में नौकरियां दो या तीन साल के अनुबंध पर होती हैं। जहां-जहां नौकरियां असुरक्षित होती हैं, वहां का काम सुरक्षित तरीके से हो जाता है। जहां-जहां नौकरियां सुरक्षित रहती हैं, वहां का काम असुरक्षित हो जाता है। जहां नौकरियां जा सकती हैं, वहां के कर्मचारी को प्रतिदिन तथा नियमित रूप से काम हेतु आना पड़ता है। जहां नौकरियां नहीं जातीं, वहां बहुधा कर्मचारी भी काम हेतु नहीं जाते। 'नौकरी' का 'कर्मचारी' से 'रिश्ता' 'यो ही नहीं हो जाता। रंगीन मिजाज व्यक्ति इनके बिना जी ही नहीं सकता।

शुभकामनाओं की आवश्यकता इसलिए भी अधिक होने लगी है, क्योंकि नौकरियां अब दुर्लभ हो गयी हैं। फिर जिस देश में जान के खतरे कदम-कदम पर हों, वहां आम आदमी को तो खतरों से ही जीवन पर्यंत खेलना है। उसे शुभकामनाओं की सख्त जरूरत होती है मुझे दुःख तब होता है, जब मंगलकामनाएं उसे न दी जाकर बड़े-बड़े लोगों को दी जाती हैं, जिन्हें इनकी तनिक भी आवश्यकता नहीं रहती। और यदि और समृद्ध तथा प्रभावी लोगों को ही मंगलकामनाएं दी जाया करेंगी, तो वे निश्चय ही और समृद्ध होंगे। अमीर और अमीर होंगे, गरीबों को मंगलकामना नहीं दी जाती अतः वे और गरीब हो रहे हैं।

अब जो व्यक्ति पहली जनवरी को भी 'हैपी न्यू ईयर' न कहे, उसे आप गंवार नहीं तो और क्या कहेंगे ? गांवों में तो आपने किसानों को आपस में 'हैपी न्यू ईयर' कहते सुना भी नहीं होगा ? उनके वर्षभर दुःखी बने रहने का यही तो कारण है ? वे लोग हैं जो गधों की तरह वर्षभर लदे रहते हैं, और एक हम शहराती लोग हैं, जो बस चले तो सालभर 'हैपी न्यू ईयर' कहते-कहते ही गुजार दें ? हैपी न्यू ईयर तो छोड़ो वे शुभकामना या मंगलकामना—जैसे

ी नहीं उच्चार सकते । वे वर्षभर काम
, और हम सालभर कहते रहते हैं । भैया
करो, बात करो । जो लोग समृद्धि के
ना चाहते हैं, वे मंगलकामनाएं भी चुने
लोगों को देते हैं । मंगलकामनाएं उन्हें
'रिटर्न' अच्छा मिलता है । भले ही वे
श को चूना लगा रहे हों, किंतु हमें ऐसे
हुए लोगों को मंगलकामनाएं देना
।

लोग जो दीवारों में चुन दिये जाने योग्य
नको तो मंगलकामनाएं देते ही हैं, जो
को और देश को चूना लगा रहे हैं,
ामनाओं का सहारा लेकर स्वयं भी
ां भरपूर चूना लगाने में पीछे नहीं हैं ।
मना देते जाइए, चूना भी लगाते जाइए,
जीवन तो मंगलमय बना रहेगा । कोई
की ओर अंगुली उठाने का साहस नहीं
करेगा ।

'बोये पेड़ बबूल के तो आम कहां से खाय' यदि तूने मंगलकामनाएं प्रेषित नहीं कीं, तो तेरा अपना जीवन मंगलमय कैसे रहेगा ? जितने अधिक शुभकामना पत्र भेजेगा, उतना ही तेरा भी शुभ होगा ।

मेरी तो अंतिम मंगलकामना यही है कि समूचे देश में मंगलकामनाएं देने का वृहद आंदोलन छिड़ जाए और देश के कण-कण में शुभकामनाएं बिखरा दी जाएं । शायद कण-कण में व्याप्त मंगलकामनाओं से देश का कुछ भला हो जाए ? और तो मुझे दूसरी कोई उम्मीद नहीं दिखती ।

—३७७ न्यू सुभाष नगर,
रायसेन मार्ग,
भोपाल-४६२ ०२३

घर बैठे दफ़्तर

ब्रिटिश दूरसंचार संगठन ने अपने एक अभिनव प्रयोग के अंतर्गत घर बैठे दफ़्तर
का कामकाज निपटाने के लिए टेलीवर्किंग की व्यवस्था को विकसित कर एक नयी
प्रणाली इंटीग्रेटेड सर्विस डिजीटल नेटवर्क (आई. एम. डी. एन.) की शुरुआत कर दी
है ।

एक महिला टेलीफोन ऑपरेटर श्रीमती सोना मैकूगन की दफ़्तर आने और वापस
जाने में होनेवाली कठिनाइयों के कारण दूरसंचार विभाग को इस दिशा में प्रयास करना
पड़ा । श्रीमती मैकूगन के घर पर कंप्यूटर एवं वीडियोफोन लगवाकर उनके घर से
दूरसंचार के दफ़्तर तक टेलीकॉम प्रणाली विकसित की गयी । कंप्यूटर 'की बोर्ड' द्वारा
उनका संपर्क सीधे दफ़्तर से हो गया और दफतर से आनेवाले संदेश कंप्यूटर स्क्रीन पर
दिखायी देने लगे । श्रीमती मैकूगन वांछित सूचनाएं वापस भेजने लगीं ।

— विनोद कुमार लाल



खुलेंगे पट केदारनाथ के

● धर्मेंद्र रावत

विस्तृत हिमश्रृंखला हिमालय के कश्मीर से अरुणाचल तक के विस्तार की हृदयस्थली है— 'गढ़वाल मंडल'। देवात्मा हिमालय की यह हृदयस्थली स्वयं कैलाशपति शिव की प्रधान क्रीडास्थली एवं निवासस्थली भी है। गढ़वाल का यह क्षेत्र अनादिकाल से ही संपूर्ण भारतवर्ष में पवित्रतम माना गया है। यही कारण है कि यहां पर स्थान-स्थान पर प्राचीन धार्मिक तीर्थस्थल हैं, यहां की हर नदी गंगा-सी पवित्र है और हर शिला के पीछे है एक लंबी धार्मिक कथा। हमारे प्राचीन ग्रंथों में भ
गढ़वाल क्षेत्र 'केदारखंड' या 'केदारभूमि
से प्रसिद्ध था। स्कंदपुराण के एक भाग
खंड' (ग्रंथ) में भी इस भाग को संपूर्ण
हिमालय के पांच खंडों में एक माना गय

खंडाः पंच हिमालयस्य कथिता नैपाल कूम
केदारोऽथ जलंधरोथरुचिरः काश्मीर संज्ञो

गढ़वाल का केदारखंड नाम संभवत
क्षेत्र में स्थित सर्वाधिक प्राचीन व भव्य
केदारनाथ मंदिर पर ही आधारित है। इ

पुराणों के अनुसार केदारनाथ में शिव की स्थापना स्वयं पांडवों द्वारा द्वापर युग में की गयी थी । उन्होंने ही यहां पर सर्वप्रथम मंदिर का निर्माण अपने हाथों से किया था । दंतकथाओं के अनुसार मंदिर का वर्तमान स्वरूप पांडवों के पौत्र राजा जनमेजय द्वारा बनवाया गया और उन्होंने ही माता कुन्ती, पांडवों और श्रीकृष्ण-बलरामजी की मूर्तियां मंदिर में रखवायीं ।

दिर में इस संपूर्ण क्षेत्र के स्वामी आशुतोष व केदारनाथ नाम से स्थापित हैं ।

पुराणों के अनुसार सतयुग में एक बार मालय में घूमते-घूमते शिव केदारनाथ चे । इस स्थान की नैसर्गिक छटा उन्हें इतनी यी कि वह सदा के लिए यहां पर बस गये । वपुराण के अनुसार मोक्ष की प्राप्ति हेतु शिव ढूंढ़ते गोत्रहंता पांडवों से बचने के लिए व काशी से केदारनाथ पहुंचे । यहां पर भी डवों ने उन्हें ढूंढ़ लिया । विवश होकर शिव ष-रूप धरकर भूमि में समाने लगे । बली भीम ने यह देखकर महिषरूपी शिव पूंछ पकड़ ली और पांडवों ने उनसे मोक्ष न करने की याचना की । शिव प्रसन्न हुए र उन्होंने पांडवों को उनके पापों से मुक्त कर या । उसी समय से शिव का पिछला भाग रनाथ में केदारलिंग के रूप में गर्भगृह में तत है । महिषरूपी शिव के अन्य भाग लांतर में गढ़वाल में ही रुद्रनाथ, तुंगनाथ, यमहेश्वर व कल्पेश्वर में प्रकट हुए और यह थों स्थान पंचकेदार नाम से प्रसिद्ध हुए । दारखंड ग्रंथ' में भी कहा गया है—

क्षेत्राणि पंचैव, भक्त प्रीति कराणि वै, केदारं मं तुंगं, तथा रुद्रालयं प्रियम् । कल्पकं च महादेवि, सर्वपाप प्रणाशनम्, कथितं ते महाभागे केदारेश्वरमंडलम ॥

केदारनाथ की प्राचीनता

केदारनाथ भारतवर्ष के विभिन्न भागों में स्थित द्वादश ज्योतिर्लिंगों में एक है, जैसा कि शिवपुराण, ज्ञानसंहिता में भी वर्णित है—

सौराष्ट्रे सोमनाथं च, श्री शैले मल्लिकार्जुनम ।

× × × ×

हिमालये तु केदारं, धुश्मेशं च शिवालये ।

केदारखंड ग्रंथ में भगवान शिव ने इस स्थान को इतना प्राचीन बताया है, जितने शिव स्वयं हैं । केदारनाथ से उत्पन्न केदारखंड नाम गढ़वाल का एक प्राचीन नाम है । किंतु इससे भी प्राचीन नाम 'केदारभूमि है' जो पुनः केदारनाथ से ही उत्पन्न प्रतीत होता है । गढ़वाल के गोपेश्वर नामक कस्बे में गोपीनाथ (स्वयं शिव) के एक मंदिर में स्थित विशाल व प्राचीन त्रिशूल पर अशोक चल्ल के सन ११९१ में लिखे अभिलेख में गढ़वाल को केदारभूमि नाम से ही संबोधित किया गया है । इससे स्पष्ट है कि इस काल से पूर्व ही केदारनाथ अत्यंत प्रसिद्ध धार्मिक गंतव्य था । सातवीं सदी के पूर्वार्द्ध में बाणभट्ट द्वारा रचित साहित्य में भी केदारनाथ में स्थित 'भृगु पंथ' से गिरकर स्वर्ग

प्राप्ति होना वर्णित है । मौर्य युग के पश्चात ईसा पूर्व १८५ वर्ष से प्रारंभ पुष्यमित शुंग के काल में रचित अधिकतर पुराणों में भी केदारनाथ की यात्रा का उल्लेख किया गया है, जो इसकी प्राचीनता को प्रदर्शित करता है । यही नहीं सातवीं एवं आठवीं सदी तक केदारनाथ संपूर्ण भारतवर्ष में इतना प्रसिद्ध हो चुका था कि दक्षिण भारत के दो शैव आचार्यों तिरुज्ञान संबंधधर (सन ६५० ई.) व सुंदरमूर्ती (सन ८५० ई.) ने भी केदारनाथ की महिमा का वर्णन अपनी कविताओं में किया ।

गढ़वाल के प्रमुख तीर्थों का विस्तृत वर्णन करनेवाला ग्रंथ 'केदारखंड', जो प्राचीन स्कंद पुराण का एक अध्याय होने का दावा भी करता है (यद्यपि है नहीं), स्वयं केदारनाथ मंदिर से इतना प्रभावित है कि उसमें तमसा (टौंस) नदी से बौद्धाचल (बधाण) और हरिद्वार से श्वेत पर्वत (कैलाश पर्वत), तक के विस्तार, अर्थात वर्तमान गढ़वाल को 'केदारखंड' नाम ही दे दिया गया है । बारहवीं शताब्दी के लगभग रचित यह ग्रंथ 'केदारखंड' यद्यपि अत्यंत प्राचीन नहीं है, पर यह सिद्ध अवश्य करता है कि इसके निर्माण से काफी पूर्व ही केदारनाथ का भव्य स्वरूप प्रकाश में आ चुका था । इतिहासकार भी इस बात को मानने से इनकार नहीं करते कि केदारनाथ का मंदिर कुमाऊं व गढ़वाल में सबसे प्राचीन, भव्य व विशाल है ।

केदारनाथ मंदिर का निर्माण

पुराणों के अनुसार केदारनाथ में शिव की स्थापना स्वयं पांडवों द्वारा द्वापर युग में की गयी थी । उन्होंने ही यहां पर सर्वप्रथम मंदिर का निर्माण अपने हाथों से किया था । दंतकथाओं के अनुसार मंदिर का वर्तमान स्वरूप पांडवो पौत्र राजा जनमेजय द्वारा बनवाया गया औ उन्होंने ही माता कुन्ती, पांडवों और श्रीकृष्ण-बलरामजी की मूर्तियां मंदिर में रखवायीं ।

कुछ इतिहासकारों के अनुसार उदयपुर (ग्वालियर राज्य) में एक शिलालेख को दे हुए इस मंदिर का निर्माण मालवा नरेश भोज त्रिभुवन नारायण द्वारा हुआ भी माना जा सक है, (इपिग्राफिका इंडिका, खंड १५०,२३५-३६) । मंदिर की छत व छत्रा का पुनर्निर्माण मराठा रानी अहिल्या बाई द्वार किया गया है । हिंदू धर्म के महान प्रवर्तक शंकराचार्य ने भी यहां आकर कई ग्रंथों की रचना की और मंदिर को वर्तमान स्वरूप में ल में उनका भी महत्त्वपूर्ण योगदान है ।

केदारनाथ मंदिर के निर्माण हेतु ७-८ कि.मी. दूर से पत्थर की विशाल शिलाएं ला गयी हैं । साथ ही मंदिर के शीर्ष में विशाल पत्थर की गोलिका है जिसे देखकर यह प्रमा होता है कि मंदिर निर्माण जिस किसी ने भी किया हो, वह लोग अत्यंत बलिष्ठ व क्रेन अ यंत्रों की जानकारी रखनेवाले अवश्य थे । आश्चर्य का विषय है कि केवल प्रस्तरों से नि यह विशाल मंदिर सैकड़ों वर्षों से धूप-ताप, तूफान, भूकंप, रुहेलों के आक्रमण आदि को सहकर भी मंदाकिनी उपत्यका के अंतिम सि पर सिर उठाये गर्व से खड़ा है— एक अच अभेद्य दुर्ग या फिर स्वयं अटल हिमालय की भांति ।

केदारनाथ मई से नवम्बर तक

उच्च हिमालय की घाटियों में कठिन शीत

ाद बसंत ऋतु में सूर्य की तपिश बढ़ते ही यहां
ी बर्फ पिघलने लगती है। हिमावरण
ाघलकर स्थान-स्थान पर छोटी-छोटी
ल-धाराओं को जन्म देता है। ठीक इसी
मय हिमालय के वनों की उच्चतम सीमाओं
र विद्यमान बुरांस के वृक्ष सुर्ख रंग के फूलों से
दकर इन ऊंचाइयों पर बसंत का स्वागत करते
। केदारनाथ की बुग्याली घाटी भी बसंत के
स्पर्श से अछूती नहीं रहती। हिमावरण के
घलते ही नन्हें-नन्हें बुग्याली पौधों में जीवन
ी सुगबुगाहट होने लगती है। इसी समय एक
न ऊखीमठ से केदारनाथ की पंचमुखी प्रतिमा
छत्र लिए एक डोली स्थानीय वाद्य यंत्रों के
ाथ केदारनाथ की ओर चल पड़ती है। दो
त्रि विश्रामों के पश्चात यह डोली केदारनाथ
हुंचती है, जहां इसका स्वागत स्थान-स्थान पर
ले बुग्याली फूलों से होता है। केदारपुरी से
त्रपाल देवता भैरवनाथ की अनुमति लेकर
दारनाथ मंदिर के द्वार दर्शनार्थ खोल दिये
ते हैं। भारतवर्ष के कोने-कोने से पहुंचे
क्तजनों की भीड़ गर्भगृह में स्थित शिव के
ापलिंग (स्वयंभू) के दर्शनों के लिए उमड़
ड़ती है। पिछले छह मास से समाधिस्थ शिव
ागृत हो उठते हैं। केदारपुरी की शांत, स्तब्ध
टी में 'जय केदार' व मंदिर में घंटों के शब्द
-दूर तक गूंज उठते हैं।

वर्षाकाल में तो संपूर्ण केदारघाटी का सौंदर्य
पनी पराकाष्ठा पर होता है। सारा परिदृश्य
नसूनी फुहारों में धुलकर ताजादम और
ा-भरा होता है। घाटी में दौड़ते कोहरे का
र्श पाकर बुग्याली फूलों की कलियां अंगड़ाई
कर खिल उठती हैं। पंखुड़ियों पर टिकी
ओस और बारिश की बूंदें सूर्य रश्मियों के प्रकाश में मोतियों की तरह चमकती हैं। हरी-भरी घाटी में विचरता घना कोहरा हर पल नयी-नयी आकृतियां बनाता है, भूमि पर बिखरे होते हैं अनेक रंगों के अलग-अलग प्रकार के बुग्याली फूल और बुग्याली ढलानों पर दिखायी देते हैं काली-सफेद भेड़-बकरियों के झुंड-के-झुंड। इसी समय केदारनाथ से भी अधिक ऊंचाई पर पथरीले ढलानों में उगनेवाले प्रसिद्ध हिमालयी पुष्प 'ब्रह्मकमल' को स्थानीय लोग टोकरियों में एकत्रित कर केदारनाथ को अर्पित करते हैं। ब्रह्मकमल वही सहस्रदल कमल है, जिसे नदी में बहता देखकर द्रौपदी उस पर मोहित हो गयी थी। पूबरह्मकम के पुष्प केदारनाथजी का प्रमुख प्रसाद माने जाते हैं और पंडे लोग एक-एक पुष्प यजमानों को प्रसाद के साथ अवश्य देते हैं।

वर्षाकाल में घटी भक्तजनों की संख्या वर्षाकाल के बाद पुनः बढ़ने लगती है। पर अब धार्मिक श्रद्धालुओं के अतिरिक्त पथारोही (ट्रैकर्स) भी इस क्षेत्र में जोखिमभरी पदयात्राएं करने के लिए खिंचे चले आते हैं। मानसूनी वर्षाओं का दौर-दौरा थमने के बाद अब सारा परिदृश्य होता है साफ-सुथरा धुला-धुला-सा। वर्षाकाल में संपूर्ण घाटी में फैले कोहरे का दूर-दूर तक कहीं पता नहीं चलता और यही समय हिमालय में हिमशिखरों के अवाक कर देनेवाले दृश्यों को देखने और ऊंची-नीची धारों पर पथारोहण (ट्रैकिंग) करने का होता है।

सितम्बर के बीतते-बीतते तापमान में गिरावट प्रारंभ हो जाती है। उफनती मंदाकिनी व अन्य जल धाराओं का गर्जन-तर्जन अब

कल-कल करते मधुर शरद के संगीत में परिवर्तित हो जाता है । अक्तूबर में केदारनाथ के बुग्याली ढलानों का रंग सूखती घासों के कारण सुनहरा पीला होने लगता है और इसी सुनहरे कैनवस पर सूखती वनस्पतियों की पत्तियों के हलके व गहरे लाल, पीले व नारंगी रंग से प्रकृति शरद का पूरा चित्र ही उकेर देती है । उत्तुंग हिमशिखरों पर ताजा बर्फ पुनः जमने लगती है । शनैः-शनैः तापमान और भी घटता जाता है और यहां-वहां पत्तियों पर बिखरी ओद की बूंदें जमकर बर्फ बन जाती हैं । यही समय है जब केदारनाथ के द्वार शीतकाल के लिए बंद करने की तैयारियां प्रारंभ हो जाती हैं ।

केदारनाथ की शीत-समाधि

द्वार बंद होने से पूर्व अंतिम मंगलवार को केदारपुरी के रक्षक क्षेत्रपाल भैरवनाथ की अंतिम पृजा की जाती है । तीन दिन पूर्व एक दीपक अखंड ज्योति से प्रज्ज्वलित कर मंदिर के बाहरी कक्ष में लाया जाता है । दीपावली की अमावस्या को केदारपुरी के सभी लोग केदारनाथ के मंदिर में एक-एक दीपक अवश्य जलाते हैं । मंदिर प्रांगण में एक विशाल अग्नि प्रज्ज्वलित की जाती है, जिसके चारों ओर स्थानीय वाद्य यंत्रों की धुन पर देर रात्रि तक लोग एक विशेष ''पंडोंनाच' (पांडव नृत्य) करते हैं । अगले दिन मंदिर के बाहरी कक्ष में केदारनाथ की डोली महादेव की पंचमुखी प्रतिमा एवं छत्र के साथ सजाकर रखी जाती है और यहां रखा दीया भंडार गृह में रख दिया जाता है ।

मंदिर बंद होने के दिन प्रातःकाल लगभग चार बजे द्वार खोलकर आरती एवं भोग आदि लगाया जाता है । जिसके बाद मंदिर के द्वार कुछ देर के लिए बंद होते हैं । द्वार पुनः खुलने पर एक विशेष 'समाधि पूजा' की जाती है जिसमें सर्वप्रथम केदारलिंग को मंदाकिनी के पवित्र जल से स्नान कराया जाता है । तत्पश्चात केदारलिंग को पिघले घी से स्नान कराकर ऊपर से आधे कुटे धान को बिखेर दिया जाता है । सबसे ऊपर एक गेरुए रंग का 'समाधि वस्त्र' चढ़ाया जाता है । वैदिक रीतियों व मंत्रोच्चार के साथ इस पूजा से भक्तजनों के नेत्र प्रायः अश्रुपूरित हो उठते हैं । इस पूजा के बाद यह माना जाता है कि शिव समाधिस्थ हो गये हैं । सूर्योदय से पहले ही दीपावली के दो दिन बाद प्रातःकाल में मंदिर के द्वार शीतकाल के लिए बंद कर दिये जाते हैं ।

सुबह की धूप के मंदिर कलश पर स्पर्श के साथ ही आशुतोष शिव की पंचमुखी प्रतिमा लिये डोली मंदिर की परिक्रमा करती है और उसके पश्चात केदारपुरी से विदा लेती है । डोली के प्रस्थान के पश्चात किसी को भी केदारपुरी में रहने की आज्ञा नहीं है, पर आसमान से झरते बर्फ के फाहों पर न केदारनाथ का वश है, न ही क्षेत्रपाल भैरवनाथ का । बार-बार होते हिमपात से हिमावरण ऊंचा-दर-ऊंचा होता चला जाता है और नदी, शिलाओं, मकानों, बुग्याली ढलानों सब को ढक लेता है, पर मंदिर अभी भी बर्फ से कहीं ऊंचा होता है ।

पहले दिन की लगभग २५ कि.मी. की यात्रा के बाद डोली रामपुर में विश्राम करती है । अगले दिन फिर एक लंबी यात्रा के बाद डोली का विश्राम गुप्तकाशी में होता है । रास्ते में स्थान-स्थान पर लोग स्थानीय वाद्य यंत्रों के

केदारनाथ प्राचीनकाल से ही भारत का प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है। प्राचीन मान्यताओं के अनुसार यह स्थल मुक्ति प्रदान करनेवाला है। मंदिर का मुख्य प्रवेश द्वार दक्षिण की ओर है और मंदिर में प्रवेश करते समय मनुष्य उत्तराभिमुख होते हैं, जो कि मुक्ति के लिए आवश्यक है। मंदिर में प्रवेश मात्र से ही मुक्ति प्राप्त होना माना गया है। देवी पुराण में कहा गया है कि केदारनाथ आनेवाले को बार-बार जन्म नहीं लेना पड़ता, अर्थात मोक्ष की प्राप्ति होती है।

ली का स्वागत कर केदारनाथ के दर्शन
। तीसरे दिन यह डोली ऊखीमठ
है जहां मंदिर की परिक्रमा करने के
शव की 'चल-प्रतिमा' को मंदिर में
किया जाता है। यहीं पर जाड़ोंभर
थ की प्रतीकात्मक पूजा की जाती है।
कि शीतकाल के शांत वातावरण में
में शिव को प्रसन्न करने के लिए
ता, किन्नर व यक्ष आदि भी केदारनाथ
-अर्चना करते हैं।
रपुरी में मुख्य मंदिर के अतिरिक्त और
क प्राचीन स्थल है। मंदिर से
में लगभग १ कि.मी. की दूरी पर एक
शिला है, जिसके ऊपर शिव के गण व
भैरवनाथ स्थापित हैं। भैरवनाथ इस
रक्षक भी हैं। केदारनाथ में कुछ अन्य
हैं, जिनमें 'पंचमुखी महादेव मंदिर',
का मंदिर', 'श्री सत्यनारायण का
वं 'नवदुर्गा का मंदिर' आदि हैं।
कारों के मतानुसार ये भी अत्यंत प्राचीन
। इन्हीं मंदिरों के पास 'उदक कुंड' भी
का जल अत्यंत पवित्र व रोगनाशक
माना गया है। 'केदारकल्प' नामक तंत्र-ग्रंथ में तो इस जल का ही गुणगान किया गया है। प्रमुख मंदिर के पास ही शंकराचार्य की समाधि व हंसकुंड आदि भी स्थित हैं। हंसकुंड का जल पीने के लिए तो स्वयं ब्रह्मा हंस का रूप लेकर पधारे थे। इस कुंड में भक्तजन अपने परिवार के मृतकों की जन्मकुंडलियां डालकर उनका श्राद्ध करते हैं।

केदारनाथ के आसपास पर्यटन की दृष्टि से कई अन्य महत्त्वपूर्ण स्थल भी हैं। उत्तर की ओर चोराबारी ग्लेशियर के पार्श्व में चोराबारी ताल लगभग ३ कि.मी. की दूरी पर है। केदारपुरी से आठ कि.मी. की दूरी पर तीक्ष्ण चढ़ाई के बाद वासुकी ताल है, जहां वासुकीनाग का स्थान माना जाता है। इसके आसपास का क्षेत्र अत्यंत रमणीक है। यहां से आगे कुछ और उच्चशिखरीय झीलें यथा पंया ताल, लंगदर ताल व कुछ बेनाम झीलें भी स्थित हैं। वर्षाकाल में इन झीलों के चारों ओर विभिन्न रंग के बुग्याली फूल खिले होते हैं, जिससे इनकी नैसर्गिक छटा और भी निखर जाती है।



देवभूमि गढ़वाल के प्रवेश द्वार हरिद्वार से २३२ कि. मी. की रेंगती-घूमती सड़क से देवप्रयाग, श्रीनगर, रुद्रप्रयाग, गुप्तकाशी आदि स्थानों को पार कर पहुंचा जाता है 'गौरीकुंड' जो मंदाकिनी उपत्यका (घाटी) में स्थित अंतिम बस स्टेशन है। यहीं पर माता पार्वती ने शिव को स्वामी रूप में प्राप्त करने के लिए तपस्या की थीं। यहां पर शिव गौरीश्वर रूप में स्थापित हैं। बस यहीं से केदारनाथ के लिए १४ कि.मी. की पैदल यात्रा प्रारंभ होती है। पैदल न चल पानेवाले भक्तों के लिए घोड़े, पालकी, डंडी आदि की भी व्यवस्था है। रास्ते में हर ३-४ कि.मी. के बाद चट्टियां हैं जहां चाय-पानी पीकर तरोताजा हुआ जा सकता है।

केदारनाथ प्राचीनकाल से ही भारत का प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है। प्राचीन मान्यताओं के अनुसार यह स्थल मुक्ति प्रदान करनेवाला है। मंदिर का मुख्य प्रवेश द्वार दक्षिण की ओर है और मंदिर में प्रवेश करते समय मनुष्य उत्तराभिमुख होते हैं, जो कि मुक्ति के लिए आवश्यक है। मंदिर में प्रवेश मात्र से ही मुक्ति प्राप्त होना माना गया है। देवी पुराण में कहा गया है कि केदारनाथ आनेवाले को बार-
जन्म नहीं लेना पड़ता, अर्थात मोक्ष की
होती है। 'केदारकल्प' ग्रंथ के अनुसार
केदारनाथ में स्थित उदक कुंड का जल
मात्र से सारे पाप नष्ट हो जाते हैं और पर
की प्राप्ति होती है। स्कंद पुराण में भी क
है —

ये वदंतयपि केदारं, गमिष्यामि इति क्वचित्
पितरस्तस्य देवशि, त्रिशतं कुलसंयुताः
गच्छन्ति शिवलोके तु, सत्यं सत्यं न संशयः

(स्वयं शिव पार्वती से कहते हैं कि जो ल
जहां कहीं भी यह कहते हैं कि हम केदार
जाएंगे, हे देवि! उनके तीन सौ कुल त
लिए शिवलोक को जाते हैं इसमें कोई सं
नहीं है)। इस सब के अतिरिक्त केदारन
आने पर एक आध्यात्मिक शांति मिलती
देवतात्मा हिमालय को निकट से देखने
उत्कंठा भी शांत होती है।

— प्रो. ब
वनस्पति वि.
हे.नं.ब. गढ़वाल विश्व
श्रीनगर (गढ़वाल)-२



▲ ...हिमानी में डूबा केदारनाथ का मंदिर



...क रक्षक—भैरवनाथ ▲

...शिखर और हिम शिखर ▶



...पारदर्शी : धर्मेंद्र रावत



सिंदूर लगाने से ही पति नहीं होता

—अर्चना सौशिल्य

पारदर्शी : अरुण बेसेकर





सिंदूर लगा देने से ही कोई पति नहीं होता

● अर्चना सौशिल्य

काल-चिंतन की कुछ पंक्तियां हैं, 'कुछ घर ऐसे भी हैं, जिनमें न आग लगी है, न बर्फ पड़ रही है, सिर्फ धुआं है और उसी घुटते हुए घर में लोग जी रहे हैं ।' उन्हीं घरों की गृह-स्वामिनियों ने 'नारी तुम केवल श्रद्धा हो' के रूप को कलंकित किया है । ऐसे भी पुरुषों की बातें हमने काफी पढ़ीं और सुनी हैं, जिन्हें व्यंग्य से तरह-तरह की उपाधियों से विभूषित किया जाता है, जिन्होंने अपने घर बरबाद किये हैं । किंतु, क्या कभी हमारा ध्यान उन औरतों की तरफ भी जाता है, जिन्होंने ईर्ष्या, द्वेष और स्वार्थ के कारण घरेलू वातावरण को नारकीय बना रखा है ।

विमाता की कहानी सुनानेवाली एक छात्रा का कहना है, 'मेरी विमाता ने मुझे घरेलू लड़की से बाजारू बना दिया । मेरा दोष सिर्फ यही था कि मैं दूसरी मां की बेटी हूं ।' माताओं के रूप में एक नाम वह भी आता है, जो दूसरों के बच्चों को दीन-हीन दिखाना चाहती है, दूसरों की बेटियों पर चारित्रिक लांछना लगाकर समाज में उन्हें कलंकित करती है ।

पत्नी क्या चाहती है ?

पति-पत्नी के संदर्भ में हर नारी समाज व नैतिकता से यही सीखती है कि मात्र सिंदूर लगा देने से कोई पति नहीं हो जाता । पति से एक पत्नी क्या चाहती है ? पत्नी पति से चाहती

महिलाओं का विवाहोपरांत प्रेम-प्रसंग, जिस पर कोई भी चीज बंदिश नहीं लगा सकती, चाहे घर की इज्जत ही क्यों न हो । ऐसी औरतें पर-पुरुष का सहारा लेकर कभी-कभी अमानवीय कृत्य कर बैठती हैं

है—संपूर्ण त्याग, सुरक्षा व भावनात्मक संबंध । अगर ऐसा पति मिल जाए तो हर पत्नी अगले सात जन्मों में भी ऐसे ही पति की कामना करेगी । किंतु, जब कभी यही पति कुछेक साली, भाभी या बहन के बहकावे में आकर घर से विमुख हो जाता है, तो पत्नी-सुंदरता की देवी, त्याग व ममता की प्रतिमा, गृह की स्वामिनी—उसके लिए असह्य हो जाती है । आमतौर पर लोग दोष पुरुषों को देते हैं—किंतु उनकी तरफ ध्यान नहीं जाता, जो पराये 'धन' से अपना घर भरने की कोशिश करती हैं । बहनोई या देवर के प्रति झुकाव या आकर्षण भावनात्मक-सुरक्षा, आर्थिक सहायता अथवा पति द्वारा उपेक्षा के कारण हो सकता है । किंतु, क्या यह उचित है ? औरतों को यह सुरक्षा अपने आप में ढूंढ़नी चाहिए ।

नैतिकता, धर्म और संस्कारों की वेदी पर यह बात शत-प्रतिशत सही है कि हरेक कर्म का लेखा-जोखा इसी जिंदगी में हो जाना है । अगर पुरुष पर-स्त्रीगामी हो, तो इसका दुष्परिणाम बच्चों में दिखता है और अगर स्त्री पर-पुरुषगामी है, तो उसका दुष्प्रभाव भी नजर आता है ।

कुछ घर ऐसे भी हैं, जो संतप्त जिंदगियों की दास्तान सुनाते हैं । औरतों की महत्त्वाकांक्षाओं का हमेशा ही दमन किया जाता है, लेकिन अगर इसका सहज रूप से विकास होता रहे, तो जिंदगी की गाड़ी चलती रहती है । किंतु, कुछ घर ऐसे भी हैं, जिनमें नारियों की महत्त्वाकांक्षाओं की ऊंची उड़ान के कारण घर की आहूतियां चढ़ गयी हैं । यह सही है कि जिंदगी में अगर आशा, उम्मीद व महत्त्वाकांक्षाएं न हों, तो जीवन निरर्थक है । किंतु, अपनी महत्त्वाकांक्षा दूसरों के लिए अंतिम इच्छा बन जाए, नाते-रिश्तेदारी व भावना की सीमा लांघ जाए, तो शायद, इससे बेहतर सीधी व सहज जिंदगी है । अपने 'मैं' को नाम देने हेतु, 'अहम' की संतुष्टि हेतु, कभी-कभी सहज व स्वाभाविक व्यक्तित्व के पुरुष को व्यथित करना, किसी भी अर्थ में उचित नहीं ।

बरबादी निश्चित है

सच है कि पुरुष की शंकालु प्रवृत्ति व बेवजह, बेबुनियाद तथा बिन बुलाये 'अहम' के आड़े आ जाने से कितनी ही आशाएं ध्वस्त हो जाती हैं, इच्छाएं मर जाती हैं और यहीं सुषुप्त आधार-विहीन नाम जागृत होता है, कहीं और ज्वालामुखी बनकर, जिनसे फूट बहे लावे से न जाने कितने स्त्री-पुरुष घायल हो जाते हैं । नारी जब अपने गंतव्य की तरफ अग्रसर होती है, तो अपने घर व समाज द्वारा लगाये कायदे-कानूनों की लक्ष्मण-रेखा पार कर अपना वजूद बनाती है, जहां उसे हर एक का प्रतिरोध करना पड़ता है । कुछ थककर रुक जाती हैं, कुछ इन्हीं मोड़ों पर सुस्त कदमों से चलती हैं, कुछ आंधी की तरह निकल जाती हैं और कुछ गुमराह हो जाती



हैं। फिर भी इन्हीं रास्तों को प्रामाणिकता देना इनका सब कुछ हो जाता है। यह सच है—पुरुषों द्वारा लगाये हर कायदे व कानून सही नहीं होते, किंतु हर वक्त गलत भी नहीं होते, क्योंकि अपनी बिरादरी के लोगों को अच्छी तरह से समझने व परखने की कला इन्हें आती है। किंतु, बिना समझदारी के जब यह 'डू एंड डोंट्स' स्त्री व पुरुष के अहम का टकराव बनकर उलझने लगें, तो घर में अशांति व बच्चों की बरबादी निश्चित है।

एक विवाहित बेटी का कहना है कि मां के स्वाभिमानी स्वभाव व आगे बढ़ने की चाह के कारण आज तक न तो वह पति-पत्नी का संबंध समझ पायी है, न ही मां एवं बच्चों के रिश्तों की परिभाषा। आखिर, वह लक्ष्य कहां रह जाता है जबकि, नारी अपने ही स्वभाव को भूल जाए? यह समाज व पुरुष लाख चीख-चीखकर अपने को शहंशाह घोषित करता रहे, इस शरीर में एक आत्मा है, मन है, भावना है, जिसे समझने के लिए जरूरत पड़ती है नारी की, नारी हृदय की, उसके ममत्व व प्यार की। फिर इस संपूर्ण मानव जीवन के आधार को आधारहीन बनाने का अनर्थक प्रयास क्यों करती है नारी? अपनी सहज व निर्दोष आकांक्षाओं को समाज के साहचर्य में पुष्पित कर औरत जीवन को नया आयाम दे सकती है। परंतु कुछ धुआं उड़ते घरों के भय से आम शिक्षित व प्रतिभाशाली महिलाएं भी अपनी आशाओं को ध्वस्त करती रहती हैं, जबकि उनके भाषित होने पर लेशमात्र भी प्रश्नचिह्न नहीं बन सकता।

कुछ घरों की कहानियां सही-गलत सामंजस्य के त्रिकोण के बीच घूमती रहती हैं। पत्नी व मां के हावी-व्यक्तित्व के भोगी पति व बच्चे आनेवाली पीढ़ियों में पत्नी व बेटी पर ज्यादतियां करते पाये जाते हैं—इसका लेखा-जोखा वर्षों तक गृहस्थ-जीवन में चलता रहता है—और अंततः औरतों पर ढाये जुल्म व ज्यादती की कहानियां औरतों द्वारा ही बनायी हुई पायी जाती हैं। जितनी सूक्ष्मता व समझदारी से स्त्रियां समाज व दांपत्य की परेशानियां समझकर सुलझा सकती हैं, पुरुष कतई नहीं सुलझा सकता। किंतु, किसी पूर्वाग्रह से ग्रसित हो

अगर उनके आयाम गलत हो जाएं, तो संतति को इसका कर्ज वर्षों तक उठाना पड़ता है । बेटे को खोने के डर से बहू को बेटे से अलग रखकर अपना आधिपत्य जमाना, अपनी सास का बदला बहू से लेना आदि ऐसी अनेक घटनाएं हैं, जिन्होंने जीवन को कलहमय बना दिया है ।

एक कहानी उस नारी की भी है, जो सास द्वारा प्रताड़ित व कुंठित होकर पति को पति रूप में न पा सकी । बच्चों की तरफ आशान्वित होकर उसे एक अच्छी मां का दरजा तो मिला, किंतु एक अच्छी पत्नी का नहीं । निश्चित लक्ष्य—पति से दूरी रखनेवाली घर की ही नारियों ने, उन्हें अनिश्चित की तरफ झुका दिया । आज तक वह रेत की हिरनी अपने लक्ष्य तक जाना चाहती हैं, बच्चों के साथ दूसरों ने भी अपने आशियाने बसा लिये । रह गया है वही पुराना घोंसला, उसके दो प्राणी—जिनके आपस में चालीस वर्षों से पल रहे गिले-शिकवे के अलावा कुछ भी शेष नहीं । दोनों ही सही हैं, दोनों ही व्यथित । उनकी जिंदगी तो जल रही है, किंतु जमाना मुसकरा रहा है । किंतु, इस नारी को नारी से विरक्ति नहीं, अभी तक वह उनके लिए पूजनीय है—लेकिन उनकी खामोशी में एक दर्द है—एक अहसास है, नारी तेरे रूप अनेक ।

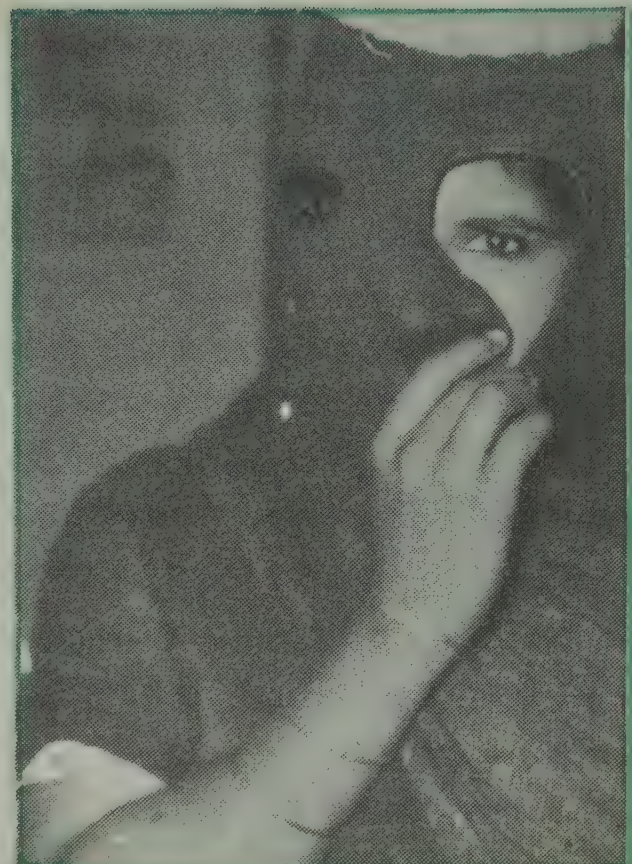
झूठी कहानियां : गुमराह संस्थाएं

नारियों के इन रूपों ने आज नारी-मुक्ति आंदोलनों को भी कलंकित कर दिया है । नारी-मुक्ति आंदोलन, स्वयंसेवी संस्थाएं अगर मुक्ति की बातें करती हैं, तो उद्देश्य उनका उन्हें सही वजूद दिलाना, पुरुषों के समकक्ष लाना होता है । इन संस्थाओं के संचालिकाओं के आयाम संयमित तथा सुदृढ़ होते हैं । किंतु, कुछ के झूठे आंसुओं के कारण उनका भी ध्येय पूरा नहीं हो पाता । झूठी कहानियां कहकर स्वयंसेवी संस्थाओं की शरण में जाना आज प्रचलन-सा बनता जा रहा है, जिसके कारण ये संस्थाएं गुमराह हो रही हैं । समाज इन महिला कार्यकर्ताओं से भी भय खाने लगा है, उन्हें बेटी व बहू बनाने से इनकार कर रहा है । चंद औरतों के गलत आयामों से संपूर्ण नारी-जगत

एक कहानी उस नारी की भी है, जो सास द्वारा प्रताड़ित व कुंठित होकर पति को पति रूप में न पा सकी । बच्चों की तरफ आशान्वित होकर उसे एक अच्छी मां का दरजा तो मिला, किंतु एक अच्छी पत्नी का नहीं । बच्चों ने बड़े होकर अपने आशियाने बसा लिये । रह गया है वही पुराना घोंसला, उसके दो प्राणी—पति और पत्नी, जिनके बीच दशकों से पल रहे गले-शिकवे के अलावा कुछ भी शेष नहीं...

दुष्प्रभावित हो रहा है । अखिल भारतीय महिला परिषद (पटना क्षेत्र) की एक कार्यकर्ता का कहना है, 'हमें तो और भी संयमित होना पड़ता है क्योंकि, एक तरफ हमारा घर-परिवार है, दूसरी तरफ सामाजिक जिंदगी । हमारा अथक प्रयास यही होता है कि औरतों की बुनियादी समस्याओं को सुलझाया जाए, ताकि हम उनका घर बसा सकें, उजाड़ें नहीं । किंतु कुछ समस्याएं उनकी खुद की बनायी होती हैं, और वे हमारी आड़ से लड़ाई जीतना चाहती हैं । इसी कारण हम कभी-कभी पीड़ित नारियों की समस्याएं हल नहीं कर पातीं ।

एक रूप जो ज्यादातर मध्यवर्गीय समाज में देखने को मिलता है, वह है—यौन नैतिकता में खुलापन । मध्यमवर्गीय महिलाओं का विवाहोपरांत प्रेम-प्रसंग, जिस पर कोई भी चीज बंदिश नहीं लगा सकती, चाहे वह घर की इज्जत ही क्यों न हो । पति का अहम जब चोट खाने लगता है, घर की इज्जत-आबरू पर आंच आने लगती है, तो मुकदमेबाजी होती है, जिसकी सुनवाई में 'दहेज' के लिए जान से मारने का आरोप लगा दिया जाता है । ये औरतें नहीं सोचतीं कि इससे उनकी उन बहन-बेटियों पर क्या प्रभाव पड़ेगा, जिन्हें सचमुच ही 'दहेज' के लिए प्रताड़ित किया जाता है । ये पत्नियां पर-पुरुषों के संसर्ग की सुरक्षा में अपने पतियों को अदालत में तो खींच ही लाती हैं,



कभी-कभी अमानवीय कृत्य कर बैठती हैं ।

वस्तुतः समाज यही है । इसके दोहरे आयाम हैं, दोहरे कानून हैं । एक तरफ मान-मर्यादा, संस्कार, नैतिकता व समझदारी तो दूसरी तरफ अहंकार, अनैतिकता, क्रोध व व्यभिचार है । हर नारी का रूप कलंकित नहीं, वह श्रेद्धय है । वह माता, भगिनी व पत्नी है । विवश घर तो वह है, जहां या तो क्रोध है या फिर आंसू ।

—द्वारा डॉ. शालिनी
के-१०, मॉडल टाउन
दिल्ली-११०००९

अब कचरे से बनेगी बिजली

मद्रास शहर के कूड़े-कचरे का उपयोग करके विद्युत बनाने की योजना है । मद्रास के दक्षिणी भाग में पेरुगुड़ी में एक ५ मेगावाट क्षमता का विद्युत केंद्र लगाया जा रहा है जिसमें कचरे से विद्युत उत्पादन किया जाएगा । — लक्ष्मी सोनी

उर्दू कहानी

मटका

• मसऊद मुफ्ती

"टप...टप ।" उत्तरी सिंध की झुलसती हुई सुबह में, पसीने की दो बूंदें माथे से चल कर नाक से गिरीं और ठीकरी के ऊपर जमी हुई मिट्टी की तह में आत्मसात हो गयीं ।

फतह मोहम्मद, मोहनजोदड़ो में दूसरे मजदूरों के साथ काम कर रहा था । खुदाई का काम । कभी कुदाल से, कभी खुरपों से, कभी हाथों से और कभी अंगुलियों से । यह बड़ा धैर्य रखने और उकता देनेवाला काम था, लेकिन उसे अपनी मजदूरी से गरज थी । जब थोड़ा काम करके मजदूरी ज्यादा मिले, तो और क्या चाहिए ?

फतह मोहम्मद के साथ पंद्रह मजदूर चंद रोज से एक टीले की खुदाई कर रहे थे, जिसमें से चंद ईंटों का टूटा फर्श, एक-दो मोती और कुछ जेवरात मिले थे । और कुछ की तलाश में वे बड़ी सावधानी से पिछले चार दिन से काम कर रहे थे । और कल संध्या तक एक टूटे हुए मटके की सभी ठीकरियां ढूंढ़ चुके थे, जो उसके सामने पड़ी थीं और वह सर झुकाये, उन पर से धीरे-धीरे मिट्टी साफ कर रहा था । उस के हाथ में लोहे की पतरी थी, जिससे मिट्टी उतार रहा था । जिस टुकड़े पर बेल-बूटे नजर आते, वह खुरचे बिना दूसरे आदमी को दे देता था जो उसे ब्रश से हल्के-हल्के साफ करता । साथ ही वह पुराने सिंधी लोक गीत का एक टुकड़ा गुनगुना रहा था, जिस का अर्थ था कि **'जेब में पैसा हो तो लाड़काना घूमो ।'**

वह कई सप्ताह से यहां काम कर रहा था और जानता था कि खुदाई के साथ पांच हजार वर्ष पुराने शहर का एक और भाग प्रकट हो रहा है । चुनांचे आज मिट्टी खुरचते हुए उसने सोचा कि इन पांच हजार वर्षों में यहां कुछ भी तो नहीं बदला । इन ठीकरियों पर जमी हुई मिट्टी बिल्कुल ऐसी ही है, जैसी आजकल की । ये ठीकरियां भी ऐसी ही हैं, जैसी हमारे बरतन टूटने से बनती हैं । उस युग के खिलौनों में जो बैलगाड़ियां और कशतियां बरामद हुई हैं वे भी बिल्कुल आजकल जैसी ही हैं । यदि ये सब कुछ वैसा ही है तो खुदा जाने क्यों ये लोग इतने परिश्रम से चीजें खोदते हैं जबकि बिल्कुल वैसी ही चीजें आज भी डोकरी और लाड़काना के गली-कूचों में नजर आती हैं ।

पतरी जमीन पर रखकर फतह मोहम्मद ने माथे पर अंगुली फेरी और पसीने की बूंदें इकट्ठी होकर धार के रूप में अंगुली के सिरे से उसकी कमीज से दामन में गिरने लगीं । उसने नजर उठाकर देखा तो एक मील दूर सिंध नदी की चौड़ी सतह चांदी की तरह चमक रही थी और उस चमक से गरमी का एहसास और भी गहरा हो रहा था । उसने दूसरे मजदूरों पर दृष्टि दौड़ायी। दो-चार काम में व्यस्त थे और बाकी घास के छप्पर के नीचे सुस्ता रहे थे । दरअसल, वे सब प्रतीक्षा कर रहे थे । कराची से चंद अफसर विशेष तौर पर वे चीजें देखने आ रहे थे, जो खुदाई में निकली थीं । उनके लिए विशेष विमान का प्रबंध किया गया था और म्यूजियम के सभी अफसर उन्हें लेने के लिए

मोहनजोदड़ो के हवाई अड्डे पर गये हुए थे । जाने से पहले कस्टोडियन ने मजदूरों को सख्ती से निर्देश दिया था कि वे लोग खास तौर पर उस मटके के टुकड़े देखेंगे, इसलिए यह काम उनके आने से पहले खत्म हो जाना चाहिए । वह गया तो बाबा आचर, जो सबसे बूढ़ा मजदूर था, हंसने लगा ।

"ये साहब लोग भी खूब हैं । एक पुराने मटके के लिए हवाई जहाज से आएंगे, इतना रुपया बर्बाद करेंगे ।"

"दिल को न लगाओ बेटा, बड़े लोग दूसरों के मटके तोड़ते ही रहते हैं । मैंने अपने दादा का जमाना देखा है, वे हमें अपने दादा के जमाने की बातें सुनाते थे । ये हमेशा से ऐसा ही है ।"



झुके-झुके फतह मोहम्मद की गरदन झुक गयी थी । उसने सर उठाकर अंगड़ाई ली । इधर-उधर नजर दौड़ायी। मोहनजोदड़ो के ऊंचे-नीचे टीले से दूर-दूर तक खेतों में फैला पानी नजर आ रहा था, जिसके नीचे धान की फसल ऐसे पल रही थी और बच्चा मां के पेट में हो । वातावरण में सड़े हुए पानी की वसांध रची हुई थी और दम सीने पर पत्थर के बोझ की भांति अनदेखा दबाव डाल रहा था ।

थोड़ी देर बाद अफसर आ गये । वे चार थे । सर पर मोटे-मोटे टोप पहने हुए और काले चश्मे आंखों पर चिपकाये हुए । उन लोगों ने एक-एक वस्तु कई-कई बार देखी और मटके के तो आशिक हो गये । कभी उनमें से कोई

एक ठीकरा उठा कर देखता । फिर दूसरे को ऐसे देता जैसे नाजुक कांच हो । वह भी आंखें गाड़कर उसे देखता, अर्थपूर्ण अंदाज में जोर-जोर से अंगरेजी में बोलता । बाकी सब भी सर हिलाते और फिर वह अगले को दे देता । उन्होंने मटके के कई टुकड़े उन्नतोदर शीशे की सहायता से बार-बार देखे । फिर वे वहीं जमीन पर बैठ गये और मटके के ठीकरों के किनारे मसाला लगा-लगाकर आपस में जोड़ने लगे । फतह मोहम्मद ने आगे बढ़कर अपनी सेवाएं पेश करना चाहीं तो उन्होंने ऐसे हटा दिया, जैसे वह कोई पवित्र स्थान अपवित्र करने जा रहा था । मजबूरन वह एक ओर होकर तमाशा देखने लगा ।

एक घंटे के प्रयास के बाद मटके का मुंह और थोड़ा-सा ऊपरी भाग जुड़ गया । उन अफसरों में जो सब से बूढ़ा था, वह खुशी से तालियां बजाने लगा और दूसरे के कंधे पर हाथ मार कर बोला, "हमने यह मटका नहीं जोड़ा, बल्कि पांच हजार वर्ष पुरानी सभ्यता जोड़ी है । यह मटका उन दिनों किसी भरे-पूरे घर की शोभा रहा होगा ।"

फतह मोहम्मद पहले तो उन सबको बेवकूफ समझ रहा था, मगर उस अफसर की बात उसके दिल को बहुत लगी, क्योंकि ठीकरे जुड़ने से मटके की जो आकृति बनी थी वह हूबहू उसी मटके-जैसी थी, जो उसके अपने घर में था । और वह जानता था कि उसके घर की सारी चहल-पहल, सारी शोभा उसी मटके के दम से है ।

फतह मोहम्मद का बाप मोहनजोदड़ो से थोड़ी दूर रहता था और एक बड़े जमींदार का



हारी था । उसकी कुल संपत्ति दो बैल और एक हल थी । बिलकुल वैसे ही हल और बैल जैसे मोहनजोदड़ो के म्यूजियम में खिलौने बन कर पड़े थे । उन का मकान एक कमरे का अंधेरा-सा कोठा था, जिसमें उसके मां-बाप और दो छोटे भाई रहते थे । फतह मोहम्मद की आयु कोई पंद्रह वर्ष के लगभग थी और वह केवल घर की आमदनी बढ़ाने के लिए खुदाई के काम पर मजदूरी करता था । यह मटका उनके अंधेरे घर के अंधेरे कोने में पड़ा था और दोनों छोटे भाइयों के कद से ऊंचा था । उसका मुंह हमेशा एक पुरानी चंगीर (टोकरी) से ढका होता था । मटके में कभी चावल होते थे और कभी गेहूं । नयी फसल के दिनों में मटका मुंह तक भरा होता और जैसे-जैसे दिन गुजरते जाते, उस में अनाज की चोटी नीचे सरकती जाती ।

उसके घर की सारी चहल-पहल मटके के दम से थी । रात के समय मां-बाप की चारपाइयां बिलकुल मटके के साथ होती थीं, ताकि चोर वहां न पहुंच सकें । छोटा भाई पैदा



हुआ था,तो एक पीढ़ी पर पड़ा रहा था,जो मटके के पास धरी होती थी और सारा दिन गूं-गूं करता रहता था और दूसरे बच्चे मटके के चारों ओर घूम-घूम कर और ऊपर चढ़ कर भाई को हंसाने की कोशिश करते । घर के बच्चे जिद करते या लड़ते तो मां मटके में से मुट्ठी भर अनाज निकाल कर उन्हें दे देती कि जाकर भट्ठी से भुनवा लें । कभी पड़ोसियों में से कोई उधार मांगने आता तो मां मटके में से एक-आध कटोरा अनाज का निकालकर देती या उसी में से पैसों की पोटली निकालती और खोल कर पैसे दे देती ।

बाप कभी शहर को जाने लगता तो मां उसी मटके में से पैसे निकाल कर उसे देती । और फतह मोहम्मद को यह भी याद था कि जिन दिनों उसे और भाई को भूखों सोना पड़ता था तो मां आहें भर-भर के खाली मटके में कई बार झांकती थी कि शायद कोई अनाज का दाना नजर आ जाए । उनके घर के जितने उतार-चढ़ाव थे, उन का द्योतक यह मटका था । घर की कई घटनाएं भी उस मटके से जुड़ी हुई थीं ।

अभी पिछले ही दिनों वह अपने बाप के साथ घर लौटा,तो उस की मां मटके पर लगभग औंधी पड़ी थी । उसकी सांस जोर-जोर से चल रही थी । वह पसीने में लथपथ थी और सिसकियां ले-ले कर रो रही थी । उन दोनों ने उसे उठाया, चारपाई पर लिटाया, कारण पूछा, लेकिन वह रोती ही रही । एक-आध अनर्गल-सा वाक्य बोली थी, लेकिन फतह के पल्ले न पड़ा । मगर उसका बाप समझ गया और उसने फतह को बाहर भेज दिया । बाहर तो वह चला

आया, मगर दरवाजे से कान लगाकर सुनने की कोशिश करता रहा। सारी बात तो पल्ले न पड़ी, केवल इतना अंदाजा हुआ कि उसकी मां को जमींदार ने घर बुलाया था, बंद कमरे में कुछ मनवाने की कोशिश की थी, मगर वह मना करती रही और अंत में खिड़की से छलांग लगाकर भाग आयी।

थोड़ी देर बाद जब वह अपने बाप के बुलाने पर मां को गुड़ का शरबत पिलाने लगा तो उसके बाजुओं और चेहरे पर कई खरोंचें नजर आयीं। फिर उसका बाप सारी शाम किसी गहरी सोच में डूबा हुआ दरवाजे के बाहर बैठा था। उसने पूछा भी, मगर वह जमींदार को दो-चार गालियां देने के सिवा कुछ न बताता था।

जमींदार जो बड़ा जागीरदार भी था और बड़ा राजनीतिज्ञ भी, थानेदार भी उस से डरता था। फतह मोहम्मद सोचता रहा कि यह क्या किस्सा है और वह क्या करे ? मगर उसके मस्तिष्क में सारी चीज गड़मड़ थी और जब दिमाग बहुत परेशान हुआ तो वह अंदर गया, मटके में से मुट्ठी भर अनाज लिया और भुनाने के लिए भट्ठी पर चला गया।

मटका जुड़ गया था। अफसर दूसरी वस्तुएं देखने रेस्ट हाउस चले गये थे और फतह मोहम्मद दिन का काम समाप्त करके घर रवाना हुआ। सारे रास्ते वह उन लोगों के संबंध में सोचता रहा, जो वहां इतनी तल्लीनता और शौक से मटका जोड़ते रहे थे।

तीन-चार मील का रास्ता तय करके वह घर पहुंचा तो सूरज डूबने को था। वह तेज-तेज कदम उठाता आखिरी मोड़ मुड़ा, जहां से दो सौ गज दूरी पर उसका मकान था, तो वह एकदम ठिठक कर रुक गया। वहां तो नक्शा ही बदला हुआ था।

घर का सारा सामान बाहर बिखरा पड़ा था। बिस्तर और बरतन चारपाई पर ढेर थे। घर पर ताला पड़ा था। कुछ पड़ोसी थोड़े फासले पर खड़े तमाशा देख रहे थे। इस प्रकार जैसे ये लोग अछूत हों। वह भाग कर आगे गया तो उसे ठोकर लगी। संभल कर देखा तो घर के अंदर वाला मटका टूटा पड़ा था। उसके ठीकरे बिखरे हुए थे। और उन में से एक से उसे ठोकर लगी थी।

उसके बाप ने बड़े ही बुझे हुए अंदाज में सारी कहानी सुनायी जिसका सारांश यह था कि जमींदार ने उसे बेदखल कर दिया था। उसकी अज्ञानता में कोई झूठा मुकदमा चलता रहा, जिसमें एकपक्षीय डिग्री हुई और तहसीलदार के आदमी आज आकर बेदखल कर गये हैं।

उसका गला सूख गया। बड़ा-सा गोला आमाशय से लपककर कंठ में आ फंसा। उसे समझ में न आया कि क्या करे, क्या कहे। बेबसी में बस इतना मुंह से निकला,
"मगर...मगर वे यह मटका क्यों तोड़ गये ?"

"मटका कहां बेटा," उसका बाप बोला, "हमारा तो घर ही टूट गया ?"

बेबसी की अवस्था में फतह जमीन पर बैठ गया और लाचारी से ठीकरे देखने लगा। फिर बड़ी नरमी से उसने ठीकरे इकट्ठे किये और निराश मन से उन के किनारे आपस में मिलाने लगा। बिल्कुल उसी अंदाज में जिस प्रकार साहब लोग सुबह मोहनजोदड़ो में मटका जोड़ रहे थे।

और फिर उसके मस्तिष्क में एक प्रश्न उठा कि क्या पांच हजार वर्ष पहले वह मटका भी ऐसे ही टूटा था ? ...संभव है ।

और वह टूटे हुए ठीकरे जोड़ने का प्रयास करता रहा, मगर वह सफल न हो सका । उसने नजर उठायी तो मां को अपनी ओर देखते पाया । छोटा बच्चा उस के कंधे से चिपका था और आंखों में आंसू उबल रहे थे ।

"मां, मैं अभी साहब के पास ये ठीकरे ले जाता हूं...उनके पास मसाला है...उन्होंने सुबह ही पांच साल पुराना मटका जोड़ा है ।"

'चल हट बेवकूफ' उसका बाप निकट आकर चिल्लाया, "वे यह मटका नहीं जोड़ेंगे" फिर उसने प्यार से बेटे का सर थपका और नरमी से बोला : "दिल को न लगाओ बेटा, बड़े लोग दूसरों के मटके तोड़ते ही रहते हैं । मैंने अपने दादा का जमाना देखा है, वे हमें अपने दादा के जमाने की बातें सुनाते थे । ये हमेशा से ऐसा ही है ।"

फतह मोहम्मद हैरान होकर बाप को देखता रहा, फिर बोला, "कमाल हैं ये साहब लोग भी । पुराने मटके जोड़ने पर तो इतना खर्च करते हैं और नये मटके टूटने पर कोई बंदोबस्त नहीं करते ?"

'हां बेटा, हमारा जमाना ऐसा ही है...शायद पांच हजार साल बाद कोई हमारे मटके जोड़ने वाला भी पैदा हो जाए ।' उसके बाप ने आकाश की ओर देखते हुए ठंडी सांस भरी और बुदबुदाया 'पांच...हजार...साल' ।

अनुवादक : तनवीर अख्तर 'रूमानी'

इनके भी बयां जुदा-जुदा

हमने सीने से लगाया दिल न अपना बन सका
मुसकराकर तुमने देखा दिल तुम्हारा हो गया
— जिगर मुरादाबादी

मुफलिस जो ब्याह बेटी का करता है बोल-बोल
पैसा कहां जो जाके लाये जहेज मोल
— नजीर अकबराबादी

हम बावफा थे इसलिए नजरों से गिर गये
शायद उन्हें तलाश किसी बेवफा की थी
— कमाल अहमद सिद्दकी

तेरे इख्तयार में क्या नहीं
मुझे इस तरह से नवाज दे
यूं दुआएं मेरी कबूल हों
मेरे लब पे कोई दुआ न हो
— बशीर बद्र

ये हवा कैसे उड़ा ले गयी आंचल मेरा
यूं सताने की तो आदत मेरे घनश्याम की थी
— परवीन शकिर

यूं चलते-चलते मुझे ठोकर न लगाओ
यारों मैं कोई राह का पत्थर तो नहीं हूं ।
— इशरत किरतपुरी

वो आज खुद ही मौत के हाथों बिखर गया
निकला था जो हयात की जुल्फें संवारने
— असद रजा

प्रस्तुति : कुलदीप तलवार



भविष्य-निधि से ऋण

तुलाराम शर्मा, अलीगढ़ : मैं एक सिनेमाघर में सन ७६ से कार्यरत हूं । फंड एवं भविष्य-निधि में मेरी राशि जमा होते हुए बीस वर्ष हो गये । मैंने अपनी लड़की की शादी के खर्च के लिए भविष्य-निधि कमिश्नर को ऋण प्रदान करने का आवेदन किया था, लेकिन वहां से कोई उत्तर नहीं मिला । मुझे क्या करना चाहिए ?

विशेष अवसरों पर भविष्य-निधि से ऋण लेने का प्रावधान है । आपकी जमा राशि से आपको अपनी आवश्यकता पूरी करने के लिए ऋण मिल सकता है । लड़की का विवाह भी एक ऐसा ही अवसर है, जिस अवसर पर भविष्य-निधि से ऋण लिया जा सकता है । आप आवश्यक फार्म भरकर अपने कार्यालय से, जहां आप कार्यरत हैं, उसका सत्यापन करा लें तथा वह आवेदन भविष्य-निधि आयुक्त के यहां जमा करा दें । भविष्य-निधि आयुक्त आपकी जमा राशि के आधार पर आपको रकम देने का आदेश दे सकते हैं ।

रकम की वापसी

राजेश कुमार दीक्षित, कानपुर : बंगलौर की एक कार कंपनी के कानपुर स्थित एजेंट को मैंने कार बुकिंग के लिए जून १९८९ में दस हजार रुपये दिये थे । बुकिंग की राशि की वापसी के लिए मैंने जिला उपभोक्ता संरक्षण फोरम, कानपुर में वाद प्रस्तुत किया । प्रतिवादी के उपस्थित न होने पर फोरम ने एक पक्षीय फैसला मेरे पक्ष में दे दिया । फैसले पर भी कंपनी की कोई प्रतिक्रिया न होने पर इजरा एक्जीक्यूशन द्वारा जिला जज, बंगलौर किया गया पर कोई हल नहीं निकला । संप्रति कुर्की हेतु आवेदन किया गया, जिसका निर्णय अक्तूबर ९३ में हो जाने पर भी धनराशि प्राप्त नहीं हुई । अब मुझे क्या करना चाहिए ?

आपने अपनी रकम वसूली की आगे की कार्यवाही बंगलौर स्थानांतरित करवा ली है । बंगलौर न्यायालय को उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम की धारा २५ के अंतर्गत फोरम के आदेश को क्रियान्वित करने के अधिकार उसी प्रकार प्राप्त हैं, जैसे कि यह उनका अपना आदेश है । और उसे उपभोक्ता संरक्षण फोरम को अधिनियम की धारा २७ के अंतर्गत आदेश का पालन न करनेवाले को दंडित करने का भी अधिकार है । उक्त धारा के अंतर्गत आदेश का पालन नहीं करनेवाले को एक माह से तीन वर्ष तक का कारावास तथा दो हजार से दस हजार रुपये तक जुर्माने तक के दंड देने का अधिकार उपभोक्ता संरक्षण फोरम को प्राप्त है । आप कानूनी कार्यवाही जारी रखें ।

पत्नी नहीं मानती

पवन कुमार संगल, झिझिंना (मुजफ्फरनगर) : मेरी शादी २० अप्रैल, १९९२ को हुई । मेरी पत्नी कैराना की निवासी है और कैराना न्यायालय में चपरासी है । मेरे ससुर भी कैराना न्यायालय में सेवारत थे अब सेवा-निवृत्त हैं । शादी से पहले यह तय हुआ था कि शादी के बाद पत्नी नौकरी छोड़ देगी, लेकिन नहीं छोड़ी, कहा कि बच्चा होने के

ाद छोड़ दूंगी । बच्चा पैदा हुए भी चार महीने हो ये । अब तो उसने नौकरी छोड़ने से साफ मना र दिया है । दो महीने से अपने मायके में है । मैं नेने गया तो ससुर ने कहा कि पत्नी नौकरी नहीं छोड़ेगी । ज्यादा कहा-सुनी करोगे तो गुंडों से मरवा गा । यहां सारी अदालतें मेरी हैं, मैं जो चाहूंगा, आदेश करा लूंगा ।

मैं पत्नी के बिना लौट आया हूं । पत्नी मेरे साथ सी-खुशी रह सके इसके लिए अब मैं क्या करूं ?

आपकी पत्नी सरकारी कर्मचारी है । वह अपनी नौकरी नहीं छोड़ना चाहती । आपके अनुसार उसने आपके ससुरालवालों ने वायदा किया था कि विवाह के बाद वह नौकरी छोड़ देगी । परंतु अब वह वायदा नहीं निभा रही, तो इसमें कानून आपकी कोई सहायता नहीं कर सकता । आप पत्नी को नौकरी छोड़ने के लिए बाध्य नहीं कर सकते ।

जहां तक आपको मरवा देने की धमकी का प्रश्न है आपको अपने समीपवर्ती थाने में इसकी सूचना दे देनी चाहिए । अपने भविष्य का निर्णय आपको ही करना है कि पत्नी की बात मानकर उन्हें नौकरी करते रहने दें या उन्हें समझाकर अपने अनुसार व्यवहार करने के लिए तैयार कर लें । आपके ससुर का यह कहना कि वह न्यायालय से जो चाहें आदेश करा लेंगे, गलत तथा बेबुनियाद है । न्यायालय में किसी के कहने से निर्णय नहीं होते और वैसे भी आपका कोई ऐसा मतभेद नहीं है, जो न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया जा सके ।

नाट्य संस्था की स्थापना

ोधाराम हुड्डा, फतुही : मैं एक नाट्य संस्था स्थापित करना चाहता हूं, इसके लिए क्या कोई कानूनी कार्यवाही जरूरी है । यदि हां, तो पूरी प्रक्रिया बताने का कष्ट करें ?

किसी भी व्यक्ति को जनतंत्र में कुछ व्यक्तियों के साथ मिलकर संस्था बनाने तथा समाज व साहित्य की सेवा करने का अधिकार है । संस्था बनाने के लिए किसी पंजीकरण की कानूनी बाध्यता नहीं है । यदि आप कराना चाहें तो अपनी संस्था को संस्था पंजीकरण अधिनियम के अंतर्गत पंजीकृत करवा सकते हैं । इसके लिए आपको संस्था का विधान, जिसमें नियम व संस्था का ज्ञापन बनाकर पंजीकरण के लिए प्रस्तुत करना होता है । ज्ञापन में उन व्यक्तियों के नाम, पता व अन्य विवरण देने होते हैं, जो संस्था को प्रारंभ करने के इच्छुक हों । इनकी संख्या कम से कम सात होनी चाहिए । वर्तमान पदाधिकारियों के नाम व पदों का विवरण भी देना होगा । आपके द्वारा संस्था का प्रस्तावित नाम उपलब्ध होने पर आपको उक्त नाम से संस्था पंजीकृत करवाने की अनुमति पंजीकार महोदय दे सकते हैं ।

उसकी पत्नी मुकर गयी

पी.बी. थापा, देहरादून : मैंने देहरादून में एक बीघा जमीन बीस हजार रुपये में खरीदने के लिए सन १९८९ में तेरह हजार रुपये बयाना दिया । जब रजिस्ट्री कराने गया तो पता चला कि जिस व्यक्ति ने बयाना लिया था, जमीन उसके नहीं बल्कि, उसकी पत्नी के नाम पर है, जो नेपाल में रहती है । रजिस्ट्री तो न हो सकी पर स्टांप पेपर पर यह शर्त लिखी गयी कि साल भर के अंदर यह व्यक्ति अपनी पत्नी को हाजिर करेगा या उसका मुख्तयारनामा मंगवाकर रजिस्ट्री कराएगा, नहीं तो मुझे यह अधिकार होगा कि न्यायालय द्वारा जमीन का कब्जा ले लूं या बयाना की दुगनी राशि ले लूं । न

तो उसकी पत्नी आयी, न मुख्तयारनामा आया और न मैंने ही कोर्ट कार्यवाही की। बाद में उस व्यक्ति की मृत्यु हो गयी। अब उसकी पत्नी आ गयी है, उसने बयाना वापस देने या जमीन देने से साफ इनकार कर दिया है। बयाने के गवाहों में उसका बेटा भी शामिल है। मुझे अब क्या करना चाहिए ?

जिस व्यक्ति से आपने भूमि खरीदने का अनुबंध किया था, वह भूमि का स्वामी नहीं था। उसके पास भूमि के स्वामी की तरफ से कोई मुख्तयारनामा (अधिकार-पत्र) भी नहीं था, जिससे वह उक्त स्वामी की तरफ से बेचने का वैध अनुबंध कर सकता। आपने भूमि के असली स्वामी के बारे में जानकारी प्राप्त किये बगैर अनुबंध कर लिया। इस व्यक्ति द्वारा दोबारा की गयी शर्त भी भूमि के स्वामी पर लागू नहीं होती। भूमि का स्वामित्व पत्नी का होने के आधार पर भी कोई व्यक्ति भूमि बेचने का वैध अनुबंध नहीं कर सकता। आपने पहला अनुबंध अप्रैल ८९ में तथा दूसरा अप्रैल, ९० में किया। आपका अधिकार उक्त व्यक्ति द्वारा छोड़ी गयी संपत्ति में से अपनी रकम की वसूली करने तक सीमित था, परंतु वह अधिकार भी अब समय-सीमा से बाहर है। न्यायालय में जाकर भूमि या बयाना प्राप्त नहीं कर सकते।

सी. आर. ही सब कुछ ?

पी. एन. शर्मा, दमोह : मैं म. प्र. शासन के एक सहकारी संघ में कार्यरत हूं, जहां म. प्र. शासन के समस्त नियम लागू होते हैं। वर्ष ९३-९४ में विभागीय पदोन्नति की बैठक में मात्र गोपनीय चरित्रावली के आधार पर कुछ को पदोन्नति दी गयीं। जिनकी सी. आर. अति उत्तम थी, इसमें वरिष्ठता सूची पर ध्यान नहीं दिया गया अतः कई जूनियर भी प्रमोशन पा गये।

क्या सी. आर. ही सर्वश्रेष्ठ होना मात्र योग्यता की पहचान है ? इस संबंध में क्या कोई कानूनी कार्यवाही हो सकती है ?

विभागीय पदोन्नति की प्रक्रिया का पालन किया जाना चाहिए। विभागीय पदोन्नति समिति पदोन्नति के अवसर पर साधारणतयः वरिष्ठता तथा गोपनीय चरित्रावली आदि को भी देखती है। केवल वरिष्ठता के आधार पर पदोन्नति करने में तो शायद विभागीय पदोन्नति समिति को कुछ विशेष करने को नहीं रह जाता। परंतु विभागीय पदोन्नति में वरिष्ठता के साथ-साथ साधारणतया गोपनीय चरित्रावली को देखा जाता है। इससे कुछ क्रम भंग हो जाना स्वाभाविक है। यदि इसमें नियमों का पालन नहीं किया गया हो या समान गोपनीय चरित्रावली के व्यक्तियों के पदोन्नति में भेदभाव बरता गया हो, तब ही उक्त कार्यवाही को चुनौती दी जा सकती है। ●

विधि-विधान स्तंभ के अंतर्गत कानून-संबंधी विविध कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं। प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ—

रामप्रकाश गुप्त

फ्रांस के लुई क्रोक्यूट ने टेलीविजन के लिए एक प्रकाशसंवेदी उपकरण बनाया है जो रोशनीयुक्त कमरे में टेलीविजन के सामने बैठे दर्शकों को प्रत्येक दो सैकंड के बाद देखकर गिनती कर सकता है। मोटिवक नामक यह यंत्र प्रकाश की उपस्थिति में मनुष्य के शरीर को गिन सकता है और साथ ही किसी नये आनेवाले व्यक्ति की भी जानकारी रख लेता है। —संजय शर्मा



चौक बाजार स्थित नवाबी जमाने का घंटाघर

फैजाबाद

अवध की नवाबी की शुरुआत का शहर

● डॉ. चंद्रिका प्रसाद शर्मा

फैजाबाद : अवध के प्रथम नवाब बुरहान-उल-मुल्क का बसाया हुआ नया शहर। जब बुरहान-उल-मुल्क लखनऊ होते हुए अयोध्या पहुंचे, तो उन्हें यह स्थान अत्यंत मोहक लगा। यहीं अयोध्या से पांच किलोमीटर पूर्व सरयू नदी के तट पर एक ऊंचे टीले पर उसने अपना शिविर लगा दिया। शिविर के आसपास बेगमों के रहने के लिए कच्चे मकान बना दिये। इस क्षेत्र का नाम 'बंगला' पड़ गया।

बुरहान-उल-मुल्क की मृत्यु के बाद सफदरजंग गद्दी पर बैठे। वह कुछ खुशनुमा तबीयत के इनसान थे। अस्तु, खुदा के फैज से आबाद 'बंगला' अब फैजाबाद हो गया। रौनक बढ़ने लगी, कोठियां बनने लगीं। फौज के रहने के लिए इमारतें खड़ी होने लगीं।

नवाब सफदरजंग की मृत्यु के बाद उनके बेटे शुजाउद्दौला ने राजकाज संभाला। पर फैजाबाद में उनका दिल न लगा, वे लखनऊ चले आये। और यहीं से फैजाबाद का राजकाज संभालने लगे। किंतु, बक्सर के युद्ध में जब वे अंगरेजों से परास्त हुए, तो भागकर



गुलाब बाड़ी का मकबरा

अपने बाप-दादा के वतन—फैजाबाद में ही आये। युद्ध के नौ महीने पश्चात अंगरेजों से उनकी संधि हुई। इस संधि के बाद शुजाउद्दौला ने लखनऊ को त्यागकर फैजाबाद को अपनी राजधानी बनाया। तभी से फैजाबाद का सितारा बुलंदी की ओर बढ़ने लगा।

फनकारों का नगर फैजाबाद

नवाब शुजाउद्दौला एक महत्त्वाकांक्षी युवक था। उसने अपनी फौज बढ़ाना शुरू कर दी। फैजाबाद के चारों ओर चारदीवारी बन गयी। फौज के अफसरों की कोठियां बनने लगीं। सरकारी आफीसर शानदार हवेलियां बनवाने लगे। अब फैजाबाद की रौनक काफी बढ़ गयी और लखनऊ उसके सामने फीका पड़ गया। दिल्ली तथा अन्य शहरों के शौक-मिजाज रईस फैजाबाद की ओर चलने लगे। कुछ ही सालों में यहां जाने-माने चित्रकार, मूर्तिकार, संगीतज्ञ, नर्तक और साहित्यकार आ बसे। व्यापारियों के काफिले तो ऐसे रंगीले मिजाज के शहरों की खुशबू की तलाश में ही रहते हैं। लिहाजा, दूर-दूर स्थानों से नाना प्रकार की बेशकीमती वस्तुओं के व्यापारी भी यहां आ गये।

नवाब शुजाउद्दौला ने अपनी पसंद से शहर में तीन बाग—अंगूरी बाग, मोती बाग और लाल बाग बनवाये। इन तीनों बागों में किस्म-किस्म के फूल-पौधे सलीके से लगाये गये। इन तीनों में लाल बाग सबसे अधिक सुंदर और विस्तृत था। इस बाग में देश-विदेश के रंग-बिरंगे फूल खिलते थे। जिनको देखने के लिए लोग दूसरे शहरों से आ-आकर फैजाबाद में टिकते थे। नगर के संभ्रांत नागरिक नित्य लाल बाग में हवा खाने व दिल बहलाने जाते थे। लाल बाग की शौहरत ऐसी हुई कि धनाढ्य लोग बड़ी तमन्ना के साथ इसकी शोभा को देखने के लिए आते थे। एक बार दिल्ली के शहंशाह शाह आलम भी फैजाबाद के इस लाल बाग की बहारो-रौनक देखने आये थे।

देश-विदेश के व्यापारियों का जमघट

फैजाबाद का चौक उन दिनों पर्यटकों का आकर्षक केंद्र था। चौक में बेशुमार भीड़ रहती थी, माल बेचनेवालों की, माल खरीदनेवालों की और तमाशबीनों की। यहां प्रतिदिन दूर-दूर से सौदागरों के काफिले अपना-अपना माल लादकर लाते थे। उनका माल इस चौक बाजार में हाथोंहाथ बिक जाता था। पूरे देश में यह बाजार मशहूर हो गया था।

यहां देश के कोने-कोने के व्यापारी तो आते

नवाब शुजाउद्दौला के जमाने में फैजाबाद नगर क्या था, कुबेर की बस्ती थी। धन-धान्य से संपन्न शहर आमोद-प्रमोद में आकंठ डूबा रहता था। गरीबी तो इस शहर की चारदीवारी के भीतर फटकने का साहस ही नहीं करती थी, लेकिन आज....

थे, विदेशों के व्यापारी भी आते थे। चीन के व्यापारी यहां आते थे, ईरान के व्यापारी यहां आते थे, काबुली तिजारती यहां आते थे। यहां उनका माल ऊंचे दामों पर बिकता था। फ्रांस के व्यापारियों को तो चौक बाजार ने ऐसा मोह लिया था कि लगभग दो सौ फ्रांसीसी व्यापारी फैजाबाद में ही बस गये थे। अनेक फ्रांसीसियों ने तो यहां नौकरियां भी कर ली थीं। मुंशी फैज बख्श ने यहां की रौनक का हाल 'गुजिश्ता लखनऊ' में लिखा है कि, 'मैं जब पहले-पहल शहर छोड़कर फैजाबाद में गया, मुमताजगर तक ही पहुंचा था, जो शहर के पश्चिमी फाटक से चार मील की दूरी पर है, मैंने देखा कि एक पेड़ के नीचे भांति-भांति की मिठाइयां, गरमागरम खाने, कबाब सालन, रोटियां और परांठे वगैरह बिक रहे थे। सबीलें रखी हुई थीं, नानखताइयां, तरह तरह के शरबत और फालूदे बिक रहे हैं। मुझे खयाल गुजरा कि शहर के अंदर दाखिल हो गया हूं और खास चौक में हूं। मगर हैरान था कि अभी तक शहर का फाटक तो आया ही नहीं, मैं अंदर कैसे पहुंच गया ? लोगों से पूछा तो एक राहगीर ने कहा, "जनाब ! शहर का फाटक यहां से चार मील आगे है, आप किस खयाल में हैं।"

रंगीनियों का शहर

उन दिनों फैजाबाद शान-शौकत और तरह-तरह की रंगीनियों का शहर था। यहां यूनानी हकीम आ बसे थे, दूर-दूर के ऐशो-इशरत पसंद अमीर-उमराव यहां रहने लगे थे। देश-विदेश की नर्तकियां, वेश्याएं और भांड अपनी जीविका कमाने यहीं आ गये थे। नगर क्या था कुबेर की बस्ती थी।

गुलाबबाड़ी में अशोक स्तंभ



धन-धान्य से संपन्न शहर आमोद-प्रमोद में आकंठ डूबा रहता था । कहीं तवायफों की महफिलें सजी हैं, कहीं संगीतज्ञों के समारोह हो रहे हैं, कहीं गायकों की मंडलियां एकत्रित हैं । गरीबी तो इस शहर की चारदीवारी के भीतर फटकने का साहस ही न कर सकती थी । वास्तव में नगर की रौनक काबिले-तारीफ थी । स्वयं नवाब शुजाउद्दौला घोड़े पर सवार होकर नगर की निगरानी करते थे ।

उन दिनों फैजाबाद शिक्षा का भी उत्तम केंद्र बन गया था । वहां गुजरात, मालवा, कश्मीर, मुल्तान, बंगाल, काबुल के जिज्ञासु विद्यार्थी ज्ञानार्जन के लिए आया करते थे । नवाब केवल वर्षा ऋतु में ही फैजाबाद में रहते थे । अन्य ऋतुओं में तो वह अपने पूरे राज्य का दौरा करते रहते थे । अपने दौरे के समय वह लश्कर के साथ-साथ वेश्याओं के डेरे भी ले जाते थे । सुंदर लड़कियों के प्रति उसमें विशेष लगाव था । मात्र नौ वर्षों के शासनकाल में उसने फैजाबाद की रौनक में जो इजाफा किया, उसकी मिसाल ढूंढ़ने से नहीं मिलती । नबाव शुजाउद्दौला की मृत्यु के साथ ही फैजाबाद [की] रौनक भी दफन हो गयी ।

फैजाबाद उजड़ा, लखनऊ पनपा

शुजाउद्दौला की मृत्यु के बाद उनकी बेग[म] 'बहू बेगम' ने अपने पुत्र आशफुद्दौला को ग[द्दी] पर बैठाया । किंतु, मां-बेटे में पटती नहीं थी [।] इसलिए आशफुद्दौला लखनऊ चला आया [।] वह यहां से भी बहू बेगम को सताया करता था । बहू बेगम के पास बहुत अधिक धन, सोना, जवाहरात आदि थे, जिन्हें आशफुद्दौल[ा] हड़पना चाहता था । बहू बेगम की मृत्यु के [बाद] फैजाबाद बिलकुल ही उजड़ने लगा और लखनऊ पनपने लगा । फैजाबाद पहला नवा[बी] शहर है, लखनऊ तो उसके बाद चमका ।

वर्तमान फैजाबाद

फैजाबाद के वर्तमान की ओर जब हम दृष्टिपात करते हैं, तो हमारे सामने एक चीज उभरकर आती है कि यह नगर समाजवादी विचारकों का जन्म-स्थल रहा है । डॉ. राममनोहर लोहिया, आचार्य नरेंद्रदेव यहीं के निवासी थे । आचार्य कृपलानी भी वर्षों यहां

कंपनी गार्डन





बहू बेगम का मकबरा

नीवां आश्रम' में रहे । स्वतंत्रता-संग्राम के नों यह नगर क्रांतिकारी का गढ़ बन गया । यहीं की जिला जेल में शहीदे-आजम ाशफाक उल्ला खां ने फांसी के फंदे को चूमा ।

फैजाबाद में आज भी साहित्यिक, स्कृतिक गतिविधियों का उमंग और साहभरा माहौल है । सारांश यह कि योध्या-फैजाबाद के लोगों में परस्पर सहयोग ी उदात्त भावना है । पर राजनीति के खिलाड़ी ाग सुलगाकर आंच में तापकर अपनी सरदी करना चाहते हैं और अपनी पनेथियां सेंकना हते हैं ।

दर्शनीय स्थल

फैजाबाद में कुछ ऐसे दर्शनीय स्थल हैं । पर्यटकों को अपनी ओर विशेष रूप से आकर्षित करते हैं । नगर के पूर्व में 'देवकाली' का मंदिर है । इस मंदिर की स्थापना भगवान राम की माता कौशल्या ने की थी, ऐसी किंवदंती है । गुलाब बाड़ी का मकबरा, बहू बेगम का मकबरा और मिलिट्री मंदिर—ये सब कुछ तो यहां पर है ही । साथ ही नगर की संकरी तंग गलियों का गंदगी भरा वातावरण भी है । चौक अब चाट के ठेलों, विरियानी के ठेलों और अंडे वालों के ठेलों से पटा रहता है । चौड़ी सड़क तंग हो गयी है । ड्यूटी पर पुलिस नियमित रूप से रहती है, पर किसलिए ? उनको हटाने के लिए या अपना हक लेने के लिए ? प्रशासन भी यह जानता ही होगा । पर सब रामभरोसे चल रहा है ।

—सी. १० के. रोड़,
महानगर लखनऊ-२२६००६

क्रियाणां खलु धर्म्याणां सत्पत्न्यो मूलकारणम् । (कुमारसंभव ६/१३)

अच्छी पत्नियां धार्मिक क्रियाओं का मूल कारण होती हैं ।

वेद विश्व-संस्कृति का आधार स्तंभ माने जाते हैं । चारों वेदों में आयुर्वेद के विभिन्न अंगों और उपांगों का विशद वर्णन प्राप्त होता है । वेदों में नीरोग रहने और दीर्घायु प्राप्त करने के उपाय भी बताये गये हैं ।

वेदों में आयुर्वेद

● डॉ. कपिल देव द्विवेदी

वेद विश्व-संस्कृति के आधार-स्तंभ हैं । वेदों में ज्ञान और विज्ञान का अनंत भंडार विद्यमान है । अतएव मनु ने वेदों को सर्वज्ञानमय कहा है, अर्थात वेदों में सभी प्रकार का ज्ञान और विज्ञान निहित है । आयुर्वेद शास्त्र की दृष्टि से वेदों का अनुशीलन करने पर ज्ञात होता है कि चारों वेदों में आयुर्वेद के विभिन्न अंगों और उपांगों का यथास्थान विशद वर्णन हुआ है ।

ऋग्वेद और आयुर्वेद : ऋग्वेद में आयुर्वेद के महत्त्वपूर्ण तथ्यों का यथास्थान विवेचन प्राप्त होता है । इसमें आयुर्वेद का उद्देश्य, वैद्य के गुण-कर्म, विविध औषधियों के लाभ आदि, शरीर के विभिन्न अंग, विविध चिकित्साएं, अग्नि-चिकित्सा, जलचिकित्सा, वायुचिकित्सा, सूर्यचिकित्सा, शल्यचिकित्सा, हस्तस्पर्श-चिकित्सा, यज्ञचिकित्सा, विष-चिकित्सा, कृमिनाशन, दीर्घायुष्य, तेज, ओज, नीरोगता, वशीकरण, कुस्वप्न-नाशन आदि का विशिष्ट वर्णन प्राप्त होता है ।

यजुर्वेद और आयुर्वेद : यजुर्वेद में आयुर्वेद से संबद्ध निम्नलिखित विषयों की सामग्री प्राप्त होती है — वैद्य के गुण-कर्म, विभिन्न औषधियों के नाम आदि, शरीर के विभिन्न अंग, चिकित्सा, दीर्घायुष्य, नीरोगता, तेज, वर्चस्, बल, अग्नि और जल के गुण-कर्म आदि ।

सामवेद और आयुर्वेद : सामवेद में आयुर्वेद-विषयक सामग्री अत्यंत न्यून है । इसमें आयुर्वेद से संबद्ध कुछ मंत्र निम्नलिखित विषयों के प्रतिपादक हैं—वैद्य, चिकित्सा, दीर्घायुष्य, तेज, ज्योति, बल, शक्ति आदि ।

अथर्ववेद और आयुर्वेद : आयुर्वेद की दृष्टि से अथर्ववेद अत्यंत महनीय ग्रंथ है । इसमें आयुर्वेद के प्रायः सभी अंगों और उपांगों का विस्तृत वर्णन मिलता है । अथर्ववेद आयुर्वेद का मूल-आधार है । इसमें आयुर्वेद से संबद्ध निम्नलिखित विषयों का वर्णन प्राप्त होता है—भिषज् या वैद्य के गुण-कर्म, भैषज्य, शरीरांग, दीर्घायुष्य, नीरोगता, तेज, वर्चस्, वशीकरण, वाजीकरण, रोगनाशक, विभिन्न मणियां, विविध औषधियों के नाम और

गुण-कर्म, रोगनाम एवं चिकित्सा, कृमिनाशन, सूर्यचिकित्सा, जलचिकित्सा, विषचिकित्सा, पशुचिकित्सा, प्राण-चिकित्सा, शल्य-चिकित्सा आदि ।



आयुर्वेद और उसके उद्देश्य

चरक और सुश्रुत में आयुर्वेद का लक्षण और उसके उद्देश्यों का विशेष विस्तार से वर्णन किया गया है ।

चरक ने आयुर्वेद का लक्षण दिया है—**'आयुर्वेदयति इति आयुर्वेद :'** । जो आयु का ज्ञान कराता है, वह आयुर्वेद है । इसका स्पष्टीक़रण करते हुए कहा गया है कि आयुर्वेद ही मनुष्य की आयु के लिए हितकर (पथ्य) और अहितकर (अपथ्य) वस्तुओं का वर्णन करता है, सुखकर और दुःखदायी कारणों का वर्णन करता है, पदार्थों की ग्राह्य मात्रा और अनुचित मात्रा का उपदेश देता है तथा आयुवर्धक और आयुनाशक द्रव्यों, गुणों और कर्मों का वर्णन करता है । इसमें आयु की इयत्ता और आयु के स्वरूप का भी वर्णन होता है ।

सुश्रुत का कथन है कि जिसमें आयु के हितकर और अहितकर तत्वों का विचार हो और जो दीर्घ आयु प्राप्त कराता है, वह आयुर्वेद है ।

चरक ने आयुर्वेद का उद्देश्य बताया है—स्वस्थ पुरुष के स्वास्थ्य की रक्षा करना और रोगी व्यक्ति के रोग को दूर करना । सुश्रुत ने भी यही भाव दिया है कि रोगी को रोग से मुक्त करना और स्वस्थ के स्वास्थ्य की रक्षा करना, ये ही दो आयुर्वेद के मुख्य प्रयोजन हैं ।

चरक का कथन है कि धातुओं की विषमता को रोग कहते हैं और धातुओं की समता को नीरोगता या स्वस्थता । आरोग्य का ही नाम सुख है और रोगावस्था का नाम दुःख है ।

वेदों में आयुर्वेद के उद्देश्य : वेदों में आयुर्वेद के उद्देश्यों का यत्र-तत्र उल्लेख और संकेत है ।

मृत्यु या रोग के कारणों का निवारण : ऋग्वेद और अथर्ववेद में कहा गया है कि—मृत्यु के कारणों को दूर करें । **दीर्घायु की प्राप्ति**—हम दीर्घायु प्राप्त करें । **आचार-विचार की शुद्धि**—दीर्घायु का साधन बताया गया है—आचार और विचार की शुद्धता । पवित्र आचार और विचार से रोगों को नष्ट करके दीर्घायु हों । **रोग के कारणों का उन्मूलन**—तैत्तिरीय संहिता का कथन है कि जिन कारणों से रोग होता है, उन्हें दूर किया जाए । **जीवन का काल शतायु**—जीवन की सीमा सौ वर्ष या इससे अधिक होने का उल्लेख है । वेदों में अनेक स्थानों पर दीर्घायु, शतायु और पूर्णायु या सर्वायु का उल्लेख है । **आत्मा और शरीर की पुष्टता**—अथर्ववेद में शरीर के अंगों की नीरोगता और आत्मा की अजेयता की प्रार्थना की गयी है । **रोग के कीटाणुओं का**

नाशन—अथर्ववेद में सभी रोगों का कारण विष बताया गया है और उस विष या रोगकृमि को नष्ट करने का उल्लेख है।

इस प्रकार आयुर्वेद के मूलभूत तत्वों में रोगनाशन, पूर्ण स्वस्थता, शतायु होना, रोगकृमिनाशन और आचार-विचार की शुद्धि का उल्लेख मिलता है।

आयुर्वेद के आठ अंग

यद्यपि वैदिक वाङ्मय में आयुर्वेद के ८ अंगों का यत्र-तत्र वर्णन प्राप्त होता है, परंतु आठ अंगों का कहीं पर स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता है। इससे ज्ञात होता है कि आयुर्वेद का आठ अंगों में विभाजन परकालीन चिंतन है।

चरक, सुश्रुत और अष्टांगहृदय में इन आठ अंगों का कुछ नामभेद से उल्लेख प्राप्त होता है। सुश्रुत ने इनके नाम दिये हैं : १. शल्यचिकित्सा, २. शालाक्य चिकित्सा, ३. कायचिकित्सा, ४. भूतविद्या, ५. कौमारभृत्य, ६. अगद तंत्र, ७. रसायन तंत्र, ८. वाजीकरण तंत्र।

चरक ने इनके नाम दिये हैं—१. कायचिकित्सा, २. शालाक्य, ३. शल्यापहर्तृक (शल्य तंत्र), ४. विषगर-वैरोधिक-प्रशमन (अगदतंत्र), ५. भूतविद्या, ६. कौमारभृत्य, ७. रसायन, ८. वाजीकरण।

अष्टांगहृदय में इनके नाम हैं —१. कायचिकित्सा, २. बालचिकित्सा, ३. ग्रहचिकित्सा, ४. ऊर्ध्वांगचिकित्सा, ५. शल्यचिकित्सा, ६. दंष्ट्राचिकित्सा (विषचिकित्सा), ७. जराचिकित्सा (रसायन), ८. वृषचिकित्सा (वाजीकरण)।

चिकित्सा चार प्रकार की

अथर्ववेद में चार प्रकार की औषधियों चिकित्सा-विधियों का उल्लेख मिलता है। हैं—

अथर्वणी चिकित्सा : इस चिकित्सा-विधि का संबंध अथर्वन् या अथ ऋषि से है। इस चिकित्सा-विधि के विषय मतैक्य नहीं है, परंतु अधिकांश विद्वानों का है कि यह शांतियुक्त विधि से की जानेवाली चिकित्सा है। अथर्वा का अर्थ योगी है। इ ध्यान, मनन, चिंतन और मनोयोग से होनेव चिकित्सा का समावेश है। अतएव इसे मा चिकित्सा-विधि कह सकते हैं।

आंगिरसी चिकित्सा : इसका संबंध अंगिर या अंगिरा ऋषि से है। इसकी दो व्याख्याएं सकती हैं—(क) अंगों के रस से होनेवाली चिकित्सा आंगिरसी है। इसमें अंगों का रस अर्थात रक्त आदि दूसरों को चढ़ाना, शरीर में बाह्य रसों को पहुंचाना, शरीर में अन्य कार्यशील तत्वों को पहुंचाना, वृक्ष-वनस्पति आदि के पोषक तत्वों को शरीर में पहुंचाना, रोगी के शरीर में अन्य शक्ति-प्रेरक तत्वों को पहुंचाना आदि का समावेश होगा। अतः यह पद्धति कुछ अंशों तक एलोपैथिक पद्धति से साम्य रखती है।

आंगिरस की दूसरी व्याख्या घोर कृत्यों से संबद्ध है। अंगिरा ऋषि द्वारा दृष्ट मंत्रों में व्रण-चिकित्सा, शत्रुनाशन, शत्रुसेनानाशन, म द्वारा समस्त रोगों शत्रुओं और राक्षसों के नाश आदि का वर्णन है। यह भी वर्णन किया गया कि ऋषि घोर होते हैं। इनकी दृष्टि और इनक चिंतन सत्य है अर्थात ये सूक्ष्मदृष्टि हैं। आंगिरस विधि से शल्यक्रिया या चीर-फाड़ व

थ ली जा सकती है । इसमें सूक्ष्म दृष्टि, -कृत्य, अंग-छेदन आदि की क्षमता और के ठीक कारणों आदि का ज्ञान अनिवार्य

दैवी चिकित्सा : पृथिवी आदि पंचतत्वों को कहते हैं । सूर्य, चंद्र आदि भी देव हैं । : मृत्-चिकित्सा, जलचिकित्सा, प्र-चिकित्सा, वायु-चिकित्सा, -चिकित्सा, प्राणायाम-चिकित्सा आदि कित्साएं दैवी चिकित्सा के अंतर्गत आती हैं । धुनिक विज्ञान के अनुसार इसे प्राकृतिक कित्सा कह सकते हैं ।

मनुष्यजा या मानवी चिकित्सा : यह मानवों बनायी गयी चिकित्सा है । इसमें मानवों निर्मित चूर्ण, अवलेह, भस्म, कल्प, सव, वटी आदि सम्मिलित हैं । यह कित्सा औषधि-चिकित्सा है ।

नीरोगता

वेदों में नीरोगता के कुछ साधन बताये गये दीर्घायु के जो साधन बताये गये हैं, वे गता के आधार हैं । कुछ अन्य साधन ये —

पांच आरोग्यकारक तत्व—अथर्ववेद के एक में पांच आरोग्यकारक तत्वों का उल्लेख । ये हैं :—पर्जन्य (वर्षा का जल), मित्र णशक्ति), वरुण (जल), चंद्र और सूर्य । का जल शुद्ध और रोगनाशक है । वायु शरीर को शक्ति प्रदान करती है । जल र के दूषित तत्वों को बाहर निकालता है । मा इंद्रियों और मन को शांति एवं शक्ति देता सूर्य शरीर का पोषक और रक्षक है ।

शुद्ध और निर्विष अन्न का सेवन—अथर्ववेद



का कथन है कि शुद्ध अन्न शक्तिवर्धक और रोगनाशक होता है । जौ और चावल पोषक और रोगनाशक हैं । अन्न के विषय में आवश्यक बताया गया है कि नीरोगता के लिए निर्विष अन्न ही खाया जाए ।

भोजन के नियम—अथर्ववेद में नीरोगता के लिए भोजन के कुछ नियम बताये गये हैं । ये हैं—(क) ठीक चबाकर खाना, (ख) ठीक ढंग से पानी पीना, (ग) ठीक ढंग से निगलना । शीघ्रता से खाया हुआ भोजन अपाच्य होता है और अजीर्ण (कब्ज) करता है । इसलिए आयुर्वेद में भोजन के लिए तीन नियम बताये गये हैं : (क) हितभुक्—हितकारी भोजन करना, (ख) मितभुक्—अल्प या संतुलित मात्रा में भोजन करना, (ग) ऋतभुक्—सात्विक एवं ईमानदारी से कमाया गया अन्न ही खाना ।

मल-मूत्र के वेग को न रोकना : मल और मूत्र के वेग को रोकने से नाना प्रकार की व्याधियां होती हैं, अतः उन्हें न रोकें । अथर्ववेद में मूत्र के वेग को रोकने से मूत्रकृच्छ्र का वर्णन किया गया है और मूत्र को तुरंत निकालना

आवश्यक बताया गया है ।

त्रिदोषज विकारों को रोकना : वात, पित्त और कफ के विकार से सारे रोग होते हैं और इनको सम रखने से नीरोगता होती है । अथर्ववेद में अभ्रज (कफ), वातज (वात) और शुष्म (पित्त) के विकार से होनेवाले सिरदर्द और कास (खांसी) आदि रोगों का उल्लेख किया गया है और इनकी चिकित्सा औषधि-सेवन एवं पर्वतों का आश्रय लेना बताया गया है ।

सात्त्विक विचारों को ही अपनाना : अष्टांगहृदय का कथन है कि रोगों के दो आश्रयस्थान हैं—शरीर और मन । मानसिक रोग रजोगुण और तमोगुण से उत्पन्न होते हैं । आयुर्वेद में नीरोगता के लिए शुभ विचारों को उपादेय बताया गया है । अथर्ववेद में उत्तम भावनाओं और विचारों से दीर्घायु की प्राप्ति बतायी गयी है ।

प्रसन्नचित्त रहना : प्रसन्नचित्त रहने से मनु नीरोग, दीर्घायु और तेजस्वी होता है ।

पापों और दुर्गुणों से बचना : पापों, दुष्कर्मों अ दुर्व्यसनों के परित्याग से मनुष्य नीरोग और दीर्घायु होता है ।

शरीर को हृष्ट-पुष्ट रखना : अथर्ववेद का कथन है कि शरीर में नेत्र आदि ज्ञानेन्द्रियां श के रक्षक हैं । इनको पुष्ट रखने से मनुष्य नीरो और दीर्घायु होता है ।

सूर्योदय से पूर्व उठना : अथर्ववेद का कथन है कि उदय होता हुआ सूर्य सोनेवाले का तेज ह लेता है । इसलिए नीरोगता और तेजस्विता के लिए सूर्योदय से पूर्व उठना आवश्यक है ।

विलक्षण क्षमताओं वाले मानव

इंगलैंड का प्रसिद्ध जादूगर राबर्ट हुडनी अपने समय का अद्भुत व चमत्कारी व्यक्ति माना जाता था । दैनिक समाचार पत्र 'डेली मिरर' ने एक बार उसके चमत्कारों को झूठा और भ्रामक बताकर उन पर आशंका प्रकट की थी । राबर्ट ने इसे चुनौती के रूप में लिया और उसने सार्वजनिक रूप से एक विलक्षण करतब प्रस्तुत किया । पूरी सावधानी और मजबूती के साथ उसे हथकड़ी व बेड़ियों में जकड़ दिया गया, परंतु दो मिनट के अंदर उसने बेड़ियों को तोड़कर फेंक दिया । लोगों की भीड़ के सामने राबर्ट को एक कमरे में बंदकर बाहर से ताला लगा दिया गया, लेकिन वह कुछ ही देर में लोगों के सामने था । उसे सुरंग के भीतर भी बंद किया गया, परंतु यहां भी उसने बाहर आकर लोगों को चकित कर दिया । राबर्ट यह सब कैसे कर सका ? इसका रहस्योद्घाटन आज तक नहीं हो सका है ।

'आलमआरा' के निर्माता अर्देशर ईरानी

वे फिल्मी उद्योग के बादशाह थे

• बद्रीप्रसाद जोशी

आलमआरा : भारत की पहली सवाक फिल्म, जिसके निर्मात थे—अर्देशर नी, जिन्हें फिल्मों का 'वाणी गुरु' भी कहा ना है ।

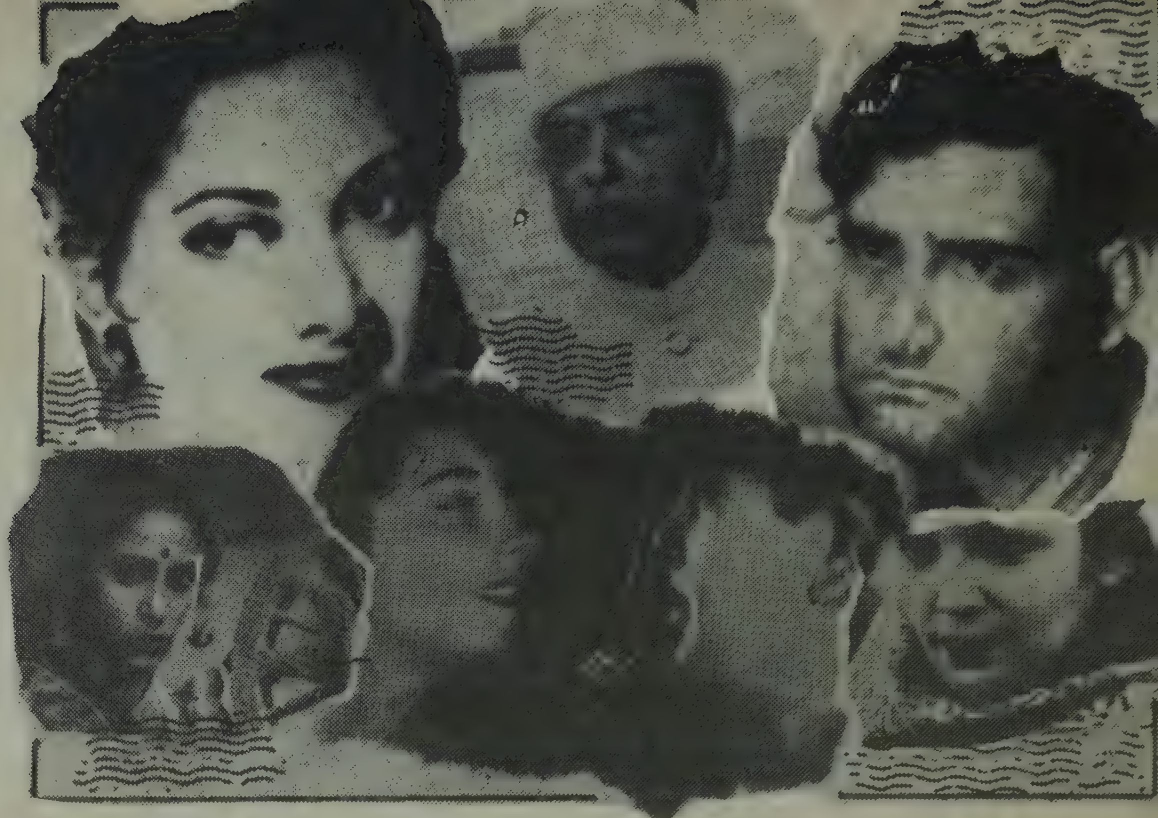
अर्देशर ईरानी का जन्म सन १८८६ में पुणे एक मेरबान ईरानी परिवार में हुआ था । नौ वर्ष की छोटी उम्र में वे अपने पिता के थ बंबई आये और जीजाबाई हाई स्कूल में ध्ययन के लिए उनका नाम लिखा दिया ा ।

नये-नये काम

मैट्रिक पास करते ही उनका स्वप्नाकांक्षी ाग कंप्यूटर की तरह दौड़ने लगा । वे पहले ल में मास्टर बने । फिर किरोसिन इंस्पेक्टर और देखते-देखते पुलिस इंस्पेक्टर बन । वे अपने पिता के साथ पहले चाय की न पर बैठे फिर उनके वाद्ययंत्रों की नयी न भी संभालने लगे । दिमाग में एक और लहर उठी तो कैमरा उठाकर फोटोग्राफी लगे । फोटोग्राफी का शौक ही उन्हें ों तक ले आया । फिर उन्होंने सन १९१५ में विदेशी फिल्मों का वितरण शुरू कर दिया । बाद में उन्होंने अब्दुल अली यूसूफ अली नामक व्यक्ति की पार्टनरशिप में बंबई में सभी साधनों से सुसज्जित एक खूबसूरत अलेक्झेंड्रा सिनेमाघर की स्थापना की । कुछ ही दिनों में दोनों मित्रों ने मिलकर गिरगांव में एक और थियेटर मैजेस्टिक खोला । अर्देशर ईरानी और अब्दुल अली यूसूफ अली की यह दोस्ती जीवनपर्यंत रही और फिल्मी दुनिया के सामने एक उदाहरण बन गयी ।

फिल्मों का निर्माण

मैजेस्टिक सिनेमा में प्रदर्शित पहली फिल्म अमरीका की यूनिवर्सल पिक्चर्स की 'मदन ओ माइन' थी । उन दिनों उस अमरीकी कंपनी के बंबई एक्जीक्यूटिव थे कोकरेन । वे अर्देशर ईरानी के उत्साह, उनकी लगन और फिल्मों के प्रति उनकी अभिरुचि और श्रम-साधना देखकर इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने उन्हें कंपनी का बंबई में मैनेजर बना दिया । पर जब उन्होंने अपने ही थियेटर्स-अलेक्झेंड्रा और मैजेस्टिक में दादा साहब फालके की 'कालिया मर्दन' और



'कृष्ण जन्म' तथा अन्य फिल्में देखीं तो उनके मस्तिष्क में फिल्में बनाने की तरंग उठी और वे यूनिवर्सल पिक्चर्स को छोड़कर फिल्म-निर्माण में संलग्न हो गये।

अर्देशर ईरानी की एक खूबी थी कि जो सोच लेते थे, उसे कर डालते थे। उन्होंने कल्पना की, दिमाग दौड़ाया, विदेश से आये फिल्म विशेषज्ञ वी. के. एम. दवे के साथ स्टार फिल्मस लि. की स्थापना कर शीघ्र ही एक मूक फिल्म 'वीर अभिमन्यु' बना डाली। दवे पहले शारदा फिल्म कंपनी से जुड़े थे और उन्हें फिल्म-निर्माण व्यवस्था का गहरा अनुभव था।

स्टार फिल्म के बैनर तले चंद फिल्में बनाने के बाद उनके मस्तिष्क में चेतना की एक और नयी लहर उठी और उन्होंने मैजेस्टिक फिल्म कंपनी की स्थापना की और उसके बैनर तले करीब नौ फिल्मों का निर्माण किया। लेकिन वह कंपनी बहुत जल्द बंद हो गयी। फिर भी वे निराश नहीं हुए और उन्होंने बंबई के कैनेडी ब्रिज के नीचे सन १९२६ में एक विशाल कंपनी का निर्माण किया, जिसका नाम था इंपीरियल फिल्म कंपनी। इस कंपनी ने अनेक सफल फिल्मों का निर्माण किया।

पहली सवाक् फिल्म

तब तक सवाक् फिल्मों का समय आ चु था। उन्होंने सारी दुनिया में तहलका मचा दि था। अर्देशर ईरानी उनके बारे में कुछ सोच रहे थे कि सन १९२९ में उन्होंने बंबई के एक्सेलसियर सिने थियेटर में 'शो बोट' नाम अमरीकी सवाक् फिल्म देखी। बस, फिर व था, उनका दिमागी कंप्यूटर गतिशील हो उठ जिस तरह उन्होंने दादा साहब फालके की मू फिल्मों से प्रेरित होकर मूक फिल्मों के निर्मा का सिलसिला शुरू किया था, उसी तरह उ सवाक् फिल्म को देखते ही तत्काल दूसरे दि ही उन्होंने सवाक् फिल्म बनाने का निर्णय क दिया। केवल पांच महीनों में और केवल छ हजार रुपये की लागत में भारत की प्रथम सवाक् फिल्म 'आलमआरा' का निर्माण कि जिसके कलाकार थे जुबैदा, मास्टर विट्ठल पृथ्वीराज कपूर, जगदीश सेठी आदि। फोटोग्राफर थे अर्देशर ईरानी और रूस्तम स

चा थे साउंड रेकॉर्डिस्ट। इस तरह भारत
प्रथम सवाक् फिल्म बनाने का श्रेय अर्देशर
नी को है, जो फिल्मों के 'वाणीगुरु' कहलाते

भारत की प्रथम सवाक् फिल्म

लमआरा' बंबई के मैजेस्टिक सिनेमा में १४
,१९३१ को प्रदर्शित हुई। उसकी भारी
लता से अब वे उसी तरह फिल्म निर्माण
में कोई न कोई पहला क्रांतिकारी कदम
ने को प्रेरित हुए। उन्हें तब श्रेय मिला भारत
हली अंगरेजी फिल्म बनाने का। भारत की
प्रथम अंगरेजी फिल्म 'नूरजहां' सन १९३२
नी थी। अगले साल उन्होंने भारत की
नी पर्शियन फिल्म 'दुख्तरे नूर' का निर्माण
। इस फिल्म के संगीत की रेकॉर्डिंग के
उन्होंने खास ईरान से संगीतकार बुलाये
ईरान में इस फिल्म की इतनी प्रशंसा हुई
उसकी सफलता से प्रेरित होकर उन्होंने सन
३४ और ३५ में दो और पर्शियन
में—'फिरदौसी' और 'शीरी फरहाद' का
ण किया। इसी तरह उन्होंने फिल्मी दुनिया
हली आटोमैटिक लेबोरेटरी का भी निर्माण
।

अर्देशर ईरानी को इस बात का भी श्रेय है
उन्होंने पहली कलर लेबोरेटरी सिने कलर
स का निर्माण किया और उन्होंने भारत की
ी कलर फिल्म 'किसान कन्या' सन १९३७
नायी। जिसका उद्घाटन बंबई के
लीन गवर्नर लार्ड ब्रेबोर्न ने किया था और
में मास्टर निसार और पद्मादेवी की जोड़ी
गुलाम मोहम्मद खलनायक थे। इसी वर्ष
म्पा' के प्रेसीडेंट चुने गये।

उनके साथ काम करनेवाले प्रमुख निर्देशक थे—आर. एस. चौधरी, मोतीजी गिडवानी, होमी मास्टर, दादा गुंजाल, हफीजी, एथोर्टी मदनानी वकील, अस्पी ईरानी, पेसी कर्नी, नाना साहब सरपोतदार, नंदलाल और मिश्रा उनकी फिल्मों के प्रमुख कलाकार थे—सुलोचना, जुबैदा, जिल्लो, मोती, रत्नाबाई, पृथ्वीराज कपूर, प्रमिला, पद्मा देवी, जगदीश सेठी, मुबारक, नापमपल्ली, डब्लू. एम. खान निसार, डी. बिलिमोरिया, विनायक राव पटवर्धन, गोविंद राव तांबे और मास्टर विट्ठल।

अनुशासनप्रिय, सहृदय भी

उनकी फिल्मों के तकनीशियनों में प्रमुख थे—अदी ईरानी, रूस्तम सी भरूचा, ए. पी. करनदीकर, आर. एम. रेले आदि। अर्देशर ईरानी काम के मामले में अनुशासनप्रिय और सख्त थे पर व्यवहार में मानवीय संवेदनाओं से उद्वेलित रहते थे। वे अपने कर्मचारियों से काम भी लेना जानते थे और उन्हें प्यार भी करते थे। वे हमेशा अपने छोटे कर्मचारियों की मदद किया करते थे। वे स्टार फिल्म-सिस्टम के सख्त खिलाफ थे। इस विषय में उन्होंने अपने एक इंटरव्यू में कहा, "मेरे जमाने में आर्टिस्ट एक जगह टिककर रहा करते थे और अपनी ड्यूटी को सबसे अधिक महत्व देते थे। यहां तक कि सुलोचना (रूबी मायर्स) को भी जो सबसे महंगी कलाकार थी और जो ५००० रुपये प्रति माह वेतन लेती थी, मेरे यहां ठीक समय पर आना पड़ता था और कभी-कभी तो जरूरत पड़ने पर रात के दो-तीन बजे भी। कभी-कभी बेचैन हो जाता हूं, जब यह सुनता हूं कि अमुक कलाकार ने अमुक निर्माता को तंग किया।

अर्देशर ईरानी की फिल्मों की सूची

● स्टार फिल्म लि. के अंतर्गत अर्देशर ईरानी निर्मित फिल्में : वीर अभिमन्यु, चंद्रगुप्त, बाली-सुग्रीव, मत्स्य वराह ।
● मैजेस्टिक फिल्म कं. के अंतर्गत बनी फिल्में : आत्मबल, काल आफ सैटन, चालू जमाना, काला नाग, नंद बत्रीसी, रजिया बेगम, सदावंत, सैवलिंगो, संन्यासी, वीर दुर्गादास ।
● इंपीरियल की मूक फिल्में : अली बाबा एंड फोर्टी थीव्स, अल्ला का प्यारा, बिड फार दि थ्रोन, ब्रैंड आफ फेट, सेलेशियल लोटस, सिनेमा गर्ल, दीवान भामाशा, द्वारका, फेटल गारलैंड, फ्लाइंग प्रिंस, पागल प्रेमी, ब्यूटीफुल प्रिंस, हीर रांझा या हूर ए पंजाब, जंगल की रानी, हिल्स आव पैराडाइज, इंदिरा, ज्वेल ऑव राजपूताना, ज्वेल्ड ऐरो, कमला कुमारी, कमर-उल-जमान, खुदा की शान, किक्स आव किस्म, कृष्ण नारदी, ला बैले, लेडी आव दि लेक, वेनजियेंस, वेडिंग नाइट, वर्ल्ड टीचर, मिडनाइट राइडर, नर्स (दयानी देवी), पिता का परमेश्वर, पंजाब मेल, पुराना भारत राजतिलक, राम-रहीम, रिवेंज (इंतकाम), सेक्रेट आव दि नाइट, सिंदबाद दि सेलर, स्लेव या गुलाम, सोहिनी महिवाल, स्वोर्ड टु स्वोर्ड, विजया कुमारी, वाइज फूल, रौंगड वाइफ, दि यूथ ।
● इंपीरियल फिल्म कं. की बोलती फिल्में-में : सन १९३१ में : आलमआरा, अनंग से दौलत का नशा, द्रौपदी, नूरजहां । सन १९३ भारतमाता, दगाबाज अश्क, जालिम जवानी माधुरी, नेक अबला, नीति विजय, सती मद सती सोने । सन १९३३ में : डाकू की लड़क दोरंगी दुनिया, सती अनुसूया, सौभाग्य सुंदरी टेम्पल बेल्स, १९३४ में—देवकी, गुल सनो इंदिरा एम. ए., मैजिक फ्लूट, पिया प्यारे, रु हरण, समाज की भूल । १९३५ में : अनार चलता पुतला, दो घड़ी की मौज, पुजारिनी, (सौंग आव लव), सन १९३६ में : बंबई व बिल्ली, गुलाम डाकू, हमारी बेटियां, जाटे श जंगल क्वीन, लाल ओ निहार, महामाय, सर शान ए हिंद सन १९३७ में : जगत केसरी, किसान कन्या, मेरे लाल, न्यू सर्चलाइट, पंज लैंसर्स, टू वोमेन, उसने क्या सोचा, वाह री सन १९३८ में : दुल्हन, एजुकेटेड एक्ट्रेस, किसलिए, बसंत बंगाली ।
● इंपीरियल फिल्म कं. द्वारा हिंदी के अला अन्य भाषाओं में निर्मित फिल्में : अंगरेजी : नूरजहां-१९३२ में, पर्शियन-दुख्तरे लूर-१९ फिरदौसी-१९३४, शीरी फरहाद-१९३५ में, मराठी-रुक्मिणी हरण-१९३३ में, देवकी—१९३४ में, तमिल-परिजात पुष्पम-१९३२ में, कोवालन-१९३३ में, तेलुगु-रामदास-१९३३ में ।

व्यक्तिगत रूप से मैंने इसे तो कभी बर्दाश्त नहीं किया । ऐसे कलाकार को मैं अपने स्टूडियो में पांव नहीं रखने देता... ।''

अर्देशर ईरानी हमेशा आशावान और सजग रहे । आर्थिक संकट के समय भी वे हमेशा मुसकराते रहे ।

इंपीरियल फिल्म कंपनी के इंजीनियर और हीरो डी. बिलिमोरिया ने उनके प्रति उद्गार प्रकट करते हुए कहा था, ''अर्देशर ईरानी फिल्म उद्योग के बादशाह थे । वे फिल्म के हीरो थे । जब भी कोई भी नया एक्सपै करना होता तो उनके मुंह से कभी न नहीं निकलती । उनके मुंह से मैंने हमेशा यही सुना—'गो एहेड'—आगे बढ़ो ।''

—५/एफ, नाज सिनेमा, ब



वह तीसरा

● अनिता अनिलाभ

ब वो मेरे लिए पहले जैसी नहीं रही थी । वह मुझसे स्वतंत्र और शायद, छिटककर दूर हो गयी थी । जब उसे मेरी जरूरत ह गयी थी, तो फिर बीच में क्या था ? औपचारिकता या कुछ और अस्पष्ट-सा । बाहर जो कुछ बचा-खुचा था भी, तो ठीक त भीतर था । उसके और अपने बीच बढ़ फासलों को शायद, महसूस भी किया था । पर सब क्रिया-प्रतिक्रिया भीतरी सतह । और बाहर...कुछ पहले से ढीला, और ठंडा था, पर था कुछ अवशेष-सा या फिर एक दरार जो धीरे-धीरे खड्ड का रूप ले रही थी । खिसकती जमीन या ऐसा दलदल, जहां कम से कम मैं खड़ी नहीं हो पा रही थी । फिर ऐसा क्या हो गया था हमारे बीच ? उस तीसरे का प्रवेश ही था, जिसे वर्षों से हम नकारते रहे थे ।

हम दोनों ने ही कभी किसी तीसरे को अपने बीच महत्व नहीं दिया था । शायद, हमें जरूरत ही नहीं थी । बल्कि, कभी कोई अचानक हमारे बीच आ भी जाता, तो हम बड़ी सफाई से उससे छिटक जाया करते । कभी किसी पार्टी या

हम दोनों ने ही कभी तीसरे को अपने बीच महत्व नहीं दिया था। शायद, हमें जरूरत ही नहीं थी। बल्कि, कभी कोई अचानक हमारे बीच आ भी जाता, तो हम बड़ी सफाई से उससे छिटक जाया करते। लेकिन फिर एक दिन हमारे बीच वह तीसरा आ ही गया...

गेदरिंग में मिलते तो बाद में बस स्टॉप, सड़क के किनारे, टूटी पुलिया या किसी बंद दुकान के आगे की दो-तीन सीढ़ियों पर एक-दूसरे से सटकर बैठकर बतियाना आवश्यक हो जाता था। मुलाकात शुरू होते ही अगली बार मिलने का कार्यक्रम बनाना आदत बन चुकी थी मेरी, जिस पर वह बहुत खिलखिलाकर हंसती, पर मैं अपनी असुरक्षा का भय मिटाकर निश्चिंत हो जाना चाहती थी। कभी-कभार अति आवेग से बहती करुणा और उससे मिली पीड़ा को, वे अपनी डाट में घुले सशक्त शब्द देकर मुझे बचा लेती।

मेरे जीवन के इंपॉर्टेंट संबंध कभी भी उसके आगे इंपॉर्टेंट नहीं हो पाते थे। मेरे जीवन और हृदय में उसके लिए एक सुरक्षित स्थान था। हुआ था ऐसे भी, जैसा कि होता है जीवन में। मेरा कोई अपना, जो हम दोनों के बीच तीसरा था, वो तीसरा नहीं होना चाहता था। उसने बहुत चाहा कि वो और मैं 'हम दोनों' हो जाएं, पर मुझे स्वीकार न था। बहुत तड़फाया उसने मुझे, बड़ी पीड़ा दी, पर वह तीसरा ही रहा। फिर छूट गया वह और मैं कसकती टूटती रह गयी। और मेरा वह जो सुरक्षित संबंध था, उसी के आंचल में जा छिपी थी। हम दोनों वैसे ही रहे, लिपटते, रोते, हंसते, मिलते। कसक, पीड़ा, प्रेम, मिलन सब मिला-जुला था। जी[...] चल रहा था, जैसे सबका चलता है, मिलन[...] और बिछुड़ने के साथ-साथ।

फिर कोई तीसरा था हमारे बीच या यूं क[...] कि अब उसके साथ। सुखद थीं सब मिलन[...] की घटनाएं, पहलू, आदान-प्रदान। हम दो[...] अब तीन में बंट गये थे। शनैः-शनैः 'मैं' लु[...] हो रही थी। उसकी और मेरी पहचान में अ[...] वो तीसरा पहचाने जाने लगा था। ये 'मैं' क[...] अस्तित्व भी नये-पुराने खेल खेलता है। यदि[...] उस तीसरे को उसी के स्थान पर रखती, तो व[...] आगे बढ़कर उसे खींचकर हम दोनों के बीच[...] ला खड़ा करती। उसका उसके लिए महत्व[...] और उसके बीच फासला बनाने लगा था।[...] करुणा कभी-कभी अपमान बन जाती। उन[...] व्यवहार मेरे भीतर कसक पैदाकर उस पुराने[...] तीसरे को याद कर लेता, जिसे मैं, 'हम दोनों[...] नहीं बना पायी। क्योंकि, वो तीसरा अब मेर[...] था, उसका था मैं एक अनजानी आग में ज[...] रही थी, जिसकी तपिश उस तीसरे के लिए [...] बल्कि, उस खिसकती जमीन के लिए थी, ज[...] 'हम दोनों' के लिए पाट बन रही थी।

चलती थी मैं उनके साथ, उन तमाम रा[...] पर, जो मेरे लिए अंगार बन चुके थे। पर उ[...] दोनों की मुसकराहट मेरे तलवों के छालों प[...]

हम रखती थी । उनके साथ उन्हीं पेड़ों की ह से गुजरते हुए, सुलगते हृदय के ताप को मैं तर समेट लेती । मेरे भीतर की चीख कहीं र्त बनकर मुखर न हो, इस कारण कई बार न रहती । भीतर पनपते घावों पर मरहम ते-सहलाते, मैं इतना डूब जाती कि बाहर ना मुश्किल हो जाता । क्यों मेरा इतिहास नता जा रहा था कि सभी संबंध टूटकर खून लथपथ हो गये ?

कभी पेड़ों के नीचे, कभी रेस्तरां में या कभी सी बाग में टहलते-बतियाते मैं अचानक हीं दूर रह जाती थी । मन को फिर वहीं लाने लिए झटपट मैं कुछ शब्द देकर उसे फिर क्रित कर देती । दोनों के वार्तालाप के संख्य शब्द मुझे गहरे भावों तक जाने से बचा ते । विचारों की नदी का प्रवाह लगता और मैं दर पर्त छिपी-दबी रह जाती ।

विडंबना, अकेलापन जब भी धाक जमाने गता, तब भी मैं उससे पहले की तरह मिलना हीं चाहती थी । और कभी मिलती भी, केलापन बांटने लगती, तो अपने ही शब्द झे खोखले लगने लगते । और लगता कि ब शायद, इन शब्दों को वह नहीं समझ येगी । मैं ही अकेली रह गयी थी, सब अपनों बीच । मैं जानती थी प्रेमियों की दो की वृत्ति । दो ही में वह पूरा और पर्याप्त है । वही नया होती है उसकी । और 'तीसरा' तो भीड़ ती है, जिसकी तरफ दो प्रेमियों की पीठ होती उपेक्षा होती है । लेकिन अब मैं वही सरा' थी, भीड़ थी । गहरा धक्का था मेरे प्रेम , स्वाभिमान को । अब इनमें मेरी कोई दुनिया



नहीं नही थी । फिर टूट से टूटी थी मैं । जिन-जिन संबंधों को पहले बड़ी उन्मुक्तता से पीछे छोड़ आयी थी, वहीं-वहीं लौटकर जोड़ रही थी । पर समय बहुत जल्दी महत्व को बेमतलब कर देता है । गहरी खायी, जिसे पाटने की क्षमता अब मुझमें नहीं थी ।

घटनाओं पर घटनाएं तो वही होती हैं, जो होती आयी है सदियों से । कुछ नया तो होता नहीं । संबंध बनते हैं, बिखरते हैं । एक दफे टूटने की पीड़ा भोगकर भी पुनरुक्ति करते हैं । कहीं प्रेम हो जाता है, तो कभी प्रेम साधना

पड़ता है । कहीं सरलता होती है, तो कहीं पाखंड । मेरा हताहत स्वाभिमान विचारों से भरा पड़ा था, वरना जीवन तो सादा, सरल ही है । जीवन और विचार के बीच पड़ी दीवार के पार तो कोई पीड़ा नहीं है । आखिर, विचारों के बोझ लेकर मैं कब तक चलूं ।

मेरी चेतना के आकाश पर यह कोई पहला संबंध नहीं था, जो बिखरा न हो । फिर भी हर बार की तरह मैं इस संबंध को बचाना चाह रही थी । पहले के संबंध, उनसे जुड़ापन, जब एक-दूसरे के लिए मरने को तैयार होते हैं, फिर अलगाव की मूढ़ता । जब वही चुकता हो गये, तब इन्हें क्यूं पकड़कर बैठूं । संबंध तो एक बादल की तरह हैं, जो एक धुंआ है । आकाश वहीं रहेगा, लेकिन मेरी पकड़ वहीं की वहीं है । अपने को मजबूत करने के लिए तब शब्दों का ही सहारा लेना पड़ता है, जब सब संबंध फीके और बेमाने हो जाते हैं ।

कभी-कभी लगता है, मैं उन दोनों के बीच 'बेचारी' बन गयी हूं । यूं ही चल रही हूं उनके साथ । यही भाव चलते-चलते मुझे उनसे दूर कर देता और मैं फिर मौन हो जाती । क्योंकि, अब मैं पूरी तरह से 'वो तीसरा' बन गयी थी । अपनी इस उपेक्षा व आरोपित महत्तावाली स्थिति को भीतर जड़ें देकर जमीन नहीं बनने देना चाहती थी मैं । यह जमीन जड़ पकड़कर मेरा संसार मिटाने को काफी थी ।

बहुत पीछे लौट-लौटकर घूम आयी थी । होश संभालने से लेकर अब तक के, अपने-परायों के चेहरे, मिलने-बिछुड़ने की घटनाएं, अवसर से अवसाद तक की यात्राएं— सभी छूट गयी थीं । सभी नये प्रे पुराने हो जाते हैं । स्थिरता जड़ता लाती है । इसलिए नया पुराना होता है, जीवन के लिए, नूतनता के लिए । इस तथ्य को स्वीकारना है कि प्रथम सदैव प्रथम नहीं रहता । इसे खिसकना होता है धीरे-धीरे दूसरे पर, फिर तीसरे पर, और इसी तरह लुप्त हो जाता है अपना पूरा अस्तित्व ।

गहन पीड़ा भोगकर कभी-कभी हम निख जाते हैं, बिलकुल नये जन्म लेते हैं, बच्चे की तरह ।

अब भी हम तीनों बतियाते टहलते हैं । की छांह, रेस्तरां या बाग में । एक साथ चल नहीं छोड़ा था हमने । चलते-चलते, भीतर ह भीतर, बहुत दूर तक यात्रा कर मैं लौट भी आयी थी, पूरा अतीत,वर्तमान घूमकर । फि भविष्य की असुरक्षा का अब भय नहीं रहा था । मेरे जाने व लौटने का उन्हें पता भी न चला था । फिर भी हम साथ-साथ चलते र कुछ निकटता, कुछ दूरी लिये या यूं कह लूं वो दो निकट थे और मैं कुछ दूरी पर अकेली खड़ी थी । निसहाय, बेचारी या 'वो तीसरा' बनकर नहीं, सशक्त परिपूर्ण-सी, एक अकेल प्रथम बनकर ।

—१६८, डबल स्टोरी, न्यू राजेंद्र न
नयी दिल्ली-११००

गुजर रहा है तो आंखें बचा के यूं न गुजर
गलत बयां भी बहुत राह-गुजर में होते हैं

— अजीज हामिद मदनी



अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये प्रश्नों के उत्तर खोजिए । उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जाएंगे । यदि आप सही प्रश्नों के उत्तर दे सकें, तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प ।

— संपादक

. **वह**— कौन-सा सूर्यवंशी राजा था जिसके ाठ हजार पुत्र हुए थे, जो कपिल मुनि पर चोरी ा लांछन लगाने के कारण उनके क्रोधानल से स्म हो गये थे, फिर भगीरथ ने गंगा का प्रवाह र उनका उद्धार किया था ?

. **क. पानीपत**— का प्रथम युद्ध कब और कस-किसके बीच हुआ था ?

.— उसका क्या परिणाम हुआ था ?

. **क. पृथ्वी**—पर सबसे पुराना वृक्ष कहां ौर कब पाया गया है ?

.— इससे पहले दुनिया की सबसे पुरानी ीवित वनस्पति कहां मिली थी ?

. **क. अगली**— शताब्दी में चिकित्सा-क्षेत्र कौन-सा क्रांतिकारी परिवर्तन होने की भावना है ?

ख.— शरीर की कोशिकाओं की मूल काई क्या है, जो जीव-जंतुओं के आनुवांशिकी णों का निर्धारण करती है ?

. **क. दक्षिण**— ध्रुव अकेले पहुंचने में किस कमात्र महिला ने कीर्तिमान स्थापित किया ?

.— भारत का कौन-सा अभियान-दल टार्कटिका पहुंचा है ? इस दल का नेतृत्व ौन कर रहे हैं ?

. **क. सुरक्षा**— परिषद के नये अस्थायी दस्य कौन चुने गये हैं ?

ख.— उन्होंने कितना स्थान ग्रहण किया है ?

७. भारत— का विदेशी ऋण अब तक सर्वाधिक कितना और कब हुआ है ?

८. निम्नलिखित— पुरस्कार किसे मिले हैं ?

क.— म. गांधी शांति पुर. (१९९४) — नेशनल फेडेरेशन ऑव अमरीकन एसोसिएशन द्वारा स्थापित ।

ख.— इंदिरा गांधी शांति, निशस्त्रीकरण तथा विकास पुर. (१९९४),

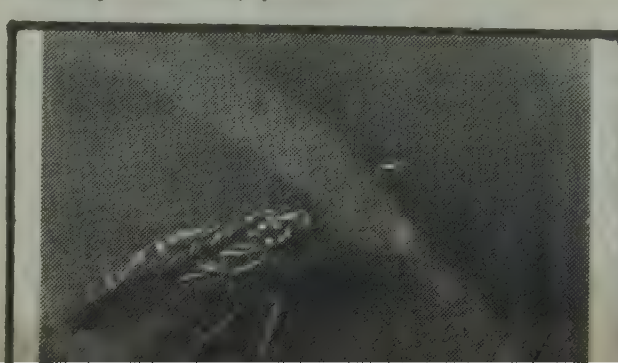
ग.— सामाजिक सेवाओं के लिए इंदिरा गांधी पुर. (१९९३-९४)

९. क. आस्ट्रेलियाई ओपन टेनिस चैंपियनशिप का महिला एकल ग्रांड स्लैब खिताब किसने जीता है, किसको हराकर ?

ख.— उपर्युक्त टूनमिंट में पुरुष एकल ग्रांड स्लैब खिताब किसने जीता है ?

१०. हाल— में सबसे कम उम्र की किस भारतीय बालिका ने लंबी समुद्री तैराकी में नाम कमाया है ?

११. नीचे— दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और बताइए यह क्या है—





अधिकार

● बाला शर्मा

अस्पताल की कई मंजिली ऊंची बिल्डिंग अपनी जगह स्थिर खड़ी थी । दरवाजे पर संतरी भारी-भारी बूटों को उठाता कभी चहलकदमी करता और कभी इधर-उधर बैठकर बीड़ी फूंकता रहता । अभी दो-चार घंटे में ही कई 'इमरजैंसी केस' आये हैं । "पता नहीं आजकल के छोकरों को क्या हो गया है । मोटर चलाएंगे ओवर स्पीड ! फिर हाथ-पैर तोड़कर यहां चले आते हैं ।" जमादार तेजी से बोले जा रहा था ।

"जमादारजी हमें दस मिनट के लिए आने दो न....अंदर ।"

"नईं साब...बड़ा डॉक्टरसाब भोत गुस्
करेगा... ।" संतरी को किसी को भी अंदर
देने का अधिकार नहीं है ।

वे दोनों स्त्री-पुरुष जो शायद पति-पत्नी
थे, गेट के बाहर ही घूमते रहे । स्त्री कभी-
बहुत अधीर होकर गेट तक चली आती कि
शायद आंख बचाकर अंदर पहुंच जाए कि
उसकी कोई भी तरकीब काम नहीं आ रही
कपड़े पहनावे से वो अभिजात्य वर्ग के
लग रहे हैं । स्त्री ने कढ़ा हुआ कश्मीरी शा

और सादी सिल्क की साड़ी और सादी चप्पलें हनी हैं । पुरुष ने बंद गले का चैकदार कोट और वर्स्टेड की पतूलन पहनी हुई है । जिसका ग कहीं-कहीं से उड़ गया है पर इस सबसे खबर वह लगातार फर्श पर चलता जा रहा है क किसी प्रकार अपने बेटे तक पहुंच सके... ।

"मैंने तुमसे पहले ही कहा था न आने को र जब जिद चढ़ती है तो तुम मानती ही नहीं । ।" पुरुष के अधिकारपूर्ण स्वर से पता लता है कि वे उस स्त्री के पति हैं । बदले में गी आंखें उठाकर स्त्री ने बहुत दयनीय दृष्टि उन्हें देखा तो आगे बोलना पुरुष के लिए कठिन हो गया था ।

किसी प्रकार संतरी की अनुमति हो तो अंदर ाना संभव हो । केवल आधा घंटा अंदर ुजारने के लिए वे दो घंटे तक उसकी नुनय-विनय करते रहे थे ।



साफ लंबे गलियारे के फर्श पर केवल नर्सों क चलने की आवाज सुनायी पड़ रही थी टक, टक, टक । कमरों के दरवाजों पर लटके परदे ानिक ऊंचे हैं सो अंदर पलंग, स्टूल, रोगी के स्तेमाल करने की सब वस्तुएं नजर आ रही ैं । बड़े हॉल में कतार लगाकर पलंग बिछा दिये गये हैं । हर बिस्तर पर—जैसे मौत की उदासी फैली हो, हर प्राणी—जैसे जूझ रहा है । जिंदगी के लिए तड़प रहा है । बुत बना सिमटकर लेटा हुआ है । यहां चोट खाये एक्सीडैंटवाले रोगी डाले हुए हैं । अधिकतर नींद की दवा लेकर रोगी बेहोशी में गर्क, आज की स्थिति से बेखबर नींद में डूबे हुए हैं । न घर

"मां...मां... कहां थी अब तक ? क्यों नहीं...क्यों नहीं, तुमने यह सब पहले दिया जिसका कि मैं हकदार था । क्यों भुला बैठी ममता का अधिकार ? क्यों दबा दिया उसे शिष्टता की परतों में ? क्यों भला ?..." स्वर हिचकियों में डूबता गया ।

वह मां की गोद में पहली बार सुख की सांस ले रहा था । अब किसी साये की तलाश नहीं थी, उसे । उसे अपना अधिकार मिल गया था ।

की चिंता न कमाने जाने की झंझट ।

उसका बेटा भी पलंग पर अस्त-व्यस्त पड़ा है । हाथ-पांव पट्टियों की सफेदी से ढके हुए । नंगी छाती पर पहियों ने ताना-बाना बुनकर रख दिया है । वह स्त्री देखकर ही फफक उठती है ।

''शी...ई...ई..., नर्स ने होंठों पर अंगुली रख इशारा किया तो मां ने कंठ में ही रुलाई घुटक ली । बेटे का चेहरा देखकर ही उसका दिल बैठने लगा है... ।

कमरे के दरवाजे के बाहर ही केले के गाछ-सी कोमल कमसिन एक और नारी देह बैठी है... । शायद नर्स ने इसे भी अंदर जाने की इजाजत नहीं दी है और वापस वह लौटकर भी नहीं जाना चाहती होगी । तभी न एकटक, दूर से ही सही रोगी का चेहरा निहारती जा रही है । कलेजे में उठी हूक उसने हाथ से पकड़कर दबा ली है ।

दो नारी...दो समय... । एक बीत चुका । दूसरा अभी प्रारंभ हो रहा है...आंसुओं का सैलाब, प्रेम का दरिया, प्यार का लबरेज प्याला सब कुछ वैसा ही, केवल समय बदला है ।
''मैं...मैं...इनके साथ...'' लड़की ने मिमियाकर कहा ।

''हां...हां...मुझे पता है तुम इसके साथ पढ़ती हो...''

''जी...ई...ई...'' लड़की को आश्चर्य हो रहा है । उसने अपनी बहूटी-सी लाल आंखें मां के चेहरे पर टिका दीं... कि— जैसे पूछ रही हों ''कि आपने मेरा अपराध क्षमा कर दिया क्या ?''

स्त्री स्वयं चलकर उसके पास तक आयी

और दोनों कंधों से पकड़कर कलेजे से ल
लिया । लड़की अभी तक कांप रही थी
से अथवा भय से यह पता नहीं चल रहा
के मन में तो ममत्व ठांठे मार रही थी ।
प्यार के हिंडोले में पेंगे ले रही थी । दोनों
किनारा ढूंढ़ रही थीं । जो हाथ से छूट छू
रहा था ।

सहसा रोगी ने आंखें उघाड़ीं और फि
अनपहचानी पुतलियां बारी-बारी से सबके
चेहरों पर घूमती रहीं । फिर घूमकर छत
ओर स्थिर हो गयीं और नयन मूंद लिए त
स्त्रियों के हृदय की धड़कन जैसे थम गयी

''मेरा नरेन अच्छा हो जाए तो सवा म
हनुमानजी पर चढ़ाऊंगी ।'' मां ने आका
दृष्टि टिकाते मनौती मांगी ।

''हां नरेन ठीक हो जाए तो बड़े पीरज
चादर चढ़ाऊंगी'' लड़की ने दुआ की ।

मां ने चौंककर लड़की की तरफ देखा
लड़की ने पलटकर निगाहें झुका लीं । व
हिंदुत्व कान खड़े किये खड़ा था । उधर
मुसलमानी खून रगों में डोल रहा था । दो
नजर उठाकर देखा । निगाहें टकरायीं ।
अजनबी-सी अनपहचान उभरी । फिर धी
सोच की परत टूटती गयी । एक नारी की
दूसरी ने पढ़ी...कि ''हां वह मेरा बेटा है..

''कि हां वह मेरा होनेवाला शौहर है''
हिंदुत्व लड़खड़ा गया, मुसलमान पलट
गया...वहां तो केवल मां और पत्नी अपने
इरादों के साथ खड़ी थीं ।

''क्या तुम मुझे स्वीकार करोगी ?'' ए
पत्नी बननेवाली थी भविष्य के प्रति आश्व



ा चाहती थी ।

या तुम भरपूर प्यार, पूरा सुख, उतना नापन हमें दे सकोगी ?'' मां आशंकित । प्यार सर उठाकर बोल रहा था । ममता कुछ स्वयं में समो लेने को उत्सुक थी । ने दूसरे से समझौता कर लिया था । ''मुझे नरेन ने बताया कि उसके कोई मां-बाप हैं ही ।'' लड़की ने अपनी बड़ी-बड़ी आंखों में भरकर पूछा । जब वे रात में एक ही छत नीचे आराम कर रही थीं ।

''सच ही कहा उसने । मैं मां कहां हूं ? मां ने का फर्ज मैंने कब अदा किया ? मां ने पकर कहा तो उसके होंठ थरथरा उठे ।

''यूं पहेलियां न बुझाइए...'' लड़की कुछ आवाज में पूछ बैठी । ''हां सही कह रही नरेन को जन्म दिया, बस इतनी ही गुनहगार मैं तो उस दुधमुंहे को ही छोड़ गयी थी । र किसने दूध की बूंद उसके होंठों में टपकायी कुछ नहीं मालूम ।''

लड़की भय से पीली पड़ गयी । कहीं वही कहानी फिर से न दोहरायी जाए । नहीं ! नहीं ! उसका नरेन ऐसा नहीं । नरेन की औलाद के साथ ऐसा सब नहीं होगा । औरत उस लड़की की चिंता भांप गयी । घृणा की एक तीव्र लहर न चाहते हुए भी उसके शरीर में दौड़ गयी, सब कुछ समझकर पति से बाद में गुपचुप कोई समझौता हुआ । दो दिन बाद ही पति-पत्नी गांव वापस चले गये । नरेन की मां को उसके पति ने क्षमा कर दिया था । उसकी सारी भूल के साथ ही उसने उसे स्वीकारा था । समाज की बंधी-बंधायी लकीर को तोड़ा था उसने । कंवारी मां बनने का जो अपराध उससे हुआ था सो समाज से बहिष्कृत थी वो । उससे विवाह करके उसके पति को भी दंड भोगना पड़ा था ।

"उसके पिता के धन की थैली ने ही इसकी आंख पर पट्टी बांध रक्खी है ।"

"न जाने कब तक बंधी है ? चिड़िया उड़ते दोबारा क्या देर लगती है ।"

मगर चिड़िया नहीं उड़ी । न ही उसके पिता की दी गयी धन की थैली ही वहां स्वीकार की गयी । मनुष्यता अपने पूर्ण सौजन्य से साकार हुई थी । किसी ने भी उसे नहीं स्वीकारा था । नरेन उनका गोद लिया बेटा था । स्वयं की नजरों में । मां को नहीं चीन्हता । पिता स्वयं का बेटा न होने पर भी सारे फर्ज अदा करते हैं । नरेन को वैसे मां-बाप दोनों का भरपूर प्यार, मिला था । इज्जत थी । आराम था किंतु लज्जा की जो एक विवशता थी उसे क्या कहें ? कभी कोई प्रश्न अंगारे-सा उछलता...कि "कौन है मेरा जनक ? क्यों छोड़ गया ? ...क्यों हुआ वह सब ? क्यों मां की मूरत घृणा में बदल जाती ?

न चाहते हुए भी दो-चार वाक्य निकल जाते ।

"नरेन क्लास में 'फर्स्ट' आया ।

"नरेन ने 'डिबेट' में 'शील्ड' जीती ।

"नरेन ने तैराकी की प्रतियोगिता जीत ली ।"

इन सब के समाचार उसकी मां और उसके तथाकथित पिता को उसके मित्रों द्वारा ही मिल पाते । न ही वह कभी झूमता हुआ अकड़कर मां को दिखाने आया । न ही वह कभी हुलसकर उसे छाती से लगा पायी थी ।

नरेन से कुछ बता पाने का साहस नहीं था... । नदी बांध तोड़कर जब बहती है तो न जाने कितनों को बहा ले जाती है ? कितने घर उजाड़कर रख देती है ? तब भी यही हुआ था । नदी में तूफान आया था । धर्म का तूफान । कौम को फतह करने का तूफान के पिता उन सब में चट्टान बन जाने को अ

फिर एक दिन तूफान थम गया । बाकी गयी सूखी रेत । सीपियां । टूटे घरोंदों के अवशेष । नरेन के पिता भी थे उन्हीं में । वे किन्हीं शख्स को बचाने गये थे, कि गली नुक्कड़ पर कौम आड़े आ गयी । धर्म बेनक हो गया । वे हिंदू थे और ये शख्स दूसरी के । पर जब सब कुछ स्वाहा हो गया । तब एक जज्बा बाकी था । वह "इनसानियत क जज्बा था । ...वह बाकी था । अभी इन्होंने तोड़ती आत्मा को कौल दिया था कि जो उ बीज कहीं पनप रहा है उसे जिंदगी बख्शेंगे इस पौधे को सींचकर बड़ा करेंगे । पिता क प्यार देंगे...धर्म का छत्र छ्वाएंगे । भले ही...भले ही उन्हें अपना धर्म गंवाना पड़े । बशीर से बृजलाल बनने की कहानी बहुत है । वहां मुल्ला आड़े आये थे । पंडितों ने हुंकारे भरे थे । घंटे-अजान गड़गड़ाये थे । जो कौल दिया था उसका निभाना तो उन स ऊपर था ।

नरेन के घाव भरते गये । रूना ने बहुत की उसकी । वहां मां-बाप गांव में उसके इंतजार में तड़पते रहे कि अब बेटा उन्हें वह सुख नसीब कराएगा जो कि उन्हें स्वयं को नसीब नहीं हुआ ।

रूना कॉलेज से सीधे नरेन के कमरे पर चली आती । स्टोव की सूं...सूं में भविष्य के गीत गुनगुनाते हुए सारा काम कर डालती । नरेन को वह सारा सुख, सारा आराम जो ब

बाद मिलनेवाला था पहले ही मिलने लगा। ना के होंठों पर गुलाब खिलते, उसकी मांग तियों से पुरी रहती। लेकिन वहां भी न्तु-परंतु लगने लगी थी।

उसने अपनी मम्मी से कहना चाहा पर हस नहीं हुआ...उसके पापा को क्लब से, ज पार्टी से ही फुरसत नहीं थी। नौकरों, इवर और माली की भीड़ में उसके घर में कोई त चुपके से नहीं हो पाती थी। वहां गहरा चाल आ जाने का भय था। रूना गले-गले क भय से घिरी रहती।

बस एक ही किनारा था। आस की डोर हीं और बंधी थी। मां के दर्शन उसे कहीं ौर हुए थे। सुकून की परछाइयां कहीं और खी थीं। थरथराते हाथों और धड़कते दिल उसने वह शुभ-सूचना उन्हें लिख भेजी जो क नरेन से ब्याह हो जाने के बाद उन्हें लनेवाली थी।

पिता तटस्थ रहे। एक शब्द भी नहीं बोल ये। शायद जो कष्ट जिंदगीभर भोगा था सकी पुनरावृत्ति से डर गये थे। पर मां का लेजा डोल गया। एक हौल उसके दिल में मा गयी सो तुरंत ही शहर जाने की तैयारी कर ी।

नरेन को आशंका थी उनके आने की। रूना जब से चिट्ठी लिखने की बात उसे बतायी ो वह बहुत चौकन्ना हो उठा था। उसने रूना ो इसके लिए क्षमा नहीं किया था। कायरता हीं स्वार्थ ही उस पर हावी हो उठा था।

प्यार के ज्वार में जो गुलाब भविष्य की उम्मीद लिए नरेन ने उसके जीवन में महका दिये थे, अब वह उन्हें कांटा मानने को भी तैयार नहीं था। वह तो सारा दोष, सारा कलंक रूना पर थोप पल्ला झाड़ अलग हो जाना चाहता था। मां को अब ये सब सहन करने की सामर्थ्य नहीं रही थी। जो कुछ वे स्वयं जीवनभर सहन करती रहीं वह फिर से दोहराया जाए। नहीं, बिल्कुल नहीं। जो उन्हें बहुत पहले करना चाहिए था। वही हुआ।

एक झन्नाटेदार थप्पड़ नरेन के गाल पर लगा तो सारा कमरा डोल गया हो—जैसे। नरेन के पिता चमककर खड़े हो गये। रूना अपना रोना भूल आंखें फाड़-फाड़कर देख रही थी। अपने से दो हाथ ऊंचे बेटे के गाल पर मां ने पांचों अंगुलियों के निशान बना दिये थे। नरेन बिलखकर रो उठा।

"मां...मां... कहां थी अब तक ? क्यों नहीं...क्यों नहीं, तुमने यह सब पहले दिया जिसका कि मैं हकदार था। क्यों भुला बैठी ममता का अधिकार ? क्यों दबा दिया उसे शिष्टता की परतों में ? क्यों भला ?..." स्वर हिचकियों में डूबता गया।

वह मां की गोद में पहली बार सुख की सांस ले रहा था। अब किसी साये की तलाश नहीं थी, उसे। उसे अपना अधिकार मिल गया था।

—७३, बनारसी दास स्टेट, लखनऊ रोड
दिल्ली-११००५४

सर्वे पदस्थस्य भवन्ति मित्रा: ।
गरुड़ पुराण १/१०९/७)

पद पर बैठे हुए व्यक्ति के सभी मित्र होते हैं।

सफरनामा दियासलाई का

• कैलाश जैन



आग की खोज मानव-सभ्यता के इतिहास की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण खोज थी। आदिमानव द्वारा दो पत्थरों की रगड़ से पैदा की गयी चिंगारी आज लाइटर के सिरे पर लौ बनकर भले ही आ गयी हो, लेकिन उस 'चिंगारी' और इस 'लौ' के दरम्यान के लंबे सफर में और भी मुकाम हैं, जो आज भी आम आदमी के लिए 'आग' हासिल करने के सबसे सस्ते और सुलभ साधन हैं। जी हां, बात उस दियासलाई की नन्हीं-सी डिबिया की है, जो हमारी रोजमर्रा की जिंदगी की पहली जरूरत है।

तीलियों से भरी यह छोटी-सी जादुई डि
आज भले ही हमें अत्यंत साधारण और स
सुलभ वस्तु की तरह लगती हो, लेकिन इ
उपयोगिता की दृष्टि से हमें इसका महत्त्व त
पता चलता है, जब जरूरत के समय माचि
की डिबिया नहीं मिलती। बहरहाल, जब
दियासलाई के आविष्कार की अंतर्कथा जा
चाहते हैं, तो हमें पौने दो सौ साल पीछे च
होगा।

आकस्मिक आविष्कार

ज्ञात जानकारी के अनुसार, सबसे पहले
दियासलाई के आविष्कार का श्रेय इंगलैंड
एक व्यापारी जॉन वाल्कर को दिया जाता है
जिसने सन १८२७ में अनजाने में ही यह
महत्त्वपूर्ण आविष्कार कर दिया। दरअसल
वाल्कर रासायनिक द्रव्यों का विक्रेता था।
दिन वह किसी रसायन का घोल तैयार करने
लिए एक छोटी-सी लकड़ी से उसे घोल रह
घोल तैयार होने के पश्चात वाल्कर ने उस
लकड़ी को रख दिया और अपने दूसरे काम
लग गया। उधर रसायन का घोल उस लक
के एक सिरे पर लगा रह गया तथा सूख ग
बाद में, जरूरत नहीं होने से उसने जब लक
को फेंका तो वह एक पत्थर से कुछ गति से
टकरायी और फक-फक की आवाज के सा
उस लकड़ी के सिरे से धुआं निकलने लगा
वाल्कर यह देखकर चौंक उठा। वास्तव में
लकड़ी पर लगे रसायन के पत्थर पर रगड़ र
से ही यह आग उत्पन्न हुई थी। फिर तो वा
निरंतर प्रयोगों में जुट गया और जल्दी ही उ
लकड़ी की नन्ही तीलियों पर रासायनिक घो
लगाकर उसे रेगमाल के कागज पर रगड़क

आग उत्पन्न करने का तरीका ढूंढ़ निकाला । यह सन १८२७ की घटना है । इसके बाद वाल्कर ने अपनी इस खोज को व्यावसायिक स्वरूप प्रदान करते हुए छोटी-छोटी डिब्बियों में तीलियां भरकर बेचना शुरू कर दिया । वह इन तीलियों को जलाने के लिए हर डिब्बी के साथ रेगमाल का छोटा-सा टुकड़ा भी रखता था । वाल्कर लकड़ी की तीलियों के सिरे पर गोंद, स्टार्च, एंटीमनी सल्फाइड तथा पोटेशियम क्लोरेट से बना घोल लगाकर सुखाता था ।

हालांकि यह तरीका बहुत अधिक साफ-सुथरा और सुविधाजनक नहीं था । फिर भी लोगों ने वाल्कर की इस खोज का उत्साहजनक स्वागत किया । सन १८३१ में लंदन के एक व्यावसायी ने दियासलाई की तीलियों में पीला फास्फोरस मिलाकर दियासलाई बनायी । इस दियासलाई में अलग-से रेगमाल का टुकड़ा रखने की परेशानी से बचने के लिए एक नयी तकनीक इस्तेमाल की गयी, अब दियासलाई की डिबिया के एक भाग पर ही थोड़ा-सा घोल लगा दिया जाता था, जिस पर रगड़कर तीली को आसानी से जलाया जा सकता था । इस दियासलाई की सबसे बड़ी खामी यह थी कि यह तनिक-सी रगड़ पर ही आग पकड़ लेती । ऐसी स्थिति में इसे जेब में रखना बहुत ही घातक और खतरनाक था '

परिष्कृत और सुरक्षित स्वरूप

दियासलाई को सुरक्षित स्वरूप प्रदान करने की दिशा में स्वीडन के वैज्ञानिक ई. पाश्च ने महत्त्वपूर्ण कार्य किया । सन १८४४ में उन्होंने जिस दियासलाई की खोज की, वह न केवल अपेक्षाकृत अधिक सुरक्षित थी, बल्कि ज्यादा सुविधाजनक भी थी । ई. पाश्च ने पीले फास्फोरस के स्थान पर लाल फास्फोरस के घोल को डिबिया के बगल में लगा दिया । इससे तीलियों के अचानक जल उठने का खतरा समाप्त हो गया । दियासलाई को आधुनिक स्वरूप प्रदान करने का श्रेय ई. पाश्च को ही जाता है ।

कालांतर में दियासलाई की तीलियों तथा डिबिया में कई महत्त्वपूर्ण व जरूरी परिवर्तन और संशोधन होते रहे । इन परिवर्तनों ने दियासलाई को अधिक परिष्कृत करने के साथ-साथ सुविधाजनक और निरापद भी बनाया ।

भारत में प्रवेश

भारत में दियासलाई का प्रवेश यूरोपीय देशों के माध्यम से हुआ । प्रथम विश्वयुद्ध से पूर्व भारत, जापान और स्वीडन से प्रतिवर्ष डेढ़ करोड़ ग्रुस माचिस के बक्सों का आयात करता था । इस समय भारत में कुटीर उद्योग के रूप में दियासलाई के निर्माण के छुटपुट प्रयास जरूर हुए किंतु औद्योगिक उत्पादकों के मुकाबले छोटे निर्माता नहीं टिक सके । सन १९१६ में जब सरकार ने दियासलाई पर आयात-कर बढ़ाकर साढ़े सात प्रतिशत कर दिया, तो आयात में कमी आयी और स्वदेशी उद्योग-धंधा जड़ें जमाने लगा । सन १९३० तक भारतीय दियासलाई उद्योग इतना सक्षम हो गया कि वह संपूर्ण भारत तथा बर्मा की खपत पूरी करने लगा । इस उद्योग की आशातीत सफलता और मुनाफे को देखते हुए ब्रिटिश सरकार ने सन १९३४ में दियासलाई पर निर्माण-कर लगा

दियासलाई सचमुच एक बहुत ही उपयोगी और मौलिक आविष्कार है, जिसने मानव-सभ्यता के समक्ष कई नये क्षितिज, नये आयाम रोशन किये हैं ।

दिया । इसके पश्चांत सात बरसों बाद इस टेक्स को दुगना कर दिया गया ।

प्रारंभ में दियासलाई-निर्माण हेतु कच्चा माल, मसलन लकड़ी, रसायन आदि बाहर से आयात किये जाते थे, किंतु बाद में डिब्बियों के निर्माण हेतु बंगाल, असम, उत्तर प्रदेश, मालाबार आदि के जंगलों से प्राप्त सेमल या सैवार की लकड़ियां प्रयुक्त की जाने लगीं । तीलियों के लिए चीड़ या सरई की लकड़ियां इस्तेमाल की जातीं ।

आज भारत दियासलाई के उत्पादन के क्षेत्र में पूर्णतः आत्म-निर्भर है और विदेशों को दियासलाई का निर्यात भी भारत कर रहा है । हमारे यहां दियासलाई का उत्पादन बीस करोड़ ग्रुस बक्स वार्षिक से भी अधिक है ।

बहुआयामी प्रक्रिया

दियासलाई के निर्माण की प्रक्रिया जटिल और बहु-आयामी है । सबसे पहले लकड़ी के गट्ठों को बिजली की मशीनों में उपयुक्त आकार में काटकर इनकी छाल उतारी जाती है । मशीनों द्वारा इसे अंदर की डिबिया और बाहर के खोल तैयार करने के लिए एक सरीखी बारीक परतों में काटा जाता है । इन पतली परतों को मशीनों द्वारा तैयार कर इन पर नीले रंग का पतला किंतु मजबूत कागज चिपकाया जाता है । इस प्रकार तैयार डिब्बियों पर रगड़नेवाले स्थान पर लाल सल्फर तथा कां के चूर्ण का मिश्रण सरेस से लगाया जाता है

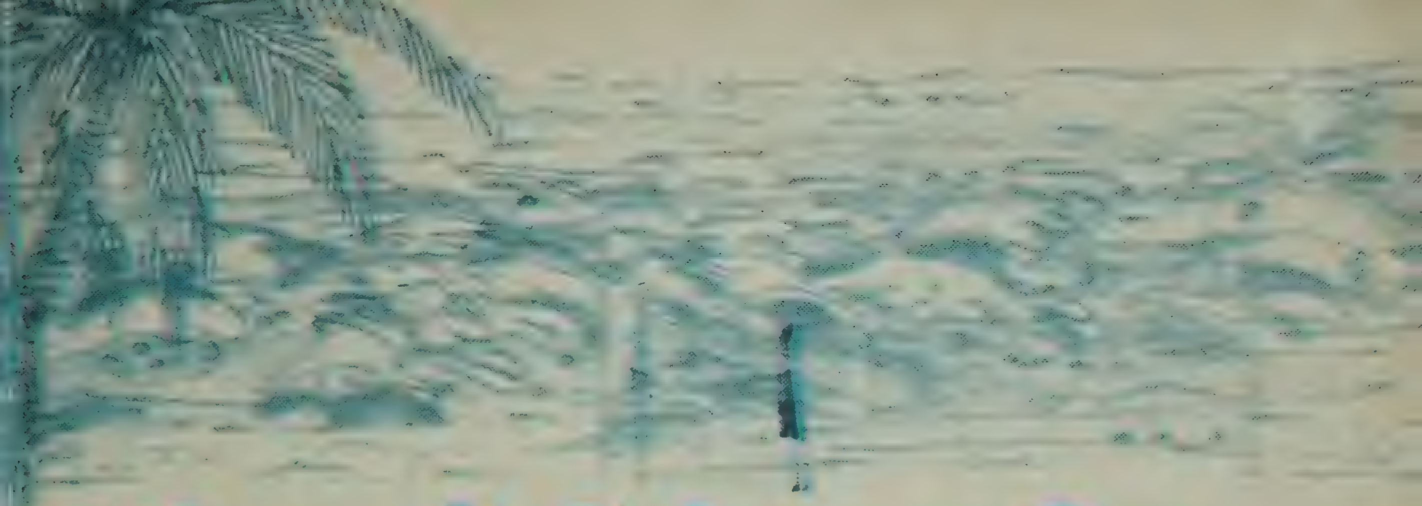
छिलका उतारनेवाली मशीनों से तीलियों एक समान कटाई की जाती है । कटाई के पश्चात एक विशेष मशीन में, जिसमें एक छिद्र-युक्त लंबा-सा पटरा लगा होता है, तीलि को भर दिया जाता है, जहां पोटाश, सल्फर, सरेस आदि रसायनों से बने तपे हुए पैराफीन तीलियां डुबोयी जाती हैं । इसके बाद तीलिय को भली प्रकार सुखाया जाता है और अन्य मशीन से उनके रसायन लगे सिरों को सख्त किया जाता है ।

यह प्रक्रिया पूर्ण होने के बाद स्वचालित मशीनों से तीलियों को तैयार कर डिब्बियों में भरा जाता है । बाद में इन डिब्बियों पर लेबि आदि लगाने का कार्य किया जाता है ।

गुणवत्ता की दृष्टि से भारतीय दियासलाई ईरान, इराक, मध्यपूर्व तथा पश्चिमी अफरीका काफी लोकप्रिय हैं किंतु अब कई यूरोपीय दे भी इस दिशा में भारत से प्रतिस्पर्द्धा करने ल हैं ।

दियासलाई सचमुच एक बहुत ही उपयोग और मौलिक आविष्कार है, जिसने मानव-सभ्यता के समक्ष कई नये क्षितिज, न आयाम रोशन किये हैं ।

—३४, बंदारोड़, भवानीमंडी (रा



मॉरीशस में हिंदी पत्रकारिता

• प्रह्लाद रामशरण

ग्यारह अक्तूबर, १९०७ को जब मणिलाल डॉक्टर यहां आये तब मॉरीशस में फ्रेंच त्रकारिता के एक सौ बयालीस वर्ष हो चुके थे और उस समय तक लगभग ३३६ त्र-पत्रिकाएं प्रकाशित हो चुकी थीं। इस द्वीप का प्रथम फ्रेंच समाचार पत्र सन १७७३ में प्रकाशित हुआ था और १८१० तक अर्थात फ्रेंच काल तक यहां फ्रेंच-पत्रों का प्रकाशन होता था, किंतु अंगरेजी प्रशासन की स्थापना के बाद, यहां पर अंगरेजी-पत्रों का प्रादुर्भाव एक स्वाभाविक प्रक्रिया थी। इसके ठीक सौ साल बाद, अर्थात सन १९१० में अंगरेजी-फ्रेंच प्रौढ़ त्रकारिता के बीच हिंदी पत्रकारिता का उद्भव एक ऐतिहासिक घटना थी।

मणिलाल डॉक्टर के आगमन के समय यहां अंगरेजी-फ्रेंच की २८ पत्र-पत्रिकाएं प्रकाशित होती थीं जिनमें आधे दर्जन दैनिक समाचार-पत्र थे। उस समय लगभग २३ पत्रकार इन त्र-पत्रिकाओं से जुड़े थे। मणिलाल डॉक्टर ने ऐसे प्रतिकूल परिवेश में हिंदी-पत्रकारिता शुरू करके एक विलक्षण कीर्तिमान स्थापित किया था।

भारतीय स्वत्व की रक्षा

उनके आगमन के चंद महीनों बाद देश की आर्थिक स्थिति में सुधार लाने के उद्देश्य से एक शाही आयोग की मांग की जा रही थी। प्रवासी भारतीय इसके पक्ष में थे किंतु गोरे जमीनदार और उद्योगपति नहीं। अतः शक्कर उद्योगपतियों के प्रबल समर्थक लेकलेजियो महोदय ने एक लेख में कहा था— 'विलायत की सरकार मॉरीशस को (अदन की तरह) भारत के साथ बांधना चाहती है, और तब मणिलाल डॉक्टर के समान भारतीय जज बंबई से आकर हमारे सुप्रीम कोर्ट में जज नियुक्त होंगे।' यह लेख स्थानीय भारतीयों के लिए और मणिलाल डॉक्टर के प्रति व्यंग्यात्मक लेख था। मणिलाल डॉक्टर ने इसका उत्तर दिया था, किंतु गोरों का समाचार-पत्र 'द प्लांटर एंड कमर्शल गजट' ने उसे प्रकाशित नहीं किया था। मणिलाल डॉक्टर ने बड़ी कठिनाई से अपना उत्तर यहां के अर्द्ध गोरों द्वारा प्रकाशित 'ले पेची जुरनाल' में प्रकाशित करवाया था। अतः ऐसी विषम परिस्थिति में मणिलाल डॉक्टर के दिमाग में 'हिंदुस्तानी' समाचार पत्र निकालने की बात

आयी थी, जिसके जरिए यहां के प्रवासी भारतीय भाइयों के स्वत्वों की रक्षा हो सके। इसके बाद उत्तर प्रांत की शक्कर कोठी 'लाबूदेनि' पर हुई घटना ने 'हिंदुस्तानी' समाचार पत्र को जन्म लेने पर विवश कर दिया था। मणिलाल डॉक्टर ने किन-किन कठिनाइयों का सामना करके 'हिंदुस्तानी' प्रेस की व्यवस्था की थी, किन-किन लोगों से आर्थिक सहयोग उनको मिला था, इन बातों की जानकारी कहीं उपलब्ध नहीं। किंतु १५ मार्च १९०९ से उन्होंने 'हिंदुस्थानी' (वास्तविक नाम) नामक पत्र का प्रकाशन प्रारंभ किया था। उस पत्र के मुख पृष्ठ का आदर्श वाक्य था— 'व्यक्ति की स्वतंत्रता, मनुष्य की समानता ! जातियों का भाईचारा !!!' इस आदर्श वाक्य को 'हिंदुस्तानी' पर प्रमुखता देने का मतलब यह हो सकता है कि मणिलाल डॉक्टर पर 'फ्रेंच जन क्रांति' का प्रभाव पड़ा हो, अथवा वे सन १७८९ में हुई फ्रांसीसी जनक्रांति के नारों (स्वतंत्रता, समानता और भाईचारा) से मॉरीशस के भारतीयों का नवजागरण करना चाहते थे अथवा स्थानीय फ्रांसीसी पूंजीपतियों को उनकी लाठी उनकी भैंस की उक्ति से हांकना चाहते थे।

प्रारंभ में 'हिंदुस्तानी' गुजराती और अंगरेजी में निकलता था। वह चार पन्नों का समाचार-पत्र था। सन १९१० से उसे अंगरेजी-हिंदी में कर दिया गया था। शुरू-शुरू में वह साप्ताहिक-पत्र था और सन १९१० से उसे दैनिक कर दिया गया था। किंतु उस समय प्रवासी भारतीयों के बीच पाठकों और सहयोगियों का अभाव था। अतः मणिलाल डॉक्टर को उसे चलाने में कितनी कठिनाई होती थी इसका प्रमाण हमें महात्मा गांधी के एक पत्र से प्राप्त होता है जो उन्होंने २४ सितंबर १९११ को डॉ. प्राणजीवन मेहता को डरबन, दक्षिण अफरीका से लिखा था, ज 'संपूर्ण गांधी वांङ्मय' के ग्यारहवें खंड में मिलता है। वे कहते हैं :— 'अपने पत्र (हिंदुस्तानी) को दैनिक बनाकर तो उन्होंने (मणिलाल डॉक्टर ने) बड़ी भूल की है। वह पत्र खुद में कुछ नहीं। उसका टायप खराब है कागज रद्दी है और सामग्री भी वैसी ही। मॉरीशस में उसके अच्छे सहायक भो तो नहीं तो वह पत्र कैसे ठीक से प्रकाशित हो सकेगा, और पाठक भी इतने कहां हैं ? इन सबके संबंध में उनके यहां आने पर सलाह-मशविरा करूंगा।'

इस उद्धरण से पता चलता है कि 'हिंदुस्तानी' समाचार-पत्र, महात्मा गांधी के पा भेजा जाता था। वे इसका पठन करते थे और इसी के जरिए तत्कालीन मॉरीशस में चल रहे मणिलाल डॉक्टर के कार्यों का लेखा-जोखा लिया करते थे। यहां यह बता दें कि सन १९०१ में दक्षिण अफरीका से बंबई जाते सम महात्मा गांधी १८ दिनों तक मॉरीशस में ठहरे थे, और उन्हीं की प्रेरणा से मणिलाल डॉक्टर यहां के भारतीयों की सेवा करने आये थे।

उस 'हिंदुस्तानी' के दो अंक, केवल दो अं (एक सन १९०९ का और एक १९१३ का) हमारे अभिलेखागार में सुरक्षित हैं और सन १९१३ के उपलब्ध अंक में हिंदी का प्रयोग हुआ है, और यही हमारा ऐतिहासिक दस्तावेज है जिस पर आधारित है 'मॉरीशस का हिंदी

मॉरीशस में साहित्यिक पत्रों का विकास सन साठ में परिलक्षित होता है, 'नवजीवन', 'अनुराग', 'आभा', 'दर्पण' और सन सत्तर-अस्सी में 'वसंत', 'प्रकाश', 'इंद्रधनुष', 'आक्रोश' आदि पूर्ण रूप से साहित्यिक पत्र माने जाते हैं । इनमें क्रमशः लेख, कविता, कहानी, बाल जगत, महिला जगत तथा एकांकी आदि विधाओं पर अच्छे स्तर के लेख छपते रहते हैं । इन्हीं साहित्यिक पत्रों पर वर्तमान समय के अधिकांश साहित्यकार उभरे हैं और इन्हीं साहित्यिक कृतियों पर मॉरीशस का हिंदी साहित्य गौरवान्वित हुआ है ।

आंदोलन' ।

आर्यसमाज का प्रभाव

यूज टींकर महोदय के मतानुसार मणिलाल डॉक्टर पर आर्य समाज का प्रभाव था । वास्तव में आर्य समाज आंदोलन का प्रारंभ सन १९०३ में क्यूरपीप के स्वर्गीय खेमलाल लाला द्वारा हो चुका था । इतिहासकार पं. आत्माराम के मतानुसार मणिलाल डॉक्टर ने सन १९११ में पोर्ट लुई में आर्य समाज को संयोजित किया था और इसी आर्य समाज को उन्होंने अपना 'प्रेस' और 'पत्र' सुपुर्द करके फिजी के लिए प्रस्थान किया था ।

सन १९०९ से वर्तमान समय तक मॉरीशस के हिंदी-गगन में बयालीस हिंदी पत्र-पत्रिकाओं को अवतरित होते देखा गया है । यहां उसकी परिगणना दशक के हिसाब से की जा रही है । यह चार्ट स्थानीय हिंदी-पत्रकारिता के ह्रास-विकास का द्योतक भी है ।

१९०१— १९१० हिंदुस्तानी
१९१०— १९२० हिंदुस्तानी, मॉरीशस आर्य पत्रिका, ओरियंटल गजट
१९२०— १९३० मॉरीशस इंडियन टाइम्स, मॉरीशस मित्र, मॉरीशस आर्य पत्रिका, आर्यवीर
१९३०— १९४० मॉरीशस आर्य पत्रिका, आर्यवीर, सनातन धर्मार्क, जागृति
१९४०— १९५० आर्यवीर, जागृति, आर्यवीर जागृति (संयुक्त) मासिक चिट्ठी, जनता, जमाना
१९५०— १९६० आर्योदय, जनता, जमाना, वर्तमान, मजदूर, दीपावली संदेश
१९६०— १९७० आर्योदय, जनता, जमाना, नवजीवन, समाजवाद, कांग्रेस, अनुराग
१९७०— १९८० आर्योदय, जनता, जमाना, आभा, दर्पण, प्रभात, वसंत, प्रकाश, शिवरात्रि
१९८०— १९९० आर्योदय, जनता, वसंत, स्वदेश, दर्पण, इंद्रधनुष, आक्रोश, मुक्त
१९९१— २००० आर्योदय, वसंत, इंद्रधनुष, आक्रोश पंकज, सृजन आदि ।

इस सूची में ३० दीर्घजीवी पत्र-पत्रिकाओं का उल्लेख हुआ है । १२ अल्पजीवी पत्रिकाएं ऐसी है जिनके अंक उपलब्ध नहीं है अथवा जिनका प्रकाशन एक-दो अंकों के बाद बंद करना पड़ा हो । फिर भी इस देश की हिंदी

पत्रकारिता के इतिहास में उनका अस्तित्व उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना अन्य पत्र-पत्रिकाओं का।

हिंदी की समृद्ध परंपरा

उपर्युक्त चार्ट में दिये गये तथ्यों के विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि मॉरीशस के समान एक भी भारतेतर देश ऐसा नहीं जहां हिंदी भाषा में इतनी संख्या में पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ हो। इसके अतिरिक्त मॉरीशस के हिंदी-जगत ने मणिलाल डॉक्टर, पं. आत्माराम विश्वनाथ, पं. रामअवध शर्मा, पं. काशीनाथ किस्तो, जयनारायण राय, डॉ. शिवसागर रामगुलाम, पं. वासुदेव विष्णुदयाल, एस. एम. भगत, सोमदत्त बखोरी, पं. मोहनलाल मोहित, अभिमन्यु अनत और प्रह्लाद रामशरण-जैसे पत्रकार और पत्र संरक्षक पैदा किये हैं। यह भारतेतर देशों में अदम्य साहस का प्रमाण है।

सन १९२० से १९३२ तक मॉरीशस में एक दैनिक हिंदी पत्र का प्रकाशन होता रहा। यह अद्भुत मिसाल थी जिसे आज तक दुहराया नहीं जा सका है, जिस दशक में ये दैनिक निकाले गये, उस दशक में हिंदी पठन-पाठन का दायरा काफी सीमित था, और उन दिनों हिंदी जगत में जयनारायण राय, पं. वासुदेव विष्णुदयाल और सोमदत्त बखोरी-जैसे हिंदी के विद्वान नहीं पाये जाते थे।

हिंदी का मिश्रित रूप

उपर्युक्त दोनों दैनिकों में हिंदी भाषा का जो रूप मिलता है वह पुरानी हिंदी से मिलता-जुलता है। व्याकरण और वर्तनी की मोटी-मोटी गलतियां उन दैनिकों में छपती रहती थी। इसके विपरीत आर्य समाज द्वारा चल रही पत्र-पत्रिकाओं में भाषा का शुद्ध [illegible] परिष्कृत रूप मिलता है। एक ही दशक में 'प्रकाशित, मॉरीशस इंडियन टाइम्स, मॉरीश[illegible] मित्र' की भाषा-शैली एवं कथावस्तु, आर्य समाजी पत्र 'मॉरीशस आर्य पत्रिका, और आर्यवीर से भिन्न होती थी। आर्य समाज द्[illegible] संचालित पत्रिकाएं, धार्मिक, सामाजिक औ[illegible] सांस्कृतिक होती थीं।

मॉरीशस की हिंदी पत्रकारिता में अनेक प्रयोग हुए हैं। सन १९६५ में 'हिंदी लेखक संघ' के द्वारा 'बाल सखा' नामक पत्रिका क[illegible] प्रकाशन शुरू में हुआ था किंतु एक-दो अं[illegible] के बाद वह बंद हो गया था। इसी प्रकार से मान. राजनारायण गति द्वारा सन १९९० में 'मुक्ता' नामक बाल पत्रिका का प्रारंभ किया गया था जो दो साल तक चला था।

मॉरीशस में 'विशेषांकों' का प्रकाशन स[illegible] बीस से शुरू हुआ था। वह भी आर्य समा[illegible] पत्रों द्वारा। सन १९२५ में महर्षि दयानंद जन्मशती के अवसर पर 'मॉरीशस आर्य पत्रिका' का विशेषांक 'शताब्दी अंक' के ना[illegible] से छपा था। तभी से प्रतिवर्ष दीपावली के अवसर पर विशेषांकों के प्रकाशन की प्रथा-चल पड़ी थी। सन पचास से आर्योदय के सैकड़ों विशेषांक प्रकाशित हुए हैं। सन अ[illegible] में सनातन-धर्म मंदिर फेडेरेशन की ओर से मान. दयानंदलाल वसंतराय की देख-रेख में प्रतिवर्ष 'शिवरात्रि' नामक विशेषांक प्रकाशि[illegible] करने का सिलसिला प्रारंभ हुआ। वर्तमान समय में 'इंद्रधनुष' का सिलसिला विशेषांको[illegible] प्रकाशन का एकदम विकसित रूप है। इस पत्रिका का मणिलाल डॉक्टर, पं. जवाहरला[illegible]

नेहरू, डॉ. शिवसागर रामगुलाम, एस. एम. भगत और पं. आत्माराम विशेषांक आकर्षक और पठनीय हैं।

श्रृंखला : ऐतिहासिक प्रकाशनों की

सन १९४२ से पूर्व मॉरीशस की समस्त पत्र-पत्रिकाएं द्विभाषी व त्रिभाषी होती थीं। ये अंगरेंजी, फ्रेंच और हिंदी में प्रकाशित होती थीं, किंतु 'बीसवीं' शताब्दी के चौथे दशक से पूर्णरूपेण हिंदी समाचार पत्रों का प्रकाशन हो पाया था। इस दिशा में ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रकाशित 'मासिक चिट्ठी', इसी दशक में 'जनता' का प्रकाशन ऐतिहासिक माना जाता है। यह पत्र डॉ. रामगुलाम और जयनारायण राय द्वारा स्थापित और संचालित था। इसी प्रकार से सन पचास में 'आर्योदय', 'दिवाली संदेश', 'वर्तमान', 'नवजीवन', 'समाजवाद', 'कांग्रेस' और सन अस्सी में 'स्वदेश, 'दर्पण', 'आकद समाचार पत्र' हिंदी के समाचार पत्र माने जाते हैं।

'जमाना' का प्रकाशन चौथे दशक में प्रारंभ किया गया था। यह द्विभाषी व त्रिभाषी पत्र जो विष्णुदयाल बंधुओं के द्वारा संपादित होता था। यह राजनीतिक अधिक और सामाजिक, धार्मिक न्यूज से पूर्ण होता था। शायद इसीलिए उसमें विष्णुदयाल बंधुओं के लेखों के अतिरिक्त अन्य हिंदी लेखकों के लेख नहीं पाये जाते हैं।

वास्तव में मॉरीशस के समस्त लेखक आर्य समाज के पत्रों पर विकसित हुए हैं। सोमदत्त बखोरी, जयनारायण राय, एस. एम. भगत आदि लेखकों की कृतियां पहले-पहल 'आर्य वीर,' 'जागृति' और 'आर्योदय' पर छपती रही। ऐसे एक भी लेखक की साहित्यिक कृति 'जमाना' पर नहीं मिलती है। सन पचास के बाद 'जनता' द्वारा भी बहुत-से लेखक उभरे हैं।

मॉरीशस में साहित्यिक पत्रों का विकास सन साठ में परिलक्षित होता है, 'नवजीवन', 'अनुराग', 'आभा', 'दर्पण' और सन सत्तर-अस्सी में 'वसंत', 'प्रकाश', 'इंद्रधनुष', 'आक्रोश' आदि पूर्ण रूप से साहित्यिक पत्र माने जाते हैं। इनमें क्रमशः लेख, कविता, कहानी, बाल जगत, महिला जगत तथा एकांकी आदि विधाओं पर अच्छे स्तर के लेख छपते रहते हैं। इन्हीं साहित्यिक पत्रों पर वर्तमान समय के अधिकांश साहित्यकार उभरे हैं और इन्हीं साहित्यिक कृतियों पर मॉरीशस का हिंदी साहित्य गौरवान्वित हुआ है।

— ३०, स्वामी दयानंद स्ट्रीट
बो बासें, मॉरीशस

१० सेकंड में एक व्यक्ति की मौत

विश्व स्वास्थ्य संगठन और अमरीकी कैंसर सोसायटी के सर्वेक्षण के अनुसार विश्व में धूम्रपान से प्रति १० सेकंड में एक व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है। प्रतिवर्ष धूम्रपान से मरनेवालों की संख्या ३० लाख है। सर्वेक्षण के अनुसार धूम्रपान से होनेवाली मौतों की गति अगर यही बनी रही तो भविष्य में यह संख्या प्रतिवर्ष एक करोड़ तक पहुंच सकती है।

— लक्ष्मी सोनी



अस्वच्छता और गंदगी के कारण कभी-कभी पीलिया रोग महामारी का रूप धारण कर लेता है और ग्राम-ग्राम और नगर-नगर में फैल जाता है । लेकिन जब से समाज में स्वच्छता एवं स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता उत्पन्न हुई है, यह रोग महामारी के रूप में नहीं देखा जाता, फिर भी इसका भय समाप्त नहीं हुआ है क्योंकि आये दिन स्त्री-पुरुष इस रोग के चंगुल में फंसते रहते हैं ।

पीलिया का जड़ी-बूटियों द्वारा इलाज

● डॉ. जगन्नाथ शर्मा, एम. डी.

पीलिया को संस्कृत में कामला रोग और अंगरेजी में जौंडिस या हैपेटायटिस कहा जाता है । इस बीमारी में आंखों पर पीलापन छा जाता है और मूत्र भी पीला हो जाता है । इसी कारण इसे पीलिया नाम दिया गया है । इस रोग के कारणों में मुख्य रूप से दो प्रकार के वायरस होते हैं—जैसे हैपेटायटिस-ए वायरस और हैपेटायटिस-बी वायरस । यद्यपि अब हैपेटायटिस-सी. और डी. नामक वायरस भी खोजे जा चुके हैं ।

सर्व साधारण रूप में होनेवाले पीलिया का कारण है—'हैपेटायटिस-ए वायरस' जो मुंह मार्ग से खान-पान के साथ शरीर में प्रविष्ट होता है । अर्थात—ये वायरस दूषित जल, दूध,

साग-सब्जी या खाद्यान्न के साथ आंतों में पहुंच जाते हैं और आंतों से यकृत में चले जाते हैं। इस प्रकार विषाणुओं द्वारा यकृत पीड़ित हो जाता है और स्थानीय शोथ उत्पन्न हो जाता है, जिसके फलस्वरूप बायलीरुबिन नामक रंजक पदार्थ का चयापचय बिगड़ जाता है। अतः रक्त में उसकी मात्रा बढ़ने लगती है जो यकृतीय शोथ के अनुपात में बढ़ती है, अर्थात जितना यकृत प्रभावित होगा, रक्त में उतनी ही अधिक बायलीरुबिन की मात्रा पायी जाएगी।

अस्वच्छता और गंदगी के कारण कभी-कभी पीलिया रोग महामारी का रूप धारण कर लेता है और ग्राम-ग्राम और नगर-नगर में फैल जाता है। लेकिन जब से समाज में स्वच्छता एवं स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता उत्पन्न हुई है, यह रोग महामारी के रूप में नहीं देखा जाता, फिर भी इसका भय समाप्त नहीं हुआ है क्योंकि आये दिन स्त्री-पुरुष इस रोग के चंगुल में फंसते रहते हैं।

पीलिया के लक्षण

पीलिया होने से पूर्व रोगी को मंद ज्वर हो जाता है, गला खराब हो जाता है। जी मिचलाने लगता है, भोजन के प्रति अरुचि उत्पन्न हो जाती है, उल्टियां आ सकती हैं और सिर दर्द और शारीरिक वेदना हो सकती है। इन शिकायतों के तीन-चार दिन बाद आंखों में पीलापन दिखायी पड़ने लगता है और मूत्र भी पीला हो जाता है। इसके अतिरिक्त पेट के ऊपरी भाग में दाहिनी ओर पीड़ा अनुभव हो सकती है और शरीर में बेचैनी बढ़ने लगती है। ज्यो-ज्यों रोग बढ़ता जाता है आंखों एवं मूत्र का पीलापन गहरा होता जाता है। आंखों के अलावा मुंह के भीतर



तालुओं पर पीलापन दिखायी देने लगता है। सामान्य अवस्था में ये लक्षण प्रारंभ के तीन सप्ताह तक बढ़ते हैं, लेकिन इसके पश्चात उनमें कमी अनुभव होने लगती है और अगले दस-पंद्रह दिन में रोगी स्वस्थ हो जाता है। अतः अन्य वायरसजन्य रोगों की भांति यह बीमारी भी स्वयं समाप्त हो जाती है और रोगी ठीक हो जाता है। लेकिन कुछ रोगियों में अन्यान्य विकारों के परिणामस्वरूप यह बीमारी कई महीनों तक चल सकती है और यकृतीय विकार बढ़ सकते हैं। कभी-कभी इस रोग के कारण यकृत सिकुड़ जाता है और रोगी का स्वास्थ्य बिगड़ जाता है।

पड़ताल और निदान

पीलिया संबंधी लक्षणों के अलावा आजकल कई प्रकार की जांचें उपलब्ध हैं जिनमें रोग की गंभीरता के बारे में सही जानकारी मिल जाती है। ये जांचें हैं :—

रक्त एवं मूत्र में बायलीरुबिन की मात्रा नापना, यकृतीय विकारों संबंधी रक्त परीक्षण, जैसे—
—एस. जी. ओ. टी.
—एस. जी. पी. टी.

—एल्कैलाइन फोस्फेट, आदि जांचें ।

अतः पीलिया के निदान के लिए ये जांचें अवश्य करानी चाहिए, ताकि रोग की सही स्थिति का ज्ञान मिल सके । यह सच है कि वायरसजन्य होने के कारण पीलिया स्वयं सीमित बीमारी है जो एक-दो महीने में अपने आप ठीक हो जाती है लेकिन कभी-कभी यह रोग अधिक समय तक तंग कर सकता है और यकृत संबंधी नाना प्रकार के विकार उत्पन्न हो सकते हैं । अतः इसके इलाज को दुर्लक्ष्य नहीं करना चाहिए और खान-पान संबंधी बातों पर विशेष ध्यान देना चाहिए ।

वर्तमान चिकित्सा पद्धति और पीलिया

वर्तमान चिकित्सा पद्धति में पीलिया का **कोई पक्का इलाज नहीं है । अतः केवल लक्षणों के आधार पर चिकित्सा की जाती है । यकृतीय शोथ के कारण रोगी को चिकनाई और प्रोटीन नहीं खानी चाहिए । इसी प्रकार रोटी-चपाती और दालों का कम से कम प्रयोग करना चाहिए । केवल कारबोहाइड्रेट्सयुक्त भोजन उत्तम होता है । गन्ने का रस और ग्लूकोज विशेष लाभकारी बताया जाता है ।** दूध ले सकते हैं, परंतु उसमें मलाई-चिकनाई नहीं होनी चाहिए ।इसके अतिरिक्त मैथी, पालक, गाजर आदि हरी सब्जियों को हितकर माना जाता है ।

पीलिया के इलाज में कुछ चिकित्सक स्टीरोइड्स प्रयोग करते हैं जो अनुचित है । इससे तात्कालिक लाभ तो मिल सकता है, लेकिन अंततोगत्वा हानि होती है । इसके अतिरिक्त अन्य दवाओं का कम से कम प्रयोग करना चाहिए ।

आयुर्वेद में पीलिया का इलाज

आयुर्वेद में पीलिया का सही इलाज उपलब्ध है । रोग की गंभीरता और रोगी की प्रकृति के अनुसार कई वनौषधियों का प्रयोग किया जाता है जिनमें से कुछ के नाम इस प्रका[र] हैं :—

भूमि आंवला, मुलहठी, कुटकी, गुर्च, नीम, चिरायता आदि ।

अनुभूत योग की खोज

हाल में हमने वनौषधियों का एक ऐसा योग तैयार किया है जिसके प्रयोग से आठ-दस दिन में रोगी को आराम मिल जाता है और वह शनै :-शनै : ठीक होता जाता है । इस योग से मिले कुछ परिणाम इस प्रकार हैं ।

प्रथम रोगी : रोगी की उम्र चालीस वर्ष । नवंबर, ९४ के अंतिम सप्ताह में जुकाम और गले की खराबी हुई और ज्वर, जी मिचलाना, भोजन के प्रति अरुचि, कमजोरी आदि लक्षण बने । प्रथम दिसंबर को रक्त परीक्षण हुआ औ[र] पीलिया का निदान हुआ । जांचों के परिणाम थे :—

—सीरम बाइलिरुबिन =६.०० मिलीग्राम,
—एस. जी. ओ. टी. =८४६.०० यूनिट,
—एस. जी. पी. टी. =१३००.०० यूनिट, एवं
—एलकेलाइन फोस्फेट =५४४.०० यूनिट

तीन दिसंबर, ९४ को हमें 'कादम्बिनी का स्वास्थ्य विशेषांक' मिला, जिसमें डॉ. जगन्नाथ शर्मा का 'पीलिया' पर लिखा लेख पढ़ा और उसी दिन डॉक्टर साहब से मिलकर जड़ी-बूटियोंयुक्त औषधि प्राप्त की और इलाज प्रारंभ किया ।

इस दवा के लेने के चार-पांच दिन में ही

ज्वर समाप्त हो गया, भूख खुल गयी और शारीरिक गिरावट में कमी अनुभव हुई ।

नौ दिसंबर को फिर से रक्त परीक्षण हुआ । परिणाम इस प्रकार थे :—

—सीरम बाइलिरुबिन=८.०० मिलीग्राम (कोई कमी नहीं),

—एस. जी. ओ. टी.=२८६.०० (६५.१२ प्रतिशत कमी),

—एस. जी. पी. टी.=६५०.०० यूनिट एवं (५०.०० प्रतिशत कमी),

—एलकेलाइन फोस्फेट=३१६.०० यूनिट (२७.८० प्रतिशत कमी)

सोलह दिसंबर को फिर से रक्त परीक्षण करवाया । परिणाम इस प्रकार थे :—

—सीरम बायलिरुबिन=२.४० मिलीग्राम (५७.०० प्रतिशत कमी),

—एस. जी. ओ. टी.=१२०.०० यूनिट, (८६.०० प्रतिशत कमी)

—एस. जी. पी. टी.=१०.०० यूनिट (१३.०० प्रतिशत कमी)

—एलकेलाइन फोस्फेट=८०.०० यूनिट (८५.०० प्रतिशत कमी)

द्वितीय रोगी : रोगी की उम्र ३० वर्ष । सरकारी कर्मचारी । पीलिया का निदान १७ नवंबर, ९४ को हुआ । परिणाम इस प्रकार थे :—

—सीरम बाइलीरुबिन=४.०० प्रतिशत ।

—मूत्र में बाइल पिगमैंट्स थे ॥

इस जांच के तीन दिन पश्चात जड़ी-बूटियों द्वारा इलाज प्रारंभ हुआ जिससे पांच-सात दिन में ज्वर समाप्त हो गया और भूख लगने लगी ।

दो दिसंबर को फिर से रक्त-परीक्षण करवाया । परिणाम इस प्रकार थे :—

—सीरम बाइलीरुबिन=१.५ मिलीग्राम प्रतिशत, अर्थात इसकी मात्रा में ६२.५० प्रतिशत कमी आयी

—मूत्र में बाइल पिगमैंट्स नहीं थे ॥

इसके पश्चात उत्तरोत्तर लाभ मिलता गया और रोगी पूर्णरूप से ठीक हो गया ।

तृतीय रोगी : बालिका रोगी की उम्र दस वर्ष । चार दिसंबर, ९४ को पीलिया का निदान हुआ । रक्त परीक्षण के परिणाम इस प्रकार थे :—

—सीरम बायलिरुबिन=२.६० मिलीग्राम

—एस. जी. ओ. टी.=१३६०.०० यूनिट

—एस. जी. पी. टी.=२८००.०० यूनिट

एलकैलाइन फोस्फेट=४३६.०० यूनिट

दिनांक ४-१२-९४ को इलाज प्रारंभ हुआ, जिससे पांच दिन में ही बहुत लाभ दिखायी पड़ने लगा । अतः १५ दिसंबर को पुनः रक्त परीक्षण हुआ । परिणाम निम्न प्रकार थे :—

सीरम बाइलिरुबिन=१.०० मिलीग्राम (लगभग सामान्य मात्रा)

एस. जी. ओ. टी.=१२०.०० यूनिट (९१.८० प्रतिशत कमी)

एस. जी. पी. टी.=१०.०० यूनिट (९३.२१ प्रतिशत कमी)

एलकैलाइन फोस्फेट=८०.०० यूनिट (६५.५९ प्रतिशत कमी)

इन परिणामों से लगता है कि यह दवा उस समय पर कारगर होती है, जब सामान्यरूप से पीलिया का शरीर पर प्रकोप बढ़ता है, अर्थात यह वनौषधि सच्चे रूप में वायरस जन्य विकारों का अवरोध करती है । अतः इन परिणामों को देखकर कोई भी कह सकता है कि जड़ी-बूटियों का यह योग पीलिया के लिए राम-वाण औषधि है ।

**ए—१४ विकल्प एपार्टमेंट : प्लाट—९२,
आई. पी. एक्सटेंशन
पटपड़गंज दिल्ली—९१**

क्या पुराण कथाओं के पात्र पशु-पक्षी थे

● डॉ. राजेंद्र रंजन चतुर्वेदी

पुराणों की कथा पढ़ते या सुनते समय किसी के भी मन में यह सवाल उठना अस्वाभाविक नही है कि क्या पुराण कथाओं के वे पात्र पशु-पक्षी थे ?

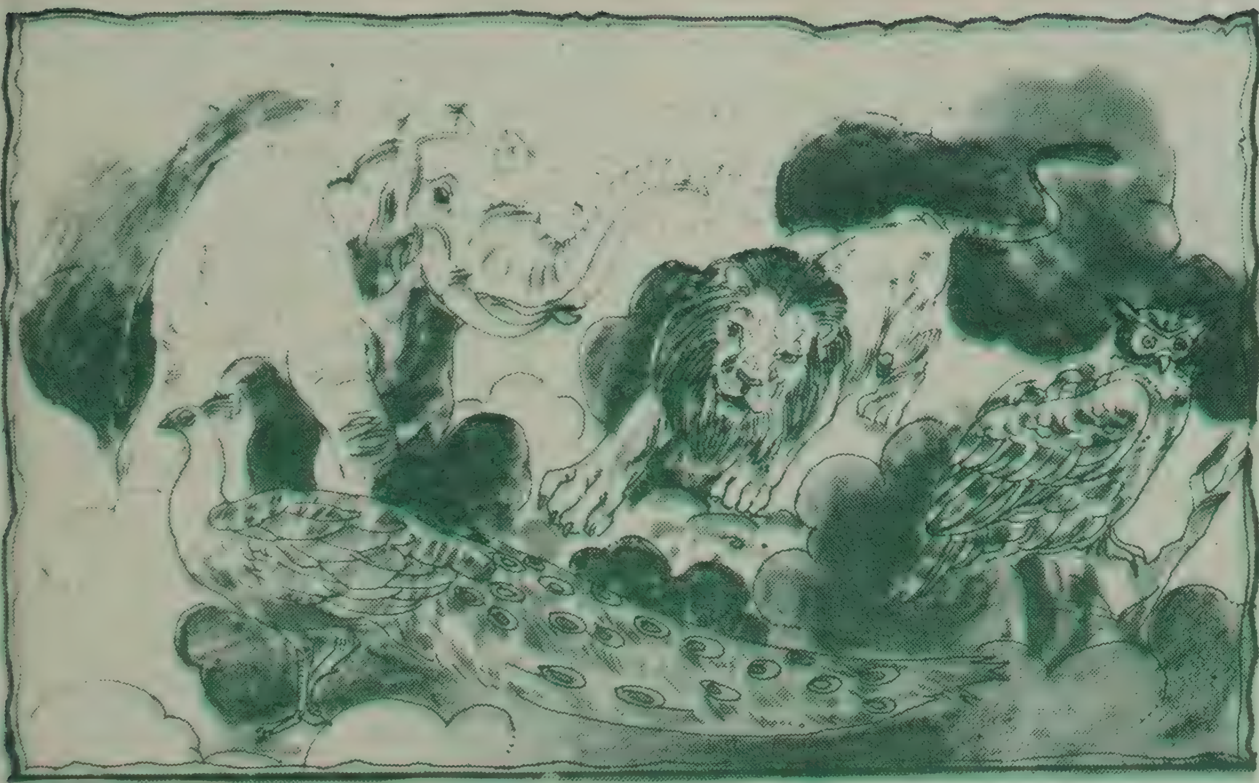
मत्स्य पुराण की कथा है कि युगांत प्रलय के समय सूर्य की भयंकर किरणें अंगार बरसाने लगीं । सारी धरती जलकर राख का ढेर बन गयी और गगनमंडल उष्मा से संतप्त हो गया तो संवर्त, भीमनाद, चंड और बलाहक आदि प्रलयमेघों ने पृथ्वी को आप्लावित कर दिया, समुद्र क्षुब्ध हो उठा । उस समय एक सींगवाले मत्स्य (विष्णु के प्रथम अवतार) का प्रादुर्भाव हुआ और उसने नौका पर बैठे मनु की रक्षा की ।

इसी प्रकार कूर्म पुराण की कथा है कि अमृत प्राप्त करने के लिए देवता और दैत्य जब समुद्र मंथन करने लगे, उस समय भगवान ने कछुआ का अवतार लिया और समुद्र में प्रवेश करके मंदराचल को पीठ पर धारण किया । वाराह पुराण की कथा के अनुसार जब हिरण्याक्ष दैत्य धरती की चटाई पाताल ले गया, तो वाराह भगवान ने हिरण्याक्ष का वध किया और अपने एक ही दंष्ट्र पर धारण करके पृथ्वी का उद्धार किया और उसे शेषनाग के फण पर प्रतिष्ठित किया । इस प्रकार विष्णु के दस अवतारों में से प्रथम तीन अवतार मानवेतर है

विष्णु के चौथे अवतार नृसिंह का स्वरूप अर्द्ध-मानुषी है अर्थात आधा शरीर मनुष्य का और आधा सिंह का । पुराण कथाओं के ऐसे अन्य देवताओं में गणेश (हाथी-जैसा मुंह बाकी शरीर मनुष्य-जैसा), हयग्रीव (सिर घो का तथा धड़ मनुष्य का), और हनुमान (मुख और पूंछ बंदर की तथा शेष शरीर मानवीय) प्रमुख हैं । भारत ही नहीं चीन, जापान और तिब्बत में भी नागकन्या का आधा रूप सर्प व तथा आधा मनुष्य-जैसा है । गरुड़ के संबंध पुराणों में बताया गया है कि उसके मस्तक पर चोंच तथा नख तो गरुड़ पक्षी के समान थे त शरीर और इंद्रियां मनुष्य-जैसी थीं ।

देवताओं के वाहन

पुराण कथाओं के पशु-पक्षी पात्रों का एक तीसरा रूप देवता के वाहन रूप में हैं—जैसे ऐरावत हाथी (इंद्र का वाहन), गरुड़ (विष्णु सिंह (दुर्गा), हंस (ब्रह्मा तथा सरस्वती), बैल (शिव), कुत्ता (भैरव), मूषक (गणेश), मयूर (कार्तिकेय स्वामी), महिष (यमराज त शनि), उल्लू (लक्ष्मी का वाहन) । इस प्रसं में शेषनाग की शैया (विष्णु) और कालियान के फणों पर नृत्य करते हुए कृष्ण की भी चर्चा



की जा सकती है तथा शिव के गले में लिपटे नाग की भी ।

इतना ही नहीं, पुराण कथाओं के स्रोत के रूप में हमें पक्षी भी मिलते हैं । एक ओर रामायण कथाओं के स्रोत के रूप में भुशुंडि काक दीखते हैं तो भागवत कथाओं का स्रोत शुक हैं । पौराणिक प्रसंग है कि एक बार भगवान शंकर पार्वती को मुंडमाला की रहस्य कथा सुना रहे थे, उस समय पार्वती सो गयीं और वृक्ष पर बैठा तोता 'हुंकारी' भरने लगा । जब शिव ने तोते को यह रहस्य सुनते देखा तो उन्होंने त्रिशूल उठाया तभी शुक उड़कर व्यास पत्नी के गर्भ में पहुंचा । यही शुक शुकदेव हुए और इसीलिए भागवत को 'शुकशास्त्र' कहा जाता है ।

विश्वास का उद्भव

जिस गजेंद्र की रक्षा के लिए स्वयं भगवान को भागना पड़ा था क्या वह सामान्य हाथी था अथवा पुराण प्रसिद्ध गज-ग्राह के युद्ध की गाथा में इतिहास के कुछ दूसरे महत्त्वपूर्ण सूत्र छिपे हैं ? ये प्रश्न पुरानी पीढ़ी के उन लोगों के लिए बेकार हैं, जो परंपरागत विश्वास के कारण पुराणों की इन कथाओं को परम सत्य मानते हुए आज भी कहते और सुनते हैं क्योंकि विश्वास

पुराण कथाओं के पशु-पक्षी सामान्य पशु-पक्षी नहीं हैं, वहां उनका अर्थ कुछ गहरा है, जिसे हम गणगोत्र के सूत्र से समझ सकते हैं । टोटम का इतिहास मानवीय धारणाओं, देवताओं और जनजातियों की युगयात्रा और सामाजिक विकास की आत्मकथा है, जिसको हम भारतीय संस्कृति कहते हैं, वह वास्तव में समुद्र की भांति है, जिसमें संस्कृतियों की अनेक धाराएं समायी हुई हैं ।

अपने आपमें मनोविज्ञान का एक सत्य है और विश्वास को न तो इतिहास के तर्कों से कुछ लेना है और न विज्ञान की युक्तियों का कुछ देना है। विश्वास का तो उद्‌भव ही असंभव के संभव बन जाने की मनःस्थिति से होता है।

परंतु प्रश्न यह है कि क्या इन पुराणकथाओं (मिथक कथाओं) की भूमिका मात्र विश्वास के लिए ही है या इनकी सार्थकता आगे भी कुछ है? और उस समय यह प्रश्न और भी अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है, जब अगली पीढ़ी ने इस प्रकार की पुराकथाओं को अवैज्ञानिक और गप कहकर खारिज कर दिया हो।

इतिहास में ऐसा कितनी ही बार हुआ है कि आक्रमण हुए, अकाल पड़ा, तूफान आये, बाढ़ और भूकंप आये तथा मानवजातियां एक स्थान को छोड़कर दूसरे स्थान पर चली गयीं, सभी कुछ छूट गया था। परंतु लोकवार्ता विज्ञान (फोकलोरिस्टिक्स) जानता है कि वे पुराकथाएं वहां भी उनके साथ थीं, जो दादी से मां ने और मां से बेटी ने इसलिए सुनी थीं कि व्यक्ति का मन सामाजिक मन बन सके। एक मानवजाति दूसरी मानवजाति से मिली और एक पुराकथा दूसरी पुराकथा से मिली। भौगोलिक और सामाजिक परिवेश के परिवर्तन के साथ पुराकथाओं का भी कायाकल्प हुआ। इस निरंतर प्रक्रिया में पुराकथाओं के सूत्र इतने उलझ गये कि वे आज हमें असंगत से लगते हैं।

घर में बाबा के जमाने का एक पीतल का बड़ा घंटा यों ही पड़ा था। एक दिन मां ने उसे उठाया और गेहूं भरने के पात्र पर ढक दिया। उसके नये उपयोग के साथ उसे नया नाम मिला—'ढकना।' थोड़े दिनों बाद उसके पुराने प्रयोग, नाम और रूप को घर में सभी भूल गये। ऐसा ही पुराणकथाओं के उन पात्रों के संबंध में भी हुआ। यों पशु-पक्षियों की सामान्य लोक कहानियां पुराणों में भी बहुत हैं परंतु पशु-पक्षी तथा अन्य मानवेतर प्राणी-संज्ञक पात्रों की गाथाएं वास्तव में गणगोत्र (जिसे मानवशास्त्री अंगरेजी में टोटम कहते हैं) से संबंधित हैं।

गण या देवताओं के सूचक

आज व्यक्ति और जन समूह की पहचान भौगोलिक—संदर्भों, नस्लों, वंशों, पेशों और धर्मसंप्रदायों के आधार पर की जाती है, व्यापक संदर्भों में राष्ट्रीयता से तथा संकीर्ण संदर्भों में जाति, संप्रदाय और प्रांत या जनपदों से। परंतु कबीलों के जमाने में यह पहचान गणगोत्र के आधार पर की जाती थी। मानवेतर प्राणी को गण का देवता माना जाता था और गण के सभी सदस्य उसकी पूजा करते थे। उसे अपने गण की उत्पत्ति का स्रोत (जैसे सूर्यवंश, चंद्रवंश आदि, आज भी भारतमाता का सपूत कहा जाता है, हरिद्वार में 'गंगापुत्र' और मथुरा में 'यमुनापुत्र' की संज्ञा भी प्रचलित है) मानते थे। जो गण का देवता होता था, वही संज्ञा उस गण की भी थी। इस प्रकार पुराण कथाओं में पशु-पक्षी तथा मानवेतर प्राणियों का उल्लेख दो अर्थों में हुआ है या तो वह गण (या जनजाति) की संज्ञा है अथवा देवता सूचक है।

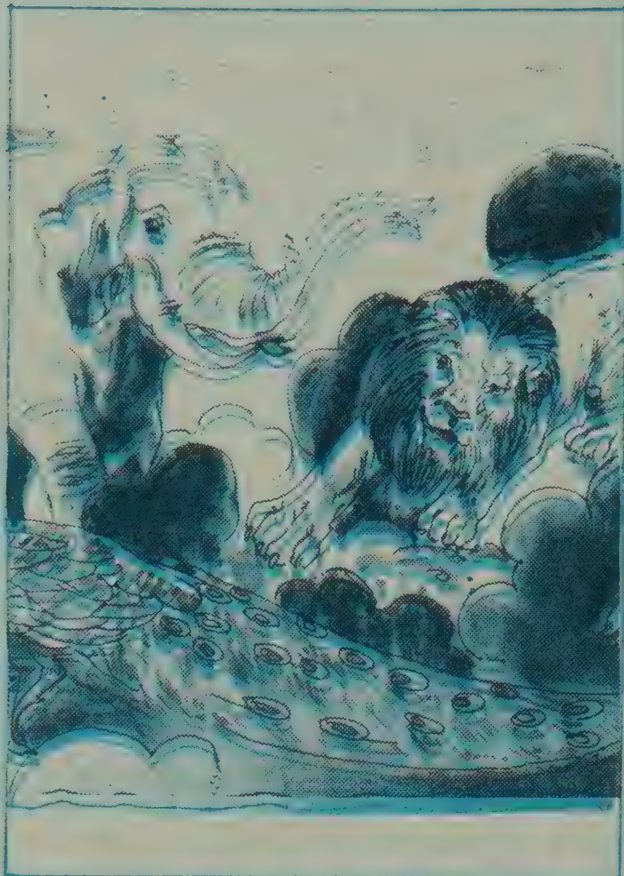
मानवजाति के इतिहास में देवता के रूप में पशुपक्षी तथा मानवेतर-प्राणियों की उपासना की परंपरा बहुत पुरानी है, जिसके अवशेष लोक-परंपरा में आज भी पहचाने जा सकते हैं।

भागवत के पंचम स्कंध में कंक, गिद्ध, बगुला और बटेर जैसे देवताओं का उल्लेख है, हालांकि वहां उनकी भर्त्सना की गयी है—**'यज्ञ-पुरुष मनाहत्य पाखंड देवता कंक-गृद्ध बक वटप्राया आर्य समय परिहृता सांकेत्येनाभिधंते ।'**

वृषभ पूजा का संकेत सिंधुघाटी सभ्यता में मिला है । अनेक गांवों में दीपावली के पहले नरक चतुर्दशी को यमराज का तर्पण करके दीप जलाकर कुत्ते की पूजा की जाती है । श्राद्धों में कौए को बलि देने की प्रथा है और गाय की पूजा तथा नाग की पूजा तो बहुत ही व्यापक है ।

जीवन का आधार

मानवेतर—उपासना को मानव जाति के इतिहास से अलग करके नहीं समझा जा सकता । जिस समाज के जीवन का जो आधार है, वह उसे देवता मानता है, जैसे—गोप संस्कृति (जिसका जीवनाधार गाय है) में गोदान और गोरक्षा पुण्य है तथा गोहत्या पाप है तथा उसकी पवित्रता की अवधारणा में गोबर, गोमूत्र आदि पंचगव्य का महत्त्वपूर्ण स्थान है । गाय के अंग-प्रत्यंग में कोटि-कोटि देवताओं का निवास है तथा उसके पवित्र धाम हैं—गोकुल, गोवर्धन तथा गोलोक । गोपसंस्कृति के अलौकिक विश्वास कामधेनु से जुड़ते हैं, उसके विश्वास में धरती गाय के सींग पर टिकी है । जबकि नाग-संस्कृति में धरती को शेषनाग के फण पर प्रतिष्ठित होने का विश्वास है । हस्तिगण के विश्वास के अनुसार धरती को दिशाओं के अधिपति दिग्गज धारण किये हैं ।



चिंतन और परिवेश

पुरा कथाओं के असंगत लगने का कारण यह है कि युग-परिवर्तन के साथ मनुष्य का अपने परिवेश के साथ संबंध बदल जाता है । यह प्रश्न बिलकुल बेकार है कि कल का मनुष्य अधिक ठीक सोचता था या आज का मनुष्य अधिक समझदार है ? कल पिता सोच रहा था तो वह भी मनुष्य था और आज पुत्र सोच रहा है तो वह भी मनुष्य है, और मनुष्य आखिर मनुष्य है । आज का वैज्ञानिक मनुष्य अपने को प्रकृति का प्रभु मानता है परंतु पुराणकथाओंवाला मनुष्य प्रकृति में अपनी ही चेतना को देखता था, अपने ही राग को सुनता था और दिव्यता का आभास पाता था । इसलिए सूर्य की वैज्ञानिक अवधारणा सूर्य की पौराणिक अवधारणा से बिलकुल भिन्न है । पुराणकथाओं के असंगत लगने का कारण लोकमानस की वह प्रवृत्ति है,

जो लौकिक से अलौकिक की ओर है तथा जिसके संस्पर्श से सब कुछ दिव्य हो जाता है—धरती, पहाड़, आकाश, मेघ, समुद्र, वृक्ष, पशु, पक्षी, नाग आदि सब देवस्वरूप बन जाते हैं।

इन तथ्यों के प्रकाश में जब हम पुराकथाओं का अध्ययन करते हैं तो इस सवाल का उत्तर हमारे सामने बहुत स्पष्ट हो जाता है कि क्या पुराणकथाओं के वे मात्र पशु-पक्षी थे।

जब रावण सीता का अपहरण करके ले जा रहा था तो जटायु ने रावण को वेदतत्व का प्रमाण देते हुए परस्त्री हरण का निषेध किया था और जब रावण नहीं माना तो इसने रावण को घायल कर दिया। राम को सीता-हरण की प्रथम सूचना जटायु से ही मिली थी, इतना ही नहीं, जटायु ने राम को बताया कि सीता का हरण 'बिंद' मुहूर्त में हुआ है, इसलिए वह तुम्हें अवश्य प्राप्त होगी। स्पष्ट है कि वेद का प्रमाण और ज्योतिष का संदर्भ देना किसी भी पक्षी के वश की बात नहीं हो सकती।

वानर गोत्रीय : हनुमान

बाल्मीकि रामायण के अनुसार हनुमान संस्कृत और प्राकृत दोनों भाषाएं जानते थे। हनुमान से पहले वार्तालाप में ही राम जान लेते हैं कि हनुमान चारों वेदों का ज्ञाता है। 'अशोक वाटिका' में सीता से भेंट करते समय हनुमान सोचते हैं कि मैं कौन-सी भाषा में बात करूं —

'यदि वाचं प्रदास्यामि द्विजातिरिव संस्कृताम्
।रावणं मन्यमानां तों सीता भीता भविष्यति।

क्या भाषाओं पर ऐसा अधिकार किसी कपि, मर्कट या बंदर का हो सकता है? इसीलिए डॉ. कामिल बुल्के ने स्पष्ट बताया था कि हनुमान वास्तव में वानरगोत्रीय आदिवासी थे।

पुराण कथाओं के अनुसार जरत्कारू नाम की नागकन्या का विवाह 'जरत्कारू' नामक ब्राह्मण से हुआ था। नागकन्या उलूपी अर्जुन को ब्याही थी। महिषासुर के जन्म की कथा मे उल्लेख है कि रंभासुर ने महिषी को गर्भ प्रदान किया था। मंडूकों (मेंढकों) का राजा आयु और उसकी कन्या सुशोभना से परीक्षित का विवाह हुआ था। जब सुशोभना परीक्षित को छोड़कर चली गयी तो परीक्षित ने मंडूक वध-सत्र किया, जिससे घबराकर मंडूकराज सुशोभना को लेकर शरण में आ गया। स्पष्ट कि न 'जरत्कारू' और 'उलूपी' सांपिन थी औ न सुशोभना मेंढ़की थी। नाग और मंडूक शब यहां गणगोत्र वाचक हैं। इसी प्रकार जिस ऋक्षराज जांबवान से कृष्ण का अट्ठाईस दिनों तक युद्ध चला था और जिसकी कन्या जांबवत कृष्ण की आठ पटरानियों में से एक थी, वह रीछ तो नहीं हो सकता।

नागजाति का इतिहास

इतिहास में मूषक, मत्स्य, कूर्म, ऋक्ष, कुक्कु और वानर संज्ञक टोटम जातियों का स्पष्ट उल्लेख प्राप्त होता है। टोटम जातियों में सर्प-उपासक नागजाति का इतिहास तो बहुत समृद्ध है। इतिहास में नागराजाओं को उत्तम स्थापत्यकार, नैयायिक तथा उत्तम रासायनिक बताया गया है। प्राग्ज्योतिष, तक्षशिला और मथुरा नगर उन्होंने बसाये थे। रासायनिक नागार्जुन नागराज-पुत्रों में से था।

पुराणों में नाग और गरुड़ दोनों ही कश्यप की संतान हैं। नागों की माता कद्रू हैं तथा गरु

की माता विनता । माता विनता को कद्रू के दासीतत्व से मुक्त कराने के लिए गरुड़ स्वर्ग से अमृत चुराकर लाया था । इंद्र तक्षक नाग का सखा था और जब खांडववन जलाकर अर्जुन वहां बसनेवाले दुर्दांत तक्षकवंशी नागों का विध्वंस कर रहे थे उस समय इंद्र ने तक्षक की सहायता की थी । कृष्ण कालियानाग का दमन करते हैं और नागजाति से संघर्ष करके वे उसे व्रज छोड़ देने को विवश करते हैं । परीक्षित की मृत्यु तक्षक द्वारा हुई और उसकी प्रतिक्रिया जनमेजय के नागयज्ञ में हुई और जनमेजय ने तब तक नागों का सामूहिक विनाश किया, जब तक मां ने पुत्र को मातृकुल की रक्षा का आदेश नहीं दिया । नाग वरुण के सभासद थे । समुद्र मंथन बहुत महत्त्वपूर्ण मिथक शास्त्रीय घटना है और समुद्र मंथन प्रसंग में देवता और असुर नागराज वासुकि को अमृत में से हिस्सा देने का वचन देते हैं । इसी प्रकार की दूसरी घटना पृथ्वी दोहन के प्रसंग में नागराज धृतराष्ट्र की भूमिका उल्लेखनीय है ।

नाग जाति का जब अन्य जातियों से अंतर्मिलन होता है तो उसके उपास्य तत्व (सांप) की अन्य जातियों के उपास्य तत्व में किस प्रकार 'अंतर्भुक्ति होती है, इसे हम पुराण कथाओं से जान सकते हैं । पुराणों में विष्णु शेष नाग पर शयन करते हैं, कृष्ण जन्म के समय शेषनाग फण फैलाकर उनकी रक्षा करता है । बलराम शेष के अवतार हैं । शिव के सार्थ नाग हैं और जाहरपीर के साथ नागतत्व हैं ।

संस्कृतियों की अनेक धाराएं

जिस प्रकार नाग—जाति का देवता सर्प है उसी प्रकार हस्तिगण का देवता गजेंद्र है, गणेश है । दीपावली पर गणेश के साथ विष्णुपत्नी लक्ष्मी की उपस्थिति का कारण लक्ष्मी के साथ जुड़े गज तत्व में देखा जा सकता है इसी के साथ हस्तिगण और मूषक जनजाति की अंतर्भुक्ति गणेश के वाहन के रूप में प्रत्यक्ष होती है ।

इस प्रकार पुराण कथाओं के पशु-पक्षी सामान्य पशुपक्षी नहीं हैं, वहां उनका अर्थ कुछ गहरा है, जिसे हम गणगोत्र के सूत्र से समझ सकते हैं । टोटम का इतिहास मानवीय धारणाओं, देवताओं और जन जातियों की युगयात्रा और सामाजिक विकास की आत्मकथा है, जिसको हम भारतीय संस्कृति कहते हैं, वह वास्तव में समुद्र की भांति है, जिसमें संस्कृतियों की अनेक धाराएं समायी हुई हैं ।

—लोकवार्ता-विज्ञान
एस. डी. कॉलेज,
पानीपत—१३२१०३

प्रसिद्धि

एक पार्टी में एक महिला ने लॉर्ड नॉथक्लिफ से कहा, "एक सुबह उठकर थैकरे ने देखा कि वह प्रसिद्ध है !"

लॉर्ड नॉर्थक्लिफ ने जवाब दिया, "जब वह सुबह हुई थी, तब थैकरे को नियमित रूप से रोजाना आठ घंटे के हिसाब से लिखते-लिखते पंद्रह वर्ष बीत चुके थे । जो शख्स एक सबेरे उठकर अपने आप प्रसिद्ध हो गया, उसने अपना वक्त सोकर नहीं गुजारा था ।"

—राजकुमार जैन

किंडर गार्टन : के. जी. की शुरूआत कैसे हुई ?

● हबीब खान

जरमनों को अपनी भाषा को फैलाने और लोकप्रिय बनाने का जुनून की हद तक शौक है और यह शौक कई बार धौंस में तब्दील हो जाता है क्योंकि जहां-जहां संभव हो पाया जरमनों ने विदेशियों के लिए जरमन सीखना अनिवार्य कर दिया । जरमनों की यह राष्ट्रीय आदत है कि वह अपनी भाषा से प्रेम करते हैं तथा उसे अंगरेजी और फ्रांसीसी भाषाओं के साथ-साथ मान-सम्मान और प्रतिष्ठा का स्थान दिलाना चाहते हैं । यह अलग बात है कि संसार में कोई ही ऐसा व्यक्ति होगा जो कि सहर्ष जरमन भाषा सीखे अन्यथा सारे जरमन भाषा का गले पड़ा ढोल बजाते हैं । विशेष रूप से जहां जरमनी में आकर जब कुछ बन नहीं पड़ता तो जरमन सीख लेते हैं मगर वह भी बस इतनी कि गुजारा ही हो सके । अपनी लगन और चाव से जरमन भाषा में मास्टर बनते कम से कम हमने किसी को कम ही देखा है ।

विश्वव्यापी शब्द

जरमन लोगों को अपने एक शब्द पर बहुत ही गर्व है जो कि विश्वभर में बोला जाता है । एक बार बुद्धिमत्ता की परीक्षा पर आधारित एक टी. वी. कार्यक्रम में कंपेयर ने पूछा कि ''वह कौन-सा जरमन शब्द है जो सारे संसार में बोला और समझा जाता है ?'' तो न केवल उत्तर देनेवाले ने बल्कि सारे उपस्थित मेहमानों ने एक स्वर में चीखकर बताया—'किंडर गार्टन' । जी हां । यही वह एकमात्र जरमन शब्द है जिसे संसार के सभी क्षेत्रों में समझा जाता है । किंडर गार्टन नन्हे बच्चों के प्राथमिक स्कूल को कहते हैं । इस संस्था में तीन से छह वर्ष तक की आयु के बच्चे प्राइमरी स्कूल जाने से पहले दाखिल कराये जाते हैं । यहां बच्चे शिक्षा नहीं बल्कि प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं । यहां बच्चों को जीवन का बेहतरीन ढंग सिखाया जाता है । उन्हें अच्छी और बुरी बात की तमीज सिखायी जाती है, गरज यह है कि बच्चे को एक अच्छा बच्चा बनने का प्रशिक्षण दिया जाता है । जरमन मुहावरा है कि बच्चे को 'किंडर गार्टन' से ही पहचान लिया जाता है कि उसके तौर-तरीके और आदतें कैसी होंगी । हमारे यहां लोग ज्यादा अक्लमंद होते हैं क्योंकि वह नन्हे-मुन्ने को पालने से ही पहचान लेते हैं ।

शब्द की उपज

आइए ! आज हम आपको बतायें कि जरमनों का गौरवशाली विश्वव्यापी शब्द 'किंडर



रेत के अहाते किंडर गार्टन की आज भी बहुत लोकप्रिय वस्तुएं हैं । बच्चे रेत के साथ खेलकर अत्यंत प्रसन्न होते हैं और रेत से विभिन्न वस्तुएं बनाकर अपनी रचनात्मक प्रतिभाओं को बढ़ाते हैं । चुनांचे फ्रेड्रिश फ्रोबल ने दो सौ वर्ष पहले नन्हे बच्चों को इकट्ठा करके उन्हें खुशियां उपलब्ध कराने का जो सपना देखा था वह आज उसके आविष्कार 'किंडर गार्टन' के रूप में पूरा हो रहा है ।

गार्टन' किसके जहन की उपज है । आज से दो सौ वर्ष पहले जरमनी के एक फटेहाल और दरिद्र पादरी के घर छठा बच्चा पैदा हुआ जिसका नाम फ्रेड्रिश फ्रोबल रखा गया । फ्रेड्रिश पहले दिन से ही बदनसीब साबित हुआ क्योंकि उसके जन्म के अगले दिन ही उसकी मां चल बसी । सौतेली मां को दूसरे पांच सौतेले बच्चों के मुकाबले में फ्रेड्रिश ज्यादा बुरा लगता था क्योंकि वह छोटा-सा मरियल चूहा दिखायी पड़ता था और सारा दिन 'रें-रें' करता रहता था । जब वह छह वर्ष का हुआ तो साधारण बच्चों की तरह स्कूल न जा सका क्योंकि उसे इतने ज्यादा बच्चों और कठोर स्वभाव के अध्यापकों से डर लगता था । उसके अन्य भाई-बहन शिक्षा प्राप्त कर रहे थे लेकिन उसके मन में हमेशा यही अभिलाषा समायी रहती थी कि आखिर दूसरे बच्चों के समान उसकी अच्छी-सी मां क्यों नहीं है ? वह क्यों नहीं अपनी मां की गोद में मुंह छिपाकर सो सकता और सोने से पहले उसकी मीठी लोरियां क्यों नहीं सुन सकता । फ्रेड्रिश के पिता ने अनुमान लगा लिया कि वह नालायक और पढ़ाई से भागनेवाला लड़का है । चुनांचे उसने फ्रेड्रिश को हुक्म दिया कि वह भूमि पर खेतीबाड़ी का काम संभाल ले । फ्रेड्रिश ने निस्संकोच अपने पिता की यह बात मान ली और अपने भाग्य पर

अफसोस करके रह गया।

परिस्थितियों से मात नहीं

फ्रेड्रिश जब बाल्यावस्था में था तब उसके मन में यह विचार और संकल्प बिजली के समान कौंधा कि परिस्थितियों के आगे मात खाते रहना कोई आदमियत नहीं है। इनसान को चाहिए कि वह अपनी महान आकांक्षाएं पूरी करने का स्वयं प्रबंध करे। चुनांचे उसने पुस्तकें खरीदकर पढ़ना शुरू कर दीं। उसके उपरांत वह गोटंगन और बर्लिन की पाठशालाओं में भी पढ़ता रहा। अपनी कॉलेज की पढ़ाई के दौरान उसे ज्यादा पैसों की आवश्यकता पड़ी तो उसने छोटे बच्चों को ट्यूशन पढ़ाने का विज्ञापन दे डाला। फ्रेंकफर्क की एक मालदार फेमिली ने उसका विज्ञापन पढ़कर उसको बुलवाया और उसे अपने दो छोटे-छोटे बच्चों का ट्यूटर नियुक्त कर दिया। वहां फ्रेड्रिश को पहली बार सुंदर सुहाने तजुर्बों का अनुभव हुआ। वह एक प्यार-भरा घराना था जिसने फ्रेडिश को भी अपने बच्चों—जैसा प्यार दे डाला। वह बच्चों का ट्यूटर और उनके माता-पिता का मित्र था। फ्रेड्रिश कई बार सोचता "काश उसने भी ऐसे ही किसी घराने में जन्म लिया होता।" उसे उस घराने में जाकर जो मानसिक शांति प्राप्त होती उसका अंदाजा उसे कभी नहीं हुआ था। फ्रेड्रिश ने दो वर्ष तक वहां बच्चों को पढ़ाया और जब वहां अपनी जिम्मेदारी पूरी कर ली तो उसके मस्तिष्क में एक छोटी-सी योजना संपूर्ण रूप धारण कर चुकी थी।

प्रारंभ ऐसे हुआ

फ्रेड्रिश ने सोचा, वह अपने-जैसे बिखरे हुए और बिन मां-बाप के बच्चों को अपनी आगोशे मोहब्बत (स्नेह की गोद) उपलब्ध कराएगा।

उसके पास साधन न के बराबर थे। उसने अपने इकलौते किराये के कमरे में नन्हें बच्चों के लिए एक 'शिशु केंद्र' खोल दिया। वह महल्ले के बच्चों को छोटे-मोटे और टूटे हुए खिलौने खेलने के लिए देता और चार-पांच घंटे उनसे बातें करता रहता और उन्हें पाठप्रद कहानियां सुनाता। एक दिन उसके मालिक मकान ने अपने घर की मरम्मत करायी तो तरखान का काम खतम होने के बाद जमीन पर कई तिकौने चौकोर और आयताकार लकड़ी के टुकड़े इकट्ठे हो गये, फ्रेड्रिश ने उन सबको सावधानी के साथ जमा किया और उन्हें बच्चों के लिए ले आया। बच्चे उन टुकड़ों के साथ अत्यंत हर्षोल्लास और जिज्ञासा के साथ खेले। पास ही रेत के ढेर थे जो निर्माण कार्य के उद्देश्य से मंगवाये गये थे। फ्रेड्रिश ने मालिक मकान से अनुमति ले ली कि बच्चे वहां खेल सकते हैं, चुनांचे नन्हें बच्चे रेत के ऊपर लकड़ी के टुकड़ों से घर, बंगले और हवाई अड्डे बनाते रहे।

वह खेल में इतने लीन हुए कि अपने घर वापस जाना भूल गये, फ्रेड्रिश को अंदाजा हुआ कि बच्चे लकड़ी के टुकड़ों और रेत के साथ अत्यंत रुचि से खेलते हैं। उसने बच्चों को अधिक प्रसन्न करने के लिए लकड़ी के टुकड़ों को विभिन्न रंगों से रंग दिया, अब तो बच्चों की खुशी का ठिकाना ही न रहा, उन्होंने बहुत से टुकड़े स्वयं ही रंगे और रंगसाजी के इस खेल को बहुत खुशी से खेला।

फ्रेड्रिश बच्चों को खेलते हुए गौर से देखता, उसने अनुभव किया कि लकड़ी के रंगीन टुकड़ों का खेल बच्चों में असीम रचनात्मक प्रतिभाएं

उभारता है, चुनांचे उसने इस ओर अधिक से अधिक ध्यान दिया और एक दिन अपने मित्रों की सहायता से दो कमरों की एक 'शिशु वाटिका' खोल ली। यह नाम फ्रेड्रिश के अपने दिमाग की उपज था, वह बच्चों को भी फूल ही समझता था। उस 'किंडर गार्टन' में फ्रेड्रिश ने बच्चों के लिए सुंदर-सुंदर प्लास्टिक के टुकड़े रखे, बच्चे उन पर स्वयं रंग कर सकते थे। बाहर छोटे-से बगीचे में रेत का एक चौकोर मैदान बनवाया जिसमें बच्चे रेत में आजादी से खेल सकते थे। कुछ ही वर्षों में उसको किंडर गार्टन नगर के विभिन्न भागों में बनवाने पड़े। माताएं यहां अपने नन्हे बच्चों को निस्संकोच होकर छोड़ सकती थीं। बच्चे यहां सारी दुनिया से बेखबर होकर खेलते और प्रसन्न होते और फ्रेड्रिश के अनुसार फ्रोबल के किंडर गार्टन पहले जरमनीभर में मशहूर हुए फिर उन्हें यूरोपभर में लोकप्रियता प्राप्त हुई।

एक लोकप्रिय संस्था

आज ब्रिटेन, अमरीका, फ्रांस और समस्त पूर्वी व पश्चिमी देशों में जो किंडर गार्टन हैं वह फ्रेडिश फ्रोबल के मूलभूत विचार पर ही बनाये गये हैं। यहां बच्चों को वैसा ही वातावरण उपलब्ध कराया गया—जैसा फ्रेड्रिश फ्रोबल ने अपने पहले किंडर गार्टन में बच्चों को उपलब्ध कराया था।

आज विश्वभर में नन्हें बालकों के इस प्रशिक्षण केंद्र का नाम भी किंडर गार्टन है और पैटर्न भी हुबहू वही है। केवल कुछ देशों में कहीं-कहीं किंडर गार्टन को 'नर्सरी' का नाम भी दे दिया जाता है। किंडर गार्टन में आज भी बच्चों को लकड़ी और प्लास्टिक के चौकोर, तिकोन, गोल और आयताकार टुकड़े खेलने के लिए दिये जाते हैं जिनके साथ वह भिन्न-भिन्न वस्तुएं बनाते हैं। रेत के अहाते किंडर गार्टन की आज भी बहुत लोकप्रिय वस्तुएं हैं। बच्चे रेत के साथ खेलकर अत्यंत प्रसन्न होते हैं और रेत से विभिन्न वस्तुएं बनाकर अपनी रचनात्मक प्रतिभाओं को बढ़ाते हैं। चुनांचे फ्रेड्रिश फ्रोबल ने दो सौ वर्ष पहले नन्हे बच्चों को इकट्ठा करके उन्हें खुशियां उपलब्ध कराने का जो सपना देखा था वह आज उसके आविष्कार 'किंडर गार्टन' के रूप में पूरा हो रहा है।

—३८७, हौजकाजी दिल्ली-११०००६

शिष्टाचार

एक बार अमरीका के राष्ट्रपति जॉर्ज वाशिंगटन अपने मित्रों व अन्य अधिकारियों के साथ कहीं जा रहे थे। रास्ते में उन्हें एक हब्शी मजदूर मिला। उसने वाशिंगटन को देखकर अपने सिर से टोपी उतारी और उनका अभिवादन किया। वाशिंगटन ने भी ऐसा ही कर उसके अभिवादन का समुचित उत्तर दिया।

आगे बढ़ने पर वाशिंगटन के एक मित्र ने कहा, "आप भी कमाल के आदमी हैं। एक हब्शी मजदूर के प्रति इतना सम्मान प्रकट करते हैं।"

वाशिंगटन बोले, "मेरे भाई, उस अनपढ़ मजदूर ने इतनी सभ्यता और शिष्टाचार दिखाया। क्या मैं शिष्टाचार के पालन में उस हब्शी से पीछे रह जाता ? शिष्टाचार व सभ्यता का निर्वाह जीवन में पहली चीज है मेरे मित्र !

—राजकुमार जैन

नयन-कटोरे

क्या भर लाये, क्या खो आये
नयन कटोरे, नयन कटोरे !

नव प्रभात की किरण चुराये
कली कुसुम बन जो खिल जाए
क्या उसकी मुसकानें लेकर
शबनम के मोती दे आये ?

या दिन से उजियारा ऊबा
जो सागर में सूरज डूबा !
सांध्य-किरण खोकर सच बोलो
कितने तारे रात बटोरे !

चितवन पायी, दिल दे आये
बांट खुशी कुछ गम ले आये !
छलकाते वसंत निकले थे
लौटे तो पतझर भर लाये !

अब तुम नील झील के बदले
एक झलक चपला की पगले
पलकों में भर चले स्वयं तो
फिर क्यों बूंदों से निपटो रे !

गिरि-वन : 'चीड़-गंध' निश्वासें
जिनके निर्झर, उनकी प्यासें !
गीतों की गंगा जन जन को
कवि को शेष रह गयी सांसें !

काल-कंठ में उन्हें बचाये
कहीं पंथ में जो मिल जाए
लौट भले खाली आना पर
यह मत कहना—'हटो हटो रे !'

क्या भर लाये, क्या खो आये,
नयन कटोरे, नयन कटोरे !

—लक्ष्मी नारायण पांडेय
११७/एच-१/३१६, मॉडल टाउन,
पांडुनगर, कानपुर-२०८००५



गजल

जब कभी ख्वाब में आ के वो जगाता है मुझे
याद बीते हुए लम्हों की दिलाता है मुझे

देखना चाहूं बुलंदी के फलक पर जिसको
मेरे मयार से वो शख्स गिराता है मुझे

तुझको भी मुझसे मुहब्बत है यकीं है मुझको
तेरे मिलने का ये अंदाज बताता है मुझे

कौन देता है ये दस्तक मेरे दरवाजे पर
ये मेरा वहम है या कोई बुलाता है मुझे

वो तेरे साथ में गुजरा हुआ एक-एक लम्हा
आग में गम कि शब-ओ-रोज जलाता है मुझे

—बृज अभिलाष
१२२, रोगन ग्रान, देहली गेट,
गाजियाबाद-२०१००

सुंदर और मेहनती : गद्दिनें

● गुरमीत बेदी

हिमाचल में आये सैलानी अगर यहां की प्राकृतिक छटा से मुग्ध हो उठते हैं तो यहां के निवासियों का स्नेहमयी व्यवहार, भोलापन और नैसर्गिक सौंदर्य भी उनके दिलों में कई मधुर स्मृतियां अंकित कर देता है। प्रकृति के रु-ब-रु होने और यहां के लोगों का अधिकाधिक सान्निध्य पाने के लिए सैलानी बार-बार यहां आने को लालायित रहता है। इस खूबसूरत प्रदेश में वैसे तो तमाम जातियों और जनजातियों के लोग निवास करते हैं, जिनकी अनूठी परंपराएं, अनूठे रीति-रिवाज और बोलियां हैं, लेकिन जिस जनजाति विशेष ने घुम्मकड़ों, कवियों और लेखकों को सर्वाधिक प्रभावित किया है, वह है— गद्दी जनजाति।

चंबा : गृह क्षेत्र

यूं तो गद्दी लोग सारे हिमाचल में फैले हैं, लेकिन हिमाचल का चंबा जिला इन जनजातीय लोगों का 'गृह क्षेत्र' है। इस जिले की भरमौर तहसील में एक क्षेत्र है— 'गद्देरन'। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि यह स्थल इन लोगों का स्थायी निवास है। यायावर प्रकृति के होने के कारण ये लोग कभी भी किसी भी ठिकाने पर स्थायी रूप से नहीं रहते, बल्कि अपनी भेड़-बकरियों के साथ मौसम के हिसाब से विभिन्न क्षेत्रों में पड़ाव डालते रहते हैं। सरदियों में ये लोग बरफीली घाटियों से निकलकर मैदानी इलाकों में आ जाते हैं, जबकि गरमियां शुरू होते ही फिर दुर्गम पहाड़ों का सफर तय करने लगते हैं। ये लोग शारीरिक रूप से गठीले और प्राकृतिक आपदाओं व कठिनाइयों से जूझनेवाले होते हैं।

नृत्य-संगीत और कला की प्रेरणा—गद्दिनें

गद्दी पुरुषों की तरह गद्दिन महिलाएं भी गठीले बदन व स्वस्थ शरीरवाली होती हैं। गोरा-चिट्टा रंग, मोतियों से दांत, गुलाबी होंठ और चेहरे पर झलकती मासूमियत ही इन महिलाओं की विशेषता है। इनकी खूबसूरती व भोलेपन पर अनेक कविताएं लिखी गयी हैं। अनेक चित्रकारों ने अपने चित्रों में इनके सौंदर्य को आत्मसात किया है। विश्व विख्यात चित्रकार पद्मश्री शोभा सिंह ने तो अपने बहुचर्चित 'गद्दिन युवती' के चित्र में मानो रूह फूंककर रख दी है। नृत्य और संगीत तो मानो गद्दिनों की रग-रग में बसा है।

गद्दिनों का लिबास भी बहुत खूबसूरत है और अपने लिबास के कारण ही ये पहचानी जाती हैं। गद्दिनें प्रायः सूती कमीज पहनती हैं। कमर के नीचे ये विशेष प्रकार का बना घाघरा

गोरा-चिट्टा रंग, मोतियों से दांत, गुलाबी होंठ और चेहरे पर झलकती मासूमियत ही इन महिलाओं की विशेषता है। इनकी खूबसूरती व भोलेपन पर अनेक कविताएं लिखी गयी हैं। अनेक चित्रकारों ने अपने चित्रों में इनके सौंदर्य को आत्मसात किया है। विश्व विख्यात चित्रकार पद्मश्री शोभा सिंह ने तो अपने बहुचर्चित 'गद्दिन युवती' के चित्र में मानो रूह फूंककर रख दी है। नृत्य और संगीत तो मानो गद्दिनों की रग-रग में बसा है।

पहनती हैं, जिसके साथ पूरे बाजू का चोलीनुमा कुरता सिला होता है। घाघरे और कुरते के ऊपर वे काले रंग का डोरा बांधती हैं। काली भेड़ों की ऊन से बना यह डोरा चालीस से पचास गज लंबा होता है और चोली पर इस ढंग से बांधा जाता है कि इस पर असंख्य सिलवटें बन जाती हैं। इस डोरे का वजन भी तीन-चार किलो से कम नहीं होता। गद्दिन युवतियों में सिर को नंगा रखना अपशकुन माना जाता है। अतः सिर ढकने के लिए ये मोटा सूती दुपट्टा प्रयोग में लाती हैं, जिन्हें इनकी भाषा में 'चादरु' कहा जाता है। गद्दिनों को चांदी के आभूषणों से भी बहुत लगाव होता है। शरीर के विभिन्न अंगों पर पहने गये ये आभूषण गद्दिन युवतियों के सौंदर्य में चार चांद लगा देते हैं।

सुंदर ही नहीं मेहनती भी

गद्दिनें जितनी सुंदर हैं, उतनी मेहनती भी होती हैं। जीवन के हर क्षेत्र में वे पति के कंधे से कंधा मिलाकर काम करती हैं। यही नहीं, जब गद्दी पुरुष सरदी के महीनों में भेड़-बकरियों के साथ मैदानी इलाकों में निकल जाते हैं, तब भी गद्दिन महिलाएं घर में बेकार नहीं बैठतीं! ये रात-दिन खड्डी पर शालें बनाने, ऊन कातने का काम करती हैं। गद्दिन महिलाओं द्वारा बनायी इन शालों और ऊन के पट्टुओं की मार्केट में बहुत मांग रहती है। हिमाचल में आये सैलानी तो मुंहमांगी कीमत देकर इन्हें खरीद लेते हैं। गद्दिन महिलाओं द्वारा तैयार की गयी 'पशम' की शालें बाजार में तीन से चार हजार तक बिक जाती हैं। इस तरह गद्दिन महिलाएं घर बैठे अपने परिवार की आय में वृद्धि करती हैं। एक तरह से गद्दी परिवारों की समृद्धि गद्दिन महिलाओं के परिश्रम पर ही निर्भर करती है। गद्दिन महिलाएं खेतीबाड़ी और ओखली में धान कूटने का काम भी स्वयं करती हैं। शायद इतने कड़े परिश्रम का ही यह कारण है कि गद्दिन महिलाएं बहुत कम बीमार पड़ती हैं। मोटापा



लड़कियों के विवाह छोटी उम्र में ही हो जाते हैं ।

— राणा निवास,
बैजनाथ-१७६१२५
(हि.प्र.)

ममत्व की प्रतीक

छाया : गुरमीत बेदी



भी इनमें नाममात्र ही देखने को मिलता है । अपने हृष्ट-पुष्ट शरीर के कारण ये महिलाएं आमतौर पर संतानोत्पत्ति के समय भी एक तरह से सामान्य होती हैं । बच्चे को जन्म देने के कुछ ही दिनों बाद ये फिर कड़े परिश्रम में जुट जाती हैं और मीलों पैदल सफर भी सहजता से तय कर लेती हैं ।

गद्दिन महिलाएं अपने वैवाहिक जीवन में पति के प्रति बहुत वफादार होती हैं और इनमें तलाक का प्रतिशत भी नगण्य है । गद्दिन



जहां चाह-वहां राह ▶

अपंग बच्चों का सहारा बना एक सपना

● पद्मसंभव



मेरा जुल हक : इन्सानियत ही सबसे बड़ा मजहब ▶



अब ये बेसहारा नहीं ▶

मो तिहारी जिले से लगभग ३५ किलोमीटर दूर ढाका प्रखंड से ६ किलोमीटर उत्तर में बसा छोटा-सा गुमनाम गांव करसहिया इन दिनों बिहार में चर्चित है, जहां एक वृद्ध निःसंतान मुसलिम दंपति ने पिछले चार वर्ष से कुल ११० तिरस्कृत-उपेक्षित विकलांग बच्चों को अपने खर्च से लालन-पालन कर उन्हें स्वावलंबी बनाने का बीड़ा उठाया है।

करीब २५ कट्ठे में फैली हुई अपनी नर्सरी दिखाते हुए सर्वोदयी सेराजुल हक पुरानी यादों में डूबे बताते हैं, "सामाजिक मोह से उबर नहीं पाया था। करसहिया में पुरानी ध्वस्त मसजिद की जगह नयी मसजिद नहीं बना पाने की वजह से गांव के लोग मेरा सामाजिक बहिष्कार कर रहे थे। इस कारण मैं खिन्न रहता था। खुद से खिझा हुआ इनसान मुरदे की तरह है— उन दिनों मैं यह सब सोचा करता था।"

आम की जूठी गुठलियां

करसहिया वर्षों से विकास के स्पर्श से दूर रहा है। पहले यहां न कोई डिस्पेंसरी थी, न कोई स्वास्थ्य केंद्र और न कोई तालीम हासिल करने के लिए स्कूल ही। कभी कम्युनिस्ट रह चुके सेराजुल हक की बहकी बातें सुन-सुनकर गांववाले उन्हें सनकी समझा करते थे। उन दिनों उन्हें आम की जूठी गुठलियां इकट्ठा करते देख गांववालों ने इसे भी सनक समझकर खुब खिल्ली उड़ायी।

सेराजुल हक पुरानी यादों के बीते चंद लम्हों के बारे में बताते हुए कहते हैं, "जब मैं आम की जूठी गुठलियां बटोरता था, तब वे मुझे सनकी कहते थे। बाद में, करीब ३२ साल पहले मैंने खाट भर जगह में बागवानी के लिए नर्सरी खोली। इससे मेरी आमदनी बढ़ती गयी। यह देख खिल्ली उड़ानेवाले गांव के भाई शरमा गये। अभी यह नर्सरी कुल २४ कट्ठे में फैली है। आम की उम्दा नस्लों की बानगियों, आयुर्वेदिक पौधे और दुर्लभ मसालों की लताएं इस नर्सरी में हैं। इसकी चर्चा दूर-दराज तक है। अब इस नर्सरी की आमदनी से ११० विकलांग बच्चों को सहेज रहा हूं, जिन्हें इनसानी मुहब्बत और दुआ की बेहद जरूरत है। अब मैं इनसान का बीज उगाता हूं, क्योंकि इनसानियत की किश्ती राजनीति और मजहबी झगड़ों में डूब रही है।"

उन्हें पैसे की किल्लत कभी नहीं हुई, किंतु गांववालों के ताने सुनकर वे कभी अकेले में फफक-फफककर रोते। गांववाले उन्हें 'निःसंतान' कहकर खूब ताने देते। बड़े भाई शमसुल हक के आठ-आठ बच्चों को उन्होंने पाल-पोसकर खुद को बहलाना चाहा, किंतु उनके मन में टीस बनी रही। इस टीस को छुपाये सेराजुल हक वर्षों से तनाव झेल रहे थे। तभी एक घटना घट गयी। सन ८६ में गांव की मसजिद में नमाज अदा करने के वक्त छत दरक गयी और कुछ टूटी हुई ईंटें उनके मुंहबोले पोते पर गिर गयीं। वह घायल हो गया। खीझकर सेराजुल ने उस क्षतिग्रस्त मसजिद को ढहा दिया और नयी बुलंद मसजिद बनाने का एलान किया। इस हरकत से क्षुब्ध कुछ बुजुर्गों ने उन्हें सबक सिखाने का निश्चय किया। उन सबने तीन शहतीरें चुराकर बेच डालीं। सेराजुल इन बुजुर्गों के पास जाकर खूब गिड़गिड़ाये, ताकि बेचे गये शहतीर अधिक पैसे लेकर लौटा दें। उनके हम मजहब त्यौरियां चढ़ाये रहे और

ईश्वर-अल्लाह सब बखेड़ा है— सच है मनुष्य का साहस और सहनशक्ति । इनसान-इनसान के बीच फर्क ऊपरवाला नहीं करता, हम उन्हें बांटते हैं ।"

सामाजिक बहिष्कार करने का फतवा दे दिया। मजहब को मजबूत खंजर में बदलते देखकर सेराजुल को काफी पीड़ा हुई और उन्होंने सब्र करते हुए सबसे मुंह फेर लिया ।

स्वप्न में मां का निर्देश

मां की अमिट स्मृतियों से जुड़े सेराजुल अपना दर्द-हाल सुनाते हुए कहते हैं, "सन १९८८ के अगस्त में भूकंप ने यहां तबाही मचायी थी । लोग घर-द्वार, खेत-खलिहान और रुपये-पैसे छोड़कर जान बचाने के लिए मुझे बीवी के संग छोड़कर रफूचक्कर हो गये थे । जिंदगी से उन्हें मुहब्बत थी और हम दोनों घुटनभरी जिंदगी काटते उनकी तरफ हसरत से देखा करते थे । जमीन-जायदाद से मोह अचानक टूट गया और इस बारे में मैंने अपनी पत्नी को बताया । इसके कुछ दिनों बाद मैंने अपने में अपनी मरहूम मां को देखा, जिनका इंतकाल हुए बीस वर्ष हो गये हैं । उन्होंने सपने में मुझे मजबूरों की खिदमत करने को कहा । सुबह में नींद खुलते इसका जिक्र मैंने पत्नी से किया । उसी वक्त उसने अपने पास रखे तीन हजार रुपये दे दिये । बगल की जमीन मैंने २२ हजार रुपये में बेच दी । इसी पूंजी के बल मैंने विकलांग सेवाश्रम का भवन निर्माण शुरू करा दिया । अपाहिज बच्चों के लिए 'लियाकत हुसैन सर्वोदय विकलांग विद्यालय' सेवाश्रम शुरू किया है, तब से आज तक मैंने पीछे मुड़कर देखा नहीं । ईश्वर-अल्लाह सब ब[illegible] है— सच है मनुष्य का साहस और सहनशक्ति । इनसान-इनसान के बीच फ[illegible] ऊपरवाला नहीं करता, हम उन्हें बांटते हैं [illegible]

यह पूछने पर कि स्थानीय लोग कुछ टीका-टिप्पणी करते होंगे, उन्होंने कहा, "[illegible] जनवरी, १९९१ ई. को जब सेवाश्रम खुल[illegible] तब गांववालों ने ताव में कहा कि यह अपशकुन है । लूलों-लंगड़ों को देखने से गर्भवतियों के अजन्मे बच्चे भी विकलांग [illegible] होंगे, इसलिए सेवाश्रम बंद करो । मैं झुक[illegible] और असहाय विकलांग बच्चों को ढूंढ़कर पनाह देता गया । देश-विदेश से अखबार[illegible] और ऊंचे अफसरों को यहां आते देखकर वे इज्जत देते हैं और 'चाचा' कहकर बुला[illegible] हैं ।"

'सेराजुल का स्वर्ग'

४ कट्ठा १४ धूर के भूखंड पर बने ख[illegible] इमारत में स्थापित सेराजुल का यह स्वर्ग [illegible] से बाहर तक चर्चित हो रहा है । इस सेवा[illegible] अभी कुल ११ कर्मचारी हैं, जिनमें ७ शि[illegible] हैं । बिना किसी धार्मिक भेदभाव के हिंदू-मुसलिम विकलांग सगे-सहोदर बन[illegible] रहते हैं । पूर्वी और पश्चिमी चंपारण, मुज[illegible] सीतामढ़ी, वैशाली, समस्तीपुर और सीमा[illegible]

देश नेपाल से आये ११० बच्चों में अधिसंख्य हिंदू परिवार के हैं । इस विकलांग सेवाश्रम में कुछ ऐसे बच्चे मिले, जो जीवन में रोशनी का इंतजार कर रहे हैं, भले ही अभी उनका जीवन अंधेरे से भरा हो । आश्रम में 'मुख्यमंत्री' का दरजा पाये और पहला आवासी १० वर्षीय उपेंद्र राय है । चकिया खंड के शीतलपुर गांव का यह विकलांग बालक चार वर्ष से यहां रह रहा है । उसे उसके दादा यहां छोड़ गये थे अपनी गरीबी से ऊबकर । निराश्रित, उपेक्षित उपेंद्र को बांहें नहीं है, फिर भी उसने प्रेम और ढाढ़स पाकर अपने पैर से लिखना सीख लिया है । हंसमुख उपेंद्र अपने धर्मपिता सेराजुल की गोद में लदा इतराता रहता है और घर को भूल इस स्वर्ग का दुलारा बना हुआ है ।

सेराजुल हक बताते हैं, "जब बिहार के मुख्यमंत्री लालूजी ने पद का शपथ लिया था, उसी दिन उपेंद्र इस आश्रम का वासी बना था । इसीलिए हमलोग इसे दुलार से 'सी. एम.' कहते हैं ।"

बच्चों के घेरे में खड़े सेराजुल किसी सूफी की तरह लगते हैं, जिसने अपाहिज बच्चों की सूरत में ईश्वर को देखा हो । इन्हीं बच्चों के संग कृष्ण कुमार गुप्त (८ वर्ष), राजीव कुमार (१२ वर्ष), दीनानाथ (११ वर्ष), रियाज, गणेश महतो, प्रमोद अपनी किस्मत को कोसने के वजाय जिंदगी को संवारने के लिए भरपूर कोशिश कर रहे हैं ।

जनता का सहयोग

सेवाश्रम में दैनिक जीवन की शुरुआत प्रातः प्रार्थना से होती है, पठन-पाठन से छुट्टी मिलते ही वे खेलों में डूबकर मनोरंजन करते हैं । जब शाम में सूरज ढलने लगता है, तब सामूहिक प्रार्थना होती है । रात पसरते ही बच्चे भोजन के बाद सोने की तैयारी में लग जाते हैं । इधर सेराजुल इस परेशानी में डूबे होते हैं कि रोज घट रहे अन्न भंडार और अन्य आवश्यक सामग्री का अभाव न हो । इसके लिए वे मोतिहारी और आसपास के जिलों में खैरात जुटाने के लिए जेठ की दुपहरी और हड्डी भेदनेवाली सर्द हवा की परवाह किये बिना भटकते रहते हैं ।



सेराजुल निराश्रित विकलांग बच्चों की तलाश में आसपास लगातार सर्वेक्षण कराते रहते हैं । इसके लिए वे अपने सहयोगियों को सुदूर इलाकों में भेजते हैं । जहां वे ग्रामीण परिवारों में विकलांग बच्चों की जानकारी करते हैं । इन



इलाकों में राष्ट्रीय टीकाकरण कार्यक्रम अधूरा होने से नवजातों को उचित टीका नहीं लग पाने के कारण पोलियो खूब फैला हुआ है । सेराजुल पोलियो के खिलाफ जनमत भी तैयार कर रहे हैं । इस पुण्य कार्य में राजधानी और क्षेत्र के अनेक व्यावसायियों का सहयोग भी उन्हें मिलता है । पिछले वर्ष १७ अप्रैल, ९४ को सेंट्रल बैंक ऑव इंडिया के आंचलिक प्रबंधक की ओर से एक विशेष आयोजित समारोह में इस सेवाश्रम को यथेष्ट वित्तीय सहायत्ता दी गयी है । सेवामूर्ति सेराजुल हक को राज्य के कोने-कोने से आर्थिक सहायता भी मिलने लगी है ।

भविष्य की योजनाएं

भविष्य के बारे में कुछ बताते हुए सेराजुल हक कहते हैं, "अभी सेवाश्रम में ११० बच्चे-बच्चियां हैं । इनमें ३६ विकलांग बच्चियां मात्र पढ़ने के लिए यहां आती हैं । उनके लिए अभी आवासीय सुविधा नहीं है । इनके रहन-सहन, पढ़ाई-लिखाई, चिकित्सा और वस्त्र के मद में प्रति माह लगभग ३०-३५ हजार रुपये खर्च होते हैं । इसमें सहायकों-शिक्षकों का पारितोषिक भी शामिल है । इतनी मोटी रकम अपनी नर्सरी के पौधे बेचकर और खैरात इकट्ठा कर जुटा रहा हूं ।"

सरकारी मदद मिलने की बात कहने पर सेरापुत्र तनिक तमतमा जाते हैं, फिर संभलने कहते हैं, "मैं छठी जमात तक पढ़ा हूं । लिखने-पढ़ने में कमजोर हूं और सरकारी दफतरों में दौड़-धूप नहीं कर सकता । राजध में सचिवालय से पैसा मंजूर होता है, किंतु स्थानीय दफतर से यह जवाब मिलता है कि कुछ खर्च करो । क्या यह सेवाश्रम अपने पे के लिए चला रहा हूं ? समाज से ठुकराये ब को मैं पाल रहा हूं, क्या यह मेरा ही फर्ज है समाज का कोई फर्ज नहीं ? तत्कालीन जिल अधिकारी रमेश अभिषेक का मैं तहेदिल से आभारी हूं । उन्होंने मुझे भरपूर सरकारी मद दी थी । अपनी पत्नी शबीला खातून का भी आभारी हूं, जिसके सोने के उन्नीस जेवर इस सेवाश्रम को चलाने में बिक गये ।"

पास ही खड़ी उनकी पत्नी शबीला खातू लिहाज करती बताती है, "सन १९५९ में इ निकाह हुआ था । इन्होंने जो कहा है, वही मैं किया । जब भी पैसे की कमी हुई, मैं अपने जेवर उतारकर इन्हें देती गयी ।"

'करसहिया का सनकी' नाम से ख्यात

सेराजुल आगे की योजनाओं के बारे में बताते हैं, "पापी पेट का निर्वाह करना मनुष्य का महज स्वार्थ है । भूखा न तो वेद पढ़ सकता है, न नमाज अदा कर सकता है । सेवाश्रम में जल्द ही व्यावसायिक शिक्षा की व्यवस्था करनेवाला हूं, जो ग्रामोद्योग पर आधारित होगा । उन्हें चरखा चलाना, कटाई-सिलाई, टोकरी बुनना आदि उत्पादक कार्य का प्रशिक्षण दिलाना चाह रहा हूं । खाका तैयार होते ही यह काम शुरू हो जाएगा ।"

बातचीत के बीच यह टोकने पर कि यदि उन दोनों को भारत सरकार कोई बड़ा पुरस्कार दे, तो क्या स्वीकार करेंगे ? दोनों एक-दूसरे को देख मुसकराते और कहते हैं, "ईनाम नहीं, ईमान के लिए हम कुछ करना चाह रहे हैं । इनसानी मुहब्बत और खुदा की खिदमत हमारी झोली में रहे— यह आरजू है । बेसहारे बच्चे हमारे लिए भी दुआ मांगें, वे याद भर कर लें कि हम सनकी नहीं थे, बस इनसान थे उनकी तरह !"

जीवन यापन योग्य सारी संपत्ति सार्वजनिक दान देकर निराश्रित अपंग बच्चों में मस्त सेवामूर्ति सेराजुल का स्वर्ग अब एक सनकी का सपना न रहकर सरकारी कल्याण केंद्रों और कार्यक्रमों के लिए उदाहरण बन उस असीम ईश्वरीय सत्ता का अहसास देता है जिसकी छाया में सारे मनुष्य संग-संग जी रहे हैं ।

— बेलवरगंज,
पो.—गुलजारबाग
पटना-८००००७

विश्व में महिलाएं ज्यादा दीर्घायु

विश्व स्वास्थ्य संगठन से प्रकाशित सांख्यिकी के अनुसार औरतें सारे विश्व में पुरुषों की तुलना में अधिक दिनों तक जिंदा रहती है—

जापान के लोग सबसे अधिक दीर्घायु होते हैं । वहां औसत जीवन दर पुरुष की ७६.३ वर्ष तथा महिला की ८३ वर्ष है ।

फ्रांस में महिला का औसत जीवन ८२ वर्ष, स्विट्जरलैंड में महिलाओं की औसत आयु ८१.७ वर्ष है ।

विश्व में पुरुषों की औसत आयु ६३ वर्ष तथा महिलाओं की ६७ वर्ष है । भारत में पुरुषों की औसत आयु ५८ वर्ष तथा स्त्रियों की ५९ वर्ष है । श्रीलंका में पुरुषों की औसत आयु ६८ वर्ष तथा स्त्रियों की ६३ वर्ष है । पाकिस्तान में पुरुषों की औसत आयु ५६ वर्ष तथा स्त्रियों की ५७ वर्ष है । भूटान में पुरुषों की औसत आयु ४६ वर्ष तथा स्त्रियों की ४९ वर्ष है । अफगानिस्तान में पुरुषों की औसत आयु ४१ वर्ष तथा स्त्रियों की ४२ वर्ष है ।

— लक्ष्मी सोनी

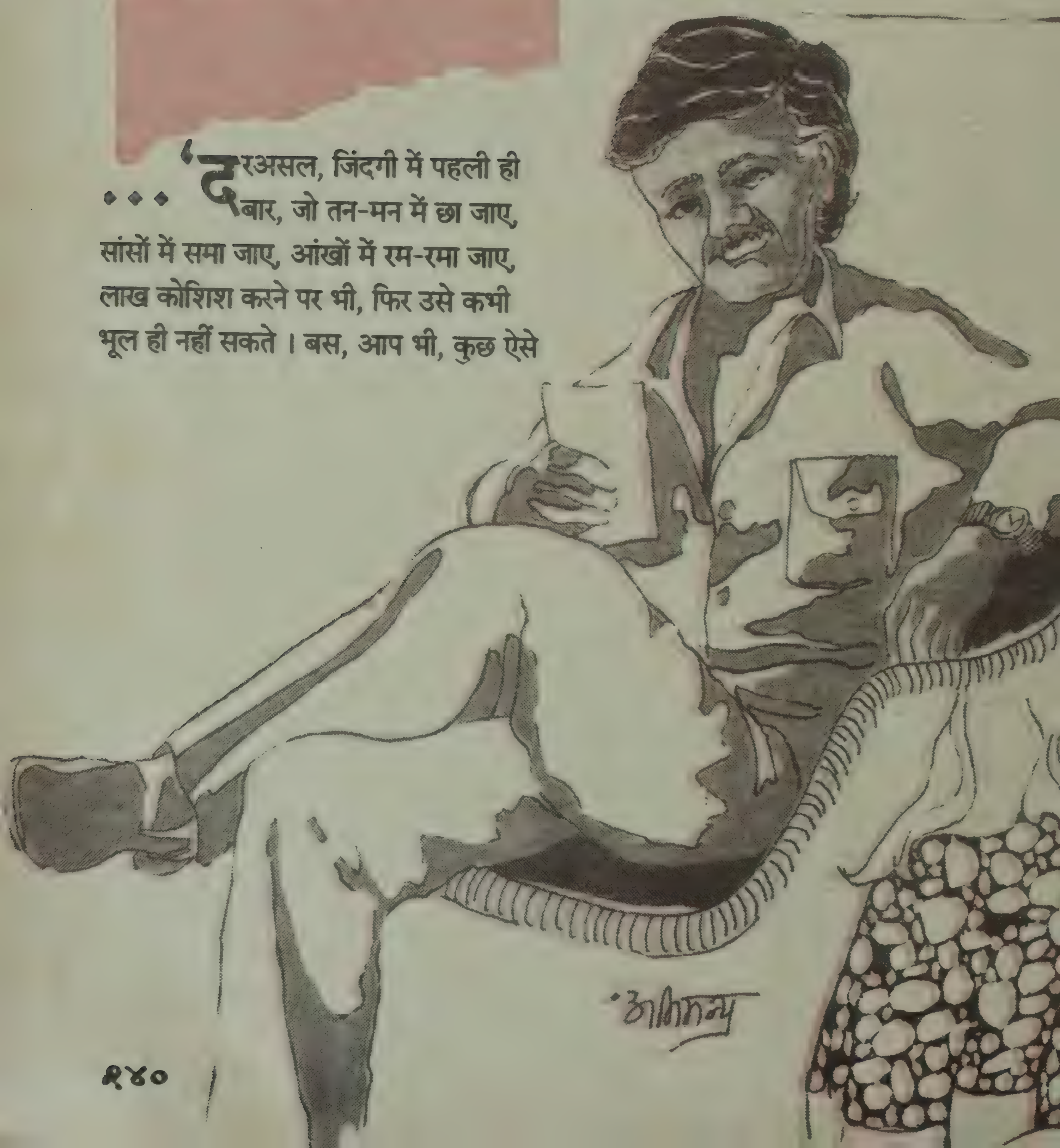
कहानी

वापसी

• डॉ. हरिदत्त भट्ट 'शैलेश'

• • • 'दरअसल, जिंदगी में पहली ही बार, जो तन-मन में छा जाए, सांसों में समा जाए, आंखों में रम-रमा जाए, लाख कोशिश करने पर भी, फिर उसे कभी भूल ही नहीं सकते। बस, आप भी, कुछ ऐसे ही, दिल की धड़कनों में, रस-बस गये कि जब-तब, आपकी महकती यादें, प्राणों में हलचल-सी मचा देती हैं। अंग-अंग में, अगन-सी लगा देती हैं। रंध्र-रंध्र में तूफान-सा खड़ा कर देती हैं...'

पत्र की कुछ ही पंक्तियां पढ़कर, मैं सहसा सकपका-सा गया। आंखें अनायास डबडबा गयीं। स्मृतियां छलछला गयीं। सालों के



पत्र की कुछ पंक्तियां पढ़कर मैं सहसा सकपका-सा गया । आंखें अनायास डबडबा गयीं, स्मृतियां छलछला गयीं । सालों के अंतराल के बाद आज अचानक, उसका प्रेम-पत्र पाकर मेरा रोम-रोम रोमांचित हो गया । अंतर्मन छटपटा-सा गया । न जाने क्यों, कैसे वह यों ही मेरे जीवन में आयी और सब कुछ हमेशा-हमेशा के लिए गड़बड़ा गयी । एक प्रकार से सब उलट-पलट गयी ।

अंतराल के बाद, आज अचानक, उसका प्रेम-पत्र पाकर, मेरा रोम-रोम रोमांचित हो गया । अंतर्मन छटपटा-सा गया । न-जाने क्यों, कैसे, वह यों ही, मेरे जीवन में आयी और सब-कुछ हमेशा-हमेशा के लिए गड़बड़ा गयी । एक प्रकार से, सब उलट-पलट गयी ।

शेफाली, हां, शेफाली, तुमने ही तो, मेरी



जिंदगी के सारे ताने-बाने, बातों-ही-बातों में, तितर-बितर कर दिये । मेरे हंसते-मुसकराते रंगीन इंद्रधनुषी सपनों पर प्रश्न-चिह्न लगा दिये ! मेरे उमड़ते-घुमड़ते-लरजते अरमानों, पर तड़ातड़ बिजलियां गिरा दीं !

भला, वह दिन तुम कभी, जिंदगी में भूल सकोगी, जब तुम बिलकुल सुध-बुध खो बैठी और एकदम मुझसे लिपट गयी । तुम पर न जाने, एकाएक, कैसा भूत सवार हुआ कि तुम जोर-जोर से मुझे चूमने लगी और मैं हक्का-बक्का, जैसे आसमान से जमीन पर गिर पड़ा । फिर आव-देखा-न ताव, तड़ाक-तड़ाक तमाचे जड़ता रहा तुम्हारे कोमल-कोमल गालों पर । और तुम्हारे प्यारे पिता, दूर से ही, अपनी आंखों से, यह तमाशा देखकर कैसे एकदम जल-भुनकर आग-बबूला हो गये । फनफनाते हुए आपे से बाहर हो गये और उसी वक्त मुझे निकल जाने को कहा । दुबारा घर में कदम रखने पर, जान से मारने तक की धमकी दे डाली और मैं खिसियाया-सा सहमा-सहमा, चुपचाप खिसक गया । वापस अपने कमरे में आने पर, जानती हो, घंटों मैं, अपने को कोसता रहा । धिक्कारता रहा । अपने गालों पर तड़ातड़

चांटे कसता रहा, लेकिन जो बात होनी थी, वह तो होकर ही रह गयी। मुझे अपने से इतनी ग्लानि हुई, ऐसी नफरत हुई कि जैसे मुझे चुल्लूभर पानी में डूब जाना चाहिए था। वैसे तो, तुम खूब जानती हो मैंने तो कभी कुछ भी नहीं किया था। महज तुम्हें बचाने के लिए ही चुप रहा। और उस वक्त मैं कर ही क्या सकता था ? तुम्हीं बताओ।

× × × ×

वैसे, कभी-कभी आदमी के दिल के अंदर क्या होता है और बाहर दिखाने के लिए, वह कैसे-कैसे स्वांग रचता है। कितने-कितने मुखौटे लगाता है, लेकिन लगता है तुम्हें शायद किसी प्रकार, मेरे अंतर्मन की भनक मिल गयी थी। इसीलिए तो, तुम जान-बूझकर, बेधड़क ऐसी हरकत कर बैठी और मुझ पर तो मालूम ही है, उन दिनों पढ़ाने की झक सवार थी। सच कहता हूं शेफाली, मन तो मेरा भी, जब तब, तुमसे लिपटने के लिए ललकता रहता। तुम्हें पाने के लिए मचलता रहता। तुम्हें अपनी बांहों में भरने के लिए तरसता रहा, तुम्हें चूमने के लिए छटपटाता रहता, लेकिन मन जो चाहता है क्या वह, सब कर पाता है। दरअसल, हम अपनी-अपनी सीमाओं में, अपनी-अपनी परिस्थितियों में, यों कहिए, अपने-अपने बुने-बुनाये मकड़-जालों में, इस कदर बंधे-बंधे, जकड़े-जकड़े-से हैं कि अपनी इच्छानुसार तो, कभी कुछ कर ही नहीं पाते। और वैसे भी, उन दिनों, तुम्हारा और मेरा रिश्ता भी तो कुछ और ही तरह का था। कैसे मैं यों ही फिसल पड़ता। ऊपर से मर्यादा का प्रश्न भी

तो, जब-तब, मुंह-बाये सामने खड़ा रह

वैसे, तुम्हारी चहकती-महकती चुल
मीठी-मीठी फुलझड़ियां, शरारतभरी छो
छेड़खानियां, नित नयी-नयी मन-मोहिनी
रूप-छवियां, रंग-रंगीली रसीली
अंग-झलकियां, मुल-मुल मुसकराती म
भाव-भंगिमाएं, और न जाने कितनी-वि
कैसी-कैसी कारिस्तानियां तो, बारहवीं क
चार विषयों में डिस्टिंकशन आने पर ही श
गयी थीं। कभी तुम, मेज से बिलकुल स
अपने उभरते उरोजों का उफनता उभार खु
प्रदर्शित करती तो कभी मेज के नीचे से अ
टांगें मेरी टांगों से अड़ाकर, सारे शरीर में
सनसनाहट-भरी सरसराहट-सी फैला देत
कभी काफी देर तक, एकटक, मेरे चेहरे
निहारती रहती तो कभी अंदर-ही-अंदर, अ
बवंडर-भरी छटपटाहट से
मचलती-तिलमिलाती-सी रहती।

और यह सब मैं अंदर-ही-अंदर, चुप
महसूस करता रहता। मन मसोसकर
कसमसाता रह जाता। भीतर-ही-भीतर ए
भयंकर ज्वालामुखी भभकता रहता, जिस
लपलपाती लपटों में झुलसता रहता। बि
कुछ जताए, 'ननु-नच' किये सब सहता र
दिल में हमेशा एक झिझक या हिचक-सी
रहती। इसीलिए तुम्हारी उत्तेजक हरकतों
मैंने, कभी किसी प्रकार की, कोई तूल नह
कोई बढ़ावा नहीं दिया। अपनी तरफ से,
भी, थोड़ी-सी भी ढील नहीं दिखायी। ब
मनोयोग से तुम्हें रोज पढ़ाता और फिर यों
जैसे कुछ हुआ ही न हो, मुसकराता खिस
जाता।

× × × ×



आई. सी. एस. ई. में, मतलब, दसवीं में तुम्हारे बहुत अच्छे अंक नहीं आये थे। कम-से-कम, आई.एस.सी.— बारहवीं में तो, अस्सी से ऊपर ही नंबर आने चाहिए। इसीलिए तुम्हारे पिता ने अपने पड़ोसी से अच्छे ट्यूटर ढूंढ़ने की तजबीज की थी, जो तुम्हें विज्ञान और गणित पढ़ा सके, क्योंकि आजकल कम नंबरवालों को कॉलेज में एडमिशन मिलने में बहुत बड़ी दिक्कत होती है। मैं उन दिनों तुम्हारे पड़ोसी द्वारा, अपने ही घर पर ही, चलाये गये कोचिंग इंस्टिट्यूट में पढ़ाता था। एम.एस.सी. कर रहा था। वैसे, शुरू से ही, मैं अपने ही बलबूते पर, जैसे-तैसे, अपनी गाड़ी खींचता चला आया। बचपन में ही, सौतली मां के दुर्व्यवहार और उत्पीड़न से तंग आकर, मैं पहाड़ छोड़कर शहर पहुंच गया था। तब कितने-कितने धक्के-मुक्के खाये। कैसे-कैसे पापड़ बेले। कैसी-कैसी मुसीबतें झेलीं। कितनी-कितनी कठिनाइयों का सामना किया। कैसे दर-दर की ठोकरें खायीं। किधर-किधर भटका। कैसे-कैसे दिन काटे। ऊपरवाला ही जानता है।

परदेस में, भला, कौन किसको घास डालता है। सभी को अपनी-अपनी लगी रहती है। अपनी-अपनी जान के लाले पड़े रहते हैं। कोई किसी की परवाह ही नहीं करता। यों कहिए कोई किसी को पहचानता ही नहीं। बस, सुबह से लेकर, देर रात तक, भगदड़ मची रहती है। सब भागे जा रहे हैं। किसी को किसी से बतियाने की फुरसत ही नहीं। किसी को किसी दूसरे का कोई खयाल ही नहीं। सब अपने-अपने दायरों में सिमटे हुए। अपनी-अपनी उलझनों में उलझे हुए। अपने-अपने ऊहापोहों में फंसे हुए। हां, ऐसे माहौल में बस, जब-तब, रह-रहकर, पहाड़ों की याद आती। तब भीतर-ही-भीतर एक उमड़-घुमड़-सी मच जाती। दिल के टुकड़े-टुकड़े-से हो जाते। आंखें छलछला जातीं। वहां तो जब कभी, घर में ठीक से खाना

नहीं मिलता तो जंगल में जी भरकर लाल-लाल पक्के-पक्के काफल खाते । ऊंचाइयों पर रीछों का डर होते हुए भी, खूब छक-छककर भमोरे खाते । जंगलों में गाय-बकरियां चराते हुए ढेर-सारे हींसर-किनगौड़-घिंगारु डट-डटकर डकार जाते और फिर बांज की जड़ों का मीठा-मीठा ठंडा-ठंडा पानी पीकर मदमस्त हो जाते । बस, बार-बार, पहाड़ों की याद सताती रहती और तब मन एकदम उदास-उदास, दुखी-दुखी-सा हो जाता । किसी भी काम पर दिल नहीं लगता । फुर्र से वहीं उड़ने का जी करता, लेकिन फिर, एकाएक पढ़ाई का ध्यान आता तो जैसे-तैसे अपने को संभालता । इस प्रकार पढ़ाई के साथ-साथ, छोटे-मोटे काम भी करता गया और जैसे-तैसे, रात-दिन एक कर, अपनी पढ़ाई भी करता गया । कॉलेज के बाद हरदम पढ़ाने के ही चक्कर में उलझा रहता ।

× × × ×

दो साल तक तो, मतलब, ग्यारहवीं और बारहवीं में, तुमने मन लगाकर पढ़ाई की । जमकर कड़ी मेहनत की । डटकर काम किया । और मैंने भी तुम्हें पढ़ाने में कभी कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी । घंटों खुद तैयारी कर, तब तुम्हें बड़े मनोयोग से पढ़ाता । उसी का नतीजा था कि आई.एस.सी. में तुमने, एक प्रकार से, सबके छक्के छुड़ा दिये । चार विषयों में डिस्टिंकशन— नब्बे से भी ऊपर नंबर । सचमुच तुमने कमाल कर दिखाया ।

तुम्हारे प्यारे पिताजी तब कितने गद्‌गद् हुए थे ? कितने प्रसन्न । कितनी-कितनी मिठाइयां बांटी थी उन्होंने ? कितने-कितने कीमती उपहार दिये थे तुम्हें ? और मुझे भी तो एक बहुत ब बढ़िया महंगा सूट दिया था । साथ में ड्राईफ्रू का एक बहुत बड़ा पैकेट भी । कैसे-कैसे मी शब्दों में, कितनी-कितनी बार मेरे प्रति हार्दिक आभार प्रकट किया था और तुम्हें फिर से बी.एस -सी. में भी पढ़ाने के लिए जोरदार निवेदन किया था । ट्यूशन फीस भी तिगुनी दी थी । यहां तक कि अपने ही बंगले में रहने के लिए जगह भी देने लगे थे । मैंने ही तब उ स्वीकार नहीं किया था, क्योंकि मैं जिन लोगों यहां रहता था, वे बहुत ही भले थे । मुझे अ बेटे के समान मानते थे । वैसे भी, मुझसे नाममात्र के लिए किराया लेते थे ।

× × × ×

और बी.एस.सी. में कदम रखते ही तुम एकाएक डगमगा-सी गयी । तुम पर, न-जाने कैसे, एकदम पर-से लग गये । जब-तब तुम जान-बूझकर पढ़ाई के वक्त, इधर-उधर के मजेदार किस्से छेड़ देती । कहां-कहां की हांक लग जातीं । पढ़ाई पर तो अब बिलकुल ध्यान नहीं देती । बस, किसी-न-किसी बहाने, कोई-न-कोई ऊल-जलूल शरारत । और मैं सब समझकर भी अनजान-सा बना रहता ।

वैसे भी, बचपन के बने संस्कार और कूट-कूटकर भरी कर्तव्य-भावना, आड़े खड़ी जाती और मैं अपने को एकदम रोक देता । दूसरे, पहाड़ी परिवेश में पला । भला, कैसे डगमगाने का साहस करता, मगर तुम पर तो, एक ओर, चढ़ती-उफनती-फरफराती जवानी जानलेवा नशा, दूसरी तरफ मदमाती मुहब्बत का फितूर सवार । जब-तब तुम अपने मनोभ

ताने के लिए कुछ-न-कुछ छेड़खानियां करती
रहती और मैं हर बार तुम्हारे खुले इशारों को,
ों ही, हवा में उड़ा देता । मन-ही-मन
ोचता । कहां तुम और कहां मैं ? कहां तुम्हारे
ाठ-बाट । और कहां अपने फटेहाल । कहीं
ोई तालमेल ही नहीं ? अपना न कोई आगे
ौर न कोई पीछे । न कोई ठौर-ठिकाना ।
ैसे-तैसे ट्यूशन और छोटे-मोटे काम कर बड़ी
ुश्किल से एम.एस.सी कर पाया था । बीच में
ई जगह अर्जियां भी भेजीं पर कहीं बात ही
हीं बनी । कहीं हजारों देने की बात तो कहीं
ठता सिफारिश और पहुंच का सवाल । झक
ारकर कुछ दिनों के लिए एक स्कूल में चिपक
या था, जहां लगातार कोल्हू के बैल की तरह,
टने पर भी, गुजारेभर के लिए थोड़ा-बहुत
ल जाता था । लेकिन उस दिन, तुमने बिना
छ सोचे-समझे, बिना आगे-पीछे देखे,
काएक, जो उदंड-भरा कांड खड़ा किया,
ससे सब गुड़-गोबर हो गया । सारे
कये-कराये पर पानी फिर गया । यों समझो,
ब एकदम चौपट हो गया । तुम्हारे हंगामे से
ूशन तो बंद होनी ही थी, मुझे भी, झक
रकर, तुम्हारा शहर छोड़ना पड़ा । मेरे लिए
ोई और चारा ही न था, क्योंकि ऐसी हालत में,
किसी भी कीमत पर, वहां ठहर ही नहीं
कता था । मेरे लिए फिर नये सिरे से, वही
टकन, वही दर-दर की ठोकरों का सिलसिला
ुरू ।

तुम्हारा क्या ? ऊंचे खानदान की इकलौती
टी । बड़े नाज-नखरोंवाली । बड़े लाड़-प्यार
पली । सबकी दुलारी, और बाप को तो
पनी जान से भी प्यारी । वैसे, तुम्हारे पिता ने
भी तो बिलकुल सही कदम उठाया, क्योंकि वह
तुम्हारा ब्याह किसी बड़े संपन्न परिवार में ही
करना चाहते थे । मेरी हैसियत ही क्या थी ।
वैसे भी, कुमाऊंनी ब्राह्मण, भला किसी दूसरी
जाति के लड़के से कैसे तुम्हारा रिश्ता करने की
हिम्मत करते । वैसे, भले ही पूरी जिंदगी कुमाऊं
से बाहर ही बीती हो, लेकिन शादी-ब्याह के
मामले में भला, बिरादरी से बाहर कैसे जाते ?

× × × ×

और मुद्दत के बाद जब एकाएक प्रेम से
लबालब भरा तुम्हारा पत्र मिला, तो मैं बिलकुल
हक्का-बक्का-सा रह गया । विश्वास ही नहीं हुआ
कि तुम अब तलक भी मेरे इंतजार की घड़ियां
गिन रही हो । दरअसल, तुम्हारा शहर छोड़ने के
बाद कहां-कहां भटका । कहां-कहां की खाक
छानी । कितने-कितने दफ़्तरों के दरवाजे
खटखटाये— कहीं कोई हिसाब ही नहीं । लंबी
भटकन के बाद आखिर में, जैसे-तैसे, एक
विज्ञान-पत्रिका का संपादक बन गया ।
कविताएं और कहानियां तो पहले से ही लिखता
था । अब विज्ञान पर भी लिखने लगा । पाठकों
के ढेर-सारे प्यारे-प्यारे पत्र प्राप्त होने लगे और
अब तुम्हारा पत्र पाकर तो मैं एकदम सातवें
आसमान में उड़ने लगा । तुमने अपने लंबे पत्र
में कितनी-कितनी बातें लिखी हैं, लेकिन तुम्हारे
पत्र की अंतिम पंक्तियों ने तो मुझे एकदम
झकझोर दिया । हिला दिया । ... 'आपके चले
जाने के बाद आपको ढूंढ़ने की लाख कोशिशें
कीं, किंतु आप कहां मिलते । आपका कहीं
कोई अता-पता तो था ही नहीं । उस हादसे के
बाद पिताजी ने मुझे मनाने की हर तरह से

कोशिश की । रोज कुछ-न-कुछ करते ही रहते, लेकिन मैं हमेशा ही उदास्-उदास, रूठी-रूठी-सी चुपचाप रहने लगी । बस, चुपचाप अपने में ही सिमटी-सिमटी, खोयी-खोयी-सी सिसकती रहती । पिताजी बेहद परेशान-से रहने लगे । मेरे ब्याह के बारे में जब कभी बातें करते, मैं रोने लग जाती । कइयों को घर पर भी बुलाया, लेकिन मैं कुछ बोलती ही न थी । बस, इसी से उन्हें भयंकर सदमा पहुंचा और फिर अचानक जानलेवा दिल का दौरा । पिताजी की अचानक मौत से मैं कहीं की न रही । मां तो, आपको पता ही है; बचपन में ही किसी दुर्घटना का शिकार हो गयी थी । ... आपकी तलाश में भी फिर यों ही भटकती रही । हर तरफ से निराशा-ही-निराशा । और उस दिन विज्ञान-पत्रिका में आपकी कहानी के साथ-साथ आपका फोटो देखा तो मैं खुशी से नाच उठी... वैसे, मुझे उन्हीं दिनों, एक प्रकार से, पूरा विश्वास हो गया था कि आप भी मुझे चाहते हैं । प्यार करते हैं । भले ही, अपनी मजबूरी की वजह से आप कुछ कह नहीं पाते

और फिर तो उस दिन की मेरी बचकानी ह से सारी बात ही बिगड़ गयी... मैं आपकी हमेशा-हमेशा आपकी रहूंगी । अगर आप अब भी चाहते हैं तो पत्र पाते ही अपने श अपने घर चले आइए । मैं पल-पल आप प्रतीक्षा में आपकी बाट जोह रही हूं । आप बिना, हर पल, बिना पानी की मछली की त तड़फती रहती हूं । मेरे पास शब्द ही नहीं है मैं अपना हृदय खोल सकूं । आपकी ही ये पंक्तियां...

— **'कितने सावन बरसे तबसे, पतझर झरे ज कितने,**
पलकों के पंख मगर, अब तलक थके नहीं ।'

... रह-रहकर जब-तब अंतर्मन में हलचल मचा देती हैं...

× × × ×

पूरा पत्र पढ़कर, काफी देर तक, मैं यों उड़ा-उड़ा, चुपचाप, पड़ा रहा किंतु फिर उस रात, उसी पुराने शहर को जानेवाली रेल पर एकाएक, यंत्रवत् सवार हो गया ।

— शैल शिखर,

डेनमार्क में प्रचलित एक मान्यता के अनुसार घोड़े की नाल को घर की दीवार पर ठोकने से भाग्य साथ नहीं छोड़ता है ।

बहरहाल, भौतिकी का नोबेल पुरस्कार प्राप्त करनेवाले प्रसिद्ध वैज्ञानिक नील्स बोर को मिलने आये एक मित्र को यह देखकर अचंभा हुआ कि उनके घर की दीवार पर भी घोड़े की नाल ठुकी थी । घर के अंदर पहुंचकर उन्होंने बोर से कहा, "मुझे नहीं लगता कि तुम घोड़े की नाल से जुड़े अंधविश्वास में यकीन करते हो ।"

"कतई नहीं" बोर चहकते हुए बोले, "किंतु सुना यही है कि इससे फायदा होता है ।"

— सुभाष लखेड़ा

अपराध की दुनिया के 'शहंशाह'

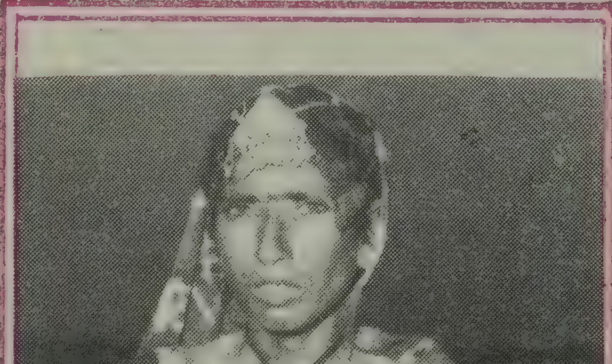
● सुमन आदित्य

देश में अलग-अलग ठौर-ठिकानों पर बसे 'कंजर' अभी भी अपराधी दुनिया के 'शहंशाह' माने जाते हैं। बदलते वक्त के परिवेश में इन्होंने नये तौर-तरीके जरूर ढूंढ़ निकाले हैं, पर अपराध के अपने मूल पेशे को यह आज तक नहीं छोड़ पाये हैं। सरकार ने कई कंजर सुधार योजनाएं चलायीं और उसके मुताबिक इन्हें इज्जतभरी जिंदगी जीने की सीख दी गयी, मगर यह आज भी जहां के तहां हैं। इनकी अपनी अलग परंपराएं हैं, अलग रीति-रिवाज हैं और यहां तक कि अलग ही अपराध करने की प्रवृत्ति हैं।

चोरी और नकबजनी के अपराध में अगुवा कंजर-जाति के लोग अपनी अलग-थलग जिंदगी जीने में यकीन करते हैं। इतिहास में यद्यपि इनका कहीं विशेष विवरण नहीं आया है, फिर भी इनके रंग-रूप को देखकर लगता है कि यह मध्य एशिया के आर्यों की संतान हैं। राजस्थान में यह जाति सवाई माधोपुर, कोटा, बूंदी व झालावाड़ जिलों में पायी जाती है। वैसे यह देश के विभिन्न राज्यों में फैले हुए हैं। अपराध-प्रवृत्ति के कारण कंजर जाति का कहीं एक ठाम-ठिकाना नहीं रहा है।

सदियां गुजर जाने के बाद भी इनकी आदत वही है। देश के कई पुलिस थानों में इन्हें आज भी रोज जाकर अपनी हाजरी देनी पड़ती है। पुलिस इन पर खास निगाह रखती है, क्योंकि इनका भरोसा नहीं है कि यह कब क्या करामात दिखा जाएं। पुलिस के लिए सिरदर्द बनी यह कौम परंपरागत तरीके से करती चली आ रही प्रवृत्तियों को बदलने के लिए किसी भी हद तक तैयार नहीं है। कहीं यह वैश्यावृत्ति से जुड़कर देह-व्यापार करती हैं, तो कहीं चोरी व लूटपाट से पेट पालती हैं। इस जाति में बहुत कम लोग हैं जो खेती और नाच-गाकर अपना गुजारा करते हैं।

कंजर जाति ने कहीं पिंडारियों की मदद कर उनकी फौज को मिली सूचनाओं के जरिये



चोरी और नकबजनी के अपराध में अगुवा कंजर-जाति के लोग अपनी अलग-थलग जिंदगी जीने में यकीन करते हैं । इतिहास में यद्यपि इनका कहीं विशेष विवरण नहीं आया है, फिर भी इनके रंग-रूप को देखकर लगता है कि यह मध्य-एशिया के आर्यों की संतान हैं । राजस्थान में यह जाति सवाई माधोपुरा, कोटा, बूंदी व झालावाड़ जिलों में पायी जाती है ।

रजवाड़ों में भारी लूटपाट व आगजनी की, तो कहीं हलाकू को साथ देकर लूटपाट का सिलसिला चलाया । इसी वजह से समाज ने इनको हमेशा तिरस्कार की दृष्टि से देखा और इन्हें समाज की नजरों में नीचा और आपराधिक माना गया ।

कंजरों के सामाजिक रीति-रिवाज अत्यंत पेचीदे और कठोर हैं । समाज में सबसे प्रमुख आदमी 'पटेल' होता है और उसे इनकी हर प्रवृत्ति का पता रहता है । यह पटेल से कोई बात नहीं छुपाते और चोरी के माल से उसे भी पटेलाई का हिस्सा देते हैं । पटेल को चोरी करने जाने से लेकर वापसी तक की पूरी खबर होती है । वक्त-जरूरत पकड़े जाने पर पटेल ही उनकी मदद करता है । राजनेताओं व पुलिसवालों से संबंध बनाना पटेल की जिम्मेदारी होती है ।

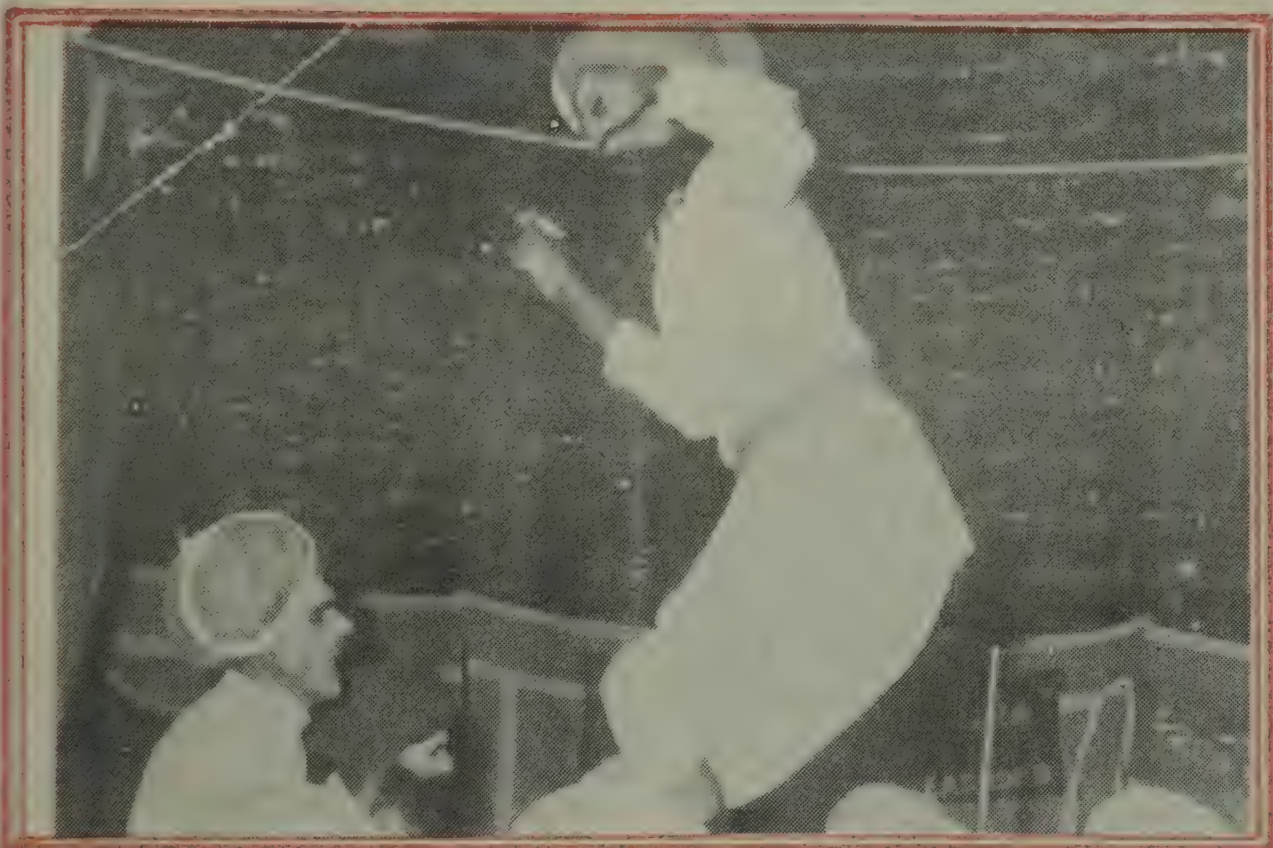
इनके समाज द्वारा दी गयी सजा अदालत की सजा से भी कठोर होती है । सजा का निर्धारण अपराध के हिसाब से किया जाता है । सगाई-संबंध अपने-आप तय नहीं होते हैं । यह जिम्मा बुजुर्गों पर होता है । बहुधा कम उम्र में सगाई का इनमें रिवाज है और एक शराब की बोतल व मुरगे में सगाई पक्की हो जाती है । इनके मकानों में किवाड़ नहीं होते । यह कभी फूस और कभी खपरैल से अपने मकान के दरवाजों को ढकते हैं । मकानों में इस बात पूरी व्यवस्था रहती है कि मौका पड़ने पर य फूस हटाकर भाग छूटें । दबिश पड़ने पर मकानों पर बूढ़ी डोकरियां व वृद्धजन मिल हैं । जवान कंजर व लड़कियां भाग छुटती यह हमेशा सतर्क रहते हैं ।

शादी के वक्त पाणिग्रहण संस्कार के लि यह पंडित को नहीं बुलाते । भुआ फेरे डल हैं । इनमें बला की एकता है । एक कंजर आफत आने पर सब उसकी मदद करते हैं पंचायत के नियम और कानून-कायदे सब मानने पड़ते हैं । उसकी कोई अपील नहीं है । चोरी के वक्त यदि इनका कोई आदमी भी जाए या घायल हो जाए तो यह उसे उठ लाने में अपनी जान भी दांव पर लगा देते यहां तक कि मुठभेड़ में मरनेवाले का सर काटकर ले आते हैं, ताकि उसकी शिनाख्त हो सके । पकड़े जाने या मर जाने पर पटेल और पंचायत पूरी जिंदगी उसके परिजनों व संरक्षण देती हैं ।

परंपरागत एकता ने इस जाति के धंधों सुरक्षित रखा हुआ है । पकड़े जाने पर भी आखिरी दम तक यह अपने दूसरे साथियों भेद नहीं देते हैं मुखबिर द्वारा मुखबिरी ह

पर कंजर को सजा मिले, तो जेल बैठे कंजर के परिवार को उसके सजा मुक्त होने तक दो रुपया रोजाना मिलता है । कभी यह रकम पंचायत और पटेल की पहल पर बढ़ा दी जाती है । कंजर को पकड़े जाने पर पुलिस की मार के अनुपात में अपनी जाति में भी जुरमाना भरना पड़ता है । यह उसकी कमजोर नाकामयाब वारदात मानी जाती है ।

आपसी झगड़े और विवाद में सच जानने के लिए पटेल अपने पास रखे 'हाकिम राजा का प्याला' पर हाथ रखवाता है, ठीक वैसे ही जैसे अदालत में मुसलिम से कुरान व हिंदू से गीता पर हाथ रखवाया जाता है।कांसे के इस प्याले में क्या-क्या रखा जाता है, यह कोई नहीं जानता । कंजर जाति के लोग मूठ, भूत, चुड़ैल, टोटकियों में भारी विश्वास करते हैं और पूजा-अर्चना में इनका काफी विश्वास है । यह खड़ी चौथ का व्रत रखते हैं और काली, बीजासन, चौथमाता, हनुमानजी को अपना हिमायती देव मानते हैं ।



कंजर बस्ती में माताजी का छोटा-सा चबूतरा बना होता है । शादी-विवाह, उत्सवों पर दिन में तोरण मारने से पहले माताजी के चबूतरे पर ढोक दी जाती हैं । जब कंजर बालाएं नाचने के लिए बाहर जाती हैं तो वह हनुमानजी पर नारियल व माताजी के प्रसाद चढ़ाने की मनौती करके जाती हैं । बीमारी में भी इन्हें दवा से ज्यादा इन देवताओं पर विश्वास है । माताजी से पाती मांगने की परंपरा इनमें प्रचलित है । कृष्ण-पक्ष की चौथ के दिन कठोर तपस्या करके माताजी को प्रसन्न किया जाता है और माताजी पर पीले फूल कनीर के चढ़ाते हैं । कभी फूल हवा से उछलकर गिर पड़े तो इसे माताजी का आशीर्वाद समझकर वह झोली में रख लेते हैं ।

भूत-चुड़ैलों पर भारी विश्वास मानते हुए भी कंजर जाति के लोग कृष्ण-पक्ष की भयावनी काली रात में चोरी करने जाते हैं। अंधियारी रातें इन्हें ज्यादा पसंद हैं। सरदी इनके चोरी करने का मुख्य मौसम है, वैसे पूरे बारह महीने ही इनके अपने हैं। चोरी करने जाने से पहले यह शगुन देखते हैं। खांसी के रोगी, कमजोर व बीमार कंजर को यह चोरी करने नहीं ले जाते हैं। ये कच्छा, बनियान, उघाड़े बदन, काले और रंगीन छापेदार कपड़े पहनकर चोरी करने जाते हैं। मुरगा, तीतर, गाय रंभाने, बकरी व मोर की आवाज बोलकर यह अंधेरी रात में बिछुड़े अपने साथियों को इकट्ठा होने का संकेत देते हैं।

जिस घर में चोरी करते हैं, वहां यह किसी भी वस्तु को छोड़ना अपनी शान के खिलाफ अथवा चोरी करने के नियम के खिलाफ समझते हैं। इन्हीं कारणों से पुलिस कंजरों की चोरी को देखते ही भांप लेती है। लूट का माल कहां रखते हैं किसी को पता नहीं। घर में तो कुछ दिखलायी देता नहीं है। माल-कपड़े, जेवर, नकदी चोरी करने के चार-छह माह बाद यह निकालते हैं। अधिकतर माल जमीन में गाड़ देते हैं, जिसे वक्त पड़ने पर निकालते हैं।

कई बार यह गड़े माल को भूल जाते हैं। यह माल जब खेतों में कराड़ी में किसी को मिलता है तो दफीना मिलने की बात उड़ जाती है। चोरी करने के लिए जाते समय यदि कोई रास्ते में टोक दे तो यह उसको सबसे बड़ा अपशकुन मानते हैं। यदि पीछे और दाहिनी ओर चोरी करते समय मुरगा बांग दे दे, तो यह अच्छा शकुन होता है। शेर का दहाड़ना व गाय के रंभाने को भी यह शुभ संकेत मानते हैं।

राहजनी करना भी इनकी आदत में शुमार है। राहगीर को लूटते समय यह तनिक भी हंसते नहीं हैं। राहजनी में यह आदमी को बी[ड़ी] पिलाने के नाम से बुलाकर बैठाते हैं और फि[र] उससे बीड़ी मांगते हैं। बस, इसी वक्त यह प[ता] लगा लेते हैं कि इस आदमी के पास क्या-क्या है? फिर तो जाने के लिए उत्सुक व्यक्ति से कहते हैं— 'जो भी है निकाल दो।' पूरा माल प्राप्त करके भी लूटवाले को दो-चार डंडे लग[ा]ते हैं यह। कहते हैं मेहनत करके कमाते हैं।

मांस खाना, दारू पीना इनमें खूब जमकर चलता है। मछली को मां मानकर यह उसकी पूजा करते हैं। मौत पर यह रोते नहीं, बल्कि मदिरा के जाम छलकाते हैं।

अब जबकि कंजर बालाओं को अपने परंपरागत नृत्यों को अधिक रुचिपूर्ण बताकर देश-विदेश में जाने का मौका मिला है तो इन[के] रहन-सहन व सोच में भी बदलाव आया है। अब तक की उपेक्षित यह जनजाति अब अपराध जगत से हटकर खेती-बाड़ी करने में अग्रसर हुई है, लेकिन राजनीतिक वोट बैंक के रूप में इस जाति को अभी भी परंपरागत बने रहने पर जोर देने की कार्रवाई की जा रही है। बदलते युग में कंजर क्या गुल खिलाएंगे यह वक्त ही बताएगा, लेकिन अभी तो इन्हें समाज घृणा की दृष्टि से देख रहा है और पुलिस के रोजनामचे इनकी पीढ़ियों-दर-पीढ़ियों से वारदातों के पुलंदे बने हुए हैं।

— द्वारा— श्री राम स्वरूप श[र्मा]
सेठजी का चौक, मदार स्ट्री[ट]
बूंदी (राजस्थान)-३२३००[१]

पौराणिक आख्यानों का वैज्ञानिक स्वरूप

• डॉ. सच्चिदानंद झा

सत्य का अन्वेषण करना ही विज्ञान का मूल उद्देश्य है । जो वैज्ञानिक अन्वेषण कर परं सत्य को प्रमाणित कर सके, वही सत्य पर आधारित है । शेष सभी मात्र आधिभौतिक अन्वेषण है । आधिभौतिक विज्ञान सूक्ष्म परमाणु एवं उसके स्वरूप तक का ही अन्वेषण कर पाया है, जबकि परं तत्व विज्ञान ने उससे परे सूक्ष्म स्वरूप आत्मा का बोध कर उसके स्वरूप का वर्णन शास्त्रों में अंकित कर दिया है ।

पौराणिक ग्रंथों में सृष्टि विषयक अन्वेषण है कि नारायण के नाभि से कमल निकला और उस कमल पर ब्रह्मा प्रकट हुए । ब्रह्मा द्वारा संपूर्ण सृष्टि की रचना हुई । शास्त्रों में यह भी अंकित है कि यह पृथ्वी शेषनाग पर स्थित है । आधुनिक विद्वानों को यह सब आख्यान हास्यास्पद लगता है, लेकिन वास्तविकता तो यह है कि यह सब कथन हास्यास्पद नहीं, बल्कि अक्षरशः सत्य है । हालांकि आख्यानों में सुलभ और सटीक शब्दों का ही प्रयोग करने का प्रयास किया गया है, फिर भी संपूर्ण आख्यान सभी के लिए सुस्पष्ट नहीं है, क्योंकि पौराणिक ग्रंथ बहुअर्थक स्वभाव का है ।

जरमनी के ऋतु वैज्ञानिक बेगनर ने १९१२ में पृथ्वी के वर्तमान धरातलीय स्वरूप के वितरण के संबंध में महादेशीय प्रवाह सिद्धांत प्रतिपादित कर संपूर्ण विश्व को एक सुखद आश्चर्य में डाल दिया है । भू-वैज्ञानिकों का मत है कि संपूर्ण पृथ्वी मुख्यतः तीन परतों का एक गोला है । ऊपरी परत जिसे वैज्ञानिकों ने 'सियाल' कहा है, निचली परत 'सीमा' पर स्थित है । 'सीमा' के नीचे 'निफै' नामक गरम और तरल पदार्थ है । स्वयं सीमा भी अर्द्ध तरल या संभाव्य पदार्थ है । बेगनर के मतानुसार कुल महाद्वीपीय खंड कार्वोनिफेरस युग तक जुड़े हुए थे । उस भू-खंड के चारों ओर 'पेंथालासा' नामक सागर था । सियाल द्वारा निर्मित उस भूखंड को बेगनर ने 'पेंजिया' कहा था । वह पेंजिया अधिक घनत्व की सीमा पर तैर रहा था । कार्वोनिफेरस युग में खंडित होने के बाद यह पेंजिया प्रवाहित हुआ । अंगारा और लौरेंशियन शिल्ड तथा गोंडवाना शील्ड के बीच

'टिथीज' सागर का निर्माण हुआ । टिथीज सागर के उत्तर में उत्तरी अमरीका, यूरोप और उत्तरी एशिया महाद्वीपों का निर्माण हुआ तथा दक्षिण में दक्षिणी अमरीका, अंटार्कटिका, ऑस्ट्रेलिया प्रायद्वीप भारत और अफरीका महाद्वीपों का निर्माण हुआ । पेंजिया के किनारे मोड़दार पर्वतों— रॉकी, एंडीज, ग्रेट डिवाइडिंग रेंज आदि की उपस्थिति महाद्वीपीय वहन





सिद्धांत की पुष्टि करती है । आज भी यह मत अनेक समस्याओं का समाधान कर रहा है ।

कमल ही भूमंडल

बेगनर के महाद्वीपीय प्रवाह सिद्धांत के मुख्य अंश की चर्चा पुराण में भी अंकित है । यह एक श्लोक बेगनर के सिद्धांत की पुष्टि करने के साथ-साथ पुराण में वर्णित नाभिकमल के विषय में गोपनीय तथ्य को भी उद्घाटित कर देता है कि यह कमल ही भूमंडल है ।

यान्येतानि तु पद्मस्य केसराणि समन्ततः
असंख्याताः पृथिव्यां तु विश्वे ते धातुपर्वताः

—हरिवंश पुराण

अर्थात पद्म के चारों ओर जो केसर बिखरा है, वही भूमंडल के सारे धातु पर्वत हैं, जिनकी गणना असंभव है । (चित्र-१)

बेगनर के पेंजिया को जब गोलाकार रूप में चित्रित किया जाए (चित्र-२) तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि पेंजिया के चारों ओर पर्वत है । उत्तरी अमरीका का रॉकी, दक्षिणी अमरीका का एंडिज, ऑस्ट्रेलिया का ग्रेड डिवाइडिंग रेंज, अंटार्कटिका का पर्वतीय क्षेत्र, यूरेशिया के उत्तरी-पूर्वी पर्वतीय भाग आदि कमल के केसर के समान ही हैं । पूर्व काल में यूरेशिया का किनारा ऊंचा भू-भाग रहा होगा । जैसे-जैसे पेंजिया टूटकर सीमा पर प्रवाहित होता गया, वैसे-वैसे ये सभी पर्वत एवं उप पर्वत विकसित होते गये ।

पेंजिया अर्थात थलभाग ही पृथ्वी है, जो जल पर कमल के समान पूर्व में स्थित था। इसकी पुष्टि में पुराण में स्पष्टतः वर्णन है—

या तु पद्मासना देवी पृथिवीं तां प्रचक्षते।
ये गर्भसाराङ्कुरतस्तान् दिव्यान् पर्वतान् विदुः।

—हरिवंश पुराण

अर्थात कमल, जो देवी का आसन है, उसे पृथ्वी कहा जाता है। उस कमल के भीतरी भाग में पाषाणमय सुदृढ़ और अंकुर की भांति ऊंचे उठे भाग हैं, उन्हें दिव्य पर्वत कहा जाता है।

बेगनर के सिद्धांत से संबंधित बहुअर्थक पौराणिक आख्यानों का विश्लेषण करने से यह स्पष्ट होता है कि विद्वानों द्वारा जो 'सीमा' शब्द का प्रयोग किया गया है वह 'शेष' और 'निफे' ही नाग है। 'स' से सीमा और स से शेष। इसी तरह 'न' से 'निफे' और 'न' से नाग। 'सियाल' ही सुमेरु है। सियाल से ही पेंजिया बना अर्थात पृथ्वी (थलभाग) बना है। 'प' से पेंजिया और 'प' से पृथ्वी। यह पेंजिया (थलभाग) के केंब्रियन युग तक बिलकुल ही सिमटा-सिमटा गोलाकार सियाल पिंड था। सुमेरु भी आदि काल में एक गोल पिंड रहा होगा। गर्भावस्था में देहस्थ पिंड में जैसे मेरु घुमावदार आकृति में रहता है, ठीक उसी तरह यह सुमेरु भी आदिकाल में गोलाकार रूप में धरातल पर तैर रहा होगा।

सात महाद्वीपों में अंकित

यह पेंजिया मुख्यतः सात महाद्वीपों में विभक्त हुआ। पौराणिक ग्रंथों में भी अंकित है कि —मेरु सप्तद्वीपसमन्वितः (शिव संहिता)। सात द्वीप को धारण करनेवाला सुमेरु जब विभक्त हुआ, तो उससे पूर्वकाल में जम्बू, प्लाक्ष, शाल्मलि, कुश, कौंच, शाक और पुष्कर ये सात महाद्वीपों का निर्माण हुआ। इसकी पुष्टि में देवी भागवत में वर्णन है—'सप्तद्वीपवतीं पृथ्वीं'। यह सात द्वीपवाली पृथ्वी (थलभाग) आदिकाल में सुमेरु था, जिसका अग्रभाग अनेक युगों तक जम्बू द्वीप में सुमेरु पर्वत के रूप में चर्चित रहा।

बेगनर के पेंथालासा के विषय में पुराण में व्याख्या है—

पद्मस्यान्ते कुशं यत्तदेकार्णवजलं महत्।
प्रोक्तास्तेदिक्षु संघाताश्चत्वारोजल सागराः॥

इसका भावार्थ है कि उस कमल के अंत में चारों ओर जो कुश अर्थात जल है, वही अनंत जलराशि है।

इसी अनंत जलराशि को बेगनर ने पेंथलासा कहा है। वर्तमान युग में यह पेंथलासा अनेक महासागरों में विभक्त हो गया है।

नवीन पर्वतों के पूर्व भी अनेक पर्वत बने थे। इन पुराने पर्वतों के विषय में पुराण में वर्णन है—

शैलेः समस्तैर्गहना विषमा मेदिनो भवत्।

अर्थात उन समस्त पर्वतों से अवरुद्ध हुई पृथ्वी गहन एवं विषम हो गयी।

भू-गर्भ वैज्ञानिकों का मत है कि पेंजिया (थलभाग) केंब्रियन युग के पूर्व ऊपर उठ आया था। अर्थात हॉर्स्ट रूप में था। पुराण में भी वर्णन है कि वाराह भगवान ने पृथ्वी को अपने थूथुन पर उठा लिया था। ऐसा अनुमान किया जाता है कि जब थल भाग जल से ऊपर उठता है तो उस नवीन क्षेत्र से दुर्गंध आती है। पुराण में भी वर्णन है कि जब वाराह भगवान ने पृथ्वी को ऊपर उठाया तो उससे दुर्गंध फैलने लगी।

पौराणिक ग्रंथों में सृष्टि विषयक अन्वेषण है कि नारायण के नाभि से कमल निकला और उस कमल पर ब्रह्मा प्रकट हुए । ब्रह्मा द्वारा संपूर्ण सृष्टि की रचना हुई । शास्त्रों में यह भी अंकित है कि यह पृथ्वी शेषनाग पर स्थित है । आधुनिक विद्वानों को यह सब कथन हास्यास्पद लगता है, लेकिन वास्तविकता तो यह है कि यह सब कथन हास्यास्पद नहीं बल्कि अक्षरशः सत्य है ।

कार्वोनिफेरस युग में पेंजिया में दरार हुई थी । पुराण में भी वर्णन है कि पृथ्वी में पूर्व काल में दरार हुई थी—

यदण्डमकरोत पूर्वं देवलोकसिसृक्षया ।
समन्तादष्टधा यानिच्छिद्राणि कृतवांस्तु सः ।

क्षीर सागर का समुद्र मंथन

गोंडवाना और यूरेशियन प्लेट के बीच जो टिथीज सागर का उल्लेख है, वही क्षीर-सागर है । इसी क्षीर-सागर में समुद्र मंथन हुआ था । नदी, पर्वत आदि का निर्माण हुआ था । बेगनर का भी कहना है कि टिथीज सागर से हिमालय का निर्माण दबाव के कारण संपीड़ित होने से हुआ है ।

बेगनर ने महाद्वीप प्रवाह सिद्धांत को वैज्ञानिक आधार देने के लिए यह व्याख्या की थी कि पृथ्वी पर जलवायु परिवर्तन हुए हैं । विषुवत रेखीय क्षेत्र या आर्कटिक क्षेत्र में पाये गये प्रमाणों से यह विदित होता है कि वह जलवायु अब यहां नहीं है, जो पूर्व काल में थी । पुराण में इस जलवायु परिवर्तन का जिक्र है । मन्दार पुष्प जो पारिजात पुष्प से मिलता-जुलता पुष्प था, पूर्वकाल में मन्दार वृक्षों के बागीचों में मिलता था । वही की जलवायु मनोनुकूल थी । अब वह जलवायु वहां नहीं है । फलतः अब मन्दार पुष्प वहां नहीं मिलता है । यह प्रसंग दर्शाता है कि जलवायु का परिवर्तन एक महाद्वीप से दूसरे महाद्वीप में ही नहीं , बल्कि संपूर्ण पृथ्वी पर भी हुआ है । जो जलवायु पूर्व में पृथ्वी पर थी, अब उसमें ह्रास हुआ है ।

१८५५ में जी. एयरी ने भूसंतुलन सिद्धांत के संदर्भ में अपना मत प्रतिपादित किया था । 'रूट हेपोथेसीस' के संबंध में उनका कहना था कि जो भाग जितना ही ऊंचा है, वह उससे कहीं अधिक गहराई तक पृथ्वी में स्थित है । हजारों वर्ष पूर्व रचित पुराण में भी इस तथ्य का संकेत है ।

युगान्त सदृशै रूपैः शैलोच्चलित बंधना ।
जलोत्पीडाकुला स्वेदं धारयंती मुहुर्मुहुः ॥

अर्थात पीड़ित पृथ्वी के पर्वतरूपी बंधन ढीले पड़ने लगे, अतः यह रसातल को जल-राशि में डूबने की आशंका से व्याकुल हो उठी ।

'रूट हेपोथेसीस' का स्पष्ट वर्णन देवी भागवत में भी है—

लोहकीलं यथा काष्ठे तथा ते गिरयः कृताः ।

काष्ठ को स्थिर करने के लिए जैसे लोहे का कील दिया जाता है वैसे ही पृथ्वी को स्थिर

रखने के लिए पर्वत स्थित किये गये ।

भू-संतुलन सिद्धांत के एक प्रमुख कड़ी को स्पष्ट करते हुए पुराण में वर्णन है—

तस्योपरिजलौधस्य महती नौरिव स्थिता ।
विततत्वातु देहस्य न यथौ सम्प्लवं मही ।।

वाराह भगवान द्वारा पूर्वकाल में इस पृथ्वी को अर्थात थलभाग को जल पर इस प्रकार स्थापित किया गया, ताकि वह जल में डूब न जाए ।

धरातल पर स्वाभाविक कंपन

स्पष्ट है कि सीमा— निफे (शेषनाग) पर पेंजिया (पृथ्वी) को इस प्रकार स्थापित किया गया कि संपूर्ण भू-मंडल में भूसंतुलन स्थापित हो गया । जब किसी बाह्य या आंतरिक कारणों से भू-संतुलित धरातल पर आघात होता है, तो धरातल पर स्वभावतः कंपन होने लगता है ।

पौराणिक ग्रंथों में भूकंपन, ज्वालामुखी आदि का भी वर्णन है । शास्त्रों में वर्णन है कि भूकंपन रुक-रुककर भी हो सकता है । पुराण में भूकंप का वर्णन है—

यदा तथा भूश्चलति सशैलवन काननाः ।

ज्वालामुखी का वर्णन है—

सविस्फुलिंग सांगारं सधूममतिदारुणम् ।

इतना ही नहीं ज्वालामुखी सक्रियन से उत्पन्न भूकंप से निदान पाने का भी संकेत है । पुराण में वर्णन है कि जिस स्थान विशेष से धुंआ, गड़गड़ाहट, कंपन आदि यदा-कदा होता रहे, वहां मिट्टी खोदकर अर्थात छिद्र कर सक्रियन समस्या से निदान पाया जा सकता है । छिद्र द्वारा सक्रिय गैस को निकाल देने का संकेत है । यह रहस्य एक राक्षस के कथा प्रसंग से उद्घाटित होता है । भूगोल में जो वर्णन है कि नदियां अपनी दिशा बदलती हैं उसका भी उल्लेख पौराणिक आख्यानों में है—

ऊहुश्च सरितः सर्वाः प्रतिस्रोतो विशाम्पते ।

पौराणिक ग्रंथों में सृष्टि विषयक वर्णन है कि नारायण के संकल्प तरंग से ब्रह्मा प्रकट हुए । उसके बाद ऋत्विज, सूर्य, ग्रह, नक्षत्रादि का प्रादुर्भाव हुआ । इन सब आख्यानों का भी पूर्ण वैज्ञानिक आधार है ।

इस संबंध में लेप्लास, चैम्बरलीन, लिटिल्टन, बनर्जी, वीजसैकर, कवीपर, फेसनकोव, औटो शिमिट आदि ने गैस के घनीभूत होने से ग्रहों, उपग्रहों आदि का निर्माण संबंधी अपना-अपना मत प्रतिपादित किया है । इन सभी मतों में रूस के वैज्ञानिक औटो शिमिट का मत अधिक मान्यता प्राप्त है ।

ब्रह्म का घनीभूत प्रकाश

गीता के चौदहवें अध्याय के सताइसवें श्लोक की व्याख्या में श्रीधर ने गोपनीय तथ्य को उद्घाटित किया है—

यथा घनीभूतः प्रकाश एव सूर्यमंडलं तद्वदित्यर्थः ।

अर्थात जैसे सूर्य घनीभूत प्रकाश है, उसी प्रकार मैं भी ब्रह्म का घनीभूत प्रकाश हूं । स्पष्ट है कि सूर्य मंडल घनीभूत ब्रह्माणु है । ब्रह्माणु के घनीभूत होने से क्रमशः आकाश तत्व, वायु तत्व, अग्नि तत्व, जल तत्व एवं पृथ्वी तत्व का निर्माण होता है ।

आधुनिक विज्ञान भी इस तथ्य तक पहुंच गया है कि दो अनुपात हाइड्रोजन और एक अनुपात ऑक्सीजन को मिलाने से जल बनता है । अर्थात वायु तत्व से जल तत्व बनता है । लेकिन आध्यात्मिक विज्ञान का कहना है कि वायु तत्व से अग्नि तत्व बनता है और तब जल तत्व बनता है । आधुनिक विज्ञान का भी एक

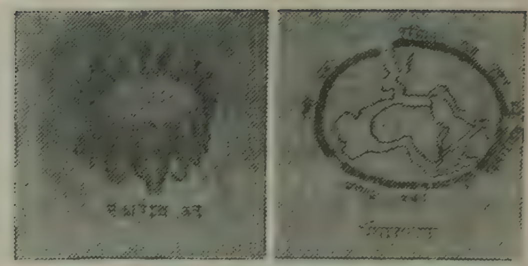
स्पष्ट मत है कि हाइड्रोजन (वायु तत्व) हीलियम में परिवर्तित होकर प्रज्वलित हो जाता है। इतना ही नहीं अधिक ऊंचे तापमान पर हाइड्रोजन के जलने से भारी तत्वों का भी निर्माण होता है।

मुख्यतः आकाश तत्व ब्रह्माणु से आकाश और वायु तत्व ब्रह्माणु से वायु का निर्माण हुआ है। अग्नि तत्व ब्रह्माणु से ही सूर्य एवं तारों का निर्माण हुआ है। इन आकाशीय पिंडों के हाइड्रोजन हीलियम बनकर प्रज्वलित होते रहते हैं। जल तत्व एवं पृथ्वी तत्व ब्रह्माणुओं से ग्रहों और उपग्रहों का निर्माण हुआ है।

देहस्थ पिंड भी मुख्यतः जल तत्व एवं पृथ्वी तत्व ब्रह्माणु से ही बना है। देहस्थ पिंड में आकाश तत्व, वायु तत्व, अग्नि तत्व के साथ-साथ अन्य अष्टधा प्रकृति भी सूक्ष्म रूप में संश्लिष्ट रहती है। इसके बाद पूर्ण प्रकृति प्राप्त पिंड धीरे-धीरे विकसित होता रहता है।

रूसी वैज्ञानिक औटो शिमिट का कहना है कि ब्रह्मांड में कुछ पदाथर निःसृत होते रहते हैं। इन्हीं पदार्थ का सूर्य के निकट संगठित होने से ग्रहों का निर्माण हुआ है। गीता के विश्वरूप दर्शन आख्यान से यह संकेत मिलता है कि ब्रह्म से ब्रह्माणु उत्सर्जित होता रहता है। लंबे अंतराल के बाद यह ब्रह्माणु निरुद्ध होकर इसी ब्रह्म में विसर्जित हो जाता है। इसी ब्रह्माणु के कुछ अंश घनीभूत होकर सूर्य की परिक्रमा करने लगे और संगठित होकर ग्रहों और उपग्रहों के रूप में सृजित हुए।

१९४२ में ए. सी. बनर्जी ने डेल्टा सेफी नामक तारा के विषय में जानकारी प्राप्त कर यह मत प्रकट किया था कि कुछ तारे स्पंदन करते



हैं। प्राणियों में भी स्पंदन क्रिया होती रहती है। इसी तरह पृथ्वी में भी आरोराबोरिएलिस क्षेत्र अर्थात चुंबकीय आंधी क्षेत्र है, जहां सूक्ष्म स्पंदन होता रहता है। वेद, पुराण, उपनिषद आदि के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि ब्रह्म में अपगम क्रिया होती रहती है। यह स्पंदन ब्रह्म में कई कल्पों तक जारी रहेगा। महत्त्वपूर्ण अंतराल के बाद जब अपगम क्रिया निरुद्ध हो जाती है तब भी आंतरिक स्पंदन सूक्ष्म रूप में होता रहता है।

इस समय उत्सर्जन या विसर्जन क्रिया नहीं होती है। इसी निरुद्ध अवस्था के विषय में पौराणिक ग्रंथों में वर्णन है कि नारायण एकार्णव जल में आश्रय लेकर सहसरों अयुत वर्ष तक शयन करते हैं।

अनंत जल-राशि

यह सब आख्यान बहुअर्थक स्वभाव का होते हुए भी अंततः सत्य स्वरूप को ही सुस्पष्ट करता है। एकार्णव जल का अर्थ है अनंत जल-राशि। शेषनाग का दूसरा नाम अनंत है। नारायण भी अनंत कहलाते हैं। इस प्रकार सूक्ष्म से सूक्ष्मतर स्वरूप एकार्णव जल में है का आध्यात्मिक अर्थ हुआ येन-केन-प्रकारेण जल ही जल के अतीतावस्था में है। अष्टधा प्रकृति की अतीतावस्था महाशून्य है। जैसे मेघ में जल है और जल मेघ बनकर जल रूपी हविष्य

बनता है, उसी तरह जल का पुरातन स्वरूप ही सूक्ष्म जल में है । यही महाशून्य अवस्था है । जल की सृष्टि का यहां आध्यात्मिक अर्थ है कारणवारि का वर्षन । आध्यात्म राज्य का पथिक ही यह सब समझ सकता है । ब्रह्मयोनि से ही सृष्टि कार्य प्रारंभ होता है, अतः जल से ही जगत सृष्टि का श्रीगणेश माना गया है ।

जल का दूसरा नाम है 'नार' । पुराण में इसे स्पष्ट किया गया है— 'आपो नारा इति प्रोक्ता' । नारायण से कमल निकला का अर्थ हुआ जल से जल की घनीभूत पृथ्वी निकली । एकार्णव जल से येन-केन-प्रकारेण स्वच्छ जल निकला । फिर उससे थल निकला ।

अनुग्रह करना परमेश्वर का स्वभाव है

इन आख्यानों में नारायण, ब्रह्मा, नाभिकमल, ब्रह्म, सुमेरु, शेषनाग आदि सुलभ और सटीक शब्दों का प्रयोग श्रदेय के प्रति श्रद्धा, प्रदर्शित करते हुए विलक्षण रूप में हुआ है । जिनसे अनुग्रह हो जाता है, उनके प्रति कृतज्ञ हो जाना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है । अनुग्रह करना पर ब्रह्म परमेश्वर का स्वभाव है । अतः कपट रहित होकर संधान करना ही श्रेष्ठतम अन्वेषण है । इतना ही नहीं श्रद्धेय के साथ मैत्री भाव स्थापित कर संधान करने से ही सृष्टि रहस्य का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है ।

यह ब्रह्मांड एवं देहस्थ पिंड एक ही नियम के अधीन हैं । ब्रह्मांड में जो है, वह देह में भी है और जो देह में है वह ब्रह्मांड में भी है । यही सृष्टि रहस्य का परम आश्चर्य है । प्राणियों को जो देह, इंद्रियादि प्राप्त हुई है, वह पार्थिव भूतादि से संबंधित है, जबकि ब्रह्मांड में जो ऐश्वर्य है, वह देवतादि से संबंधित है । देहस्थ पिंड स्थित नागलोक के ऊपर जैसे पृथ्वी तत्व है, उसी तरह ब्रह्मांड स्थित पृथ्वी का आधार शेषनाग है । यह सब गोपनीय तथ्य है । संधान करने पर ही यह सब ठीक-ठीक ज्ञात हो सकता है । एक बीज में जैसे विशाल वृक्ष का रहस्य छिपा रहता है, लगभग उसी तरह का यह सब गोपनीय तथ्य है ।

मन के संकल्प से ही शरीर का सृष्टि विषयक कार्य संपादित होता है । इंद्रियों का संचालक है मन, और मन का संचालक है प्राणं । इसी तरह ब्रह्मा का विराट मन सोम है, जिसका संचालक ब्रह्मा है । नारायण द्वारा ही ब्रह्मा निर्दिष्ट होते हैं । जिस प्रकार सभी भूतादि मन के दिशा-निर्देश पर मनः क्षेत्र के अधिकार में अपने-अपने कार्य को संपादित करते हैं उसी प्रकार सभी ग्रह, नक्षत्रादि सोम मंडल के अधिकार क्षेत्र में ब्रह्मा द्वारा निर्देशित हैं । जिस तरह शरीरस्थ मन इंद्रियों को विषयों की ओर जाने से बचाता है, उसी तरह सोम ब्रह्मांड के. ग्रहों और नक्षत्रों को विकृत होने से बचाता है ।

यह वह सोम नहीं है, जिसे शशि या चंद्रमा कहा जाता है बल्कि इस दृश्यमान चंद्रमा से बहुत दूर सूर्य से भी आगे यह सोम अवस्थित है । कहा जाता है कि आदित्य पथ सुमेरु से भी उर्ध्वदेश में ज्योर्तिमंडल के ऊपर यह सोम स्थित है । इसी सोम मंडल से संपूर्ण ब्रह्मांड आच्छादित है ।

सुमेरु का रहस्य

सोम मंडल के अतिरिक्त ब्रह्म सूत्र से संवेष्टित सुमेरु का भी रहस्यमय प्रभाव इन आकाशीय पिंडों को नियंत्रित करता है । जिस तरह देहस्थ पिंड में मेरुदंड सभी पंचभूतादि को

संवेष्टित करता है, उसी तरह ब्रह्मांड के सुमेरु, ग्रह, नक्षत्रादि को संवेष्टित करता है।

पौराणिक आख्यानों में चार प्रकार के सुमेरु का संकेत मिलता है— (१) देहस्थ मेरु (२) पृथ्वी का सुमेरु (३) सौर मंडल का सुमेरु और (४) ब्रह्मांड का महद् सुमेरु।

देहस्थ मेरु और ब्रह्मांड के महद् सुमेरु की आकृति लंबाकार है, जबकि पृथ्वी का सुमेरु और सौर मंडल के सुमेरु पूर्व में गोलाकार था, जो अब खंडित हो गया है। देहस्थ मेरु और ब्रह्मांड का मदह् सुमेरु भी गर्भावस्था में गोलाकार ही था। सभी सुमेरु मुख्यतः सात खंडों में विभक्त हैं। देहस्थ मेरु मुख्यतः सात खंडों में है। पृथ्वी का सुमेरु भी मुख्यतः सात द्वीपों में विभक्त हो गया है। इसी का अग्रभाग अनेक युगों तक जम्बू द्वीप में सुमेरु पर्वत के नाम से चर्चित रहा। सौरमंडल का सुमेरु सौर भद्र कहलाता है। इसी घनीभूत सौर भद्र क्षेत्र को आधुनिक विद्वान गैस तश्तरी कहते हैं। इसी तश्तरी में ग्रहों और उपग्रहों का निर्माण ब्रह्मांणुओं के घनीभूत होने से हुआ है। ब्रह्मांड का महद् सुमेरु लंबाकार पथ में स्थित है, इसकी परिक्रमा सभी सूर्य करते हैं। इसी के विषय में पौराणिक आख्यानों में कहा गया है—

मेरु प्रदिक्षणां कुर्वन्नित्येव दिवाकरः।

घनीभूत सुमेरु में अनुप्रविष्ट ब्रह्मसूत्र द्वारा संरक्षित सभी आकाशीय पिंड आपसी गुरूत्वाकर्षण, भ्रमणशक्ति एवं अपकेंद्रीय बल के कारण अपने-अपने पथ पर परिभ्रमण एवं परिक्रमण करते रहते हैं।

—कार्यक्रम कार्यान्वयन विभाग,
पुराना सचिवालय, पटना-८०००१

मुंह से बच्चों का जन्म

ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप में मेढ़कों की एक विशेष जाति की मादाएं अपने बच्चों को मुंह से जन्म देती हैं। ये मेंढ़कियां अपने संसेचित अंडों को निगल जाती हैं और फिर उनको आमाशय में सेती हैं। पूर्ण रूप से विकसित होने के बाद मादा इन मेढ़क शिशुओं को अपने मुंह से बाहर निकालती हैं। ये 'मेढ़क शिशु' मुंह से बाहर आते ही फुदकना शुरू कर देते हैं। इस वर्ग की एक मेंढ़की एक साथ छब्बीस बच्चों को पैदा करने की क्षमता रखती है। यूं यह जरूरी नहीं कि आमाशय में विकसित होनेवाले ये सभी बच्चे एक ही दिन मुंह से बाहर आयें। 'मुख प्रसव' की यह प्रक्रिया एक सप्ताह तक भी चल सकती है।

—सुभाष लखेड़ा

प्रेम करना वास्तविकता है !

● रश्मि रमानी

वह उच्चतर संयोग, जिसमें अपनी स्वाभाविक सहज वृत्तियों को आत्मा में लीन किया जा सकता है ! मानवीय पूर्णता की प्राप्ति और व्यक्तित्व का विकास हो सकता है, आज टूटन, संत्रास और अजनबीपन का पर्याय बनता जा रहा है ।

क्या विवाह कभी-कभी बहुत बड़ी भूल साबित होता है ? इतनी बड़ी कि छोटी-छोटी भूलों का अंतहीन सिलसिला आरंभ हो जाता है । यह आज के युग का सत्य है । विवाह की महत्ता को गिराने में हमारी आत्मघाती प्रवृत्तियों और आधुनिक परिवेश की महती भूमिका रही है ।

पागल न होने का मतलब

हममें से अधिकांश लोगों के लिए विवाह केवल दांपत्य, यौन-संतुष्टि, एक अन्य व्यक्ति के साथ रहने की प्रतिज्ञा एवं रुचियों के आदान-प्रदान का साधन मात्र होता है । पर वास्तविकता यह नहीं है, एरिश फ्रॉम के शब्दों में ''आदमी की सबसे बड़ी जरूरत होती है कि वह अपने खालीपन को कैसे भरे ? अपने अकेलेपन की कोठरी से कैसे निकले ? इस उद्देश्य की पूर्ति में निपट असफलता का मतलब है पागल हो जाना... पागल न होने का दूसरा मतलब है किसी से लगाव अनुभव करना, इस एक और इकलौते सवाल के समाधान से साक्षात्कार हर युग और संस्कृति से जुड़े आदमी को करना पड़ा है कि कैसे वह अपने अलगाव से उबरे, कैसे युग्मता पावे, कैसे अपनी वैयक्तिक जिंदगी से परे होकर किसी अन्य से एकात्मकता जोड़ सके । यह सवाल आदिम गुहा मानव से लेकर फैक्टरी में जूझते मजदूर तक के लिए एक रहा है और एक ही तरह की अहमियत रखता है, क्योंकि जिस जमीन से यह सवाल उगता है वह जमीन सबकी एक है ।

प्रेम करना वास्तविकता है

कहा जाता है कि भगवान ने अपने आपको पति और पत्नी के दो रूपों में विभक्त कर दिया । पुरुष अपनी स्त्री के बिना पूर्ण नहीं है । पति और पत्नी मिलकर एक इकाई बनते हैं । पत्नी अर्द्धांगिनी, आधा अंग है, महादेव और पार्वती को लेकर अर्द्धनारीश्वर की कल्पना इसी तथ्य पर आधारित है । पुरुष और स्त्री केवल एक शरीर ही नहीं एक आत्मा है । विवाह एक संस्कार है, एक ऐसा संस्कार जिसके लिए जरूरी नहीं कि पुरुष और स्त्री की रुचियां और दृष्टिकोण एक हो । जरूरी है उनकी एक-दूसरे के प्रति अनुकूलता और समरसता, विवाह का लक्ष्य दो व्यक्तियों का सम्मिलन तो है ही । यह एक ऐसा गंभीर और सुकुमार संयोग है, जो व्यक्ति को पथ-भ्रष्टता से भी बचाता है । प्रेम और मित्रता की अमृत बेल विवाह-संबंध से पुष्पित



पल्लवित होती है, किसी की पत्नी होना एक संयोग मात्र हो सकता है, किंतु प्रेम करना वास्तविकता है और विवाह की सफलता इसी वास्तविकता पर आधारित है ।

हृदय में बैठा शत्रु

आत्म-प्रवंचना में भटकते हुए मानव को निषिद्ध वस्तुएं आकर्षित करती हैं। वासना एक आवेश भरा ज्वर बन जाती है, और उत्तेजना रुढ़ियों और नियमों, कानूनों को तोड़ने के लिए बाध्य करती है, वासनात्मक शक्ति के अधीन होकर मनुष्य स्वयं से संघर्ष करता है क्योंकि, यह उसके हृदय में बैठा हुआ शत्रु है । यह दूषित अतिरेक मनुष्य को नष्ट करके ही समाप्त होता है । किंतु गंभीर आत्म समर्पण और प्रियतम के साथ एकात्मीकरण असीम आनंद की सृष्टि करता है, और अपनी सर्वोच्च स्थिति में दिव्यता की अनुभूति में बदल जाता है ।

विकसित संस्कृतियों में एक विवाह के आदर्श को मान्यता दी गयी और इसे एक स्थायी गठबंधन माना गया, एक ऐसा गठबंधन जिसमें शरीर और आत्मा का मिलन होता है, कभी-कभी यह इतना दृढ़ होता है कि लगता है कि आजीवन यह घनिष्ठ और स्थापित रहेगा, इसकी गहराई और सुकुमारता हृदय को जकड़ लेगी और प्रेम के आवेश की तीव्रता जीवन का रूपांतर कर देगी । यह संबंध इतना शुद्ध, इतना उच्च और महत्त्वपूर्ण माना गया कि किसी दूसरे की कल्पना तक करना अपवित्र लगने लगा ।

यौन-उन्माद क्या है ?

डॉ. राधाकृष्णन के मतानुसार विवाह के संदर्भ में यदि हम स्त्री की भूमिका पर विचार करें तो पाते हैं कि "आदर्श नारी प्रेम की उच्चतम स्थिति में ले जाने में समर्थ होती है । पुरुष की भांति प्रत्येक स्त्री को अपने आपको अभिव्यक्त करने का, अपने भीतर के आवेश की ज्वाला को शांत करने का अवसर मिलना चाहिए, यह विचार मात्र सच्चे प्रेम के विकास का विरोधी है कि विवाह से एक व्यक्ति को दूसरे पर स्वामित्व का अधिकार प्राप्त हो जाता है । विवाह में वांछित वस्तु शरीर नहीं है, यह एक भ्रामक और क्षणिक पहलू है, विवाहित दंपत्ति की पारस्परिक निष्ठा है अपने साथी-प्राणी को अंगीकार करना, दूसरे को उसकी सब विशेषताओं (गुण-दोषों) के साथ अपनाने की इच्छा रखना, विवाहित जीवन का आनंद प्राप्त करने के लिए उदारतापूर्ण आत्मत्याग, अंतहीन सहिष्णुता, भद्रता तथा हृदय की विनम्रता की आवश्यकता होती है," कुछ के दृष्टिकोण से यौन-आनंद विवाह की सफलता का आधार है यहां यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि यौन-आनंद वैवाहिक सफलता के लिए महत्त्वपूर्ण है पर वह इसका आधार नहीं है ।

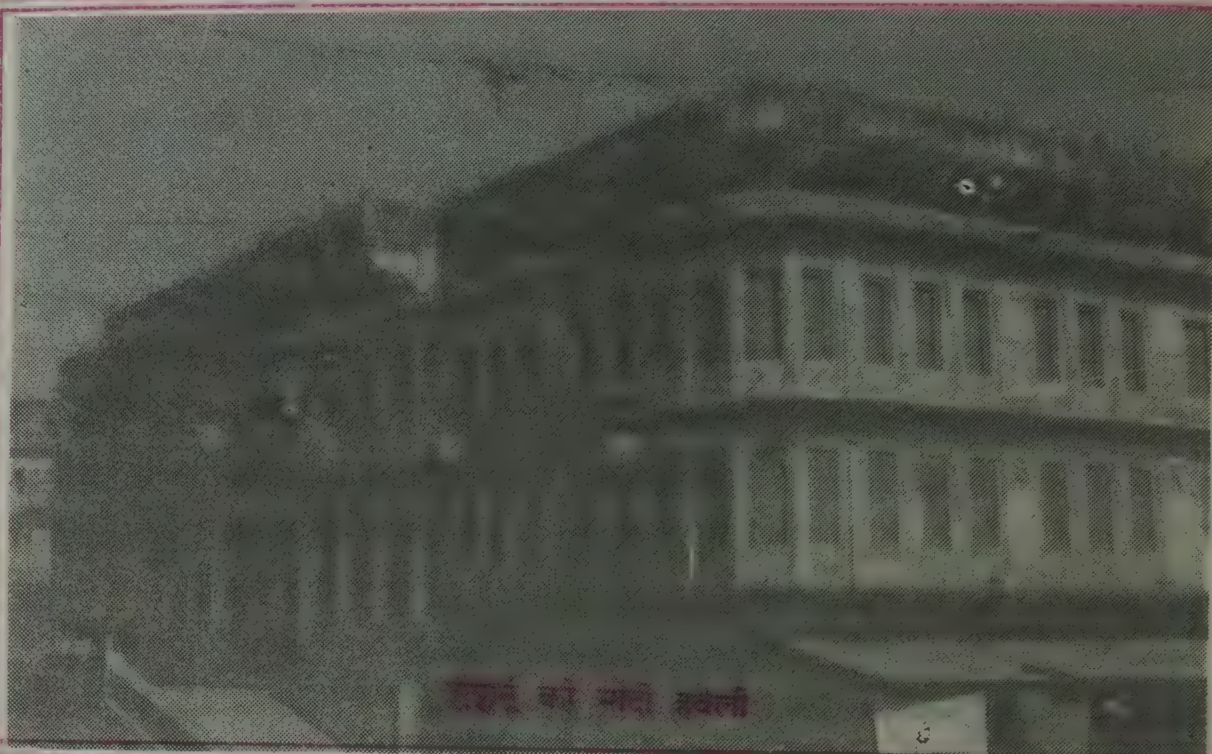
ऐसा मानने से विवाह एक पाशविक व्यवहार या यौन संबंध का दुरुपयोग बन जाएगा । अमृता प्रीतम जब यह लिखती हैं कि "विवाह दो दिलों के सहज सहवास के अर्थों में होना चाहिए था, मिलन की लय पर चलते हुए पैरों की समताल के समान, पर विवाह की संस्था ने इसे केवल

दो जनों को बांधनेवाली जंजीर बना दिया है, जिससे छूटने के लिए हाथ-पैर मारते हुए मनुष्य को कभी नीति और धर्म के कोड़ों की मार से चुप कराया गया, कभी कानून का भय दिखाकर और यह केवल शरीरों का व्यापार बनकर रह गया ।'' तो हम पाते हैं कि शरीरों के इस व्यापार ने विवाह को एक उबाऊ व्यवहार, मूर्खतापूर्ण सौदा ही नहीं बनाया बल्कि स्त्रियों को एक पहेली और पत्नी को मात्र संतानोत्पादन का साधन और घर की विश्वस्त चौकीदारनियां बना दिया । क्या डॉ. रांगेय राघव के इस कथन पर आप विश्वास करेंगे कि ''स्त्री अपने पति से प्रायः संसार में इतना अधिक प्यार करती है कि पुरुष उसकी गहराइयों और ऊंचाइयों को कभी प्राप्त नहीं कर पाता है ।''

पुरुष की श्रेष्ठतम पूरक

ऋग्वेद में नारी को पुरुष की श्रेष्ठतम पूरक बताया गया और प्राचीन साहित्य में अच्छे-अच्छे पुरुषों को प्रेम और कष्ट सहन करने के मामले में बड़ी-बड़ी भूलें करनेवाले नौसिखिये और स्त्री को इस मामले में श्रेष्ठ कलाकार बताया । पर आज के सामाजिक परिवेश में बढ़ते हुए औद्योगीकरण और संस्कृति के नये परिवर्तनों ने पारिवारिक जीवन की गरिमा और महत्त्व कम कर दिया है । आज की स्त्रियां आर्थिक, वैचारिक और सामाजिक दृष्टि से स्वाधीन हैं और जीवन की उपलब्धियों को प्राप्त करने की दौड़ में निरंतर आगे हैं, किंतु दया, ममता, स्नेह, करुणा और आत्म-समर्पण के नारी सुलभ गुणों से रिक्त होती जा रही हैं। आधुनिक स्त्रियां आदर्श पत्नी के उस स्वरूप से मेल नहीं खातीं, जो अपनी सलज्ज, सुकुमारता, मनोजयी मुसकान और अच्छे साहचर्य द्वारा पति को अनंत तृप्ति दे सकें । दिशाहीनता, स्त्री-सुलभ शालीनता को नष्ट कर चुके हैं । आज की नारी नींद में भी तनावमुक्त और भोली-भाली नहीं लगती । कमोबेश यही स्थिति पुरुषों की भी है । बाहर के तनाव और भीतर के द्वंद्व ने उनकी मानसिकता पर प्रभाव डाला है । जीवन की विषमताओं ने विवाह के प्रति उनकी निष्ठा को कम किया है । क्या यह तथ्य चौकानेवाला नहीं है कि आज शिक्षा का प्रतिशत बढ़ा है, भौतिक सुख-सुविधाएं और संपन्नता बढ़ी हैं, पर तलाक दूसरी पत्नी का चलन और दहेज हत्याओं के आंकड़े भी बढ़ रहे हैं जो यही साबित करते हैं कि शिक्षा मानव के ज्ञान में तो वृद्धि कर रही है पर संस्कारों में नहीं, भौतिकता ने उसकी लिप्साओं को मर्यादाहीनता तक बढ़ाया है । आत्मसंयम, चरित्र, स्त्री-सम्मान, सफल दांपत्य-जैसे शब्द दकियानूसी माने जाने लगे हैं, जीवन के प्रति सौंदर्य-बोध कम होता जा रहा है । इन सब चीजों ने विवाह को एक औपचारिकता बना दिया है, जबकि उसका महत्त्व अनादिकाल से निर्विवाद है । गृहस्थ-जीवन सेवा और तपस्या का जीवन है और सभी आश्रमों में यह सर्वोत्कृष्ट है । केवल पत्नी और बच्चे होने से ही कोई घर, घर नहीं बन जाता है अपितु सामाजिक कर्त्तव्यों का पालन करने से बनता है। रागात्मक संबंधों के निर्वाह से बनता है, क्या यह सोचना आवश्यक नहीं है कि हम अपने सामाजिक कर्त्तव्यों का कितनी निष्ठा और तत्परता से पालन करते हैं ?

— ८३, सर्वोदय नगर, इंदौर म. प्र.-४५२००१



शेखावाटी की नयनाभिराम हवेलियां

● रमेश सर्राफ

राजस्थान के परकोटों से घिरे पुराने शहर हमेशा से ही पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र रहे हैं । शेखावाटी क्षेत्र का राजस्थान में अलग ही स्थान है । यहां एक तरफ राजाओं द्वारा बनाये गये भव्य एवं बड़े-बड़े गढ़, किले, महल हैं, वहीं यहां के धनकुबेर सेठों द्वारा अपने रहने के लिए बनायी गयी बड़ी-बड़ी गगनचुंबी हवेलियां हैं । इस क्षेत्र-जैसी भव्य एवं कलात्मक हवेलियां संसारभर में अन्यत्र कहीं देखने को नहीं मिलती हैं ।

पारसी में 'हवेली' शब्द का अर्थ एक चौरस बंद रिहायशी इमारत से है । यह हिंदु-मुसलिम स्थापत्य-कला का मिला-जुला रूप है । शेखावाटी की ये नयनाभिराम हवेलियां दो से पांच मंजिल ऊंची होती हैं, जिनमें प्रायः दो चौक होते हैं । हवेली में जाने के लिए बाहरी दरवाजे को पार करना पड़ता है । इस बाहरी दरवाजे के दोनों ओर गोखे (चबूतरे) बने होते हैं । इनका

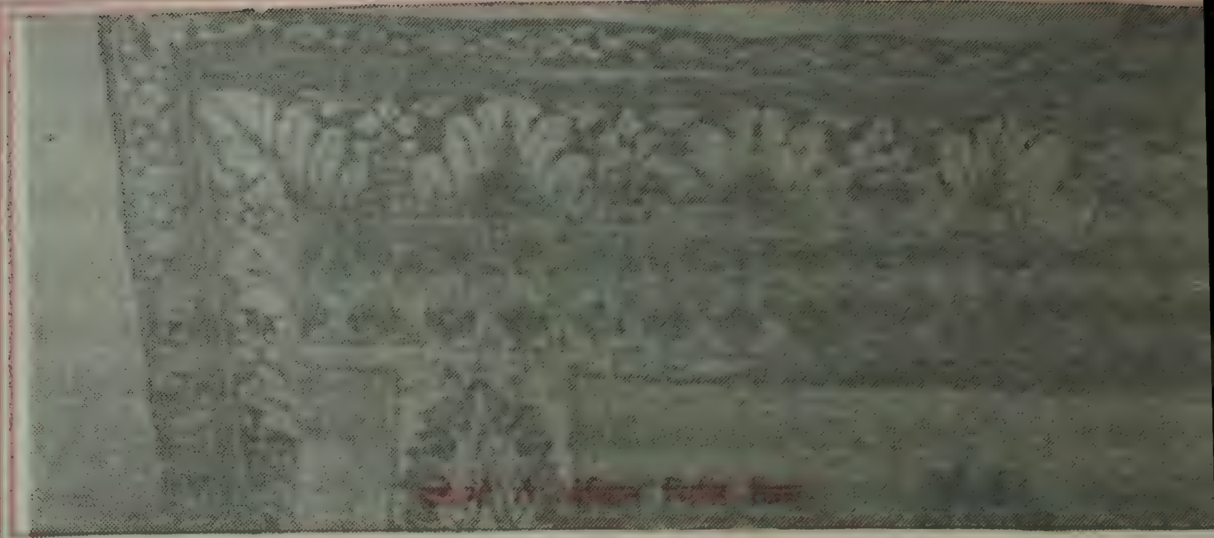
सीकर एवं झुंझुनूं जिलों को मिलाकर बने शेखावाटी क्षेत्र के झुंझुनूं, नवलगढ़, महजसर, फतेहपुर, बिसाऊ, रामगढ़ मंडावा, पिलानी, चिड़ावा, लक्ष्मणगढ़, मुकुंदगढ़, अलसीसर, बगड़-जैसे अनेक स्थान हैं, जो सदियों से पुरातन-कला एवं संस्कृति की अनुपम धरोहर संजोये हैं।





दरवाजा, चौखट ,आकर्षक, कलात्मक खुदाई से सुसज्जित होता है । शेखावाटी में हवेली निर्माण-कला पंद्रहवीं शताब्दी में मुगल-शासनकाल में प्रारंभ हुई जो अंगरेजों, राजा-महाराजाओं के समय में अपने पूरे यौवन पर थी ।

सीकर एवं झुंझुनूं जिलों को मिलाकर बने शेखावाटी क्षेत्र के झुंझुनूं, नवलगढ़, महनसर, फतेहपुर, बिसाऊ, रामगढ़, मंडावा, पिलानी, चिड़ावा, लक्ष्मणगढ़, मुकुंदगढ़, अलसीसर, बगड़-जैसे अनेक स्थान हैं, जो सदियों से पुरातन-कला एवं संस्कृति की अनुपम धरोहर संजोये हैं। यहां की हवेलियों का कोना-कोना रंग-बिरंगे आकर्षक भित्ति-चित्रों एवं वास्तुकला



की छटा बिखेरे हैं, परंतु उचित देख-रेख के अभाव में अपना मूल रूप खोते जा रहे हैं, जो आगामी पचास वर्ष में पूर्णतया नष्ट हो जाएंगे।

शेखावाटी की हवेलियों के भड़कीले, चटकीले, रंग-बिरंगे, आकर्षक भित्ति-चित्रों में विषय की विभिन्नता है। इन भित्ति-चित्रों में राधाकृष्ण की रासलीला, महाभारत, रामायण की कथाएं, ढोला-मारूं हीर-रांझा प्रसंग, दर्पण निहारती नायिका, होली, दीपावली पर्वों, उत्सवों एवं जीवन के विभिन्न रंगों के चित्र अंकित हैं। शयनकक्ष एवं स्नान के दृश्यों को देखकर यही लगता है कि उस वक्त चित्रकारों की जनानेखाने तक पहुंच थी। उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक शेखावाटी के सेठों का अंगरेजों से संबंध होने का प्रभाव इन भित्ति-चित्रों में दिखायी देने लगा। यूरोप के कई तैल चित्र लिथोग्राफ, ओलियोग्राफ तथा कैमरा चित्र भारत में प्रचलित होने के बाद भारतीय विषय योरोपियन कपड़ों तथा रहन-सहन से प्रभावित नजर आने लगे। इंगलैंड की महारानी विक्टोरिया, जार्जपंचम, महारानी मेरी, ग्रामोफोन सुनती मेमसाब, हवाई जहाज उड़ाते राईट बंधु, रेलगाड़ियां, बग्घी दिखायी देने लगी।

इस क्षेत्र की प्रमुख हवेलियों में चूड़ी की कमानियों, बिसाऊ के मोतीलाल, सिंगतियों, मंडावा की लड़ियों, फतेहपुर की गोयनका, खेतानों, पिलानी की बिड़ला, चिड़ावा की सूरजमल, रामगढ़ की प्रसिद्ध पोद्दारों की हवेलियां, झुंझुनूं की प्रसिद्ध सेठ ईश्वरदास मो की ३६० खिड़कियोंवाली हवेली, नवलगढ़ में भगतों, पोद्दारों, मुरारका, सेक्सरियों की हवेलियां, महनसर की सेठ तोलाराम की हवे जिसमें स्वर्णाक्षरों से रामायण अंकित है।

शेखावाटी की पुरातन-भवन निर्माण-कल एवं आकर्षक भित्ति-चित्रों को देखने के लिए प्रतिवर्ष हजारों देशी-विदेशी पर्यटकों, सैलानि एवं कला-प्रेमियों का आवागमन बना रहता है दर्शक यहां की पुरातन-कला की अनोखी धरोहर भित्ति-चित्रों को घंटों देखते रहते हैं मग फिर भी उनका मन नहीं भरता। यहां की हवेलियों को देखकर तो प्रसिद्ध फिल्मकार जे पी. दत्ता तो इतने अधिक प्रभावित हुए कि उन्होंने अपनी फिल्म गुलामी, बटवारा की शूटिंग यहीं की।

— पोस्ट धर्म
जिला—झुंझुनूं (राजस्था

जल-चिकित्सा

कठिन रोगों से छुटकारा

● कृष्णनारायण पांडेय

अत्यधिक कठिन और घातक बीमारियों का उपचार करने की दृष्टि से, 'जल-उपचार' नाम से एक बहुत ही साधारण और आसान उपचार का पता लगाया गया है।

जापानी रोग संघ द्वारा प्रकाशित जल-उपचार पर एक लेख है जिसमें बताया गया है कि यदि जल-उपचार को विधिपूर्वक अपनाया जाए तो आप बहुत से कठिन रोगों से छुटकारा पा सकते हैं, जो इस प्रकार हैं—

१. सिर दर्द, रक्त चाप, रक्ताल्पता, गठिया, लकवा, स्थूलता, हृदय धड़कन और स्वास्थ्य सुधार।

२. खांसी, दमा, क्षय रोग।

३. मैनेजाइटिस, जिगर और गुरदे से संबंधित रोग।

४. रक्तचाप, पेचिस, कब्ज, बवासीर।

५. आंखों से संबंधित सभी कठिनाइयां/रोग।

६. मासिक चक्र की अनियमितता, श्वेत द्रव, गर्भाशय का कैंसर।

७. कान, नाक और गले से संबंधित रोग।

पानी पीने की विधि :

प्रातःकाल सोकर उठते ही बिना दंत मंजन किये व मुंह को धोये बिना ही एक साथ चार बड़े गिलास अर्थात लगभग १.२६० कि. ग्रा. पानी पियें। उसके पश्चात अगले ४५ मिनटों तक कोई द्रव या ठोस आहार न लें। पानी पीने के पश्चात दांतों पर ब्रश कर सकते हैं।

यदि आप इस उपचार को अपना रहे हैं, तो आपको भोजन करने के पश्चात नाश्ता, दोपहर के भोजन और रात्रि के भोजन के बाद कम से कम २ घंटे तक पानी न पियें। आपको बिस्तर पर लेटने से पहले कुछ भी खाना नहीं चाहिए।

जो लोग शारीरिक दृष्टि से बहुत ताकतवर नहीं हैं और चार गिलास पानी नहीं ले सकते, उन्हें धीरे-धीरे एक या दो गिलास से शुरू करना चाहिए जिसे धीरे-धीरे चार गिलास तक बढ़ाया

सदैव प्रसन्न रहिए और पुराने आनंद के क्षणों की याद करते हुए सोइए। ईश्वर पर अटूट विश्वास कीजिए। रात्रि भोजन के पश्चात चार घंटे तक कोई कार्य न कीजिए।

जा सकता है। तथापि इस प्रक्रिया को बीच में ख़तम नहीं करना चाहिए।

स्वस्थ और रोगी दोनों ही व्यक्ति इस विधि को अपना सकते हैं। स्वस्थ व्यक्ति अपने आपको स्वस्थ रखने और रोगी व्यक्ति को अपने आपको ठीक रखने के लिए इस उपचार को अपनाएं।

रोगों का उपचार संभव

१. उच्च रक्तचाप	१ माह
२. मधुमेह	१ माह
३. कैंसर	१ माह
४. आमाशयी रोग	१० दिन
५. कब्ज	१० दिन
६. क्षय रोग	३ माह

जोड़ों और गठिया के रोगियों को एक सप्ताह तक एक दिन में दो बार और बाद में एक बार उक्त उपचार को अपनाना चाहिए।

यह एक साधारण उपचार है और इस पर कोई लागत भी नहीं लगती और यदि लोग इस जल-उपचार को अपने जीवन में अपनाते हैं तो बिना कुछ खर्च किये ही हजारों लोग लाभान्वित होंगे।

४ गिलास पानी पीने का कोई भी विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता। केवल शुरू में हो सकता है कि पानी पीने के पश्चात आप २-३ बार मूत्र-त्याग को जाएं। लेकिन बाद में यह आदत बन जाएगी।

—एफ-८०३, कर्जन रोड होस्टल, नयी दिल्ली-११०००१

पतला होने का सरल उपाय

वजन कम करने के लिए अब न तो कैप्सूल खाने पड़ेंगे, न भूखे मरना पड़ेगा तथा न कसरत करनी पड़ेगी।

जापानी अनुसंधानकर्ताओं ने अब मोटापा कम करने का एक बहुत ही सरल तरीका खोज निकाला है। उन्होंने गेहूं के आटे में सुधार करके 'विकसित आटा' तैयार किया है जो साधारण आटे के मुकाबले बहुत ही कठिनाई से पचता है।

शरीर में पचने की क्रिया में यह विकसित आटा शारीरिक रक्त से चीनी की मात्रा को कम कर देता है। पहले के अनुसंधानों से यह ज्ञात हो ही चुका है कि शरीर से कार्बोहाइड्रेट का शोषण मोटापा घटाने में सहायक रहता है। इस हिसाब से यह विकसित आटा पतले होनेवालों के लिए वरदान से कम नहीं है।

विकसित आटा बनाने के लिए १०० भाग गेहूं के आटे में २-५० भाग खानेवाले अमीनो अम्ल मिलाकर उसे पानी या इथेनाल में घोल दिया जाता है। फिर इस मिश्रण को एक घंटा या ज्यादा समय तक पड़े रहने दिया जाता है ताकि पूरी प्रतिक्रिया हो जाए। फिर इसका केक बना लिया जाता है।

यह केक मधुमेह के रोगियों के लिए भी बहुत फायदेमंद रहेगा।

—लक्ष्मी सोनी

प्रवेश

तुम्हारी याद

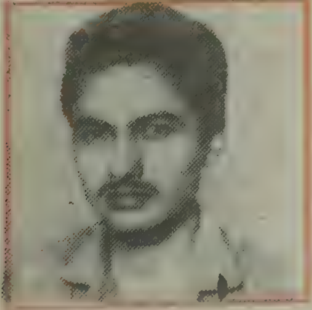
स्मृति के पत्रों में अंकित
विगत के सुमधुर क्षण
जब मेरी मानसिकता में
सुखद: पर ध्वस्त
अनुभूति बनकर उतरती है
प्रभात के आशावादी
पलों में
और सूर्यास्त के
विरही क्षण में
व्याकुल हृदय के भीतर
किसी अनजानी आवाज की
लय जैसे
केवल
मुझे तुम्हारी याद आती है

—वैद्यनाथ उपाध्याय

पता : ग्राम-पाकृबारी, डाक.-खोवरां, उदालगुड़ी दरंग, असम-७८४५०९

शिक्षा : बी. ए., उम्र : २५ वर्ष

आत्मकथ्य : जीवन के सुख-दु:ख, आशा और निराशा, जिजीविषाएं और अन्य अभिलाषाओं का शाब्दिक अभिव्यक्ति के रूप में कविता का जन्म होता है।



बचपन

मस्ती के नशे में डूबे
पार्क में खेलते बच्चों को
अपलक देखता है, वह बच्चा
कंधे पर मैली-सी बोरी का बोझ लिये
खड़ा पार्क के ठीक सामने
बाहर आती गेंद को देख लपकता
कि
उन विशिष्ट बच्चों की दुत्कार
लौटा देती है आगे बढ़ रहे कदमों को
और
सूखे आंसुओं से लबालब
उसकी मासूम आंखें
फिर ढूंढ़ने लगती हैं
कचरे के ढेर में
कचरा नहीं
खोया हुआ बचपन

—अमर नाथ 'अमर'

जन्म : १ मार्च १९७७

शिक्षा : स्नातक में अध्ययनरत

पता : बेलीसराय मुहल्ला, मोतिहारी-८४५४०१ (बिहार)

आत्मकथ्य : जीवन की विसंगतियों को समझने का लघु प्रयास हैं मेरी कविताएं।



सफर

यूं ही
चलते-चलते किसी राह पर
जब हमारे अधरों पर
मौन और सिर्फ मौन
छाया होगा
जब दूर-दूर तक एकांत
निस्तब्धता और सन्नाटा होगा
और इस सन्नाटे में
गूंजती होगी सिर्फ
तुम्हारे और मेरे कदमों
की आहट
और तब कहीं
शीतल छांव के तले बैठकर
चुप्पियों के साये में
बोलेंगी एक-दूसरे से
सिर्फ तुम्हारी-मेरी आंखें
देखेंगी और देखती ही रहेंगी
एक-दूसरे को
और इसी तरह ढल जाएगा सूरज
और पूरा हो जाएगा
उम्र का यह सफर !

● कु. वत्सला शर्मा

शिक्षा : बी. एस. सी. तृतीय वर्ष,

आत्मकथ्य : कविता मेरी एकमात्र सहेली है जो कि शब्दों का रूप धारण करने के बाद मेरे सुख-दुःख को बांटती है ।

पता : एफ-३७७ एम. आई. जी., प्रताप विहार, गाजियाबाद-२०१००९



उनके फैसले

हम आपस में लड़ते रहे
और वे बिना बुलाये ही
करते रहे हमारे फैसले
अपने स्वयं के पक्ष में ।
हम सत्य की दुहाई देकर
चीखते रहे
और वे झूठे गवाहों से
विजय श्री का वरण करके
सम्मानित होकर
समाज में ऐंठकर चलते रहे
धर्मात्मा की तरह ।
पर जब भी उनसे मेरा सामना होता है
तो उनकी नजरें झुक जाती हैं
मेरे सामने ।
क्योंकि वे जानते हैं कि हम वही हैं
जो कभी आपस में लड़े नहीं हैं ।
यह तो उनकी चाल थी
जिसका शिकार हम होते रहे हैं ।
और अपना अमन चैन खोते रहे हैं ।

—उर्मिला सिं

शिक्षा : इंटर, विशारद ।

आत्मकथ्य : कविताएं मेरी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति हैं ।

पता : जटाशंकर कॉलोनी, का. ११४, दमोह (म.प्र.) ४७०६६१



गूंगे

गूंगे से हैं हम
हमें आवाज की जरूरत है
अनजाना चेहरा है हमारा
हमें पहचान की जरूरत है
एक लाश हैं हम
हमें जान की जरूरत है
सारा शहर है जानवरों से भरा
बस एक इनसान की जरूरत है

तृप्त मन

हवाओं ने सोचा
भर लूं सुगंध
तृप्त करूं मानव मन
जल ने सोचा
हो जाऊं निर्मल
तृप्त करूं मानव मन
वृक्ष ने सोचा
फलों से लद जाऊं
तृप्त करूं मानव मन
पर मानव मन कभी तृप्त न हुआ ।

—कु. अंशु राय

शिक्षा : एम.ए. (राजनीति शास्त्र)
आत्मकथ्य : अपनी भावनाओं को जब व्यक्त करती हूं तो वह एक कविता बन जाती है । साहित्यिक किताबें पढ़ना और कविता करना ।
पता : अविनाश चन्द्र राय, रा.इं.कॉ. बलिया-२६६००१

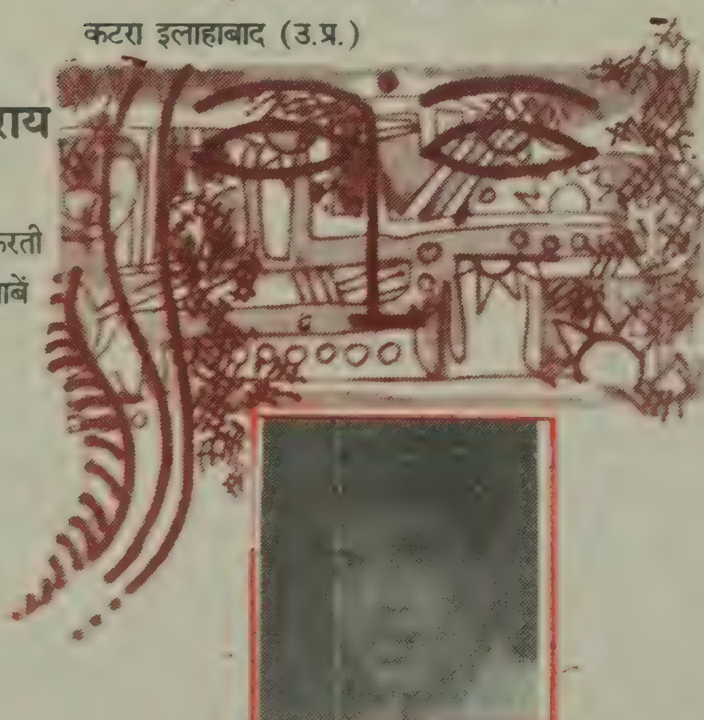


आत्मदाह

सुलगा दिया है अलाव
दुनिया को राख होने के लिए
मेरे सामने बेकारी का
खौफनाक मंजर है—
नहीं पा सकूंगा कुछ रोजी-रोजगार
तभी सुलगा दिया जाऊंगा
मैं भी उसी अलाव में
तभी हां तभी ही
आत्मदाहों की फेहरिश्त में
एक शख्स और जुड़ेगा
और ठोंक दिया जाऊंगा मैं भी सलीब पर
स्वार्थ और दुहाइयों के नाम

—अखिलेश शुक्ल

शिक्षा : बी.ए. (इलाहाबाद वि.वि.; अध्ययनरत)
आत्मकथ्य : मेरे सामने विथाओं का सैलाब है । खुदगर्जी के तवे पर सिंकती हुई राजनीति की रोटियां हैं । विद्रूपताएं हैं...और एक तल्ख समाज है, जिसे हांकने के लिए मैंने चाबुकीय कलम का सहारा लिया है ।
पता : २/ए, वेली रोड (अमिटको लॉज), नया कटरा इलाहाबाद (उ.प्र.)



यह महीना और आपका भविष्य

● पंडित शिवप्रसाद पाठक

मेष : मास में नवीन कार्यों की अधिकता रहेगी । निकटजनों अथवा संबंधियों द्वारा विरोधाभासी परिस्थितियों का उदय होगा । संपत्ति क्रय-विक्रय से लाभ होगा । सामाजिक, रचनात्मक कार्यों से मान-प्रतिष्ठा मिलेगी । शत्रु-पक्ष से संयमित संभाषण करें । परोपकारी कार्यों में जोखिम वहन न करें । विलासितादायी वस्तु तथा मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा । मासांत में प्रवास का योग होगा । आजीविका की दिशा में उल्लेखनीय परिवर्तन होगा ।

वृषभ : आत्मविश्वास तथा साहसिक भावना में वृद्धि होगी । उच्चाधिकारी की अनुकंपा से वांछित पद परिवर्तन होगा । जोखिमपूर्ण कार्यों से धन-लाभ होगा, शत्रु-पक्ष की क्रियाशीलता से अपकीर्ति का भय विद्यमान रहेगा । आध्यात्मिक अभिरुचि में वृद्धि होगी । प्रवास से मानसिक संतुष्टि होगी ।

मिथुन : आकस्मिक धन लाभ से लंबित समस्याओं का समाधान होगा । उच्चाधिकारियों की अनुकंपा से राजकीय कार्यों की पूर्ति होगी । आजीविका संबंधी परिवर्तन से आर्थिक संसाधनों में वृद्धि होगी ।

कर्क : आजीविका संबंधी परिवर्तन निकटजनों के कारण मानसिक तनाव में व होगी । भावुकता की अपेक्षा विवेक से क करना हितकर होगा । संपत्ति अथवा न्यायालयीन कार्यों में धीमी प्रगति होगी । व्यक्तित्व विकास में स्वजनों का सहयोग मिलेगा । आध्यात्मिक सत्संग से मान-प्रति वृद्धि होगी । धार्मिक अथवा मांगलिक क धन व्यय होगा । विशिष्ट व्यक्ति से भेंट हो जिससे भविष्य में लाभ मिलेगा ।

सिंह : नवीन दायित्वों में वृद्धि होगी । व्यावसायिक स्थिति में सुधार होगा, प्रियज कारण मानसिक खिन्नता तथा तनाव का स करना होगा । रचनात्मक अथवा सृजनात्म कार्यों से यश वृद्धि होगी । जीवनसाथी अ उनके संबंधियों के कारण आर्थिक लाभ मिलेगा । स्वास्थ्य संबंधी स्थिरता होगी ।

कन्या : मास उत्साहवर्धक होगा । उच्चाधिकारियों की अनुकंपा से वांछित का सफलता मिलेगी । शत्रु-पक्ष का पराभव होगा । मास मध्य में स्वास्थ्य संबंधी चिंता सामना करना होगा । आवेग अथवा भावु से पीड़ा होगी । दिनचर्या अव्यवस्थित रहेग रचनात्मक एवं धार्मिक कार्यों में सामाजिक स्थिति श्रेष्ठ होगी, इच्छित स्थान की यात्रा ह

तुला : आर्थिक संसाधनों में वृद्धि हो पैतृक संपत्ति से लाभ होगा । आजीविका संबंधी परिवर्तन से प्रसन्नता होगी । नवीन

ग्रह स्थिति : सूर्य १४ अप्रैल से मेष में, मंगल कर्क में, बुध १४ से मेष में १९ से वृषभ में, गुरु वृश्चिक में, वक्रीय शुक्र १७ से मीन में, शनि कुंभ में, राहू तुला में, केतु मेष में, हर्षल मकर में, नेपच्यून मकर में, प्लेटो वृश्चिक राशि में भ्रमण करेंगे ।

उत्तरदायित्वों में वृद्धि होगी। नवीन संपत्ति अथवा वाहन का योग उपस्थित होगा।

वृश्चिक : शत्रु-पक्ष से सर्तकता हितकर होगी। संपत्ति अथवा नवीन योजना में व्यर्थ विलंब होगा। साहस, पराक्रम पुरुषार्थ से शत्रुओं पर विजय मिलेगी, पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति से प्रसन्नता होगी। साझे के कार्यों को टालना हितकर होगा। जोखिमपूर्ण कार्यों से धन हानि संभावित होगी। मासांत में भूमि अथवा संपत्ति के कार्य से लाभ मिलेगा। आध्यात्मिक सत्संग से जीवन में परिवर्तित परिस्थितियों का उदय होगा। पुराने मित्रों का समागम आनंददायी होगा।

धनु : मास में सावधानी तथा संयम से कार्य करें। न्यायालयीन कार्यों में प्रतिकूल निर्णय संभावित है। उच्चाधिकारियों से संतुलित संभाषण करें। पारिवारिक वातावरण अनुकूल होगा, जिससे मनोबल में वृद्धि होगी। नवीन संपत्ति से लाभ होगा। आध्यात्मिक अभिरुचि में वृद्धि होगी। सत्संग अथवा आध्यात्मिक अनुभूति का योग उपस्थित होगा। रचनात्मक कार्यों में सफलता मिलेगी। भ्रमण में सावधानी रखें।

मकर : पारिवारिक वातावरण में मनोनुकूल सुधार होगा। नवीन योजनाओं में प्रगति होगी। आजीविका संबंधी परिवर्तन के उन्नत अवसरों का उदय होगा। व्यावसायिक कार्यों में नवीन अवसरों की प्राप्ति होगी। मास मध्य में स्वास्थ्य संबंधी अस्थिरता होगी, आकस्मिक प्रवास का अवसर मिलेगा। मासांत में उच्चाधिकारियों की अनुकूलता से प्रतिकूल परिस्थितियों का शमन होगा।

कुंभ : विवादास्पद मामलों में विजय मिलेगी। उच्चाधिकारियों के सहयोग से वांछित कार्यों की पूर्ति होगी। संपत्ति के क्रय-विक्रय से लाभ मिलेगा। नौकरी में वांछित परिवर्तन होगा। प्रवास की अधिकता से अस्वस्थता का उदय होगा। न्यायालयीन कार्यों में सुलह होगी।

मीन : मास मिश्रित फलदायी होगा। पद, स्थितियों की अनुकूलता के बावजूद कार्यों में विलंब होगा। रक्त संबंधियों से विवाद का सामना करना होगा।

—ज्योतिष धाम पत्रिका
१२/४, ओल्ड सुभाष नगर
गोविंदपुरा, भोपाल (म.प्र.)

पर्व और त्यौहार

१ अप्रैल बसंत नवरात्र आरंभ, नवसंवत् २०५२ प्रारंभ आर्य समाज स्थापना दिवस, गुड़ी पड़वा, २. मत्स्य जयंती, श्री झूलेलाल जयंती, ३. गणगौरी व्रत सौभाग्य तृतीया, ४. श्रीविनायकी गणेश चतुर्थी, ५. श्रीपंचमी, ६. स्कंदषष्ठी, सूर्यषष्ठी, ९. श्री रामनवमी, श्री दुर्गानवमी, ११. कामदा एकादशी व्रत, १२. वामनद्वादशी, १३. महावीर जयंती, प्रदोषव्रत, १५. चैत्रीपूर्णिमा श्री हनुमान जयंती, खंडग्रास चंद्रग्रहण, १८. श्रीगणेश चतुर्थी, २२. श्री शीतला अष्टमी, २५. बरुथिनी एकादशी, २७. प्रदोष व्रत, २९. दर्श अमावस्या, कंकणा कृतिसूर्य ग्रहण भारत में दिखायी नहीं देगा।

ज्योतिष : समस्या और समाधान



● अजय भाम्बी

बाला कुमारी, नयी दिल्ली
प्रश्न : कृपया रोग-मुक्ति व पति कल्याण के लिए उपाय बतायें ?
उत्तर : स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा है। ठीक से इलाज करायें, लाभ होगा और जून के बाद आपके पति को भी अच्छी नौकरी प्राप्त होगी।

यशवंत यादव, जबलपुर
प्रश्न : आर्थिक आत्म-निर्भरता कब होगी ? रत्न बतायें ?
उत्तर : अगले वर्ष। पुखराज धारण करें।

श्यामसुंदर सोनी, अमृतसर
प्रश्न : स्वयं का मकान कब बनेगा ?
उत्तर : अगले दो वर्ष में संभावना।

संध्या शर्मा, मेरठ
प्रश्न : विवाह कब ? कोई उपाय ?
उत्तर : इस वर्ष विवाह हो जाएगा। मोती और पुखराज मिलाकर पहनें, लाभ होगा।

मधुरिमा सिन्हा, कलकत्ता
प्रश्न : जीवन संघर्षमय है। आर्थिक स्थिति कब सुधरेगी ?
उत्तर : अक्तूबर से समय अच्छा आ रहा है। घबरायें नहीं।

हर्ष कोहली, दिल्ली
प्रश्न : कर्ज से मुक्ति कब तक ?
उत्तर : अभी समय लगेगा।

प्रदीप मोहन अग्रवाल, जयपुर
प्रश्न : क्या मैं आई. ए. एस. अधिकारी बन पाऊंगा ?
उत्तर : अत्यधिक प्रयत्नों की आवश्यक

एन. बी. नैनवाल, नैनीताल
प्रश्न : प्रमोशन कब तक ?
उत्तर : जून से सितंबर के मध्य।

प्रेमराज सिंह, गाजीपुर (बिजनौर)
प्रश्न : क्या राजयोग है ? यदि हां तो जीवन कब ?
उत्तर : दो वर्ष के बाद।

आरती कुमारी, डालमिया नगर
प्रश्न : प्रेमी से शादी कब तक होगी। रत्न बत
उत्तर : अगले वर्ष संभावना है लेकिन झं आयेंगे।

पिंकी, खगड़िया
प्रश्न : इस वर्ष मेडिकल में प्रवेश मिलेगा या नहीं ?
उत्तर : संभावना है, प्रयत्न करें।

जनार्दन प्रसाद पटेल, इलाहाबाद
प्रश्न : नौकरी कब तक लगेगी ?
उत्तर : अत्यधिक प्रयत्न करने से जल्द ल सकती है।

आशा, करनाल
प्रश्न : पुनः विवाह कब तक संभव ? कृपया सुझायें ?
उत्तर : १९९६ में। पन्ना धारण करें।

एम. आर. सुखाड़िया
प्रश्न : विदेश में नियुक्ति कब होगी। सरकारी में हूं।
उत्तर : योग चल रहा है जल्द ही कार्य बने

आलोक अग्रवाल, लखनऊ
प्रश्न : स्वयं का व्यवसाय कब तक ?
उत्तर : जुलाई के बाद।

अनिल माहेश्वरी, विनोदपुर (कटिहार)
प्रश्न : आर्थिक उन्नति का योग कब से है ?
उत्तर : अगले वर्ष से।

नेहा, कानपुर
प्रश्न सुख-शांति में वृद्धि कब से ? उपाय बतायें
उत्तर : जून से अच्छा समय आ रहा है, चिंता न करें ।

मंजली सिन्हा, लखनऊ
प्रश्न : दूसरी संतान क्या होगी, कब तक होगी ?
उत्तर : आपकी कुंडली में एक बेटे व दो बेटियों का योग है ।

अनिल सोमानी, इंदौर
प्रश्न : सफल उद्योगपति कब तक ?
उत्तर : अपेक्षित सफलता वृहस्पति की दशा में प्राप्त होगी ।

देवेन्द्र प्रताप सिंह, वाराणसी
प्रश्न : कब मुकदमा खत्म और ईश्वर दर्शन ?
उत्तर : मुकदमा तो जल्द खत्म हो जाएगा । ईश्वर दर्शन के लिए अभी गहरे में जाने की आवश्यकता है ।

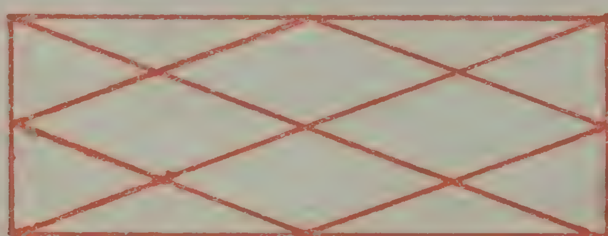
वेदपाल पुरी, अंबाला छावनी
प्रश्न : बीमारी से राहत कब तक, कोई उपाय और रत्न सुझायें ?
उत्तर : अभी थोड़ा समय और लगेगा ।

शचीन्द्र, सीतापुर
प्रश्न : क्या अचल संपत्ति का निकट भविष्य में योग है ? पदोन्नति कब तक ?
उत्तर : संभावना तो बन रही है ।

भूपेन्द्र मुदगल, जैसलमेर
प्रश्न : वर्तमान पद से प्रमोशन कब होगा ?
उत्तर : जुलाई के बाद ।

— 'नक्षत्र-निकेतन'
४०६, ढाका चेंबर-१
२०६८/३८, नाईवाला
करोलबाग
नयी दिल्ली-५

१५७



नाम..
जन्म-तिथि (अंगरेजी तारीख) .... महीना................ सन................

जन्म-स्थान..
जन्म-समय ....
वर्तमान विंशोत्तरी दशा का विवरण...
पता...
आपका एक प्रश्न ....
इस पते को ही काटकर पोस्टकार्ड पर चिपकायें.....................................

संपादक (ज्योतिष विभाग) — प्रविष्टि १५७, 'कादम्बिनी'
हिंदुस्तान टाइम्स भवन,
१८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१
अंतिम तिथि : २० अप्रैल, १९९५



गायत्री सी कबाला— बंबई

प्रश्न : मोटापे की बहुत शिकायत है । दायें पैर में चलने और बैठने-उठने में बहुत तकलीफ होती है । कमजोरी, सुस्ती बहुत है ।

उत्तर : चंद्रप्रभा वटी एक वटी, आरोग्यवर्धनी वटी दो वटी, योगराज गूगल एक वटी सुबह-शाम गरम पानी से लें । कांकायन वटी दो-दो वटी भोजन के बाद पानी से लें । दही, चावल, शीतलपेय, तली वस्तुएं सेवन न करें । छह माह औषधियों का सेवन करें ।

रूपेश— सम्भल

प्रश्न : उम्र २४ वर्ष, लिंग पर बारीक दाने, पाचनक्रिया मंद, छाती पर जलन, स्वास्थ्य क्षीण ।

उत्तर : सूतशेखर रस दो-दो वटी सुबह-शाम पानी से । अविपत्तिकर चूर्ण एक-एक चम्मच दोपहर-रात पानी से लें ।

एस. के. शर्मा— सिरोही

प्रश्न : उम्र २८ वर्ष । विवाह हुए छह वर्ष हो गये । पत्नी से सहवास से पूर्व दो-तीन बूंद चिपचिपा पदार्थ निकलता है । जिसके कारण सारी उत्तेजना समाप्त हो जाती है । दोनों को परेशानी है ।

उत्तर : वृहद वंगेश्वर रस दस ग्राम, गिलोयसत्व दस ग्राम, साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें । चंद्रप्रभा वटी एक-एक वटी रात दूध से लें । खटाई का परहेज कर तीन माह औषधियों का सेवन करें ।

संतोष कुमार— गोलाखीरी

प्रश्न : उम्र २४ वर्ष । दो वर्ष से हल्का बुखार, हाथ-पैरों में जलन, सिर व कमर में दर्द, अधिक मूत्र, घबराहट, कब्ज, जुकाम । कमजोरी दिन-प्रति-दिन बढ़ रही है ।

उत्तर : सितोपलादि चूर्ण साठ ग्राम, मालती वसंत रस दस ग्राम, मुक्ताशुक्ति भस्म दस ग्र साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-श शहद से लें । द्राक्षारिष्ट दो-दो चम्मच भोजन बाद लें । च्यवनप्राश अवलेह एक-एक चम्म रात दूध से लें । चावल, दही, खट्टी वस्तुएं, शीतलपेय सेवन न कर तीन माह औषधियों सेवन करें ।

श्रीमती एस. मिश्र— गिद्दी-ए

प्रश्न : लगभग १५-२० साल से एग्जिमा से पीड़ि हूं । खुजली बहुत है, पानी निकलता है । जलन होती है । इस बीमारी से निराश हो चुकी हूं ।

उत्तर : रसमाणिक्य दस ग्राम, गंधक रसायन पंद्रह ग्राम, प्रवाल पिष्ठी दस ग्राम, साठ मात्रा बनायें । एक-एक मासा सुबह-शाम शहद से लें । सारिवाद्यासव दो-दो चम्मच भोजन बाद पीयें । केशोर गूगल एक-एक वटी रात दूध से लें । खटाई, दही, प्याज, लहसुन का परहेज कर छह माह नियमित औषधियों का सेवन करें ।

एक भाई— जगदलपुर

प्रश्न : कुछ समय पूर्व लिंग के अंदर सुपारी के ठीक नीचे चमड़ी पर छाले हो रहे थे । सहवास के समय जलन भी होती थी । कुछ समय बाद एक चकत्ता महसूस हुआ और वह जगह कुछ लाल र लगी, एलोपैथी का इलाज कराया, ठीक हो गया किंतु अब लिंग के चारों तरफ लाल दाने होते रह हैं तथा अग्रभाग पर हल्की सूजन मालूम पड़ती है नसें उभरी रहती हैं । सहवास की इच्छा होती नहीं हीनभावना से ग्रसित हूं ।

उत्तर : केशोर गूगल एक वटी, गोक्षुरादि गूगल एक वटी, आरोग्यवर्धनी वटी एक वटी । सुबह-शाम पानी से लें । सारिवाद्यासव दो-दो

चम्मच भोजन बाद पीयें। चंद्रप्रभावटी एक वटी रात दूध से लें।

अविनाश— फाजिल्का

प्रश्न : उम्र ३५ साल। खाने की इच्छा नहीं होती। पेट में पसली के नीचे दायीं ओर हल्का दर्द व भारीपन रहता है। पेशाब का रंग ठीक है। तीन-चार दिन में जाना होता है। दुर्बलता है।

उत्तर : पुनर्नवामंडूर तीस ग्राम, नवायस लोह दस ग्राम, शोथारिलौह दस ग्राम, शंखभस्म दस ग्राम। सभी औषधियों की साठ मात्रा बनायें। एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें। लोहासव दो चम्मच, द्राक्षासव दो चम्मच भोजन के बाद पीयें। तली वस्तुएं, देर से पचनेवाली वस्तुओं का परहेज करें। तीन माह नियमित औषधियों का सेवन करें।

ललित मोहन— हैदराबाद

प्रश्न : पत्नी की उम्र ४० वर्ष। दुर्बलता, कमर दर्द, घबराहट, चक्कर। जांच में ठीक है, केवल खून की कमी बताते हैं। अच्छी दवा लिखें।

उत्तर : ताप्यादि लोह दस ग्राम, प्रवाल पंचामृत रस दस ग्राम साठ मात्रा बनायें। एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें। सितोपलादि चूर्ण तीस ग्राम, मालतीवसंत रस पांच ग्राम, मुक्ताशुक्ति भस्म पांच ग्राम तीस मात्रा बनायें। एक-एक मात्रा दोपहर शहद से लें। अश्वगंधारिष्ट दो चम्मच, द्राक्षारिष्ट दो चम्मच भोजन बाद पीयें। ६ माह नियमित औषधियों का सेवन करें।

राम सहाय— रीवा

प्रश्न : उम्र ७० वर्ष। सुस्ती-घबराहट तनाव--सा बना रहता है। कभी-कभी बिलकुल ठीक रहता हूं। कोई चिंता नहीं है। कारण नजर नहीं आता। अच्छी दवा लिखें।

उत्तर : ब्रह्म रसायन एक-एक चम्मच सुबह-रात दूध से लें। अग्रशवगंधारिष्ट दो चम्मचबलारिष्ट दो चम्मच भोजन के बाद पीयें। छह माह नियमित औषधियों का सेवन करते रहें।

पवन, आगरा

प्रश्न : उम्र ३५ वर्ष। संतान नहीं। विवाह को नौ साल। शादी के बाद पांच माह का गर्भपात। तत्पश्चात स्वयं के चोट आदि के कारण स्टिकल के पास छोटी-छोटी गांठ एवं नस में दायीं ओर गांठ हो गयी। जिसके कारण वीर्य नहीं निकलता। ऑल इंडिया में दिखाया, १४ माह टी.बी. की दवा का सेवन किया, जिससे सहवास के समय खिंचाव व दर्द रहता था। अब नहीं। नसें कुछ मोटी हैं, गांठ छोटी है। लिंग पहले से छोटा लगता है। कुछ देर ही कड़ापन रह पाता है। वीर्य निकलता है, हीन-भावना आ गयी है।

उत्तर : चंद्रप्रभावटी एक वटी, कांचनार गूगल एक वटी, वृहद बंगेश्वर रस एक वटी, सुबह-रात दूध से लें। मालती वसंत रस दस ग्राम, रसमाणिक्य दस ग्राम, वृहद बंगेश्वर रस दस ग्राम, मुक्ताशुक्ति भस्म दस ग्राम, साठ मात्रा बनायें, दिन में दो बार एक-एक मात्रा शहद से लें। आहार-विहार का परहेज कर तीन माह नियमित औषधियों का सेवन करें।

नवीन— धनबाद

प्रश्न : अचानक कुछ दिनों से मेरे पेट में दर्द हुआ। दर्द नाभि के दोनों ओर था। दो दिन तक पखाना नहीं हुआ, किंतु दर्द बना रहता है।

उत्तर : सौंठ, हरड़, सेंधा नमक, अजवायन सौ-सौ ग्राम लेकर बारीक चूर्ण बना लें। एक-एक चम्मच चूर्ण सुबह-दोपहर-रात गरम पानी से लें।

— कविराज वेदव्रत शर्मा

बी-५/७, कृष्ण नगर,
दिल्ली-११००५१

तनाव से मुक्ति

● डॉ. सतीश मलिक

पेट-खराब !

दी. कु. सि., मुजफ्फरपुर : २० वर्ष का बी.ए. प्रथम वर्ष का कुंवारा छात्र हूं, पिछले वर्ष मई में पेट खराब हुआ। दो माह खराब रहा तो शरीर कमजोर हो गया, इलाज के बावजूद ठीक नहीं हुआ तो सभी लोग मुझे बोलते रहते हैं कि क्यों ठीक नहीं हुआ ? मैं घबरा गया तथा माथे में कुछ महसूस हुआ, जिसे मैं समझ नहीं पाया। तत्पश्चात बोलने पर न बोलता, न हंसता। दुनिया से जैसे रिश्ता ही समाप्त हो गया। एम.बी.बी.एस. डॉक्टर ने माथे का एक्स-रे कराया, वह सही निकला। ओझा से झाड़-फूंक भी करा लिया। परंतु न तो अब पहले-जैसा आंख से देखता हूं, न सोच-समझ पाता हूं, झनझनाहट भी रहती है। क्या करूं ?

पेट की बीमारी यूं तो हमारे देश में बहुत सामान्य है। इसका कारण खाने-पीने में सफाई न बरतने, मक्खी आदि का भी कारण है। परंतु आपको पेट का रोग इस कारण से नहीं, तनाव, उदासीनता के कारण उत्पन्न हुआ है। यह सभी लक्षण मानसिक उदासीनता व तनाव के हैं। माथे का एक्स-रे ऐसे मामलों में सामान्य ही पाया जाता है। आपके रोग का सही निदान ही नहीं हुआ, तो भला उपचार कैसे संभव होता। आजकल मनोचिकित्सक उदासीनता दूर करने की दवा और नये तरीकों से इस रोग का इलाज सहज रूप से कर लेते हैं। हिम्मत न खोयें। अच्छे मनोचिकित्सक से मिल सही इलाज करायें।

कब्ज की शिकायत !

रा. कु., भरतपुर : बचपन से ही कब्ज की शिकायत रहती आयी है। चाहे कितना ही जोर लगाऊं शौच नहीं आता। आंतों का निचला हिस्सा 'जाम' रहता है।

आपको पानी की मात्रा अधिक लेनी चाहिए तथा साथ ही फल, सलाद व सब्जी खूब खानी चाहिए। रोज इसबगोल की भूसी का प्रयोग भी लाभदायक है। यदि इन सभी उपायों से सही न हों, तब एक बार अपनी जांच शल्य चिकित्सक द्वारा अवश्य करानी चाहिए।

दत्तक पुत्र की समस्या !

स, दिल्ली : १९६३ में शादी हुई, १९८० में बच्चा न होने के कारण एक लड़का गोद लिया। बेटा अभी नौ महीने का ही था कि दुर्भाग्यवश मेरे पति को उच्च रक्तचाप के कारण लकवा मार गया। दो साल पश्चात लाठी लेकर चल लेते थे। मेरे बेटे को पढ़ाने की जिम्मेदारी उन्होंने निभायी। १९९० में उनका देहांत हो गया। तत्पश्चात वह केवल खेलता व टी. वी. देखता है। क्लास में अब फेल होने लगा है। किसी भी जरूरतमंद का दुःख नहीं देख सकता। खेल का मैदान उसके बिना सूना लगता है। सभी बाहर के लोगों के साथ व्यवहार बहुत अच्छा है— उनका कहा भी मानता है। वह अब १४ वर्ष का है तथा उसे पता है कि वह गोद लिया हुआ है। उसकी हर इच्छा पूरी की जाती है। पढ़ाई बिलकुल नहीं करता। कहता है व्यापार करूंगा। कैसे समझाऊं कि वह पढ़ सके।

गोद लिए हुए बच्चे के साथ कई मनोवैज्ञानिक समस्याएं जुड़ जाती हैं। आपके

पति के पहले अपंग होने से तथा बाद में देहांत से केवल पढ़ाई करानेवाला व्यक्ति ही नहीं रहा। बच्चे को इस आयु में घर में एक पुरुष की आवश्यकता होती है। यह एक मनोवैज्ञानिक जरूरत है। साथ ही आपके पालन-पोषण में थोड़ा लाड़-प्यार अधिक हो गया जिससे वह बिगड़कर, आप जो चाहती हैं उससे उलटा करना चाहता है। कई बार माता का गोद लिये बच्चे के लिए प्यार अधिक होता है, या फिर अपराध-बोध से प्रेरित हो वह उसको डांटने में अपना हाथ खींचकर रखती हैं। किशोरावस्था की वजह से भी कई समस्याएं एक साथ जुड़ गयी हैं। वह अपनी पहचान तो स्वयं बनाना ही चाहता है। इस प्रयत्न में कई बार किशोर जो मां-बाप चाहते हैं, उसका उलटा करते हैं। आशा है आप समझ गयी होंगी कि समस्या आपके बच्चे के साथ जटिल है। धैर्यपूर्वक उनका हल आप निकाल सकती हैं। आपको यदि कोई समस्या इस बीच आती हैं तो आप भी व्यक्तिगत रूप में मनोवैज्ञानिक मदद ले सकती हैं।

नशा करता है!

अ. इलाहाबाद : पिता ४५ वर्ष से रेल डाक-विभाग में कार्यरत तथा पांच वर्ष से मदिरा सेवन करते हैं। दिन हो या रात शराब पीते रहते हैं। घर में पैसा देना बंद कर दिया है। मैं स्नातक हूं, दो बड़ी बहनें हैं, उनकी शादी भी होनी है। क्या किसी दवा से वह ठीक हो सकते हैं?

मदिरा पीना भी रोग ही है। जब मनुष्य अपना उत्तरदायित्व न निभा पाये और केवल अपने लिए जीने लगे। आजकल इसके छुड़ाने की दवा तथा कई तरीके मौजूद हैं। इनका लाभ नशा मुक्ति केंद्र से संपर्क कर उठाया जा सकता है। ऐसे केंद्र सरकार द्वारा समाज कल्याण मंत्रालय तथा स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा खोले गये हैं। इन स्थानों से इलाज संभव है। कई अस्पतालों में भी इसकी व्यवस्था उपलब्ध है।

इस स्तंभ के अंतर्गत अपनी समस्याएं भेजते समय अपने व्यक्तिगत जीवन का पूरा परिचय, आयु, पद, आय एवं पते का उल्लेख कृपया अवश्य करें।

—संपादक

हीन भावना से ग्रस्त!

सु. अ. धुनषा; महेंद्रनगर, (नेपाल) : २९ वर्ष का बी. कॉम. में अध्ययनरत युवक हूं। तीन वर्ष से परेशान हूं। किसी काम में दिलचस्पी नहीं। किसी पद के लिए स्वयं को काबिल नहीं समझता। नौकरी के लिए, मुझे विश्वास है कि अयोग्य ही ठहराया जाऊंगा। दिल जोर-जोर से धड़कता है। रात में नींद देर से ही आती है। दोपहर में नींद अवश्य ही लेनी पड़ती है। हीन भावना प्रबल रहती है। कुछ मिनट के लिए बहुत आत्म-ग्लानि, घबराहट व उदासी दो-तीन दिन के लिए छा जाती है। यूं तो हर समय सामान्य स्थिति में भी उदास ही रहता हूं। अजनबी व चुस्त लोगों से कतराता रहता हूं। परीक्षा में हाथ-पैर कांपते हैं, धड़कन बढ़ जाती है। ताला लगाकर बाहर निकलूं, फिर लौटकर देखता हूं कि खुला तो नहीं रह गया। काठमांडू में इलाज कराया, शौच बिगड़ने लगा तो दवा छोड़ दी। मानसिक अस्पताल जाने से कतराता हूं, ताकि पागल न कहलाऊं। कृपया कोई उपचार लिखें।

आपकी मुख्य समस्या 'एन्जाइटी', चिंता व

अत्यधिक तनाव है । दिल धड़कना भी इसी का लक्षण है न कि हृदय रोग का । हाथ-पैर कांपना, नींद देर से आना, हीन भावना, 'वहम' तथा उदासीनता जब बहुत तनाव बढ़कर हर समय रहने लगे, तब ऐसे लक्षण पैदा हो जाते हैं । कई बार दवाई से कब्ज हो जाती है । इसबगोल, हरी सब्जी, फल सेवन से सही हो जाती है । चूंकि बीमारी बढ़ी हुई है, इसलिए मनोचिकित्सक द्वारा इलाज करायें, बीच में न छोड़ें । वास्तव में मनोचिकित्सक के पास केवल पागल नहीं जाते, ऐसे सभी रोगी जो चिंताग्रस्त हों, चाहे उनमें लक्षण शारीरिक क्यों न हों, भी जाते हैं । अब मानसिक रोग का भय धीरे-धीरे हटता जा रहा है । झिझक छोड़ इलाज करायें ।

आत्मविश्वास में कमी !

सं., वाराणसी : २२ वर्ष का बी.ए. का छात्र हूं, मध्यवर्गीय परिवार का सबसे छोटा पुत्र हूं । प्रारंभ से गांव में रहा । सन १९९२ में शहर में आया तथा तब से छात्रावास में ही रहा । पढ़ाई में अत्यधिक रुचि है । कहानी व कविता भी लिखता हूं । देखने में सामान्य हूं, परंतु अंदर विचार प्रबल होते हैं । अत्यधिक भावुक प्रवृत्ति का व्यक्ति हूं । १३-१४ अगस्त १९९४ को सीने में मीठा-मीठा दर्द उत्पन्न हुआ, तत्पश्चात मानसिक अशांति उत्पन्न हुई । ऐसा दिन में ३-४ बार उत्पन्न हो जाता है । उलूल-जलूल बातें भी सोचने लगता हूं । चाहकर भी कुछ पढ़ नहीं पाता । महत्त्वाकांक्षा अति उच्च है । अशांति के दौर से गुजरता हूं । उपाय सुझायें ।

आपने अपना जिस प्रकार स्वयं का ब्यौरा दिया, इससे साफ जाहिर है कि आप अंतर्मुखी हैं तथा स्वयं के भीतर झांक लेने की क्षमता भी रखते हैं । वास्तव में गांव से शहर में आगमन तथा घर से छात्रावास में, अपने-आप में ही तनावपूर्ण स्थिति उत्पन्न कर देता है । उच्चाकांक्षा, अत्यधिक भावुक होना इन सबसे मिलकर तनाव उत्पन्न हुआ, जिसका लक्षण छाती के दर्द को लेकर हुआ तथा जिन विचारों व इच्छाओं को आपने बांध लगाकर अंदर समेट रखा था, वह भी उमड़कर बांध तोड़, उलूल-जलूल विचारों के रूप में आयी । ऊंची महत्त्वाकांक्षा तो बुरी बात नहीं, परंतु कम समय में ऊंचे लक्ष्य पाने की चेष्टा करना एक भावुक व्यक्ति के लिए कठिन व तनावपूर्ण सिद्ध हो सकता है । आपको चाहिए कि अपने मन के भीतर अंतरद्वंद्वों को पहचानें तथा अपने तनाव का कारण समझें, ताकि आप अपनी जिंदगी को फिर से सही ढंग से जी सकें ।

●

टाई हो तो ऐसी

बंबई की सुप्रसिद्ध वस्त्र निर्माता कंपनी 'जोडियाक' ने २०८ फुट लंबी टाई बनायी है जो विश्व की सबसे लंबी टाई होने का कीर्तिमान हासिल करने जा रही है तथा गिनिज बुक में आने को है ।

इस टाई को बनाने में करीब ७० मीटर कपड़ा लगा है । इसे २५ कारीगरों ने लगातार ५ दिन की मेहनत करके बनाया है । इस टाई को 'शायर डिपार्टमेंट स्टोर' में टांगकर रखा गया है जिसे देखने हजारों लोग भीड़ लगाये हुए हैं ।

— लक्ष्मी सोनी

नयी कृतियां

कथा-साहित्य

वन-कथा : पिछले कुछ वर्षों से हिंदी में विदेशी भाषाओं से अनूदित होकर पर्याप्त मात्रा में साहित्य प्रस्तुत किया गया है । डॉ. गंगा प्रसाद विमल इस सांस्कृतिक यात्रा की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी हैं । 'वन-कथा' इसी सिलसिले में बलगारियायी कहानियों का हिंदी में प्रस्तुतीकरण है । इस संग्रह में पिछले सौ वर्षों में लिखी गयी कहानियां संग्रहीत हैं । यह वह काल-खंड है, जिसमें बलारिया ने अनेक महत्त्वपूर्ण परिवर्तनों का सामना किया है । इसलिए इन कहानियों में इस दौर के संघर्ष की पहचान पायी जा सकती है । इस संघर्ष के बीच से चलती है बलारियायी मानस की शांति और संस्कृति-प्रियता की कहानी । वस्तुतः यही वहां के मनुष्य की सही पहचान है, उसकी अस्मिता की पहचान है । वह 'इंद्रधनुष' की छोटी-सी लड़की देनित्सा हो या 'शहर में इकट्ठे' लोग हों; वह 'सफेद अबाबील' का किसान हो या 'स्वप्नद्रष्टा' का पोस्टमास्टर बोयानोव सभी भीतर से एक महीन तंतु से जुड़े हैं । यही तंतु इन कहानियों में एक शताब्दी के काल-खंड की चेतना के रूप में उभरता है । अनुवाद की भाषा की दृष्टि से ये कहानियां रचना का सशक्त धरातल प्रस्तुत करती हैं ।

वन कथा : संपादक-अनुवादक— डॉ. गंगा प्रसाद विमल; प्रकाशक-शाश्वत प्रकाशन; ५४५२ शिव मार्केट, न्यू चंद्रावल, जवाहर नगर, दिल्ली-११०००७, मूल्य-साठ रुपये ।

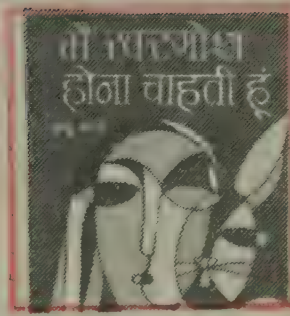
हर्डलरेस : हर्डलरेस की कहानियां एक दिलचस्प प्रश्न सामने रखती हैं कि कहानी को कहानी लगना चाहिए या सच । इस प्रश्न को यदि उलट दिया जाए तो पूछना होगा कि क्या सच भी कहानी लग सकती है ? इन कहानियों से यद्यपि इस प्रश्न का उत्तर पाना संभव नहीं, फिर भी इनका सच हमारे आस-पास बिखरी कहानियों का सच लगता है । कहानियों में व्यक्त संबंधों और उनसे जुड़े पात्रों को पहचानने में भी निवेदिता ने जिस गहन दृष्टि और अनुभूति का परिचय दिया है, वह लेखिका के लघु किंतु विस्तृत फलकवाले परिदृश्य की ओर इशारा करती है । ये कहानियां भाषा और शिल्प की दृष्टि से भी अच्छी बन पड़ी हैं । लेखिका का यह पहला कहानी-संग्रह होने पर भी परिपक्वता का अहसास दिलाता है ।

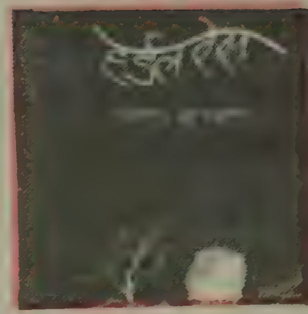
हर्डलरेस : लेखिका-निवेदिता बुद्धलाकोटी, प्रकाशक कादम्बरी प्रकाशन, ५४५१ शिव मार्केट, न्यू चंद्रावल, जवाहर नगर, दिल्ली-११००७२, मूल्य : अस्सी रुपये ।

मैं खरगोश होना चाहती हूं : सन १९६४ से रचनारत इंदु बाली का समीक्ष्य कहानी-संग्रह महानगर की त्रासदी और संघर्ष को नारी जीवन के माध्यम से प्रस्तुत करता है । इन सोलह कहानियों के नारी पात्रों की दुनिया मानो सिमटी हुई दुनिया है, जिसमें ये पात्र बार-बार मरते हैं, लेकिन इनकी जिजीविषा इतनी तीव्र है कि ये पात्र लगातार जीते भी हैं और संघर्ष भी करते हैं । पात्रों का यह हित्व इन कहानियों को मध्य









और उच्च मध्यवर्ग के बहुस्तरीय संघर्ष का जीवंत दस्तावेज बनाता है। संग्रह की 'प्रश्न अस्मिता का', 'बौनज़ाई की पीड़ा', 'बस तीन कपड़े' जैसी कहानियां इंदु बाली के अगले रचना-पड़ाव का आभास कराने वाली कहानियां हैं। 'मैं खरगोश होना चाहती हूं' जैसी कहानियां ऊपरी स्तर पर भले ही समाज में व्याप्त दहेज समस्या की हानियां लगती हों, किंतु भीतरी स्तर पर नमिता के माध्यम से उस विद्रोह को अंजाम देनेवाली कहानियां हैं, जो नारी की सामाजिक मुक्ति का कारक बनेगा। इसीलिए नमिता—जैसे पात्र 'खरगोश की अनुभूति और मानव का दिमाग' पाकर 'भरपूर जीना' चाहते हैं। 'बस तीन कपड़े' की तरुणा भी दहेज के लालची दावेदार को झटककर अपना फैसला खुद करती है। संग्रह की कहानियां पठनीय हैं।

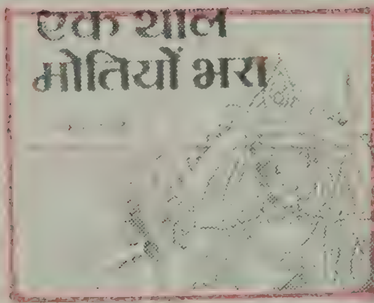
मैं खरगोश होना चाहती हूं : लेखिका-इंदु बाली, प्रकाशक-सुयोग्य प्रकाशन; डब्लयू-११६, ग्रेटर कैलाश-१, नयी दिल्ली-११००४८, मूल्य-पचपन रुपये।

तीसरे रावण की मौत : योगेंद्र शर्मा का प्रस्तुत कहानी संग्रह सन १९८० से अब तक लिखी उनकी ग्यारह कहानियों का संग्रह है। इन कहानियों में स्व के अनुभवों और जिंदगी के आस-पास बिखरे पात्रों की पीड़ाओं को आत्मसात करके कहानीकार ने उन्हें ऐसा रचनात्मक धरातल प्रदान किया है, जिससे सहज ही जुड़ाव हो जाता है। वस्तुतः संग्रह की कहानियां मनुष्य जीवन की जिजीविषा को प्रस्तुत करती हैं, जो यथार्थ और व्यंग्य के धरातलों पर एक साथ चलती हैं। इन कहानियों में दशरथ के वियोग की पीड़ा भी है और नारी का सौंदर्य बनाम अस्मिता का प्रश्न भी;इनमें घायल के प्रति संवेदना भी है और प्रेमी के सीने में धंसी कील का दर्द भी; इनमें समाज की परंपराओं का रोदन भी है और टूटते स्वप्न भी, 'द प्रोटीएस्ट' और 'तीसरे रावण की मौत' संग्रह की विशिष्ट कहानियां हैं। यह रावण कहीं कहानीकार का मानस पुत्र है, तो दूसरे स्तर पर समाज पर करारा व्यंग्य भी। इस रावण की मौत के लिए किसी राम की आवश्यकता नहीं है, उसे मारने के लिए आज की सीता ही सक्षम है। 'धब्बे' कहानी में यही रावण समाज के ठेकेदारों के रूप में उभरता है और व्यंग्य के माध्यम से दर्शाता है कि आधुनिक समाज को धर्म की अफीम की आवश्यकता नहीं है, वरन् उसे चाहिए आर्थिक विकास।

तीसरे रावण की मौत : लेखक-योगेंद्र शर्मा, प्रकाशक-दिनमान प्रकाशन; ३०१४, चर्खेवालान, दिल्ली-११०००६, मूल्य-पैंतीस रुपये।

छक्केलाल : व्यंग्य लेखिका डॉ. सरोजनी प्रीतम







के इस व्यंग्य-संग्रह के लेख हमारे समय की राजनीति, सामाजिक आचार, बुद्धिजीवी-आचरण आदि के व्यंग्यात्मक दस्तावेज हैं । इन लेखों में वर्णित पात्र वे साधारण लोग नहीं हैं, जो इस दुनिया में आते हैं, गरदन झुकाये अपने काम को अंजाम देते हैं और फिर कूच कर जाते हैं । ऐसे लोगों का जीवन स्वयं में व्यंग्य हो सकता है, व्यंग्य का आधार नहीं बन पाता । व्यंग्य का आधार वे लोग बनते हैं, जो अपने अनोखे कारनामों से अनोखेलाल बनकर यह सिद्ध करने पर तुल जाते हैं कि इस दुनिया में लाल भले ही इक्के-दुक्के हों, लेकिन छक्के लालों की संख्या भरपूर है । डॉ. सरोजनी प्रीतम की पैनी व्यंग्य दृष्टि ऐसे छक्केलालों और अनोखेलालों को पहचानने में चूकती नहीं । सच तो यह है कि हम सबमें ऐसे पात्र मौजूद हैं, आवश्यकता मात्र स्वयं में छिपे इन पात्रों को ढूंढ़ने की है ।

डॉ. सरोजनी प्रीतम के इन व्यंग्य लेखों के माध्यम से एक ऐसा सामाजिक चिंतन हमारे सामने प्रकट होता है, जो समाज के उस पात्र को प्रस्तुत करता है, जो अकसर हमारी दृष्टि की ओट में रहता है ।

संग्रह पठनीय भी है और चिंतनीय भी ।

छक्केलाल : लेखिका-डॉ. सरोजनी प्रीतम; प्रकाशक-हास्य अकादमी; १११, न्यू राजेंद्र नगर; नयी दिल्ली-११००६०; मूल्य-एक सौ रुपये ।

कलकत्ता-१९९४ : डॉ. प्रतिभा अग्रवाल द्वारा संकलित-संपादित यह संकलन कलकत्ता महानगर के हिंदी साहित्यकारों की सम्मिलित प्रतिभा का परिणाम है । संकलन में कविताओं और कहानियों के साथ-साथ निबंध, ललित निबंध और समीक्षात्मक लेख भी सम्मिलित किये गये हैं । संकलन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें रचना का स्तर अपेक्षित रहा है, नाम या प्रसिद्धि नहीं । इसलिए इसमें लब्ध-प्रतिष्ठ और नये सभी तरह के नाम हैं ।

संकलित कविताओं में से अनेक कवियों की कविताएं एक सतत् प्रक्रिया का आभास कराती हैं, जो रचनात्मक मनीषा की जीव्य है और रचना में निहित आत्मविश्वास का प्रतीक है । सकलदीप सिंह की 'ताला' श्रीहर्ष की 'सावधान', विद्या भंडारी की 'शब्दहीन चेहरा' मृत्युंजय उपाध्याय की 'भाई विनय की मृत्यु पर' ऐसी ही कविताएं हैं । कहानियों में हर्षनाथ की 'अलका', 'आम्रपाली', 'गंगाजली' और प्रभाखेतान की लंबी कहानी 'एड्स' विशिष्ट टिप्पणियों की अपेक्षा रखती हैं । निबंधों में कविता और निरंकुश सभ्यता' कविता के नये संदर्भों की तलाश करता है । संकलित ललित निबंध भी पीछे छूट रही विधया को तरोताजा करते हैं ।

कलकत्ता-१९९४ : संपादक-डॉ. प्रतिभा अग्रवाल, प्रकाशक-प्रतिध्वनि; ३१ सर हरिराम

गोयनका स्ट्रीट, कलकत्ता ७००००७; मूल्य-अस्सी रुपये ।

एक पड़ाव और

हिंदी के सोलह चर्चित-अचर्चित कहानीकारों की कहानियों का यह संकलन हिंदी-कहानी के विकास-क्रम का नया पड़ाव प्रस्तुत करने का दावा करता है । कथ्य के स्तर पर अवश्य कुछ कहानियां ऐसी हैं, जो इस दावे की निकटता का आभास कराती हैं । ओमजी मिश्र की कहानी 'संघर्ष जारी रहेगा', कृष्ण शंकर भटनागर की 'तमाशा', 'निशांतर' की 'नब्ज', रमेशचंद्र श्रीवास्तव की 'अक्स' जैसी कहानियां नयी सोच के साथ सामाजिक-पारिवारिक संबंधों का जायजा लेती हैं । यों कुछ कहानियां ऐसी भी हैं, जो परंपरागत सोच और मूल्य-सत्ता के दायरे में आती हैं । वेद हिमांशु की कहानी 'सर्पयोनि' और संतोष दीक्षित की कहानी 'नीड़ से नीड़ तक' इसी श्रेणी की कहानियां कही जा सकती हैं । लेकिन संकलन की लगभग सभी कहानियां पठनीय अवश्य हैं ।

एक पड़ाव और; संपादक-सतीषराज पुष्करणा; प्रकाशक-विवेकानंद प्रकाशन; महेंद्रू, पटना-८००००६ (बिहार); मूल्य-चालीस रुपये, पुस्तकालय संस्करण-साठ रुपये ।

क्षितिज के पार : निर्मला सिंह की दस कहानियों का यह संग्रह नारी जीवन के विभिन्न क्षेत्रों का जायजा है । लेखकीय दृष्टिकोण के अनुरूप ये कहानियां मात्र यथार्थ पर टिकी हुई नहीं हैं, वरन् इनमें कल्पना का भी यथापरक आश्रय लिया गया है । लेखिका ने इन कहानियों के और अपने आस-पास बिखरे पात्रो में प्रवेश करके उन्हें मनोवैज्ञानिक धरातल पर परखने का प्रयास किया है । इसी प्रयास का प्रतिफलन है । यह नारी जीवन की कहानियां, जिनमें भावनात्मक स्तर पर संवेदना-ग्रहण और फिर उसकी अभिव्यक्ति है । 'अंधेरी सुरंग', 'अछरा', 'कोरा सपना' संग्रह की अच्छी कहानियां हैं । भाषिक स्तर पर कहानियां पात्रों के अनुरूप चलती हैं, यद्यपि कहीं-कहीं ऐसे प्रयोग भी मिल जाएंगे, जो प्रवाह में अवरोध उत्पन्न करते प्रतीत होते हैं । 'कोमल किलकारी' एक ऐसी ही कहानी है, जो नारी की संतान वांछा को साकार करती है । कहानी-संग्रह स्वागत योग्य है ।

क्षितिज के पार : लेखिका-निर्मला सिंह; प्रकाशक-अयन प्रकाशन; १/२०, महरौली, नयी दिल्ली-११००३०; मूल्य-पचास रुपये ।

एक थाल मोतियोंभरा : हम अकसर लोक कथाओं और एक विशेष प्रकार की कहानियों को बच्चों की कहानियां कहकर एक ओर कर देते हैं— यह सोचकर कि इस ओर उस साहित्य में अंतर है या बच्चों के लिए लिखा गया साहित्य बड़ों के स्तर का नहीं है, लेकिन विश्व-साहित्य में अनेक ऐसे उदाहरण मिलेंगे जब बच्चों को दृष्टि में रखकर लिखी गयी रचनाएं विश्व की महान कृतियों में गिनी गयीं और सामान्य पाठकों के लिए लिखी गयी रचनाएं बच्चों में बेहद लोकप्रिय हुई । जय प्रकाश भारती की ये कहानियां भी सभी आयु वर्गों के पढ़ने योग्य हैं, क्योंकि ये जीवन के उन मूल्यों की कहानियां हैं, जो मनुष्य का मार्ग प्रशस्त करती हैं । संकलन की सभी कहानियां सरल-सुबोध शैली में लिखी गयी हैं और इनमें

अध्यात्म बोध और चमत्कार का प्रयोग भी किया गया है ।

एक थाल मोतियोंभरा : लेखक-जय प्रकाश भारती; प्रकाशक-नया साहित्य, मदरसा रोड़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-११०००६; मूल्य- पंद्रह रुपये ।

काके लागूं पांव : कथा-साहित्य के स्थापित हस्ताक्षर डॉ. भगवती शरण मिश्र की कलम से 'पवन पुत्र', 'पहला सूरज', 'बंधक आत्माएं' जैसे कृतियों के बाद 'काके लागूं पांव' उपन्यास एक सुखद अनुभूति देता है । डॉ. मिश्र ऐतिहासिक-पौराणिक विषयों पर लिखने में सिद्धहस्त कथाकार हैं । इसी कड़ी में 'काके लागूं पांव' सिक्ख धर्म के नवें गुरु तेगबहादुरजी और दसवें गुरु गोबिंद सिंह जी के जीवन-वृत्त पर आधारित है । वृहद् कलेवर का यह उपन्यास सिक्ख धर्म के उस दौर की कथा कहता है, जो संघर्षों, शौर्य-गाथाओं और शहादतों से भरा हुआ है । इसमें गुरु तेगबहादुर का प्रायः संपूर्ण जीवन-वृत्त और गुरु गोबिंद सिंह का बालकाल आधार स्वरुप ग्रहण किया

उपन्यास में कथा अनेक स्तरों पर चलती है और इतिहास-क्रम के एक अभाव की पूर्ति का प्रयास करती है । यह अभाव सिक्खों के नवें गुरु के जीवन, विचारों और कार्यों के समग्र आकलन से संबद्ध हैं । उपन्यासकार को इसमें अत्यंत सफलता प्राप्त हुई है । संभवतः यह लेखकीय उद्देश्य भी है । लेखकीय उद्देश्य के ही अंतर्गत दार्शनिक उपपत्तियां इस कृति का आधार बनी हैं और पाठक की चिंतन-शक्ति को प्रेरित करती है । उपन्यास जीवनी-परक उपन्यासों में विशिष्ट स्थान बनाने में सफल होगा ।

काके लागूं पांव : लेखक-भगवतीशरण मिश्र; प्रकाशक-राजपाल एंड सन्ज; मदरसा रोड कश्मीरी गेट, दिल्ली; मूल्य-दो सौ रुपये ।

—डॉ. सुरेश धींगड़ा

बुद्धि-विलास के उत्तर

१. सगर, २. क. १५२६ ई. में बाबर और इब्राहीम लोदी के बीच, ख. लोदी की हार, मुगल साम्राज्य की नींव पड़ी, ३. क. आस्ट्रेलिया के तस्मानिया द्वीप पर दस हजार वर्ष से भी पुराना चीड़ का वृक्ष (१९८५ में पता चला), ख. अमरीका में मिली एक फंफूदी २ से ५ हजार वर्ष पुरानी मानी जाती है, ४. क. जीन-चिकित्सा से अनेक बीमारियों का इलाज, ख. जीन, ५. क. नारवे की लीव अरनीसेन ५० दिन में १५०० किलोमीटर का सफर करके पहुंची, (दिसं. १९९४), ख. १४वां अभियान-दल १३ जन. को पहुंचा, नेता— वैज्ञानिक डॉ. एस. डी. शर्मा, ६. क. जरमनी, इटली, होंडूरास, इंडोनेशिया तथा बोत्स्वाना, ख. ब्राजील, जिबूती, न्यूजीलैंड, पाकिस्तान तथा स्पेन, ७. ९१.७८ अरब डॉलर (१९९३ ई.— नवीनतम आंकड़े), ८. क. मोरारजी देसाई, ख. द. अफरीका के आर्चबिशप रेवांड ट्रेवुद हडलूसटन, ग. मामा बालेश्वर दयाल, ९. क. फ्रांस की मेरी पियर्स ने स्पेन की अरांचा सांचेज को हराकर, ख. अमरीका के आंद्रे अगासी ने हमवतन पीट संप्रास को हराकर, १०. ग्यारह-वर्षीया छवि मदान ने नील द्वीप से पोर्ट-ब्लेयर के कार्बिन कोव तक ३३ किलोमीटर, ११ घंटे ५५ मिनट ५८ सेकंड में तैरकर पार किया, ११. अपने को छिपाने में माहिर तिलचट्टा ।



पेट में पलते जानवर

● शेरविन बी. नूलैण्ड

चौबीस वर्षीया ग्रेस लोपाट (असली नाम नहीं) अमरीका में कनेक्टोकट के निकट न्यू हैवन में नर्सरी स्कूल में अध्यापिका बनने के लिए प्रशिक्षण ले रही थी । देखने में वह स्वस्थ और सुंदर थी—इतनी कि सौंदर्य-प्रतियोगिता में ईनाम भी जीत चुकी थी, लेकिन वह आठ वर्ष की आयु से ही मधुमेह से पीड़ित थी और दिन में दो बार उसे इंसुलिन लेना पड़ता था ।

उसके साथ वह हादसा अचानक ही हुआ था । उसका सारा शरीर फूल गया था और त्वचा पर बड़े-बड़े चकत्ते पड़ गये थे । एनेस्थीसिया विशेषज्ञों ने उसे श्रेणी ५ का रोगी घोषित किया था, जिसका सीधा अर्थ था कि ऐसे रोगी को शल्य-चिकित्सा के बिना बचाना असंभव है । यह कह पाना आज भी कठिन है कि उसे अत्याधुनिक चिकित्सा-प्रणाली ने बचाया या किसी दैवी-शक्ति ने,जो उसकी बेहोशी के दौरान मृत पिता के रूप में प्रकट हुई थी । शल्य-चिकित्सा से पहले डॉक्टरों ने उसका जीवन केवल कुछ ही घंटों का आंका था । उसका शल्य-चिकित्सक होने के नाते पिछले चार वर्ष से सोचते रहने के बाद भी मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि ग्रेस लोपाट से अधिक विकट रोगी मेरे जीवन में नहीं आया ।

'क्यों' का उत्तर नहीं

ग्रेस के रोग की भांति उसकी जीवन-रक्षा के कारण को भी निश्चित कर पाना कठिन काम है । चिकित्सक-दल ने उसके रोग की प्रक्रिया को तो पहचान लिया था, लेकिन उनमें से कोई भी उस 'क्यों' का उत्तर देने की स्थिति में नहीं था, जिससे ग्रेस बीमार पड़ी थी । वे उस स्रोत के तीव्र विकास के कारण को भी नहीं समझ पाये । अनुमान के आधार पर ही उन्होंने ग्रेस को भविष्य में सुअर का गोश्त न खाने की सलाह दी थी ।

वस्तुतः बीमार पड़ने से पहले ग्रेस ने इतनी मात्रा में गोश्त नहीं खाया था कि वह सीधे-सीधे रोग का कारण बन सके । उसने बीमार पड़ने से डेढ़ दिन पहले चीनी भोजन लिया था, जिसमें सुअर का गोश्त और 'फ्राइड राइस' शामिल थे ।

ग्रेस की वार्षिक परीक्षा होने वाली थी । वह खुश थी कि आंतरिक परीक्षाओं में उसे बहुत अच्छे अंक मिले । एक सप्ताह के बाद वह अंतिम परीक्षा उत्तीर्ण कर प्रशिक्षित अध्यापिका बन जाती । अचानक उसे लगा, "मैं जमीन पर गिर गयी हूं—मैं समझ नहीं पा रही थी कि यह सब कैसे हुआ । मैं हड़बड़ा कर खड़ी हुई । परिसर में हजारों लोग मौजूद थे । मैं मना रही थी कि 'काश ! मुझे किसी ने इस तरह गिरते न देखा हो ।' पटरी ऊबड़-खाबड़ थी नहीं । गिरने का कोई कारण समझ में नहीं आ रहा था । ऐसे लगा जैसे टांगें ही साथ न हों । मैंने सोचा कि एक घंटा लगातार नाचने से थकान हो गयी है । हॉस्टल में मेरे साथ रहने वाली लड़कियों का विचार था कि मेरे पैर आपस में टकरा गये होंगे ।"

दूसरे दिन जब ग्रेस की नींद खुली तो वह बीमार लग रही थी । उसे उल्टियां और दस्त होने लगे । बदन पसीने से भीग रहा था । 'शायद फ्लू हो गया है,' ग्रेस ने सोचा । "मैं बिस्तर पर लेट गयी, लेकिन बार-बार उठना पड़ रहा था । मेरी सहपाठिन चिंतित होने लगीं, क्योंकि मैं पहले भी कई बार बीमार पड़ चुकी

मैंने ऑपरेशन शुरू किया और ग्रेस के पेट पर चीरा लगाया । जब मैं मांसपेशियों की अंतिम परत पर पहुंचा तो उसके पेट में से बदबूदार पीली पीव बलबला कर बाहर निकली । उससे कई बोतलें भर गयीं । उसकी आंतें पेट में भरी हवा में तैर रही थीं । यही कारण था कि पेट हलके-से दबाने पर भी उसमें से ढोल की-सी आवाज निकली थी ।

थी । ऐसे में मैं निर्जलन का शिकार हो जाती थी और मधुमेह बिगड़ जाने से मुझे अस्पताल ले जाना पड़ता था । लेकिन इस बार शर्करा का स्तर असामान्य नहीं था ।

''लड़कियों ने घबराकर मेरी मां को बुलवा भेजा । वे मुझे घर ले गयीं । निर्जलन से बचने के लिए मैं जिंजरएल पीती रही और उल्टियां रोकने के लिए दवा लेती रही । लेकिन उल्टियां थीं कि रुकने का नाम नहीं ले रही थीं । अगली सुबह मेरे पेट में दर्द होने लगा । मेरे हाथ-पांव सुन्न हो गये, जैसे शरीर के साथ ही न हों । ऐसा तो पहले कभी नहीं हुआ था । मुझे जैसे वातोन्मात्त हो गया । सब कुछ भयानक था ।

मधुमेह की भूमिका

ग्रेस के पिता की हृदय रोग से जब मृत्यु हुई, तब वह केवल दस वर्ष की थी । पति की मृत्यु के बाद एन्नी को ही परिवार चलाना था । सन १९७८ में यह पता चलने पर कि ग्रेस मधुमेह से पीड़ित है, उसने इस रोग के विषय में हर संभव जानकारी प्राप्त की और ग्रेस की देखभाल करने लगी । इसमें अनेक कठिनाइयां थीं । ग्रेस आम मरीजों की भांति अकसर खान-पान के नियमों का उल्लंघन कर देती और फिर एन्नी को उसका उपचार करना पड़ता । कभी-कभी उसकी हालत इतनी खराब हो ज कि उसे अस्पताल में दाखिल कराना पड़ता इस प्रकार उसे कुल सात बार अस्पताल ले जाना पड़ा । हर बार उसकी बढ़ी हुई अम्लरक्तता (एसिगोसिस) और निर्जलन क उपचार होता । अम्लरक्तता ऐसी अवस्था है यदि उसका समय पर इलाज न हो पाये तो र को वायु-विकार और बेहोशी के साथ-साथ रोगी की मृत्यु तक हो सकती थी ।

लेकिन इस बार एन्नी का सारा कौशल व गया । उसे नयी स्थिति का सामना करना पड़ रहा था । ''उसने मुझे सुबह साढ़े पांच बजे कर बताया कि वह अपने हाथ-पैरों को महस नहीं कर पा रही है । मैं समझ गयी कि उसे अस्पताल ले जाना जरूरी है । जब मैं ग्रेस क कार में लिटा रही थी, तब उसने मुझे बताया वह यह भी महसूस नहीं कर पा रही कि उस पांव जमीन पर रखा है ।'' एन्नी ने बताया ।

ग्रेस के रक्त के नमूने तुरंत ले लिये गये उसे ऑक्सीजन चढ़ा दी गयी । परीक्षणों में ऊपरी तौर पर कुछ भी असाधारण नहीं लग था ।



मेरा शरीर ही मेरे साथ नहीं था

ग्रेस की हालत बिगड़ती जा रही थी । वह चिल्ला रही थी । उस समय की अवस्था का वर्णन करते हुए ग्रेस ने कहा था, "मेरा पेट दुख रहा था । वह एकदम सख्त था, जैसे किसी ने मेरे स्नायुओं को निचोड़ दिया हो । मैं भयभीत थी । सोच रही थी कि शायद २४ घंटे से उल्टियां करते रहने से ऐसी हालत हो गयी है । लेकिन, जिस बात ने मुझे डरा दिया था वह यह थी कि मैं कुछ भी स्पष्ट महसूस नहीं कर पा रही थी । मुझे लग रहा था, जैसे मैं वहां मौजूद ही नहीं थी, जैसे मेरा शरीर ही मेरे साथ नहीं था ।

"मां मुझे सांत्वना देने की कोशिश में लगी हुई थी । मैं लगातार चीख रही थी, तड़प रही थी । तभी मां ने पूछा, "तुम्हें पता चला कि तुम पेशाब कर रही हो ?" मुझे कुछ पता नहीं था । तभी मैंने मां की चीख सुनी, 'हे भगवान ! यह तो खून है !' उसने नर्स को पुकारा । उसके बाद मुझे इतना ही पता चला कि मेरे चारों ओर नर्सें और डॉक्टर मौजूद थे ।"

रक्तदोष

वस्तुतः ग्रेस के रक्त-परीक्षणों का परिणाम भी सामान्य नहीं था । श्वेतकणों की मात्रा २८,५०० प्रति घन मिलीमीटर थी, जबकि सामान्य संख्या होनी चाहिए ५,००० से ११,००० के बीच । यह इस बात का संकेत था कि ग्रेस के शरीर में कहीं भयानक संक्रमण है और उसका तुरंत निदान और उपचार होना चाहिए । रक्त-मधु का परिमाण भी ६५४ मिलीग्राम प्रति डेसीलीटर था, जो सामान्य से सात गुना था । उसमें अम्लरक्तता भी सामान्य से अधिक थी । यह स्थिति तभी होती है जब मधुमेह का रोगी किसी संक्रामक रोग का शिकार होता है । चिकित्सकों ने उसे सुई (इंजेक्शनों) के माध्यम से प्रतिजीवाणु (एंटीबॉयटिक्स) देने शुरू कर दिये ।

इनमें से सबसे महत्वपूर्ण तथ्य था श्वेताणुओं की असामान्य संख्या । लेकिन इससे भी ज्यादा चिंतित करनेवाली बात तो ग्रेस की अवस्था थी, जिसे कुछ पता नहीं चल रहा था कि उसे क्या हो रहा है । उसके पूरे शरीर पर जामुनी-भूरे चकत्ते थे और जहां चकत्ते नहीं थे, वहां त्वचा एकदम श्वेत पड़ गयी थी । उसके शरीर का तापमान सामान्य से एक डिग्री कम था और रक्तचाप भी गिरना शुरू हो चुका था ।

ग्रेस की यह हालत रक्तदोष (सेप्सिम) की ओर संकेत कर रही थी । भयानक संक्रमण की इस अवस्था में रोगी के महत्त्वपूर्ण अवयव बेकार हो जाते हैं और उसकी मृत्यु भी हो सकती है ।

डॉक्टरों का अनुमान कि ग्रेस के पेट में कोई संक्रामक रोग हो सकता है । उन्होंने आंत्रशोथ विशेषज्ञ सूजन लागार्डे और ग्रेस के मूल चिकित्सक मर्रे ब्रोडोफ से संपर्क किया । तभी

ब्रोडोफ ने मुझसे संपर्क किया । मैं उस समय एक ऑपरेशन करने की तैयारी कर रहा था, इसलिए मैंने अपने सहायक को ग्रेस का परीक्षण करने भेज दिया ।

लागार्डे यह देखकर हैरान थी कि इतनी दवाइयों के बावजूद भी मरीज की अम्लरक्तता कम नहीं हुई और वह हिस्टीरिया के मरीज की भांति व्यवहार कर रही है । उसने कैट स्कैन और स्नायु-विशेषज्ञ की सलाह लेने का मशविरा दिया । मेरे सहायक ने भी लौट कर बताया कि ग्रेस का केस शल्य चिकित्सक का नहीं है ।

बहुत खोजने पर भी कोई ठोस कारण हाथ नहीं लगा । तब मैंने अपने पूर्व-निर्णय के अनुसार आंत का वह हिस्सा निकाल दिया । बाद में मैंने अपनी टिप्पणी में लिखवाया, ''इस रक्ताल्पता का कारण पता लगाना कठिन है । ऑपरेशन करने वाले चिकित्सक दल का पहले कभी ऐसी स्थिति से सामना नहीं हुआ ।''

उसकी बात सुनकर मैंने निर्णय किया कि मैं खुद उसका परीक्षण करूंगा ।

पेट से ढोल की आवाज

जब मैंने ग्रेस को देखा तो मेरा मजबूत कलेजा भी एक बार दहल गया । वह किसी वायवीय शक्ति के कारण उछल-कूद मचाती हुई लाश लग रही थी । उसके शरीर पर जितने बड़े-बड़े जालनुमा चकत्ते मैंने देखे, पूर्वज्ञान होने पर भी मैंने उनकी कल्पना नहीं की थी । उसका पेट भी पिछले दो घंटों में इतना फूल गया था कि पसलियां पूरी तरह से छिप गयीं थीं । मैंने पेट का परीक्षण करने के लिए अंगुली से बजाकर देखा तो उसमें से ढोल बजने की-सी ध्वनि हुई । इससे एक बात तो साफ हो गय ग्रेस की आंतों में हवा भरी हुई थी । आले परीक्षण करने पर लगा कि आंतों में हरकत उत्पन्न मांसपेशियों की फैलने और सिकुड़ने प्रक्रिया एकदम नदारद है । मैंने बहुत हल्के ग्रेस का पेट दबाया । उसके चेहरे पर तुरंत के चिह्न उभर आये । वह मुझे भयभीत दृष्टि देख रही थी, लेकिन एक भी शब्द बोलने की स्थिति में नहीं थी ।

मृत आंतें

पेट के इस तरह अचानक फूलने को पुर चिकित्सकों ने मिटियोरिज्म का नाम दिया है मुझे लगा कि यह ग्रेस के रोग का निदान हो सकता है यानि उसकी आंतें मृत हो चुकी हैं श्वेत रक्ताणुओं की अतिशय वृद्धि का भी यह उत्तर हो सकता था । इसका अर्थ था तुरंत ऑपरेशन ।

उसी समय वहां आंत्रशोथ विशेषज्ञ माइ बेनिक पहुंचे । उन्होंने भी ग्रेस का परीक्षण क अपनी टिप्पणी में लिखा, ''इस मरीज के लि तुरंत ऑपरेशन ही एकमात्र विकल्प है, अन्य मृत्यु का काफी खतरा है ।''

हमने निर्णय ले लिया और बेनिक ने ग्रेस की मां को स्पष्ट शब्दों में बता दिया, ''एन्री,

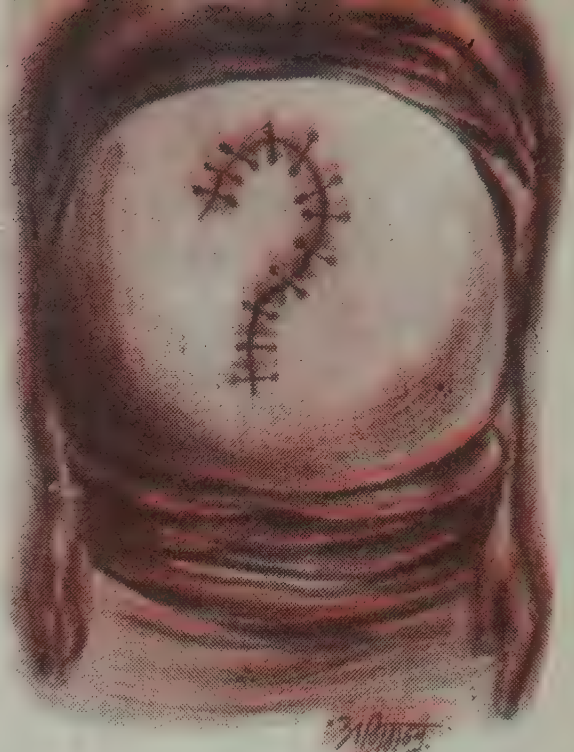
ग्रेस मर रही है और कारण हमें पता नहीं । हमें इसके शरीर में झांकना पड़ेगा—उसके लिए यही एक विकल्प है ।''

यह अंतिम संस्कार था

जिस समय ऑपरेशन की तैयारी चल रही थी, उस बीच ग्रेस की चेतना कुछ क्षणों के लिए लौट आयी थी । उसे अच्छी तरह याद है कि वह ऑपरेशन कक्ष में जाते समय तड़प रही थी ।

''मैं करवट लेना चाहती थी क्योंकि मुझे लग रहा था कि इससे मुझे राहत मिलेगी । मैं सोच रही थी, 'मैं मर रही हूं—मैं सिर्फ २० साल की हूं और मैं मर रही हूं ।' पादरी आ गये थे और प्रार्थना करते हुए छाती पर क्रॉस बना रहे थे । मैं सोच रही थी, 'हे भगवान, यह अंतिम संस्कार है । यह तुम्हारी आखिरी यात्रा है ।'

''मुझे ईश्वर की शक्ति में पूरा विश्वास है और पिता की मृत्यु के बाद भी मेरा उनसे संपर्क रहा है—मैं उनकी उपस्थिति हमेशा महसूस करती रही हूं । मेरे चाचा रोन की जब मृत्यु हुई थी, तब मैं केवल पांच वर्ष की बच्ची थी । मेरा हमेशा विश्वास रहा है कि मेरे पिता और चाचा स्वर्ग में हैं और मैं भी किसी दिन मरने के बाद उनसे जा मिलूंगी । यह विश्वास वैसा ही था जैसा मेरा यह विश्वास कि मरते समय मेरे पिता के चेहरे पर जो मुसकान थी, वह मेरी मां के लिए थी या मेरे पिता का स्वर्ग में मेरे दादा-दादी ने स्वागत किया था । मैं लेटी हुई महसूस कर रही थी कि मेरा शरीर खींचा जा रहा है । यह खिंचाव वैक्यूम क्लीनर के खिंचाव-जैसा था—मुझे लग रहा था कि मेरा सारा शरीर आगे की ओर खींचा जा रहा है । मैं सोच रही



थी, 'मैं आ रही हूं, बस कुछ क्षण—मैं मर रही हूं ।'

''और तभी मुझे अपने पिता और चाचा दिखायी पड़े । वे वहां खड़े थे और मैं सोच रही थी, 'अच्छी बात है, भगवान ! मैं मर चुकी हूं ।' वहां रोशनी नहीं थी—शायद रोशनी लाने के लिए बहुत दूर जाना पड़ता है । मेरा विचार है कि या तो वे मेरे पास आये थे या मैं ही उनके पास पहुंची थी । मां बताती है कि मैं कह रही थी, 'बिल, रोन !' मैं अपने पिता और चाचा को नाम से कभी नहीं पुकारती थी । लेकिन शायद मृत्यु के बाद संबोधन बदल जाते हैं । तब मैंने अवश्य पुकारा था, 'बिल, रोन ।' और मेरे पिता ने हाथ बढ़ाते हुए कहा था, 'नहीं, अभी नहीं ।' और मैं रुक गयी। मैंने मां की ओर देखा और कहा, 'मैं जिंदा रहूंगी ।' ये मेरे अंतिम शब्द थे ।

पिग्वैल

मैंने ओपरेशन शुरू किया और ग्रेस के पेट पर चीरा लगाया । जब मैं मांसपेशियों की अंतिम परत पर पहुंचा तो उसके पेट में से बदबूदार पीली पीव बलवला कर बाहर

निकली । उससे कई बोतलें भर गयीं । उसकी आंतें पेट में भरी हवा में तैर रही थीं । यही कारण था कि पेट हलके-से दबाने पर भी उसमें से ढोल की-सी आवाज निकली थी ।

छोटी आंत का आधार से लगभग १५ इंच का हिस्सा मृत था । उसका रंग मटमैला नीला पड़ चुका था और गतिहीन हो गया था । आश्चर्यजनक बात यह थी कि उसमें से गुजरने वाली रक्त-कोशिकाएं सामान्य रूप से काम कर रही थीं ।

बहुत खोजने पर भी कोई ठोस कारण हाथ नहीं लगा । तब मैंने अपने पूर्व-निर्णय के अनुसार आंत का वह हिस्सा निकाल दिया । बाद में मैंने अपनी टिप्पणी में लिखवाया, ''इस रक्ताल्पता का कारण पता लगाना कठिन है । ऑपरेशन करने वाले चिकित्सक दल का पहले कभी ऐसी स्थिति से सामना नहीं हुआ ।''

मैंने ग्रेस के पाचन अंग की अनवरतता को पुनर्स्थापित करने के अलावा कुछ नहीं किया था । इस काम के बाद एंटी बॉयटिक्स दवाओं के घोल से उसके जख्म को धोकर मैंने सी दिया ।

ऑपरेशन तकनीकी दृष्टि से एकदम सफल था, लेकिन रोग का कारण शायद पैथॉलोजिस्ट की रपट के बाद ही मालूम हो सकता था । आंत का निकाला हुआ हिस्सा मैं उसे सौंप चुका था ।

ग्रेस की स्थिति में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ । उसकी त्वचा पर चकत्ते वैसे ही थे । पैथॉलोजिस्ट ब्रियस वेस्ट ने मुझे अपनी प्रयोगशाला में बताया, ''ग्रेस की रक्तकोशिकाएं एकदम स्वस्थ हैं । आंत्र ऊतकों के मृत होने का कारण मेरे विचार से पिग्बैल है ।''

पिग्बैल के विषय में मुझे कोई जानकारी न[illegible] थी । मैंने ब्रियस से उसके विषय में पूछा और जब उसने बताना शुरू किया, तब मैं समझ गया कि यह क्या बला है । माइक्रोस्कोप से देखने पर मैंने पाया कि क्षतिग्रस्त आंत की अंदरूनी श्लैष्मिक परत मृत थी और उस पर लाखों की संख्या में छड़ी के आकार के क्लोस्ट्रीडिया जीवाणु (बैक्ट्रिया) थे जिसे व[illegible] समझ रही थी कि पेट में जानवर पल रहे हैं । इसी परिवार के जीवाणु वात गैंग्रीन और टेटन[illegible] का कारण बनते हैं ।

सूअर का गोश्त : खलनायक ?

इसी बीच मुझे सूचना मिली कि ग्रेस की स्वप्रवृत्त पेशियों के ऊतकों का क्षय होने लगा है । इसका कारण भी क्लोस्ट्रीडिया बैक्ट्रिया द्वारा उत्पन्न विष ही था ।

ग्रेस के पेट में पल रहे जीवाणुओं और न्यू[illegible] गिनी के आदिवासियों की आंतों में मिलने वा[illegible] जीवाणुओं में समानता थी । न्यू गिनी के हजार[illegible] आदिवासी इसी प्रक्रिया का शिकार होकर मरत[illegible] रहे हैं । वस्तुतः उनके पारंपरिक पर्वों में सूअर की आंतों और गोश्त को शकरकंद या केलों [illegible] साथ केले के पत्तों में परत दर परत लपेट कर जमीन में दबा दिया जाता है और फिर गड्ढे म[illegible] पानी डालकर उस पर आग जला कर उसे पकाया जाता है । इस प्रक्रिया में एक तो गोश्त अधपका रह जाता है, दूसरे जीवाणुओं को पनपने का अवसर भी मिल जाता है ।

सामान्यतः कलोस्ट्रीडिया द्वारा उत्पन्न विष [illegible] शरीर में उत्पन्न ट्रिपसिन नामक एंजाइम नष्ट क[illegible] डालता है, किंतु शकरकंद में उपलब्ध रसायन

श्वेत रक्ताणु भी अब बढ़कर २१,००० तक पहुंच गये थे । अनुमान लगाया जा सकता था कि उसकी आंत का एक और हिस्सा मृत हो चुका है । उसका शरीर फिर फूलने लगा था और वजन १२५ पाउंड से बढ़ कर १८५ पाउंड हो गया था ।

इस एंजाइम की क्रिया को मंद कर देते हैं । शकरकंद इन आदिवासियों का मुख्य भोजन है । क्लोस्ट्रीडिया और ट्रिपसिन के प्रभाव को मंद करने वाले शकरकंद का योग पिग्बैल के लिए आदर्श स्थिति बन जाता है । लंबे समय तक कुपोषण का शिकार रहने वाले व्यक्ति भी यदि यकायक पौष्टिक आहार लेने लगें, तो इसका शिकार हो सकते हैं । इसका उदाहरण हमें द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान जरमनी में डार्मब्रांइट, चीन, बंगलादेश, सोलोमन द्वीप समूह, थाईलैंड में खमेर शरणार्थियों आदि में मिलते हैं ।

दूसरा ऑपरेशन

ग्रेस इसमें से किसी भी स्थिति का शिकार नहीं हुई थी, फिर भी उसकी हालत बद से बदतर होती जा रही थी । क्या मधुमेह के कारण उसका ट्रिपसिन एकदम प्रभावहीन हो गया था ?

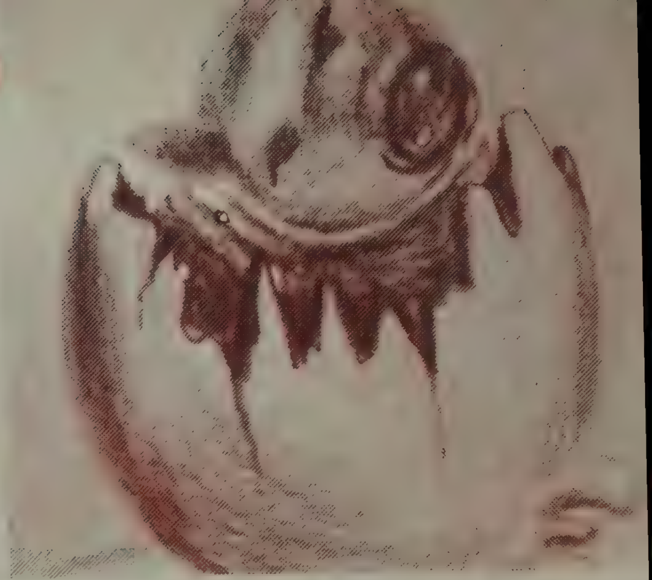
अब तो उसके गुरदे भी काम नहीं कर रहे थे । उसे डायलाइसिस पर रखा जा रहा था । उसे दी जा रही पांच में से तीन दवाएं एंटी-बायटिक थीं । उसके चार्ट पर १४ संभावित बीमारियों के नाम थे—रक्तदोष, गुरदे की खराबी, मधुमेह, चकत्ते, आदि-आदि । श्वेत रक्ताणु भी अब बढ़कर २१,००० तक पहुंच गये थे । अनुमान लगाया जा सकता था कि उसकी आंत का एक और हिस्सा मृत हो चुका है । उसका शरीर फिर फूलने लगा था और वजन १२५ पाउंड से बढ़कर १८५ पाउंड हो गया था ।

ग्रेस के लिए दूसरा ऑपरेशन अनिवार्य हो गया था । पहले लगाये गये टांकों को काटते ही अंदर से द्रव पदार्थ और पीव निकला । उसकी आंत का डेढ़ फुट का हिस्सा मृत हो चुका था, यानी रक्ताल्पता और कलोस्ट्रीडिया जीवाणुओं का प्रभाव क्षेत्र बढ़ चुका था ।

विजय-पथ पर

मैंने उस मृत अंश को भी निकाल दिया । पेट को पूरी तरह से साफ करने के बाद इस बार मैंने उसे परंपरागत ढंग से सिला । इस तरीके में आधुनिकतम यंत्रों और साधनों का इस्तेमाल भले ही न होता हो, शल्य चिकित्सक का पूरा कौशल और अनुभव अवश्य लगता है ।

अगले २४ घंटों में ग्रेस की स्थिति में माइक बेनिक के शब्दों में 'चहुंमुखी सुधार' हुआ । पहली बार हमें लगा कि हमारा संघर्ष विजय-पथ पर है । यद्यपि इसके बाद एक बार फिर ग्रेस की हालत बिगड़ने लगी ; उसके श्वेताणुओं की संख्या ३३,००० हो गयी । मुझे लगा कि उसकी रक्तवाहिनियों में कहीं संक्रमण है, किंतु इसका कोई प्रमाण मेरे हाथ नहीं लगा । फिर मैंने सोचा कि कहीं ऐसा तो नहीं कि उसकी आंतों के स्राव ऑपरेशन के जख्म



को संक्रामित कर रहे हों, लेकिन इस अनुमान का भी कोई आधार नहीं मिला। सबसे खतरनाक संभावना इस बात की थी कि कहीं उसकी बची-खुची आंत भी प्रभावहीन न हो गयी हो। रेडियो आइसोटोप स्कैन ने इस संभावना को भी निराधार साबित कर दिया। लेकिन जब मैंने स्कैन विशेषज्ञ के साथ बैठकर उसकी रिपोर्ट का गहन अध्ययन किया, तब जमीन पांवों के नीचे से खिसकती लगी। पूरी आंत की अंदरूनी परत पर क्लोस्ट्रीडिया छिटके हुए थे।

इस बीच जब-जब मैंने ग्रेस का परीक्षण किया, तब-तब मुझे लगा कि वैज्ञानिक तौर पर सिद्ध क्लोस्ट्रीडिया और रक्ताल्पता की उपस्थिति के बावजूद उसका पेट सामान्य तौर पर पिचका हुआ है और दबाने पर भी पीड़ा के वैसे चिह्न नहीं उभरते, जैसा कि ऑपरेशन से पहले हुआ था। ठोकने की आवाज भी सामान्य-सी थी। ग्रेस की सामान्य स्थिति में अब सुधार लग रहा था।

उन्नत तकनीक बनाम निदान

इस बीच अन्य चिकित्सकों ने काफी दबाव डाला कि ग्रेस का तीसरा ऑपरेशन किया जाना चाहिए। वस्तुतः युवा चिकित्सकों में उन्नत तकनीक का इतना मोह उत्पन्न हो चुका है कि उनमें रोगी के इतिहास और निदान के आधार पर निष्कर्ष तक पहुंचने का धैर्य ही नहीं रहा। इस स्थिति में मैंने अपने लंबे अनुभव और आयु के आधार पर अंतिम निर्णय किया कि "ग्रेस की आंतें अतिक्षय की शिकार नहीं हैं। मेरे विचार में उसका ऑपरेशन नहीं होना चाहिए।"

सौभाग्य से मेरा विचार सही निकला।

अगले दिन तक ग्रेस की स्थिति में इतना सुधार हो गया कि उसके लिए सांस की नली की आवश्यकता नहीं रही। अगले २४ घंटों के बाद वह पूर्णरूप से चेतनावस्था में आ गयी। उसने आंखें खोलीं और मां को देखा। फिर उसने कहा, "मां, शुक्रवार को मेरी इतिहास की परीक्षा है।" ऑपरेशन के बाद के ११ दिनों उसे कोई प्रतीति नहीं थी।

बिना वर्षा के इंद्रधनुष

१८ सप्ताह के बाद ग्रेस को अस्पताल से छुट्टी दे दी गयी। चार महीने के बाद वह फिर से कॉलेज जाने लगी।

ग्रेस की मां को लगता है कि इस बीमारी के दो वर्ष बाद जब ग्रेस ने स्नातक की उपाधि प्राप्त की तो वह केवल धैर्य और सौभाग्य का ही परिणाम नहीं था, उसमें बिल की आत्मा द्वारा प्रदत्त संरक्षण भी काम कर रहा था। जब ग्रेस को अस्पताल में होश आया था, तब उस समय आकाश में इंद्रधनुष निकला था—बिना वर्षा के इंद्रधनुष! एन्नी को याद है वह इंद्रधनुष! उसे विश्वास है, वह अच्छा सगुन था।

प्रस्तुति : डॉ. सुरेश धींगड़ा

लेखन एक अकेली और निरीह यातना

श्रीनगर (गढ़वाल) : हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय के सभागार में सुप्रसिद्ध कथाकार एवं कादम्बिनी-संपादक श्री राजेन्द्र अवस्थी का एक विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया। अपने व्याख्यान में श्री अवस्थी ने कहा कि लेखन अपने आप में एक अकेली और निरीह यातना है। अकेलेपन में लिखी चीज जब छपकर सामने आती है, तो वह सबकी हो जाती है। पाठक ही उसके सत्यं-शिवं-सुंदरम पक्ष का सच्चा पहचानकर्ता होता है। भीड़ में भी लेखक अकेला होता है। कारण भीड़ से बचने के लिए उसे अपनी सारी शक्ति लगानी पड़ती है। हर आदमी से अपने आप को बचाना पड़ता है। उन्होंने आगे कहा कि राजनीतिक दृष्टि से हम दुनिया में अत्यंत दयनीय बन गये हैं। हर आदमी की नजर हम पर है। आज हमारे देश में राजनीतिक स्तर पर बहुत ही घटिया शीतयुद्ध चल रहा है। साथ ही उन्होंने जोर देकर कहा कि भारत ही एकमात्र देश है, जो शक्ति संपन्न है। यह शक्ति यहां की सांस्कृतिक विरासत में निहित है। उन्होंने लेखकों का आह्वान किया कि वे अपने आंचलिक परिवेश को केंद्र बनाकर लेखन कार्य करें।

इस आयोजन की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी. एस. राजपूत ने भारतीय सांस्कृतिक परंपरा के कुछ पक्षों का



मार्मिक उद्घाटन किया और विश्वास व्यक्त किया कि भविष्य में हमारा देश एक शक्ति के रूप में उभरकर आएगा।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. हरिमोहन ने किया।

व्याख्यान के बाद श्री अवस्थी ने कादम्बिनी-क्लब के सदस्यों से भेंट की तथा उनसे साहित्यिक चर्चा की। इस अवसर पर 'कादम्बिनी' की लेखिका डॉ. सुधा पांडेय भी उपस्थित थीं। उन्होंने कादम्बिनी-क्लब के सदस्य रचनाकारों से अपने लेखन में भारतीय

संस्कृति के तत्वों का अधिक से अधिक समावेश करने का सुझाव दिया ।

—संयोजक, कादम्बिनी क्लब ।

साहित्य गोष्ठी

'कादम्बिनी' क्लब, रांची के तत्वावधान में स्थानीय शिल्पी युवा संगठन कार्यालय परिसर में साहित्यकारों एवं साहित्यप्रेमियों की बैठक संपन्न हुई । उक्त अवसर पर आयोजित साहित्य चर्चा में अनेक लोगों ने हिस्सा लिया । इसके अतिरिक्त डॉ. ध्रुव तनवानी, श्री कृष्ण कुमार मधुकर, श्रीमती शीला सिंह रॉय, श्री नरेश कुमार बंका, श्रीमती महुआ माझी, श्री आलोक प्रियदर्शी, श्री राजीव कुमार थेपड़ा, सुश्री रश्मि कुमारी एवं आलोक आदित्य आदि ने अपनी-अपनी कविताएं सुनायीं । बैठक का संचालन क्लब के संयोजक आलोक आदित्य ने किया ।

काव्य गोष्ठी

'कादम्बिनी' क्लब, खंडवा द्वारा स्थानीय गांधी भवन हॉल में 'काव्य सुमन' कवि गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता पं. वीरेन्द्र मिश्र ने की । अतिथि श्री सुरजीत सिंह चावला एवं श्री अवधेश सिसोदिया थे । कार्यक्रम का पं. राजेन्द्र मिश्र ने संचालन किया ।

गोष्ठी में सुपरिचित कविगण सर्वश्री चंद्रसेन विराट, दिनेश शुक्ल, डॉ. श्रीराम परिहार, प्रभु शंकर शुक्ल, हिफाजत खंडवी, रामेश्वर हरिद, जावेद खंडवी, श्रीमती शकुंतला बडोकिया, संतोष ओझा, हरिओम मानसार, रमाकांत पांडे ने रामशरण ओझा के संचालन में काव्य सुमन अर्पित किये ।

क्लब की ओर से श्री नत्थूभाई पटेल ने अध्यक्ष पं. वीरेन्द्र मिश्र का शॉल-श्री फल से स्वागत किया । संयोजक रमेश राव आब्हाड़ ने सभी का पुष्प-हारों से स्वागत किया । दैनिक 'भास्कर' ब्यूरो प्रमुख श्री राजेन्द्र परिहार ने आभार व्यक्त किया ।

प्रस्तुति—रमेश राव, आव्हाड़, संयोजक ।

शोक सभा

'कादम्बिनी'-क्लब, सीतामढ़ी के सदस्यों तथा आगत रचनाकारों की एक बैठक श्री राम नाथ 'सुमन' की अध्यक्षता में हुई, जिसमें स्थानीय साहित्यकार श्री मुन्नी लाल आर्य के निधन पर शोक प्रकट किया गया । उपस्थित रचनाकारों ने दिवंगत पत्रकार तथा वरिष्ठ साहित्यकार श्री योगेन्द्र रीजवाल तथा श्री आर्य के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर एक स्मारिका प्रकाशित करने का निर्णय लिया ।

क्लब की संयोजिका श्रीमती आशा प्रभात ने श्री आर्य के सामाजिक कार्यों पर प्रकाश डाला । बैठक में नवनिर्मित जिला शिवहर के जिलाधिकारी के पद पर वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. भगवती शरण मिश्र के पदस्थापन पर हर्ष व्यक्त करते हुए श्रीमती आशा प्रभात ने कहा कि क्षेत्र की आम जनता को ऐसे कर्मठ एवं ईमानदार समाहर्ता से लाभ पहुंचेगा तथा क्षेत्र का विकास होगा । बैठक में गोयनका महाविद्यालय के हिंदी के पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. मदन मोहन 'पूर्णेन्दु', प्रो. विनोद कुमार, श्री अवध बिहारीशरण हितेन्द्र, खालिद अहमद 'सागर',

श्याम नंदन प्रसाद, रामस्वरूप स्वर्णकार, श्री जय प्रकाश मिश्र, रीता झा तथा सुश्री वंदना आदि ने अपने विचार व्यक्त किये।

साक्षरता प्रसार में बुद्धिजीवियों की भूमिका

होशंगाबाद। 'कादम्बिनी क्लब' की तृतीय मासिक आवृत्ति के अंतर्गत एक गोष्ठी का आयोजन कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में किया गया। गोष्ठी के प्रथम चरण में 'साक्षरता प्रसार में बुद्धिजीवियों की भूमिका' विषय पर चर्चा की गयी।

गोष्ठी के द्वितीय चरण में क्लब के सदस्य गीतकार मगनलाल 'नगीना', बीना दुबे रोशनी, सुभाष यादव भारती, कृष्णकांता अग्रवाल, एम. पी. मिश्र ने कविता पाठ किया। प्रस्तुत रचनाओं की काव्यवस्तु एवं शिल्पगत विशिष्टताओं पर चर्चा की गयी। अन्य कवियों में संतोष व्यास भी उपस्थित थे। गोष्ठी का संचालन संयोजक बाबूलाल कदम ने किया एवं शिवानंद सोनी ने आभार माना।

कादम्बिनी क्लब : सदस्यों की रचनाएं

मुझे पता नहीं

मेरी आत्मा
व्याकुल है।
मेरा मन
चंचल है।
कारण ?
पता नहीं ! पर
सहेलियां कहती
'तुम नादान हो !
आशा क्या है ?
निराशा क्या है ?
इसकी पहचान,
तुम्हें नहीं है !
मुझे
पता नहीं
यह नादानी क्या है ?

—वि. शीजा,
मद्रास

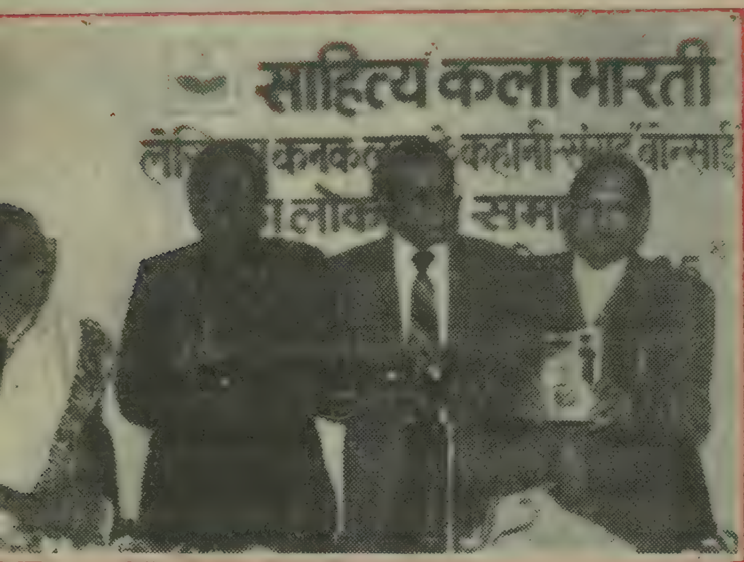
विवशता

जीर्ण-शीर्ण हुए कपड़े
देह पर पड़ी झुर्रियां
पैरों में फटी बिवाइयां
वह गरीब बूढ़ा
कदम दर कदम
शनैः शनैः बढ़ता जा रहा है
अपनी धूमिल-सी
मंजिल की ओर
अट्टहास करते हुए
बादल गरजने-बरसने
को तत्पर
किंतु,
फिर यह बढ़ता ही
जा रहा है
अपनी मंद गति से।

—रविन्द्र जैन
द्वारा साहनी फाइनेंसर्स
अंबाला रोड सहारनपुर

सांस्कृतिक समाचार

दिल्ली की सामाजिक व साहित्यिक संस्था साहित्य कला भारती के तत्वावधान में लेखिका कनकलता की पुस्तक 'बोन्साई' (कहानी संग्रह) का



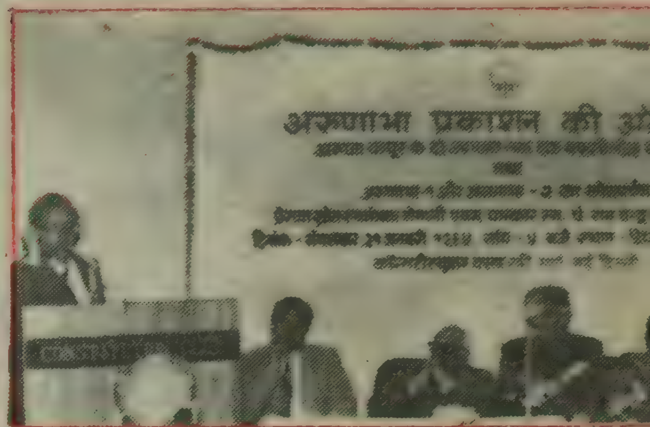
लोकार्पण समारोह आयोजित किया गया । पुस्तक का लोकार्पण कादम्बिनी के संपादक श्री राजेन्द्र अवस्थी ने किया । समारोह की अध्यक्षता वरिष्ठ पत्रकार श्री कन्हैयालाल नंदन ने की व विशिष्ट अतिथि हिंदी अकादमी, दिल्ली के सचिव श्री रामशरण गौड़ थे ।

इस अवसर पर हिंदी के प्रचार-प्रसार व कला संवर्धन के लिए श्री संजीव कुमार को साहित्य कला भारती सम्मान दिया गया तथा उसके पश्चात एक सरस गीत-गजल संध्या (काव्य गोष्ठी) में सर्वश्री धनंजय सिंह, वीरेन्द्र 'मधुर', सत्यपाल 'सत्यम', विज्ञान व्रत, अशोक वर्मा एवं दिनेश रघुवंशी ने काव्य पाठ किया । समारोह का संचालन कवि श्री महेन्द्र शर्मा ने किया ।

संस्था के अध्यक्ष श्री सतीश सागर ने समारोह में उपस्थित सभी गण्यमान्य व्यक्तियों का धन्यवाद किया ।

'अरुणाभा' का लोकार्पण

नयी दिल्ली के कांस्टीट्यूशन हॉल में प्रसिद्ध पत्रकार एवं स्वतंत्रता-सैनानी स्व. पंडित रामचंद्र शर्मा 'महारथी' की स्मृति में आयोजित समारोह में श्रीमती अरुणा कपूर द्वारा संपादित कहानी-संग्रह



'अरुणाभा' (दो भाग) व अन्य कृतियों का लोकार्पण किया गया । अध्यक्षता करते हुए डॉ. रामदरश मिश्र ने अरुणाभा प्रकाशन को इस प्रकाशन-परियोजना के लिए बधाई दी । अरुणा कपूर के उपन्यास 'धूप आती है' पर चर्चा करते हुए समीक्षकों ने उसे एक संवेदनशील और साहसिक कथाकृति निरूपित किया ।

राजभाषा कवि सम्मेलन

नयी दिल्ली : विगत दिनों 'स्टेट ट्रेडिंग कॉरपोरेशन ऑव इंडिया' ने राजभाषा सप्ताह के अंतर्गत एक सरस कवि सम्मेलन का आयोजन किया । जिसका उद्घाटन एस.टी.सी. के अध्यक्ष श्री बालकृष्ण चतुर्वेदी ने दीप प्रज्वलित कर किया । आमंत्रित कवियों का परिचय 'स्टेट ट्रेडिंग कॉरपोरेशन ऑव इंडिया लिमिटेड' के वित्त निदेशक एवं सुपरिचित व्यंग्यकार श्री गोपाल चतुर्वेदी ने किया । कवि सम्मेलन की अध्यक्षता श्री रमानाथ अवस्थी ने की तथा संचालन श्री सुरेश 'नीरव' ने किया । इस गोष्ठी में सर्वश्री कन्हैयालाल नंदन, डॉ. शेरजंग गर्ग, विजय किशोर



मानव, रमानाथ अवस्थी, गोपाल चतुर्वेदी, सुरेश नीरव एवं लक्ष्मीशंकर वाजपेयी ने काव्य पाठ किया ।

देवाशीष चक्रवर्ती की गजलें

दिल्ली : श्रीमती बासंती देवी कल्चरल सोसायटी ने सभीक्षेत्रों में कलाकारों को प्रोत्साहित करने के लिए समाज के हर वर्ग के बीच भारतीय संस्कृति के विकास की एक महत्वाकांक्षी योजना बनायी है ।

सहायक पुलिस आयुक्त पी. आर. एस. बरार के समर्थन तथा प्रयास से त्रिवेणी थियेटर में रविवार की शाम 'गजल एवं गीत का' एक कार्यक्रम आयोजित किया गया । संगीत के इस कार्यक्रम में जाने-माने गजल गायक देवाशीष चक्रवर्ती ने अपनी गजलों से श्रोताओं का मन मोहा ।



कार्यक्रम में चुनिंदा गीत भी प्रस्तुत किये गये । कार्यक्रम की शुरुआत 'माना कि हम इस दौर के हासिल तो नहीं थे' गजल से हुई । इसके बाद 'शाम-ए-गम निगाहें नाजकी बात करो', तथा 'न पैमाने खनकते हैं, न दौरे जाम चलता है', को भी श्रोताओं ने अत्यधिक सराहा । गीतों में 'तुझ से बिछड़ कर मन का पंछी शोर मचाए है'और 'हम प्यार करेंगे ऐसा तुम्हें', ने भी श्रोताओं को भावावेग में सरोबार किया ।

देवाशीष चक्रवर्ती के इस कार्यक्रम की खास बात उनका आत्म विश्वास और श्रोताओं को अपनी गजलों के साथ बांधे रखने की क्षमता थी । गजलें प्रस्तुत करने का उनका अंदाज अत्यधिक प्रभावशाली रहा जिसमें श्रोता अंत तक डूबे रहे । गीत, संगीत के साथ उनके स्वर का तालमेल उनकी इस क्षेत्र की अथक साधना को ही दर्शाता है ।

गीत एवं गजलों के उनके प्रस्तुतीकरण में संगीतज्ञों का भी उल्लेखनीय योगदान रहा । तबले पर मनवेंदर भट्टाचार्य ने संगत की तो वायलिन पर सुरजीत सिंह एवं गिटार पर कीर्ति कुमार और हरभजन ने उनका साथ दिया ।



अखिल भारतीय मुशायरा

ककराला : राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की १२५वीं जयंती के अवसर पर अखिल भारतीय मुशायरा एवं कवि सम्मेलन संपन्न हुआ ।

कार्यक्रम का शुभारंभ उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री मोतीलाल वोरा ने किया । मुशायरे में श्री मजरूह सुल्तानपुरी की अध्यक्षता में अनेक शायरों ने अपनी रचनाएं पढ़ीं ।



समस्यापूर्ति—१८७
सांस

द्वितीय पुरस्कार

सदियों की एकता में
पड़ी जो राजनीति की फांस
बंट गये मंदिर, मसजिद, पीर और पैगंबर
हुक्के, चौपाल, तीज त्योहार
हर कोई दुखी हरेक उदास
दूभर हुई सांस

—अनिल शम

विद्युत सेवा वे
कृषि कुंज, पूसा, नयी दिल्ली-१

तृतीय पुरस्कार

क्षितिज के उस पार डूबता हुआ सूरज
दिवस भर के अनुभव के बाद
धुंधली पड़ती रश्मियों को समेटे हुए
जीवन के अंतिम पड़ाव की तरह
अंधेरों का जाल बाहर भी, भीतर भी
सुलझाने के लिए मत उलझा सांस

—कु. प्रीति तिवा

द्वारा—श्रीमती कमला तिव
राजकीय बालिका इंटर काले
टनकपुर, पोस्ट-टनकपुर, नैनीताल-२६२३०

प्रथम पुरस्कार

मैं अंधियारे की घाटी का बूढ़ा राजा
उम्र की इस दहलीज पर खड़ा
दहशत से भरा, देख रहा हूं, बुझे हुक्के की नली थामे
मंदिर के कंगूरों, मसजिद की मीनारों को
कोई भी तो नहीं है पास
और उखड़ रही है मेरी सांस

—चारुमित्रा

द्वारा—डॉ. अशोक प्रियदर्शी
नीचे करमटोली, रांची-८३४००८

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेन्द्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस १८-२०
कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१ में मुद्रित तथा प्रकाशित

समस्या-पूर्ति—१८९



चित्र : ज्ञान दीक्षित

प्यार

यहां दिये गये शीर्षक को लेकर आपको कविता लिखनी है । समस्या-पूर्ति के नियमों के अनुसार इस शीर्षक का कविता के अंत में होना आवश्यक है । लेकिन इस बार आपको अतुकांत कविता ही लिखनी है । कविता अधिक से अधिक छह पंक्तियों की हो ।

अंतिम तिथि : २० अप्रैल १९९५

प्रथम पुरस्कार : १२५ रु. द्वितीय : १०० रु. और तृतीय : ७५ रु.

 Regd No DL 27004/95 R.NI

